॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

भावामृत

पारंपरिक भजन संग्रह

संवत् २०६६ सन् २००९

संग्रहकर्ता

रामानुज दास दरक

सावित्री दरक

रामकरण रामानुज दास दरक

श्री डेटा प्रॉडक्ट्स

४-३-२५८/१/सी/२, श्री इलेक्ट्रानिक कॉम्पलेक्स, गिरिराज लेन,

सुल्तान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

फोन : ६६५६ २९००, ९८४९९ १४७००

ई-मेल:skdarak@yahoo.com

www.bhavamrut.com

भावामृत

प्रतिवेदन

आदि-अनादि काल से सदैव मनुष्य का यह प्रयास रहा है कि वह स्वयं को उस परम शक्ति से जोड़ पाए जो इस संसार का रचयिता व पालक है। कई मार्ग जो इस गन्तव्य तक जाते हैं उसमें भक्ति मार्ग को सभी से सरल व सरस माना गया है।

भक्ति में संगीत के समावेश ने, कदाचित भजन को जन्म दिया। भजन गायकी की भारतवर्ष में एक गौरवमयी परम्परा रही है। कालांतर में शनैः शनैः भाषा, भाव व प्रस्तुति में परिवर्तन होते रहे, जो कि स्वाभाविक भी है, किन्तु आज जो रूप भजन गायकी ने ले लिया है वह शोचनीय है।

इस पुस्तक का संयोजन एक छोटा सा प्रयास है हमारी उस गौरवमयी धरोहर की कुछ कड़ियों को जोड़कर श्रंखलाबद्ध करने की। इस पुस्तक के संकलन के लिये हमने जिन-जिन रचियताओं व गायकों के भजनों का संग्रह किया है, उन सभी के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। आशा है भजन प्रेमी सज्जन इसमें हमारी ओर से यदि कोई त्रुटि हो तो उस ओर ध्यान न देकर संग्रह को प्रेम पूर्वक अपनावेंगे।

लुप्त होते कुछ अमूल्य भजनों का संग्रह विनम्रता के साथ प्रस्तुत है।

रामानुज दास दरक
सावित्री दरक

आभार

भावामृत के प्रेरणा स्त्रोत श्री अनील कुमार वाजपेयी व **भावामृत पुस्तक** को प्रकाशनीय रूप प्रदान करने में श्री हरिप्रशाद चांडक, श्री नवल किशोर बाहेती साथ ही **भावामृत सीडी** के संयोजन में श्री माणिकलाल अग्रवाल, श्री अजय अग्रवाल, श्री ओम गुरु, श्री राम सारडा, श्री कमल परवाल, श्री झुमरलाल डागा, श्री सुरेश गाँधी, श्री जेठमल वैष्णव, श्रीमती प्रभा परवाल, श्रीमती विमला परवाल आदि ने गायन और वादन के रूप में जो सहयोग दिया उनका हम हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करतें हैं।

शुभकामनाओं सहित :

रामानुज दास - सावित्री

भगवान दास - कलावती

पुरुषोत्तम दास

सम्पत कुमार - सुनीता

विजय कुमार - अलका

अजय कुमार - ज्योति

दिलीप कुमार, नवनीत कुमार एवं दरक परिवार

॥ श्री ॥

अनुक्रमणिका

प्रभाती

१.विघ्न हरण गौरी के नन्दन १
२.आज वृन्दावन रास रच्यो है १
३.जाग जाग जगदम्ब भवानी २
४.जागो मोहन प्यारे ललना २
५.मोर मुकुट की देख छटा मैं २
६.आजोजी नन्दजी का लाला म्हारे घर ३
७.आपही खेल खिलाड़ी म्हारा प्रभुजी ३
८.आवत देख्या कृष्ण राय ने ४
९.तुम बिन मोरी कौन खबर ले ४
१०.अरी सखि मुनि संग बालक कांके ५
११.रात सखी सपना में देख्या ५
१२.रोकत जात जाटाई रथ को रोकन ६
१३.मेरे गिरधर से कौन लड़ी है ७
१४.यह है जगने की बेला ७
१५.देखोरी एक बाला जोगी द्वारे हमारे ८
१६.जागिये रघुनाथ कंवर ९
१७.जागिये कृपा निधान जानराय रामचन्द्र ९
१८.तू तो मेरा सच्चा स्वामी १०
१९.छोड़ दे गल बैंया श्याम १०
२०.मैं नहीं माखन खायो १०
२१.श्री मुख जोवण आई लाल जी ११
२२.जाग जाग म्हारी गंगा मैया ११
२३.सालिग्राम जी सुनो विनती मोरी १२
२४.मैं बाट तिहारी जोऊँगी १२

विनती

२५.आवो आवो म्हारा गजानन्दजी १३
२६.एक अर्ज मेरी सुनलो दिलदार हे १४
२७.भगवान तुम्हारे चरणों में १४
२८.भगवान का नाम दयानिधि है १५
२९.तोरि गति लखिन परे १५
३०.कैसे तुम गणीका के १६
३१.धरम पर मिट जाना कोई बड़ी बात १६
३२.नाथ बिन बिगड़ी कौन सुधारे १७
३३.थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ १७
३४.तुम सारे सबके काज चूक क्या मेरी १८
३५.मैं सुनी तुम्हारो नाम १९
३६.म्हारो अवगुण भरयो है शरीर १९
३७.और आसरो छोड़ आसरो २०
३८.दिल तो मेरा हर लिया २१
३९.आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन २१
४०.भजो रे मन राम नाम सुखदाई २२
४१.खबर करदो रघुनन्दन को २२
४२.साँवरा आवो तो सही २३
४३.नाथ कैसे नरसिंह रूप बणाया २३
४४.सिसोदिया राणा पुष्कर न्हावण रो २४
४५.जब दर पै तुम्हारे ही अधमों का २४
४६.मो सम कौन कुटिल खल कामी २५
४७.सबसे ऊँची प्रेम सगाई २५
४८.यही हरि भक्त कहते हैं २५
४९.पर घर लाज न मारो २६
५०.बृज चंद्र प्राण प्यारे मथुरा से शिघ्र २६
५१.दशा मुझ दीन की भगवन २७
५२.सभी तुझसे कहते हैं हाल अपना २७
५३.जाकी हरि से लगन लगी है २८
५४.थे सुणो सांवरा थारी भक्ति में २८
५५.नाथ म्हारो कांई बिगड़े २९
५६.आओ हरि नाम जपें २९
५७.पायोजी मैं ने रामरतन धन पायो ३०
५८.कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ३०

५९.गोविन्द गोविन्द गावो रे भाई ३०
६०.नाथ मैं थारो जी थारो ३१
६१.मिलता है सच्चा सुख केवल ३१
६२.ऐ जी म्हारा नटवर नागरिया ३२
६३.अब सौंप दिया इस जीवन का ३३
६४.मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे ३३
६५.मस्ती में हमारी भी जो परवाह नहीं ३४
६६.श्याम तोरी नेह नगरिया न्यारी ३४
६७.इतना तो करना स्वामी जब प्राण ३५
६८.प्रेमी बनकर प्रेम से ईश्वर के गुण गाया ३६
६९.मैं नित भगतन हात बिकाऊँ ३६
७०.प्रभु म्हारे मन मन्दिर में पधारो ३७
७१.राम तेरी रचना अचरज भरी ३७
७२.हरि तेरे चरण की हूं मैं दासी ३८
७३.नाथ तेरी माया जाल बिछाया ३८
७४.ऊधो मुझे संत सदा अति प्यारे ३९
७५.जो भजते मुझे भाव से मैं उनका ही ३९
७६.पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे ४०
७७.न जाने क्या क्या भरा हुआ ४०
७८.सखी चलो सजन के देस जोगन बन ४०
७९.म्हाँने चाकर राखोजी नाथ म्हाने ४१
८०.तोसे अरज करूँ सांवरिया ४१
८१.मैं तो हूं भगतन को दास ४२
८२.देखो मतलब को संसार,जगत में ४३
८३.भजो रे मन प्रेम सहित सत नाम ४४
८४.भगवान मेरी नैया उस पार लगा ४४
८५.कुण जाणे आ माया श्याम की ४५
८६.हे भगवान तेरी माया का ४६
८७.बंगला मेरा एसा बना दो भगवान ४७
८८.हरि अपार तेरी माया ४८
८९.गजब का दावा है पापियों का ४८
९०.यूं अगर आप मोहन मुकर जायेंगे ४९
९१.मेरे राम मुझे अपना लेना ४९
९२.अधमों का नाथ उबारना ५०
९३.मुझ से अधम अधीन उबारे न जायेंगे ५०
९४.मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता ५१
९५.झीनी झीनी प्रेम की डोरी ५१
९६.संसार के कर्तार का आकार न होता ५२
९७.रे मन प्रति स्वांस पुकार यही ५२

भोग

९८.ओ गणपति गणेश तुमको ५३
९९.दूध पिवो नी म्हारा मदन गोपाल ५३
१००.म्हारी कुटिया में आवो भगवान ५४
१०१.म्हारा कानुड़ा गिरधारी ५५
१०२.थोड़ो अरोगोनी मदनगोपाल ५६
१०३.म्हारो बालो भूखो छ प्रेम नो रे ५६
१०४.बाबो म्हाने भोलाय गयो पूजा ५७
१०५.आज हरि आये विदुर घर पावणा ५७
१०६.राबडी खाव तो मोहन आजा तडके ५८
१०७.थाली भर कर ल्याई खीचड़ो ५८
१०८.मैके से पंडितजी आवै ५९
१०९.तनै माल मलीदा भावे रे ५९
११०.जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम ६०

शिवजी

१११.आज म्हारो सुण्ड सुण्डालो आयोजी ६१
११२.कर पलक में न्याल सदा शिवशंकर ६१
११३.धन धन भोलेनाथ बाँट दिये ६२
११४.एक दिन वो भोले भंडारी ६३
११५.हँसकर पारवतीजी शिवजी ने ६४
११६.भोलेनाथ है तू मतवाला ६४
११७.आ रिमझिम करती भीलनी कठीने ६५
११८.जटा में तेरे गंग बिराज गल सर्पों ६६
११९.तुम हो दयालु, ओ डमरू वाले ६७
१२०.मैने शंकर का रूप निराला देखा ६७
१२१.भोलानाथ अमली, भोला शंकर अमली ६८
१२२.नैनों में ज्वाला है, गर्दन में नाग का है ६९
१२३.शिव शंकर चले कैलाश ७०

१२४.शिव दुःख भंजन हारी भजो मन ७०
१२५.कान्हुडा थारी बांसुरी की तान ७१
१२६.शिव आदि पुरुष अविनाशी रे ७१
१२७.ओहो काशी के नाथ चरणां थारे चित्त ७२
१२८.शिव भोले भण्डारी साधु ७२
१२९.कैलाशी काशी के वासी ७३
१३०.प्यारो लागे भोलानाथ मोरी मैया ७४
१३१.एक शिव का भक्त चला,शिव को ७४
१३२.धर हिरदा में ध्यान सदा शिवजी को ७५
१३३.गांजो पीजा रे सदाशिव भोला लहरी ७५
१३४.सदाशिव शरणा तेरा सब अपराध ७६
१३५.दर्शन दे त्रिपुरारी रे, मोहे दर्शन दे ७६

माताजी

१३६.मनाया म्हारे आवणाजी गौरी रा लाल ७७
१३७.आवो म्हारे कंठा मैया बसो ये भवानी ७७
१३८.माँ का दरबार है यह ७८
१३९.मैया दे दुर्गा वरदान तेरा गुण गाऊँगा ७८
१४०.आई सिंह पे सवार मैया ओढे़ चुनडी ७९
१४१.शरणागत की मातेश्वरी,परतंग्या ७९
१४२.क्या शान है तुलजा भवानी की ८०
१४३.व्यापक हो सब घट घट में माँ माता ८०
१४४.ऊँचा नीचा परबत हद बन्या ८१
१४५.कर सहाय रख लाज ८१
१४६.लाज तुम रखियो महाराणी ८२
१४७.हे अम्बे जगदम्बे भवानी ८३
१४८.देवीजी रा दर्शन की बलिहारी ८३
१४९.शारद माता शारद माता ८४
१५०.जगदम्ब करो ना विलम्ब ८४

हनुमानजी

१५१.रुनक झुनक पग नेवर बाजे ८५
१५२.कूद के समुंदर गढ लंका हू के बीच ८५
१५३.हनुमंत से बोली यूं माता ८६
१५४.अंजनी सुत लाला देख्यो सालासर ८६
१५५.झालर शंख नगारा बाजे रे ८७
१५६.कपी से उऋण हम नाहीं ८७
१५७.म्हारो साचो धणी रे हनुमान ८८
१५८.एक बार आवोनी बालाजी म्हारे पांवणा ८८
१५९.वा रे हनुमान म्हारो दूध तो ८९
१६०.लाल लंगोटो बाबा हाथ में सोटो ८९
१६१.जय हनुमान सुजान राम अनुरागी ९०
१६२.हवा में उड़ता जाए रे मेरा राम ९०
१६३.श्री सालासर महाराज, राखले लाज ९१
१६४.हनुमान पियारा आज बचाले मेरो बीर ९१
१६५.जय हो बजरंग बाला ९२
१६६.बजरंगबली मेरी नाव चली ९२
१६७.बजरंगबाला फेरूं थारी माला ९३
१६८.सालासर वाले हरो ना विघ्न सब दूर ९३
१६९.अंजनी रो लालो जी, सियारामजी के ९४
१७०.ना स्वर है ना सरगम है ९४
१७१.आज मंगलवार है ९५
१७२.कौन दिशा से आयो पवन सुत ९५
१७३.भरत पियारा मेरो नाम हनुमान ९६
१७४.मेरी विनती सुनो हनुमान ९६
१७५.रावणा के देश गयो सिया को संदेशो ९७
१७६.अंजनी को लाल निरालो रे ९७
१७७.कथा सुनाऊँ सबको यह पवन पुत्र हनुमान ९८
१७८.दुनिया चले ना श्रीराम के बिना ९९
१७९.तेरे जैसा राम भक्त कोई हुआ न होगा १००

श्री रामचन्द्रजी

१८०.गण विघ्न हरण,शुभ करण बुद्धि के दाता १०१
१८१.घर आया हो लक्ष्मण राम अयोध्या १०२
१८२.म्हारा हरिया बन रा सुवटिया १०२
१८३.रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया १०३
१९४.थोड़ासा पांव धुलवा लो १०३
१८५.वो रामचन्द्र महाराज बड़े जालिम है १०४
१८६.क्या रामचन्द्र से मेरी सायबी कम है १०४

१८७.आज अयोध्या की गलियों में १०५
१८८.नार मोहे शंकर को वरदान १०५
१८९.मीठे लगे तेरे बेर भीलनी मीठे लगे १०६
१९०.गढ़ लंका मांई आई है सवारी १०६
१९१.खड़े गंगा किनारे सियाराम १०७
१९२.राम नाम का सार समझ ले १०७
१९३.मेरी छोटी सी है नाव १०८
१९४.राम नाम रटो चाहे दिन, चाहे रात है १०९
१९५.अयोध्या में मधुरा मधुरा बोले १०९
१९६.राम लिखूँ रघुनाथ लिखूँ ११०
१९७.गावो बधावा आज श्री रघुवर परण १११
१९८.रामजी को ढूंढो लक्ष्मण जी को १११
१९९.राजे भी देखे,महाराजे भी ११२
२००.श्री राम नाम धन पूँजी पल्ले बांधो रे ११२

कृष्ण

२०१.हाँ गजानन्द मंगलकारी ११३
२०२.हरजी ने जांचण जाओ जी ११३
२०३.आज्यो म्हारे देश ११४
२०४.आए आए जी हमारे बालापन के ११४
२०५.कृष्ण की सूरत मन मोहनी दिवानी ११५
२०६.आज सखी बंशी बाजी है ११६
२०७.नख पर धार लियो गिरिराज ११६
२०८.ओजी थारी सब चिंता मिट जाए ११७
२०९.कमल दल लोचना कैसे ११७
२१०.बन गए नन्दलाल ललिहार ११८
२११.ऊधो नहीं ये मथुरा लगती है हमें प्यारी ११९
२१२.आयो आयो रे सांवरियो रुक्मण ११९
२१३.आया मदन मोहन घनश्याम १२०
२१४.आवो आवो जी सांवरिया म्हारे १२०
२१५.मेरी मटकी का कर गया टूक १२१
२१६.हट पकड्यो नन्दजी को लाल १२१
२१७.चार भुजा सूं म्हारी वीनती १२२
२१८.तेरी शरण पड़ा मैं आय १२२
२१९.माखन की चोरी छोड़ कन्हैया १२३
२२०.वो आ गया मुरली वाला १२३
२२१.इकली घेर लई मधुबन में १२४
२२२.भारी पड़ी भगत पर भीड़ १२५
२२३.ले जा गाँठ तिहारी १२५
२२४.खातिर कर ले नई गुजरिया १२६
२२५.भजो राधे गोविन्दा गोपाला तेरा १२६
२२६.सरवरिया के तीर खड़ी या नानी १२७
२२७.आप तो बाहर ही खड़े रहे १२८
२२८.छोटो सो कन्हैया जमुना तट पर १२९
२२९.मोर ध्वज सो हुयो ना कोई १३०
२३०.कृष्ण की दिवानी बनकर १३१
२३१.ये झगड़ा है मोहन हमारा तुम्हारा १३१
२३२.कहन लगी बाल कृष्ण से मैया १३२
२३३.ग्वालिनी क्यों ठाडी नन्द १३२
२३४.नटवर नागर नन्दा १३२
२३५.गिरधारी बीरा भात भरणने १३३
२३६.सत्यभामा ने कर दिया दान पति १३३
२३७.बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल १३४
२३८.तेरी पार करेंगे नैया १३५
२३९.कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे १३६
२४०.भरजा मायरियो सांवरिया थारी १३६
२४१.नाचे नन्दलाल नचावे हर की मैया १३७
२४२.तेरे लाला ने ब्रज रज खाई १३७
२४३.नाना ही भांति नचायो १३८
२४४.म्हारो माखन सगलो खाय गयो १३९
२४५.महलन देख डरे हो सुदामा १३९
२४६.सुनो प्यारे ऊधो तुम मथुरा को जाना १४०
२४७.कन्हैया लाल घड़लो म्हारो भर १४०
२४८.जमुना किनारे म्हारो गाँव १४१
२४९.आज साँवरिया को मुख निरखो १४१
२५०.कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो १४२
२५१.मन्दिर जाती मीरा ने १४२
२५२.बड़ी दूर से भाग रह्यो तेरी गाडूली के १४३

२५३.सुन बरसाने वाली गुलाम तेरो बनवारी १४३
२५४.म्हारा श्री नन्दलाल थारा रे बागा १४४
२५५.मीरां साधाँ रो संग छोडो ए १४४
२५६.साँवरिया के आगे खडा १४५
२५७.भरवा दे मदनगोपाल पानीड़ो भरवादे १४५
२५८.म्हारे सिर पर श्री भगवान १४६
२५९.हां सखी सुन हाल हमारा १४६
२६०.बाजी बाजी रे श्याम तेरी पैंजनिया १४७
२६१.डस गयोजी भुजंगी कालो नाग १४७
२६२.बार बार जब कहे ब्राह्मणी हुये सुदामा १४८
२६३.सांवरिया थारी माया को १४९
२६४.घर घर बान्धो बान्दरवाल १४९
२६५.तेरी बंसी पे जाऊँ बलिहार रसीया १५०
२६६.साँची साँची केवो तो सरी कद १५०
२६७.बिन काज आज महाराज लाज गई १५१
२६८.माई मैने गोविन्द लीनो मोल १५२

अन्य

२६९.मनाया म्हारे आवजो जी १५३
२७०.ओजी ना टूटे दूध के दंत १५३
२७१.श्री व्यंकटेश भगवान तुम्ही हो सुख १५४
२७२.हम तो तेरी शरण में आये १५५
२७३.ठाकुर भला बिराजो जी १५६
२७४.भजो श्री व्यंकटेश बाला १५७
२७५.ले ले हरि का नाम विट्ठल पाण्डुरंगा १५८
२७६.आव आव अजमलजी रा लाला थांने १५९
२७७.चार दिशा में चार धाम १५९
२७८.बड़े रुणिचे धाम ओ बाज रया बाजा १६०
२७९.बली छलने को चले त्रिलोकी १६०
२८०.ओ शेषाचल पर बसने वाले १६१
२८१.मेलो बाबा को साथीड़ा आपाँ खाटू १६१
२८२.धन तेरस की पूजा करलो १६२
२८३.श्री जगन्नाथ चरणार विन्द में १६२
२८४.तृपति धाम लागे प्यारो धाम १६३
२८५.हे गंगा जय जय जग जननी १६३
२८६.ब्रह्मा रचते श्रृष्टि पालना विष्णु १६४

होरियाँ

२८७.सिमरन कर पहले गजानन्द को १६५
२८८.ऐसी होली खेली रे कान्हा १६५
२८९.आप धरी रे महाराज धरी १६६
२९०.होरी या रंग धूम मचाऊँ १६६
२९१.बृज मण्डल देश दिखाओ रसिया १६७
२९२.दधि दूंगी रे साँवरिया थोडीबंसरी बजाय १६७
२९३.लक्ष्मण के बाण लग्यो रे शक्ति १६८
२९४.शिव के मन भाय रही काशी १६८
२९५.महिनो फागण को सांवरिया थारी १ ६९
२९६.कैसे होरी खेलूँ पिया संग १६९
२९७.आज बीरज में होरी रे रसिया १७०
२९८.बाजे बाजे रे बिरज के माँय १७०
२९९.बाजे बाजे हो वृंदावन माँय १७०
३००.राजा बल के द्वार मची रे होली १७१
३०१.कैसे आऊँ रे साँवरिया थारी बृज नगरी १७१
३०२.ए री मैं सोय रही सपने में १७२
३०३.श्यामा श्याम सलोनी सूरत पर श्रृंगार १७३
३०४.श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया १७३
३०५.आयो फागुण मास सुणो हे सब १७४
३०६.मानत ना यशोदा तेरो बनवारी १७४
३०७.बद भादव की अष्टमी कानुड़ा रे १७५
३०८.श्याम मो से खेलो ना होरी १७५
३०९.बृज में हरि होरी मचाई १७६
३१०.आत्माराम से होली खेलत संत सुजान १७७
३११.गोकुल के नेक करम १७७
३१२.हाँ कन्हैयो जादूगारो १७८
३१३.छिटक चाँदनी खिल रही १७८
३१४.रसिया न नार बनाओ री १७८
३१५.पनघट को श्याम बड़ो रसियो १७९
३१६.होरी खेलन जाने खिलारी १७९
३१७.होरी में लाज कहां गोरी १७९
३१८.अरी होनी हो सो होली १८०

३१९.ऐसी होली खिलाऊँ राम जी १८०

झूला

३२०.गणपति मूसा पर चढ कर बेगा आईजो १८१
३२१.प्रभु झूले हिण्डोरा निकुंजन में १८१
३२२.सावण आयो सुघृड़ सुहावणोजी १८२
३२३.हिंडोरे माँही झूलत है नन्दलाल १८२
३२४.गरजते हैं कैसे घनघोर १८३
३२५.राधा रानी ऐसी रुठी झूला झूले १८३
३२६.घनश्याम बुलावे झूलन ने चालो १८४
३२७.आई आई रे सावणीया री तीज १८४
३२८.राधा नन्द किशोर,भजो मन राधा १८४
३२९.वर्षा ऋतु के बीच १८५
३३०.हिंडोरे में झूलत गिरवरधारी १८६
३३१.बगीचा में झूलत कुंज बिहारी १८६
३३२.आयो सावण मास श्याम संग झूलन १८७
३३३.झूला पडा कदम की डाल १८७
३३४.बिरखा ऋतु आईजी १८८
३३५.म्हाने वृन्दावन ले चालो जी १८८

ज्ञान - वैराग्य - चेतना

३३६.गणराज रखो मेरी लाज १८९
३३७.हरि बोल मेरी रसना १८९
३३८.होत न एक समान सब दिन होत न १९०
३३९.भजो मन तुलसी सीताराम तो कहो १९९
३४०.काहू की न भई यह वसुधा १९१
३४१.करम गति टारी नाहीं टरे १९१
३४२.ऊधो करमन की गति न्यारी १९२
३४३.जब टेढ़े दिन आवे १९२
३४४.जिनके हृदय श्री राम बसे १९२
३४५.तैने हीरा सो जनम गंवायो १९३
३४६.चार वरण में वही बड़ा १९३
३४७.थारी मोह माया ने छोड़ १९३
३४८.लेलो जी लेलो जी लेलो हरि का नाम १९४
३४९.पीले प्याला ओ मतवाला १९४
३५०.नर तू भज ले सीताराम १९५
३५१.तेरी हीरा जैसी श्वाँसां बातों में १९५
३५२.रे नर ये दो दिन का मेला रहेगा १९६
३५३.जीव तू मत करना फिकरी १९६
३५४.काशीजी से आया पण्डा १९७
३५५.काहे सोच करे नर मन में १९७
३५६.लाग्यो राम भजन से हेत १९८
३५७.आओ आओ हे मेरे प्यारे करलो कुछ १९८
३५८.केहि विधि कर समझाऊँ १९९
३५९.बिना सत्संग के ऊधो १९९
३६०.हरि भज हरी भज हरि भज प्राणी २००
३६१.तजो मन हरि विमुखन २००
३६२.थांरी नींदडली न निवार २०१
३६३.राम भजा सो ही जीता जग में २०१
३६४.अफसोस मूढ़ मन तू मुद्दत से सो रहा २०२
३६५.जग असार में सार रसना २०२
३६६.राम भजन रो चौघड़ियो २०३
३६७.राम नाम रस पीले मनवा २०३
३६८.राम नाम के हीरे मोती २०४
३६९.बीत जाय उमर हरि नाम बिना २०४
३७०.म्हारा हरिया बनरा सूवटड़ा २०५
३७१.राम नाम सुखदाई भजन करो भाई २०५
३७२.मन फूला फूला फिरे जगत में २०६
३७३.उल्फत नशे का जिस दम २०६
३७४.जनम लियो वाणे मरणो पड़सी २०७
३७५.नाम की पीलेना बूटी २०७
३७६.मनड़ा क्यूं पछतावे रे सिर परश्रीगोपाल २०८
३७७.हरि नाम सुमर सुख धाम २०८
३७८.कलियुग में ऐसे पापी नर होवेंगे २०९
३७९.हरि भज हरि भजन हीरा परखा रे २०९
३८०.जीवन रो भरोसे नहीं कब हंसो २१०
३८१.दीवाने क्यों बनता मगरूर २१०
३८२.लाख क्रोड रो कोई न मोल २११
३८३.थांरी काया रो गुलाबी रंग २११
३८४.चेतन चिदानन्द चरणों में २१२

३८५.घूँघट के पट खोल री तोहे पिया मिलेंगे २१२
३८६.चदरिया झीणी रे झीणी २१३
३८७.मिल्यो मिनख अवतार २१३
३८८.जीवन लाखीणो २१४
३८९.क्या तन मांजता रे एक दिन माटी में २१४
३९०.सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २१५
३९१.तने अजब बणायो भगवान खिलोनो २१५
३९२.हमन है इश्क मस्ताना २१६
३९३.हरि गुण गायले रे २१६
३९४.हंसा निकल गया काया से २१७
३९५.करण हार करतार से ड़रिये २१७
३९६.करते हैं सभी सुमिरण २१८
३९७.बड़े अचरज की बात संतों २१८
३९८.भाई म्हारा रंगस्युं तो रंग मिल २१९
३९९.पानी में मीन पियासी २१९
४००.कितने दिन का स्थिर वास यहाँ २२०
४०१.जिसको तू खोज रहा बन्दे २२०
४०२.जीवन में शान्ति न जो लाता २२१
४०३.सोयोड़ो संसार इण में २२१
४०४.रंग महल की चहल पहल में २२२
४०५.हीरे जैसी जिन्दगानी खो रहा है क्यों २२२
४०६.प्यारे मनवा तू लगा लगा २२३
४०७.चलना आखिरकार है २२३
४०८.आऊँ खेरी घड़ियाँ थांरी २२४
४०९.माटी री आ काया आखिर २२५
४१०.मटका प्यास बुझाये कैसे २२५
४११.सीताराम सीताराम सीताराम बोल २२६
४१२.बंगला अजब बन्या महाराज २२७
४१३.मनवा नांही बिचारी रे २२७
४१४.झूठ साँच से भरे खजाने २२८
४१५.लख चौरासी खत्म हुई ना २२९
४१६.दगा किसी का सगा नहीं २३०
४१७.सफल कमाई महाराज भरतरी २३१
४१८.माया हो रंग बादली २३१
४१९.इक राई घटे ना,नहीं तिल बढने २३२
४२०.नर तेरा चोला रतन अमौला २३२
४२१.मुखड़ा क्या जोवे दरपण में २३३
४२२.है सुमिरन में सार बावरे २३३
४२३.इतरा ना जिन्दगी पर,इसका है क्या २३४
४२४.तू समझ भेद इस घट का २३५
४२५.जनम सुधारो बन्दे हरि गुण गायके २३५
४२६.बड़ी ठगिनी यह माया संतों २३६
४२७.है अजब तमाशा भाई २३६
४२८.गुण की गति अति भारी २३७
४२९.युग युग की गति न्यारी २३७
४३०.प्यारे भजन करो जी पाके रतन शरीर २३८
४३१.तू करले याद उस दिन की २३८

शयन

४३२.गणपति विघ्न विनाशन हारे २३९
४३३.अँखियां में नीन्द घुल आई २४०
४३४.थे पोढ़ो अन्तरयामी २४०
४३५.करिये शयन श्री भगवान २४१
४३६.पोढ़ो प्रभु सुख सेज सीताराम २४१
४३७.पोढ़े प्रभु द्वारका रणछोड २४१
४३८.श्रीनारायण शयन करो प्रभु २४२
४३९.जां के कमल नयन रतनारे २४२
४४०.पोढ़ो नी प्रभु तिरुपति वेंकटेश २४२
४४१.अवगुण चित्त न धरो २४३
४४२.चिरंजीव कल्याण रहो २४३
४४३.शान्ति शान्ति शान्ति प्रभु २४४

चिन्ह के भजन भावामृत सीडी में स्वरबद्ध हैं ।

॥ श्री हरिः ॥

-:०:-

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशमं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगमं ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगीभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्व लोकैकनाथं ॥

-:०:-

गाईये गणपति जग वन्दन,
शंकर सुवन भवानी के नन्दन ।
सिद्धि सदन गज वदन विनायक,
कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता,
विद्या वारिधि बुद्धि विदाता ।
मांगत तुलसीदास कर जोरे,
बसहु राम सिय मानस मोरे ॥

भजन (पीलू)

अपने ही मुख से हरि का नाम जपो रे ॥ टेर ॥
१. एक बजे एकनाथ, दो बजे द्वारिकानाथ ।
तीन बजे त्रिलोकीनाथ जपते रहो रे ॥ अपने ही ॥
२.चार बजे चारधाम, पाँच बजे परमेश्वर ।
छः बजे छबीले श्याम जपते रहो रे ॥ अपने ही ॥
३.सात बजे श्यामसुन्दर, आठ बजे अविनाशी ।
नौ बजे नमोनारायण जपते रहो रे ॥ अपने ही ॥
४.दस बजे दामोदरलाल, ग्यारह बजे गिरधारी ।
बारह बजे बनवारी जपते रहो रे ॥ अपने ही ॥

-:०:-

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रभाती

भजन १

विघन हरण गवरी के नंदन, सुमिर सदा सुखदाई ॥ टेर ॥

१. पहले तो गनपत जी न सिवरूं, दूजा शारदा माई ।
तीजा तो ब्रह्मा ने सिमरूं, जिन आ श्रृष्टि रचाई ॥ विघन ॥

२. पान चढ़त है पुष्प चढ़त है, केशर चढ़त सवाई ।
डांई भुजा पर सूंड विराजे, गंवरा गोद खिलाई ॥ विघन ॥

३. ब्याव काज थे भले सुधारो, कोटी विघन टल जाई
अनधन लक्ष्मी बढ़े चोगणी, चढ़ती बेल सवाई ॥ विघन ॥

४. गढ़ रणतभंवर में आप विराजो, आपकी जोत सवाई ।
तुलसीदास गनपतजी न सिमरयाँ, बेग मिले रघुराई ॥ विघन ॥

भजन २

आज वृन्दावन रास रचो है, मैं भी देखन जाऊँगी ॥ टेर ॥

१. हार श्रृंगार सजा मेरी सजनी, मोतियन मांग भराऊँगी ।
ओढ़ कसुमल पचरंग लहरयो, मोहन मित्र रिझाऊँगी ॥ आज ॥

२. गिरधारी ग्वालो बन आवे, मैं ग्वालन बन आऊँगी ।
दधि को दान मांगे जो मोहन, कंस के ताहि पठाऊँगी॥ आज ॥

३. तारा वल तो ताल बजावे, मैं सुर बीन बजाऊँगी ।
नरहर नृत्य करूं प्रभु सनमुख, सारंग रास रचाऊँगी ॥ आज ॥

४. ऐसो श्रृंगार सजो मेरि सजनी, देख मगन हो जाऊँगी ।
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि, जोत में जोत मिलाऊँगी ॥आज ॥

-:०:-

राम नाम सब शास्त्र मत, कलिहि उपाय न कोय ।
राम कहे एक बार जो , कोटि यज्ञ फल होय ॥

भजन ३

जाग जाग जगदम्ब भवानी, अरुण उदय होय आयो री ।
प्रातः होत प्याला की महिमा, मेरो मन हरषायो री ।। टेर ।।
१. सतयुग त्रेता द्वापर माहीं, तुलजा रूप धरायो री ।
कलयुग माहीं कालका देवी, दुष्टन मार गिरायो री ।। जाग जाग ।।
२. बृह्मा वेद पढ़े तेरे आगे, शंकर ध्यान लगायो री ।
मुनीजन तेरी करत आरती, सखियन मंगल गायो री ।। जाग जाग ।।
३. जो कोई ध्यान धरे मैया को, वा घर आनन्द सवायो री ।
डुंगर सिंग शाह मात की शरणाँ, हरख हरख गुण गायो री।। जाग जाग ।।

भजन ४ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

जागो मोहन प्यारे ललना, जागो बंसी वारे ।। टेर ।।
१. रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवांडे ।
गोपीजन दधिमथन करत है, कंगन के झनकारे ।। जागो मोहन ।।
२. उठो लालजी भोर भयो है, सुरनर ठाडे द्वारे ।
ग्वालबाल सब करत कोलाहल, जै जै शब्द उचारे ।। जागो मोहन ।।
३. माखन रोटी लीवी हाथ में, गउअन के रखवारे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, शरण आया कूं तारे ।। जागो मोहन ।।

भजन ५ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

मोर मुकुट की देख छटा मै, हो गई सजनी लता पटा ।। टेर ।।
१. मैं दधी बेचन जाती वृन्दावन, मारग रोका नहीं रे हटा ।
सिर की मटकिया फोर डारी, बिखर गया मेरा दही मठा ।। मोर ।।
२. आयो तिवालो गिरीधरण पै, तिरछे नयन की देख अदा ।
तन की सुद बिसराई मेरी, बिखर गयी मेरी केश लटा ।। मोर ।।
३. सासु सुनेगी मोहे बकेगी, ननद सुनेगी करेगी ठठा ।
पिहर जाऊँ जो सुन पावे, माय बाप के लगे बटा ।। मोर।।
४. संग सहेलियाँ मोसा मारे, प्रीतम सुने जब मान घटा ।
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि, राधे राधे रटा रटा ।। मोर।।

भजन ६ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

आजो जी नंदजी का लाला, म्हारे घर माखन खायबा न ॥ टेर ॥
१. म्हारी गलियाँ रंग रंगीली, नहीं ठोर काई जायवा न ।
ऊंची हवेली खुली किवाडी, फुलडा सेज बिछायबान ॥आजो॥
२. सासु के छाने दही जमाऊं, आओ म्हारो महीड़ो चखबा न ।
मैं आवूँजी बछड़ो पकडवा, थे आजो दूध दुधायबा न ॥आजो॥
३. ग्वाल बाल सागे मत लाज्यो, नहीं म्हारो गोरस लुटायबा न ।
पकड़ भुजा मोहे कंठ लगाओ, मत कहीजो नंदबाबा न ॥आजो॥
४. मैं जाऊँ जमनाजी के धोरे, थे आओ जमना न्हायबा न ।
मन तन की दोय बाता करस्याँ, मन की रली पुरायबा न ॥आजो॥
५. मैं ऊबी जोऊँ बाट तिहारी, मत तरसाय जो नैना न ।
चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि, हरिचरणां चितलायबा न ॥आजो॥

भजन ७ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

आप ही खेल खिलाड़ी म्हारा प्रभुजी आप ही खेल खिलाड़ी हो ॥ टेर ॥
१. तम्बू तो असमान तनाया जमी गलीचा भारी हो ।
चाँद सूरज दो शमा लगाई जिनकी कुदरत न्यारी हो ॥ आप ही ॥
२. राम नाम की चौसर मांडी तन पासा मन सारी हो ।
पासा चाहे जिसे जितावे ऐसी कौण बिचारी हो ॥ आप ही ॥
३. छक्के पन्जे से नड़द पकावे बाजी कठिन करारी हो ।
जाकी नड़द पके घर आवे वो ही सुखद खिलाड़ी हो ॥ आप ही ॥
४. श्रृंगी जैसे वन में लुटे शंकर नेजा धारी हो।
बड़े बड़े अहंकारी लूटे रैयत कौन बिचारी हो ॥ आप ही ॥
५. आतम रूपी दिया जगाया ज्ञान रूपी बाती हो ।
कहे कबीर सुन भई साधो अबके जीत हमारी हो ॥ आप ही ॥

-:०:-

कथा कीरतन कलि विषै, भव सागर की नाव ।
कहै कबीर या जगत में, नाहीं और उपाय ॥

भजन ८ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

आवत देख्या कृष्ण रायजी ने, राधाजी मुखड़ो मोड़ लियो ।। टेर ।।
१. मुझसे क्यों रूठी हो राधा, नंद कँवर बतलाय रहयो ।
म्हारो कांई दोश हुवो है, मुखड़ो थे क्युं छुपाय लियो ।। आवत ।।
२. तू कान्हा सदा को कपटी, छलियो मुझसे जाल कियो ।
बातां थारी खोटी लागै, अन्दर से म्हारो जले हियो ।। आवत ।।
३. तू कालो थारो दिल भी कालो, कालो थारो रंग रहयो ।
काला के संग रहकर मैने, कालो रंग कबूल कियो ।। आवत ।।
४. कालो कालो मत कर राधा, काला थारा केश रहया ।
काली थारी तिरछी भौहाँ, मनड़ो म्हारो मोहलियो ।। आवत ।।
५. इतना बोल सुन्या मोहन का, राधा अंग लिपटाय लियो ।
चन्द्रसखी खुशी मन राधा, मोहनबंशी बजाय रहयो ।। आवत ।।

भजन ९ (राग: अहीर भैरव)

तुम बिन मोरी कौन खबर ले, गोर्वधन गिरधारी जी ।। टेर ।।
१. ठीठोली अरदास करत है, सुणजो अरज हमारी जी ।
भारत में भँवरी का अंडा, बचा लिया बनवारी जी ।।तुम बिन।।
२. कुम्हारी घढ़ धरया आंगन मे, करूणा कर कर हारी जी ।
पाँचो हाँडा काचा रह गया, खेले चारू भैया जी ।।तुम बिन।।
३.गज और ग्राह लड़या जल भीतर, लडत-लडत गज हारया जी ।
जौ भर सूंड रही जल बाहर, तब हरि नाम उचारा जी ।।तुम बिन।।
४. कौरव पाण्डव चौसर खेले, द्रोपदी दीनी हारी जी ।
दुष्ट दुशासन नगन करे, प्रभु सुण जो अरज हमारी जी ।।तुम बिन।।
५. इन्द्र कोप कियो बृज ऊपर, बरस्यो मूसल धारी जी ।
दाये नख पर गिरवर धारयो, डूबत बृज उबारया जी ।।तुम बिन।।
६. जहं जहं भीड पडी भक्तन पर, तहं तहं सहाय करैया जी ।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवी, सुणजो अरज हमारी जी ।।तुम बन।।

भजन १०

अरी सखि मुनि संग बालक काँके, रतनार नैना वाँके ॥ टेर ॥
१. राजा पूछे कहो जी मुनीजी, ये दोउ बालक काँके ।
कौन घराँ अवतार लियो है, क्या है नाम पिता के ॥ रतनार ॥
२. रवि शशि कोटी बदन की शोभा, श्याम गौर तन जाँके ।
राम लक्ष्मण कौशल्याजी जाये, दशरथ नाम पिता के ॥ रतनार ॥
३. मुनि को यज्ञ सम्पूरण करके, घर आये राजा के ।
गौतम ऋषि की नारी अहिल्या, तारी है चरण छुआ के ॥ रतनार ॥
४. सब सखियन संग चलि है जानकी, पूजा करण उमा के ।
तुलसी दास आस रघुवर की, लेख लिखे विधि नाँके ॥ रतनार ॥

भजन ११

रात सखी सपना में देख्या, राम लक्ष्मण सिय जनक लली ॥ टेर ॥
१. वे दौउ ठाडे सींह पोल पर, मैं अपने घर से निकली ।
रूप देख व्याकुल भई सजनी, मानो काल भुजंग डसी ॥ रात ॥
२. क्रीट मुकुट मकरा कृत कुन्डलना, केसर खोल ललाट लसी ।
धनुष बाण लिया रघुवर ठाडे, पीताम्बर से कमर कसी ॥ रात ॥
३. या छवी मोंसे बरणी न जावें, ज्यू सावन को घटा उमटी ।
मानो लक्ष्मण धनुष चढायो, ज्यूं बादल बिजली चमकी ॥ रात ॥
४. शिव सनकादिक जाको पार न पावे, ध्यान धरे जाको जती सती।
नारद और गंधर्व गुण गावे, जनम मरण की विपती मिटी ॥ रात ॥
५. ना जानूँ मेरो सपनो सांचो, ना जानूँ मेरी बुद्धि हरी ।
ना जानूँ रघुवर घर आये कह तुलसी सो होत सही ॥ रात ॥

-:o:-

ज्ञान घटे नर मूढ की संगत, बुद्धी घटे चित के बिल माये ।
प्रीति घटे कछु ही नित मांगत, मान घटे नित पर घर जाये ॥
रूप घटे परनारी की संगत, रोग कटे कुछ औषधि पाये ।
लाल दयाल का कहे मन मूरख, मुक्ति मिले हरि के गुण गाये ॥

भजन १२ (तर्ज: श्री मुख जोवण आई)

रोकत जात जटाई रथ को रोकत जात जटाई ।। टेर ।।
१. भिक्षा लेवण आयो निसाचर घालो जानकी माई ।
ले भिक्षा घालन नु आई रथ पर लियो रे चढ़ाई ।। रोकत ।।
२. ले रथ नभ पर उडयो नीशाचर पैंड पैंड घबराई ।
है कोई ऐसो जोधो जग में हमको लेत छुड़ाई ।। रोकत ।।
३. इतनी सुनकर आयो खगपति दीनो रथ ठहराई ।
रे दुष्ट तोय जाने ने दूंगो सनमुख करूं जो लड़ाई ।। रोकत ।।
४. कौन घँरा की कुँवर लाडली कौन घँरा तुम ब्याही ।
कौन तुम्हारो नाम कहीजे कौन हर ले जाई ।। राकत ।।
५. राजा जनक की कुँवर लाडली राजा दशरथ घर ब्याही ।
नाम हमारो जानकी कहीये रावन हर ले जाई ।। रोकत ।।
६. चोंच न मार अति दुःख दीनो दीनो रथ ठहराई ।
अग्नी बाण वो मारयो निशाचर पंखा दियो जी जलाई ।। रोकत ।।
७. लागत बाण पड्यो धरणी पर राम नाम मुख गाई ।
सन्मुख होय लड्यो परहित सुं जुग में होत बढ़ाई ।। रोकत ।।
८.देत आशीष जानकी माता प्राण रहो घटमाई ।
तुलसी दास आस रघुवर की दीजो सन्देशो पठाई ।। रोकत ।।

-:०:-

हाथी के दांत के खिलोना बनी है भांत भांती
सींहन की खाल शिव तपसी मन भायी है
मिरगा की खाल को ओढे बीछावे जोगी जती
छेरा की खाल कछु जल भर लाई है
सांभर की खाल को ओढत सिपाही लोग
गेन्डा की खाल राजा राव को सुहाई है
कहे कवि दयाराम भजलो तु हरी का नाम
मानुष की खाल कछु काम नहीं आई है ।

भजन १३ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

मेरे गिरधर से कौन लड़ी है, कौन झगड़ी है ॥ टेर ॥
१. देखो री यशोदा मैया तुम्हे बताऊं, वो हमसे झगड़ी है ।
गोरे गोरे गाल पिताम्बर ओढ़े , चंचल चपल खड़ी है ॥ मेरे ॥
२. उंगली पकड मेरी पंहुचो पकड्यो, जोर से बैया मरोड़ी है ।
छीन झपट मेरे हाथ से गागर, दधि की मथनिया फोड़ी है ॥ मेरे ॥
३. तू तरूणी मेरो बालक लालो, कैसे तेरी भुजा मरोड़ी है ।
भर भर नैन मेरो लालो रोवे, तूं मस्तान खड़ी है ॥ मेरे ॥
४. तैं तो यसोदा मैया न्याय न किनो, सुत की ओट खड़ी है ।
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि, चरणन आन पड़ी है ॥ मेरे ॥

भजन १४

यह है जगने की वेला, अब नहीं सोना चाहिए
हृदय को धोना चाहिए, कि पावन होना चाहिए ॥ टेर ॥
१. मानव तन रत्न मिला है, सचमुच सौभाग्य खिला है
कौड़ी में इसको कभी न, खोना चाहिए ॥ यह है ॥
२. थाड़ी सी करके हिम्मत, आंको जीवन की कीमत
मक्खन पाने, पानी को न बिलौना चाहिए ॥ यह है ॥
३. तर करके सागर सारा, अतिश्रम से मिला किनारा
तट पर आ नैया को न डुबोना चाहिए ॥ यह है ॥
४. बिन समझे बात पकड़ कर, मिथ्या आग्रह में अड़कर
सिर पर लोहे का भार न ढोना चाहिए ॥ यह है ॥
५. मन चाही मौजें ले ले, चाहे ज्यो इससे खेले
यो जीवन होना नहीं खिलौना चाहिए ॥ यह है ॥
६. धरती तैयार पड़ी है, मिलती उपदेश झड़ी है
संयम का बीज यहाँ पर बोना चाहिए ॥ यह है ॥
७. अणुव्रत है, मंहगे मोती, तुलसी जगमगती ज्योती
जीवन धागे में हार पिरोना चाहिए ॥ यह है ॥

भजन १५ (राग: भैरवी)

देखोरी एक बाला जोगी द्वारे हमारे आयोरी ।
ओढ़ बाघांबर पहर पीतांबर घर-घर अलख जगायोरी ।। टेर ।।
१.तन मृग छला गले मुंड माला शेषनाग लपटायोरी
मस्तक ऊपर तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ायोरी ।। देखोरी ।।
२.अलख निरंजन देखन कारण गोकुल नगरी आयोरी ।
पर ब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोग जाकि मायारी ।। देखोरी ।।
३.भिक्षा ले नन्दरानी आई मोतियन थाल सजायोरी ।
ले भिक्षा घर जावो बाबाजी मेरो लाल डरायोरी ।। देखोरी ।।
४.ना मैं लेऊ पाट पितांबर ना तेरो कंचन मायारी ।
मुख दिखला दे तेरे ललना को जोगी काशी से आयोरी ।। देखोरी ।।
५.कर जोरै बिनवै नन्दरानी सुन योगिन की रायोरी ।
मुख देखन नई ललना को बालक जात डरायोरी ।। देखोरी ।।
६.जाकि दृष्टि सकल जग ऊपर वो क्यों जाय डरायोरी ।
तीन लोक का साहब मेरे तेरे घर में छिपायोरी ।। देखोरी ।।
७. कृष्ण लला को लायी जसोदा कर आंचल की छायारी ।
बार बार परिक्रमा कीनी सींगी नाद बजायारी ।। देखोरी ।।
८.निरख निरख पग-पंकज लोचन नैना भर भर आयारी ।
शिव शंकर कैलाश पधारे सूरदास यश गायारी ।। देखोरी ।।

-:०:-

कही दास संगराम रात दिन बांची पोथी
पोथी में लिख्या जबा कद करोला मोती
मोती तो करस्यो कदे भरणो आयो शीश
संजीना श्वासा घटे छ सा सहस इकीस
छ से सहस्त्र इकी भजन बिन सब ही थोथी
कहे दास संग्राम रात दिन बांची पोथी ।।

भजन १६

जागिये रघुनाथ कुंवर पंछी बन बोले ॥ टेर ॥

१. चंद्र-किरण शीतल भई चकई पिय मिलन गई
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव द्रुम डोले ॥ जागिये ॥

२. प्रातः भानु प्रगट भयो रजनी को तिमिर गयो ।
भृंग करत गुंजगान कमलन दल खोले ॥ जागिये ॥

३. ब्रह्मादिक धरत ध्यान सुर नर-मुनि करत गान ।
जागन की बेर भई नयन पलक खोले ॥ जागिये ॥

४. तुलसीदास अति आनन्द निरखि के मुखारबिंद ।
दीनन को देत दान भूषन बहु मोले ॥ जागिये ॥

भजन १७

जागिये कृपानिधान जानराय रामचन्द्र ॥ टेर ॥
जननी कहे बार-बार, भोर भयो प्यारे ॥ जागिये ॥

१. राजिव लोचन बिसाल, प्रीति-बापिका मराल ।
ललित कमल बदन ऊपर मदन कोटि बारे ॥ जागिये ॥

२. अरुन उदित, बिगत, सबेरी, ससांक-किरन हीन ।
दीन दीप-ज्योति मलिन दुति समूह तारे ॥ जागिये ॥

३. मनहु ग्यान घन प्रकाश बीते सब भव बिलास
आस ज़ास तिमिर तोष तरनिज तेज जारे ॥ जागिये ॥

-:०:-

संगरामा संसार में भजन किण विध होय
बेरणीयां थारे पड़ी लारे लागी दोय
लारे लायी दोय इसी कुण है रे भाई
दिन का बेरण बात रात का निद्रा बाई
लाग लाग इणरे कयां दियां जझरो खोय
संगरामा संसार में भजन किण विध होय ।

भजन १८ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

तू तो मेरा सच्चा स्वामी, धन है तेरी साहबी ।। टेर ।।

१. जमी तो गलीचा डारों, आसमान रावजी
नवलख तारे जडे गगन में, चंदा से मशालची ।। तू तो मेरा ।।

२. लक्ष्मीजी रसोईदार, इन्द्र से पखालची
ब्रह्मा आके वेद बांचे, कुबेर से भंडार जी ।। तू तो मेरा ।।

३. एक चढे हाथी घोड़ा, एक चढे पालकी
एक के तो सिर पर बोझा, एक हलकार जी ।। तू तो मेरा ।।

४. मैं तो तो को ऐसा मानूं, जैसे हीरा पारखी
सूर ने दीदार दीजे, विनती गुलाम की ।। तू तो मेरा ।।

भजन १९ (राग: भैरवी)

छोड दे गल बैंया श्याम भोर भई अंगना ।। टेर ।।

१. गऊ के बटाऊ चाले, पंछी चाले चुगना ।
संग की सहेली चाली, मैं भी जाऊँ जमुना ।। छोड दे ।।

२. दीपक की लौ फीकी, चन्द्रमाँ का चंदना ।
मुख मायलो ताम्बुल फीको, आँख मांही अंजना ।। छोड दे ।।

३. श्यामजी के कुण्डल सोहे, राधाजी के कंगना ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, और कोई संग ना ।। छोड दे ।।

भजन २० (राग: भैरवी)

मैं नहीं माखन खायो मेरी मैया मैं नहीं माखन खायो री ।। टेर ।।

१. भोर भई गउन के पीछे, मधुबन मोहीं पठायो री
चार पहर बंसी वट भटक्यो, साँझ पड़े घर आयो री ।। मैं नहीं ।।

२. हाथ पांव कदम को छोटो, छींको किण विद पायो री
ग्वाल बाल सब बैर करत है, बरबस मुख लपटायो री ।। मैं नहीं ।।

३. तोरे मन कछु भरम भयो है, जाने परायो जायो जी
या ले थारी लकुटी कमलिया, बहुत ही नाच नचायो जी ।। मैं नहीं ।।

४. बिलखत देख मात कान्हा ने, नैन नीर भर आयो री
सूरदास यूँ कहे यशोदा, हँस हँस कंठ लगायो री ।। मैं नहीं ।।

भजन २१

श्रीमुख जोवण आई लालजी को श्रीमुख निरखण आई ।। टेर ।।
१. रात बीति असुरन की नगरी, तहाँ बहुत दुख पाई
पुरुषों को मुखड़ो नहीं देख्यो, अड़सठ तीरथ न्हाई ।। लालजी ।।
२. ऐता बालक देख्या बिरज में, इन में ज्योति सवाई
जो मैया को बुरो चेत स्यूँ , आँख्याँ री सोगन खाई ।। लालजी ।।
३. चित्त शुद्ध जान यशोदा माता, पलनो दियो दिखाई
विष लगाय कूच मुख में दीन्हो, जब खेंचे यदुराई ।। लालजी ।।
४. गिरी जाई ले कोस डेढ पर, सुरपुर प्राण पठाई
पदम भणे प्रण में पाय लागूँ , माता की गति पाई ।। लालजी ।।

भजन २२ (तर्ज: जाग जाग जगदम्ब भवानी)

जाग जाग म्हारी गंगा मैया, दुनिया दर्शन आई ।। टेर ।।
१. परबत फोड़ गऊ मुख निकसी, हरिद्वार पै आई
हरिद्वार में हर की पौड़ी, शिवजी जटा बंधाई ।। जाग जाग ।।
२. राम जाग्या, लक्ष्मण जाग्या, भरत शत्रुघन भाई
हनुमान सा पायक जाग्या, जागी म्हारी गंगा माई ।। जाग जाग ।।
३. ब्रह्मा जाग्या, विष्णु जाग्या, जागी लक्ष्मी माई
नागनाथ औ तपस्वी जाग्या, जागी म्हारी गंगा माई ।। जाग जाग ।।
४. सीता जाग, सत्भामा जागी, जागी कौशल्या माई
तारां में सावित्री जागी, जागी म्हारी गंगा माई ।। जाग जाग ।।
५. ध्रुव जाग्या, प्रहलाद जाग्या, जाग्या युधिष्ठिर राई
कौरव जाग्या, पाण्डव जाग्या, जागी कुंती माई ।। जाग जाग ।।
६. सुवा पढ़ावत गणिका जागी, जागी म्हारी गंगा माई
तुलसीदास आस रघुबर की, हरि चरणं चित्त लाई ।। जाग जाग ।।

-:०:-

रहिमन मैं मन आपनो, कीन्हों चारु चकोर ।
निशिवासर लाग्यो रहे, कृष्ण चन्द्र की ओर ॥

भजन २३

सालिग्रामजी सुनो विनती मोरी, यह वरदान दया कर पाऊँ ॥ टेर ॥

१. प्रातः समय उठ मंजन कर के, प्रेम सहित अस्नान कराऊँ ।
चन्दन धूप दीप तुलसी दल, बरण बरण का मैं फूल चढाऊँ ॥सालिग्रामजी ॥

२. तुम्हरे सनमुख नृत्य करूँ प्रभु, घंटा शंख मृदंग बजाऊँ ।
चरण धोय चरणामृत लेकर, कुटुम्ब सहित वैकुण्ठ सिधाऊँ ॥सालिग्रामजी॥

३. जो कुछ रूखा सूखा घर में, भोग लगाय के भोजन पाऊँ ।
मन बहुतेरे पाप किये , परिक्रमा के साथ बहाऊँ ॥सालिग्रामजी॥

४. ऐसी कृपा करो प्रभु मुझ पर, जम के द्वारे जाने ना पाऊँ ।
माधवदास की विनती यही है, हरि दासन को दास कहाऊँ ॥सालिग्रामजी॥

भजन २४

मैं बाट तिहारी जोऊँगी, कब आओ मेरे श्याम ॥ टेर ॥

१. मैं जल जमुना को लाऊँ, मल मल कर स्नान कराऊँ ।
था न पीताम्बर पैराऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

२. मैं घिस-घिस चन्दन लाऊँ, थारे माथे तिलक लगाऊँ ।
मैं दर्शन कर सुख पाऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

३. मैं चुन चुन कलियाँ लाऊँ, पुष्पन को हार बनाऊँ ।
मेरे श्याम के गल पहराऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

४. थारे माथे मुकुट धराऊँ, गल वैजंती माल पहनाऊँ ।
कानन में कुण्डल सजाऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

५. थारे माखन मिश्री लाऊँ, षट व्यंजन भोग बनाऊँ ।
थारे प्रेम से भोग धराऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

५ ओ देवकी नन्दन आवो, चरणन में शीश नवाऊँ ।
मैं भव सागर तिरजाऊँ जी, कब आओ मेरे श्याम ॥ मैं बाट ॥

-:०:-

तेरे भावे जो हुवे भली बुरी संसार ।
नारायण तु बैठ कर अपनो भवन बुहार ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विनती

भजन २५ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम में)

आवो आवो म्हारा गजानन्द जी बेगा आओ जी
ओ बाबा म्हारा बेगा आओ जी म्हारा गणपत जी ॥ टेर ॥

१.शिव शंकर के पुत्र हो बाबा पार्वती थारी माता जी ।
मूसे की असवारी गणपत थारे सोहे जी
ओ बाबा म्हारा थारे सोहे जी ॥ म्हारा गणपतजी ॥

२.सुण्ड सुण्डाला दूंद दुंदाला शोभा है अतिभारी जी
लडुवन को थार भोग लगावां प्रथम मनावाँ जी
औ बाबा थान प्रथम मनावाँ जी ॥ म्हारा गणपतजी॥

३.रिद्धि सिद्धि के दाता तुम हो जग के पालन हारी जी
जो नर थारी करे ध्यावना वो सुख पावे जी
ओ बाबा वो सुख पावे जी ॥ म्हारा गणपतजी ॥

४.मित्रमण्डल थारी महिमा गावे साँवर शरण तुम्हारी जी
थारा बालक याद करे बाबा दरस दिखाओ जी
ओ बाबा दरस दिखाओ जी ॥ म्हारा गणपतजी ॥

-:०:-

जैहीं के सुमरण ध्यान से, बनत सकल शुभ काज ।
सो गणेश वाणी सहित, ज्ञान दीजियो आज ॥

-:०:-

ईश्वर के दरबार में कमी काय की नाय ।
बंदो भूल्यो बंदगी चूक चाकरी मांय ॥

भजन २६

एक अर्ज मेरी सुनलो, दिलदार हे कन्हैया ॥ टेर ॥
कर दो अधम की नैया, भव पार हे कन्हैया ॥ एक अर्ज ॥

१.अच्छा हूँ या बुरा हूँ , पर दास हूँ तुम्हारा ।
जीवन का मेरे तुम पर, है भार हे कन्हैया ॥ एक अर्ज ॥

२.तुम हो अधम जनों का, उद्धार करने वाले ।
मैं हूँ अधम जनों का, सरदार हे कन्हैया ॥ एक अर्ज ॥

३.करूणानिधान करूणा, करनी पडेगी तुमको ।
वरना ये नाम होगा, बेकार हे कन्हैया ॥ एक अर्ज ॥

४.ख्वायश ये है कि मुझसे, दृग बिंदु अश्रु लेकर ।
बदले में दे दो अपना, कुछ प्यार हे कन्हैया ॥ एक अर्ज ॥

भजन २७ (राग: भीम पलास, तर्ज: नन्दलाल गोपाल दया करके)

भगवान तुम्हारे चरणों में मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ ॥ टेर ॥
१.वाणी में तनिक मिठास नही पर विनय सुनाने आई हूँ ॥ भगवान ॥

२.प्रभु का चरणामृत लेने को है पास में कोई पात्र नही ।
आँखों के दोनों प्यालों में कुछ भीख माँगने आई हूँ ॥ भगवान ॥

३.तुमसे लेकर क्या भेंट करूं भगवान तुम्हारे चरणों में ।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो सम्बन्ध बताने आई हूँ ॥ भगवान ॥

४.सेवा की कोई वस्तु नहीं फिर भी मेरा साहस देखो ।
मैं लेकर आज आँसुओं का एक हार चढ़ाने आई हूँ ॥ भगवान ॥

-:o:-

जै जै श्री राधा रमण जय जय नवलकिशोर
जै गोपी चित्तचोर प्रभु जै जै माखन चोर
जै मीरा के नटवर नागर जै तुलसी के राम
जै नरसी के सांवरिया जै सूरदास के शाम ॥

भजन २८ (राग: भीम पलास, तर्ज: नन्दलाल गोपाल दया करके)

भगवान का नाम दयानिधी है, वो दया तो करेंगे कभी न कभी ।। टेर ।।
१.जिस अंग की शोभा सोहनी है, और श्यामल रंग में मोहनी है
उस रूप सुधा से स्नेहियों के,धृग प्याले भरेंगे कभी न कभी।।भगवान।।
२.जहाँ गीध निषाद का आदर है, और व्याघ्र अजामिल का घर है
वह रूप बनाकर उस घर में हम, जा ठहरेंगे कभी न कभी ।।भगवान।।
३.करूणानिधी नाम सुनाया जिन्हें, करूणामृत पान कराया जिन्हें
सरकार अदालत आपकी में, ये गवाह गुजरेंगे कभी न कभी ।।भगवान।।
४.हम द्वार पे आपके आये खड़े, मुद्दत से इसी जिद्द पर हैं अड़े
जो सिंधु तरे हैं बड़े से बड़े,तो ये बिन्दु तरेंगे कभी न कभी ।।भगवान।।

भजन २९ (राग: दरबारी)

तोरि गति लखिन परे, दयानिधी तोरी गति लखिन परे ।। टेर ।।
धन से धरम, धरम से अधरम,अकरम करम करे ।। दयानिधी ।।
१.पिता वचन टाले सो पापी, सो प्रहलाद करे
ताको प्रभु निज गोद बिठायो, रूप नरहरी धरे ।। दयानिधी ।।
२.गुरू वशिष्ठ महामुनी ग्यानी, रची रची लगन धरे
सीता हरण मरण दशरथ को, वन में विपत्ति परे ।। दयानिधी ।।
३.एक गऊ जो देत विप्र को, सो भव सिंधु तरे
कोटी गऊ राजा नृग दीनी, गिरगिट हो कूप परे ।। दयानिधी ।।
४.वेद विदित रचे सोइ रचना, सो बली यज्ञ करे
ताको प्रभु पाताल पठायो, कैसे सूर तरे ।। दयानिधी ।।

-:o:-

श्वास श्वास में राम भज, वृथा श्वास मत खोय ।
ना जाने इस श्वास को, आवन होय न होय ।।

-:o:-

राम नाम ओषध करो, हिरदै राखो याद ।
संकट में लो लाइये, दूर करै सब व्याध ।।

भजन ३० (छन्द)

कैसे तुम गणीका के अवगुण गिने ना नाथ
कैसे तुम भीलनी के जूठे बेर खाये हो
कैसे तुम द्वारका में द्रौपदी की टेर सुनी
कैसे तुम गज के काज नंगे पैर धाये हो
कैसे तुम सुदामा के क्षण में दरिद्र हरे
कैसे तुम उग्रसेन फंद से छुडाये हो
मेरी बेर इत्ती देर कान मूंद रहे नाथ
दीन बंधु दीनानाथ काहे को कहाये हो

भजन ३१ (तर्ज: आना सुन्दर श्याम)

धरम पर मिट जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ॥ टेर ॥
१.धरम पर डटा प्रहलाद पियारा, पिता ने गिरवर से डारा
गिराये तो गिरजाना, कोई बड़ी बात नहीं है ॥ कोई ॥
२.धर्म पर डटा शिवि पियारा, तन को काट तराजू डारा
मिटाये तो मिट जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ॥ कोई ॥
३.धरम पर डटा हरिशचन्द्र ज्ञानी, बिके राजा फरजंद और रानी
बेचे तो बिक जाना कोई बड़ी बात नहीं है ॥ कोई ॥
४.धरम पर डटा मोर ध्वज प्यारा, वो धरा कुँवर सिर आरा
काटे तो कट जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ॥ कोई ॥
५.धरम पर डट गई मीरा बाई, राणा भेजा विष वांके तांई
पिलाये तो पी जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ॥ कोई ॥

-:०:-

देह धरे को फल यही, भजमन कृष्ण मुरार ।
मनुष जनम की मौज ये, मिले न बारमबार ॥

भजन ३२

नाथ बिन बिगड़ी कौन सुधारे ।। टेर ।।

१.इक दिन बिगड़ी पिता पुत्र में, बांध खम्ब से मारे ।
अपने जन के काज दयानिधी, रूप नर हरी धारे ।। नाथ बिन ।।

२.इक दिन बिगड़ी भ्रात भ्रात में, लात दशानन मारे ।
अपने जन के काज प्रभु ने, लंक राज दे डारे ।। नाथ बिन ।।

३.इक दिन बिगड़ी राज सभा में, द्रौपदी दान पुकारे ।
अपने जन के काज प्रभु ने , बसन रूप धर डारे ।। नाथ बिन ।।

४.इक दिन बिगड़ी नरसी जी की, समधी जी के द्वारे ।
अपने जन के काज दयानिधी, रूप साँवल सा धारे ।। नाथ बिन ।।

५.जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब-तब आप पधारे ।
अम्बा की बेर कहाँ गये स्वामी, विपत्ति वीडारन हारे ।। नाथ बिन ।।

भजन ३३ (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो रे शरीर)

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ, मैं हाजिर-नाजिर कद की खड़ी ।। टेर ।।

१.साजनियाँ दुसमण होय बैठया सबने लागूँ कड़ी ।
तुम बिन साजन कोई नहीं है डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ।।थे तो पलक।।

२.दिन नहि चैन रैण नहिं निंदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी ।
बाण बिरहका लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी ।।थे तो पलक।।

३.पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी
कहा बोझ मीरा में कहिये, सौ पर एक घड़ी ।।थे तो पलक।।

-:o:-

कबीरा सब जग निरधना, धनवंता नहीं कोय ।
धनवंता सोहि जानीये जाके, राम नाम धन होय ।।

-:o:-

प्रेम दिवाने दो भये, कहै बहकते बैन ।
सह जो मुख हासी छुटै, कबहु टपके नैन ।।

भजन ३४ (लावणी)

तुम सारे सबके काज, चूक क्या मेरी
क्या भूल गये रघुनाथ, लगाई देरी ।। टेर ।।

२.काँई धनो पुरबलो भक्त खेत निपजायो
काँइ नामदेव थारो नानो छपरो छायो
तू रूक्मण साथ बैठ र जूण खिंचायो
अब पड़ी जो मेरी बेर हाल नहीं आयो
इण सेण भक्त सुसरा की लईरे तू छोरी ।। क्या भूल ।।

२.यो परसो खाती, लगे रे पुरखो तेरो
तू बालद लाय, कबीरा के कियो डेरो
कांई भीलनी भूवा, लगे रे जूठ खवाइ
अब पड़ी जो मेरी बेर, नींद क्यूँ आई
कर्मा तुझ घाल्यो, खीच धाबल्यो टेरी ।। क्या भूल ।।

३.यो मीरा को विष हरयो रे अमृत कीनो
तू बाल भोग को भूखो यो जस लीनो
तू बडो जिमक्कड है रे कान्हा भाई
थारी जीभ चटोरी है भई कृष्ण मुरारी
नहीं मेरे घर में भोग करूँ क्या अेरी ।। क्या भूल ।।

४.तूं इतना अधम उघारया, तुल गया कांटा
खुल गया गणीका चीर, खुलाकर आंटा
मैं किया न ऐसा, कोई पुरब ला माटा
मुझ ब्राह्मण कुल से, क्यूं लेवत हो छांटा
यो नानी बाई को ब्याव करो हो भलेरी ।। क्या भूल ।।

५.आगे तो तू झटपट, आतो रे बाला
तू अबके क्याँ से, रूठ गयो नंदलाला
नरसी यूँ गावे, हरी करण क्या कहता
यो दधिमत गावे छंद, अजय गढ रहता
अब आँया सरसी नाथ सुता या तेरी ।। क्या भूल ।।

भजन ३५ (लावणी)

मै सुनी तुम्हारो नाम मेरा दिल अटका,
मोहे देना दरशन अपने मोर मुकट का ।। टेर ।।

१.ये माता भाई बात न माने कोई मेरी,
इस कुँदनापुर मे गाय सिंह ने घेरी,
मेरा पड़दा तिहारे हाथ नाथ घुंघट का ।। मोहे देना दरशन ।।

२.ये दुष्ट दुशासन बली सेन चढ आये,
और जरासंघ से योद्धा संग में लाये,
इण सिसपाले का आन मिटादो खटका ।। मोहे देना दरशन ।।

३.तुम दास पदम के स्वामी बेगहि आओ,
इस रूकमैया को अपना बल दिखलाओ ,
तोहे करना है ये काज अदा झट पट का ।। मोहे देना दरशन ।।

भजन ३६

म्हारो अवगुण भरयो है शरीर, कहो ना कैसे तारोगे ।। टेर ।।

१.रंका तारी बंका तारी, तारे सजन कसाई,
सुवा पढावत गणिका तारी, तारी है मीरा बाई ।। कहो ना ।।

२.धन्ना भगत को खेत निपजायो, नामदेव छान छवाई,
सेनभक्त का सांसा मेट्या, आप बने हरि नाई ।। कहो ना ।।

३.ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे और गजराज बचाये,
नरसी जी के भात भरण को, रूप सांवल सा धारे ।। कहो ना ।।

४.भिलनी के बेर सुदामा के तांदुल, रुच रुच भोग लगाये,
दुर्योधन का मेवा त्यागा, शाक विदुर घर पाये ।। कहो ना ।।

५.काशी के हम वासी कहिये, मेरा नाम कबीरा,
करणी कर कर पार उतर गये, जात वरण कुल हीना ।। कहो ना ।।

-:०:-

हद हद करते सब गये, बे हद गया न कोय ।
हद-हद की मारा मारी में, दिया कबीरा रोय ।।

भजन ३७ (लावणी)

और आसरो छोड़ आसरो ले लियो कंवर कन्हाई को
हे बनवारी आज माहेरो भरजा नानी बाई को ॥ टेर ॥

१.असुर संहारन भक्त उबारन चार वेद महिमा गाई
जँह-जँह भीड़ पड़ी भक्तन पर तँह-तँह आय करी सहाई
पृथ्वी लाकर सृष्टि रचाई वराह होय सतयुग माँही
असुर मार प्रह्लाद बचायो प्रगट भये खम्बा माँही
वामन हो बलि को छल लीनो कीनो काम ठगाई को ॥ हे बनवारी ॥

२.मच्छ कच्छ अवतार धार कर सुरनर की मनशा पूरी
अर्ध रैन गजराज पुकारयो गरूड़ छोड़ पहुंचे तब ही
भस्मासुर को भस्म कियो प्रभु सुंदर रूप बने हूरी
नारद की नारी ठग लीनी जाकर आप चढे चंवरी
असुरन से अमृत ले लीनो धर कर भेष लुगाई को ॥ हे बनवारी ॥

३.परशुराम श्री रामचंद्र भये गौतम की नारी तारी
भिलनी के फल जूठे खाये शंका त्याग दई सारी
कर्मा के घर खीचड़ खायो तरी अधम गणिका नारी
छल कर तिरगई नार पूतना कुबजा भई आज्ञाकारी
सेन भक्त का सांसा मेट्या रूप बणा कर नाई को ॥ हे बनवारी ॥

४.नामदेव रैदास कबीरा धन्ना भक्त को खेत भरयो
दुर्योधन का मेवा त्याग्या शाक विदुर घर पान कियो
प्रीत लगा कर गोपीयाँ तिरगई मीरा बाई को काज सरयो
चीर बढ़ायो द्रुपद सुता को दुशासन को मान हरयो
कह नरसी लो सुन सांवरीया कर ले काम भलाई को ॥ हे बनवारी ॥

-:०:-

गरीबी और अमीरी की, फकत इतनी कहानी है।
गरीबी एक बुढ़ापा है, अमीरी एक जवानी है ॥

भजन ३८

दिल तो मेरा हर लिया, गोविन्द माधव श्याम ने
कृष्णा-कृष्णा मैं पुकारूं, तेरे घर के सामने ॥ टेर ॥
१.बंशी वाले बंशी अपनी, तू सुना जा आनके,
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥ कृष्णा-कृष्णा ॥
२.खम्ब से प्रहलाद को, तुमने बचाया था प्रभू,
द्रौपदी की लाज रख्खी, कौरव दल के सामने ॥ कृष्णा-कृष्णा ॥
३.है फक्त ख्वायश यही, मोहन तेरे दीदार की,
इसलिये धूनी रमाई, तेरे घर के सामने ॥ कृष्णा-कृष्णा ॥
४.कृष्ण जी दर्शन दिखा दो, दास अपना जान के,
हम तुम्हारे सामने प्रभु, रहो हमारे सामने ॥ कृष्णा-कृष्णा ॥

भजन ३९ (किर्तन)

आना सुंदर श्याम, हमारे हरी किरतन में ॥ टेर ॥
१.आप भी आना संग राधेजी को लाना, सुन्दर दरश दिखाना ॥हमारे॥
२.आप भी आना संग बंशी को लाना, मीठी तान सुनाना ॥हमारे॥
३.आप भी आना संग गउअन को लाना, आकर गोरस लुटाना ॥हमारे॥
४.आप भी आना संग ग्वालों को लाना, माखन मिसरी चुराना ॥हमारे॥
५.आप भी आना संग सखियन को लाना, सुंदर रास रचाना ॥हमारे॥
६.आप भी आना संग दाऊजी को लाना, दुष्टन को मार गिराना ॥हमारे॥
७.आप भी आना संग अर्जुन को लाना, गीता ज्ञान सुनाना ॥हमारे॥
८.आप भी आना संग संतों को लाना, भक्ति रस बरसाना ॥हमारे॥

-:०:-

कहे दास संग्राम हाथ में हीरा आया
मिनखा देही का सांस घाल गोफण में बाया
बाय दिया बेकूफ ने बाकी रह गयो एक
भदु से मालूम पडी जद रोयो माथो टेक
रोयो माथो टेक इस्या में घणा घमाया
कहे दास संग्राम हाथ में हीरा आया ॥

भजन ४०

भजो रे मन राम नाम सुखदाई, जपो रे मन कृष्ण नाम सुखदाई ॥ टेर ॥

१.जिन चरणन से निकली सुरसरी, शंकर जटा समाई,
जटा शंकरी नाम पड़्यो है, त्रिभुवन तारण आई ॥ भजो ॥

२.जिन चरणन की चरण पादुका, भरत रहे मन लाई,
सोई चरण केवट धोय लीनो, तब हरी नाव चढाई ॥ भजो ॥

३.जोई चरण सन्तन जन सेवत, रहत सदा सुख पाई,
सोई चरण गौतम ऋषिनारी, परस परम पद पाई ॥ भजो ॥

४.रामनाम के दो अक्षर में, सब सुख शांति समाई,
सुवा पढावत गणिका तिर गई, हनुमत लंक जलाई ॥ भजो ॥

५.श्याम नाम के कारण हो गई, पागल मीरा बाई,
पति छोड़्यो परिवार भी छोड़्यो, हरि से लगन लगाई ॥ भजो ॥

६.शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, शेष सहस्त्र मुख गाई,
तुलसीदास मारुत सुत प्रभु की, निज मुख करत बड़ाई ॥ भजो ॥

भजन ४१

खबर करदो रघुनंदन को, खडे हम दर पर दर्शन को ॥ टेर ॥

१.लख चौरासी स्वांग धर, नाना कष्ठ उठाय
जन्म मरण से होय दुखी मैं, पड़ा शरण में आय ।
झुकाये हुए हैं गर्दन को, खबर कर दो रघुनंदन को ॥ खडे हम ॥

२.यद्यपि तुमने ही दिया, रूप शील गुण खान
किन्तु हरी के एक भजन बीन, सब ही है बेकार
करें क्या लेकर इस धन को, खबर कर दो रघुनंदन को ॥ खडे हम ॥

३.खेल तमाशों में मेरा, दौड़ दौड़ मन जाय
भजन भंयकर सा लगे, औ बुद्धी भ्रष्ठ हो जाये
कहाँ तक रोअें करमन को, खबर कर दो रघुनंदन को ॥ खडे हम ॥

४.नौका पापों से भरी, डूब रही मझधार
कछु डूबी कछु डूबन चाली, एक तुम्हीं आधार
उबारो राधेश्याम तन को, खबर कर दो रघुनंदन को ॥ खडे हम ॥

भजन ४२ (राग: पहाडी)

साँवरा आओ तो सही, रे मोहन आवो तो सही
माधव रे मंदिर में, मीरा एकली खड़ी ।। टेर ।।
१.थे केवो तो साँवरा मैं, जल जमना बण जाऊँ,
न्हावण लागे साँवरा, थारे रोम रोम रम जाऊँ ।। साँवरा ।।
२.थे केवो तो साँवरा, मै मोर मुकुट बण जाऊँ,
धारण करसी साँवरा, थारे माथा पर रम जाऊं ।। साँवरा ।।
३.थे केवो तो साँवरा, मैं काजलियो बण जाऊँ,
सूरमो सजोवे साँवरो, थारे नयनन में रम जाऊँ ।। साँवरा ।।
४.थे केवो तो साँवरा, मैं गले हार बण जाऊँ,
पेरे म्हारो सांवरो, थारे हिरदा मैं रम जाऊँ ।। साँवरा ।।
५.थे केवो तो साँवरा, मैं पग पायल बण जाऊँ,
पेरे म्हारो साँवरो, थारे चरणा में रम जाऊँ ।। साँवरा ।।
५.मीरा हरकी लाडली जी, है वचनाँ की साँची,
पगाँ बजावे घूघराजी, हर मन्दिर में नाची ।। साँवरा ।।

भजन ४३

नाथ कैसे नरसिंह रूप बणाया, जासे भक्त प्रहलाद बचाया ।। टेर ।।
१.ना कोई तुम्हारा पिता कहावे, ना कोई जननी जाया
खम्ब फाड़ प्रगट भये हरि, यह अचरज तेरी माया ।। नाथ कैसे ।।
२.आधा रूप धरा प्रभु नर का, आधा सिंह सुहाया
हिरणाकश्यप को पकड़ धरणावे, नख से फाड़ गिराया ।। नाथ कैसे ।।
३.गर्जन सुनकर देव लोक से, ब्रहमादिक सब आया
हाथ जोड़ कर विनती कीनी, शांत स्वरूप कराया ।। नाथ कैसे ।।
४.अन्तर्यामी सर्व व्यापक, ईश्वर बंद बताया
बह्मानन्द सत्य कर सबको, यह परिणाम दिखाया ।। नाथ कैसे ।।

भजन ४४ (तमाशा)

सिसोदिया राणा पुष्कर न्हावण रो म्हाने चावजी ॥ टेर ॥
१.मीरा जन्मी मेड़ते जी, परणी गढ़ चित्तौड़
खेलत लादियो कांकरो जी, सो थो सालग राम जी ॥ सिसोदिया ॥
२.पेली लाजे वंश ओ मीरा, दूजो कुल राठौड़
तीजो लाजे मेड़तो ओ, चौथो गढ़ चित्तौड़ ॥ सिसोदिया ॥
३.नहीं लजाऊँ वंशजी ओ राणा, नहीं जी कुल राठौड़
नहीं लजाऊँ मेड़तो जी, नहीं तो गढ़ चित्तौड़ ॥ सिसोदिया ॥
४.मीरा महलाँ उतरी जी, ऊँटा कसियो भार
डावों छोड्यो मेड़तो जी, पुष्कर न्हाबा जाय ॥ सिसोदिया ॥
५.मीरा वन की कोयली जी, राणो वन को ऊंट
समझाया समझे नहीं जी, ले जाती वैकुंठ ॥ सिसोदिया ॥
६.पगा बजावे मीरा घुंघरा जी, हाथाँ से कड़तार
मुख बजावे मीरा बंसुरी जी, गावे मदन गोपाल ॥ सिसोदिया ॥

भजन ४५ (राग: मांड)

जब दर पे तुम्हारे ही अधमों का ठिकाना है।
फिर मेरी ही किस्मत में क्यूँ रज्ज उठाना है ॥ टेर ॥
१.तारोगे तो तर लेगे छोडोगे तो बैठे है ।
दरबार से अब हरगिज उठकर नहीं जाना है ॥ जब दर ॥
२.मेरी तो कोई करणी निभने को नही भगवन ।
जैसे भी निभाओ अब तुमको ही निभाना है ॥ जब दर ॥
३.फरियाद के सुनने में है कौन सिवा तुमसे ।
गर तुम न सुनो मेरी फिर किस को सुनाना है ॥ जब दर ॥
४.दृग बिन्दु की शक्लों में है ख्वाहिश इस दिल की ।
जरिया तो है आँखों का आँसू का बहाना है ॥ जब दर ॥

भजन ४६ (राग: भैरव)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ॥ टेर ॥
१.जिन दिन दीयो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी ॥ मो सम ॥
२.भरी भरी उदय विषय को ध्यावत, जैसे सूकर गामी ॥ मो सम ॥
३.हरी जन छांडी हरी विमुखन की, निशदिन करत गुलामी ॥ मो सम ॥
४.पापी कौन बड़ो सो मोते, सब पतितन में नामी ॥ मो सम ॥
५.सूरदास को ठौर कहाँ है, सुनिये श्री पति स्वामी ॥ मो सम ॥

भजन ४७ (राग: दरबारी)

सबसे ऊंची प्रेम सगाई ॥ टेर ॥
१.दुर्योधन की मेवा त्यागे, शाक विदुर घर खाई ॥ सबसे ॥
२.जूठे फल शिबरी के खाये, बहु विधी स्वाद बताई ॥ सबसे ॥
३.प्रेम के वस नृप सेवा कीन्ही, आप बने हरी नाई ॥ सबसे ॥
४.राजसु यज्ञ युधिष्टिर कीनो, जामे जूठ उठाई ॥ सबसे ॥
५.प्रेम के वश अर्जुन रथ हांक्यो, भूल गये ठकुराई ॥ सबसे ॥
६.ऐसी प्रीत बड़ी वृन्दावन, गोपियन नाच नचाई ॥ सबसे ॥
७.सूर क्रूर इस लायक नाहीं, कह लग करे बड़ाई ॥ सबसे ॥

भजन ४८ (तर्ज: दशा मुझ दीन की भगवन)

यही हरि भक्त कहते हैं, यही सद् ग्रन्थ गाते हैं ।
कि जाने कौन से गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं ॥ टेर ॥
१.नहीं स्वीकार करते हैं निमन्त्रण नृप सुयोधन का ।
विदुर के घर पहुँच कर भोग छिलकों का लगाते हैं ॥ यही हरि ॥
२.न आये मधुपुरी से गोपियों की दुख कथा सुनकर ।
द्रौपदी की दशा पर द्वारका से दौड़े आते हैं ॥ यही हरि ॥
३.न रोए बन गमन में, श्री पिता की वेदनाओं पर ।
उठा कर गीध को निज गोद में आँसू बहाते हैं ॥ यही हरि ॥
४.कठिनता से चरण धोकर मिले कुछ बिन्दु विधि हर को ।
जो चरणोदक स्वयं केवट के घर जाकर लुटाते हैं ॥ यही हरि ॥

भजन ४९ (तर्ज: ले जा गॉठ तिहारी)

पर घर लाज न मारो, पर घर लाज न मारो
लाज न मारो लाज न मारो नरसी भगत तिहारो ॥ टेर ॥
१.काँई थाने राधा रुकमन मोयो, काँई थे कियो किनारो
ब्याई सगा मे भुंडा लागाँ, मति ना जन्म बिगाड़ो ॥ पर घर ॥
२.हाथ तूमडा मृदंग सोहे, चन्दन तिलक सँवारो
नानी बाई को भरजा मायरो, कृष्ण द्वारका वारो ॥ पर घर ॥
३.घर से तो हम कछु नहीं लाये, आप भरोसे आये
हम भक्तन की कराँ नौकरी, दे दियो देश निकालो ॥ पर घर ॥
४.सांवल सेठ सितापी मिलग्या, गावे राग केदारो
छीतर मल मेहता की अर्जी, राखे गोकुल वारो ॥ पर घर ॥

भजन ५०

बृज चंद्र प्राण प्यारे मथुरा से शीघ्र आना ।
छवि देखकर वहाँ की मत भूल आप जाना ॥ टेर ॥
१.मैं ले रही बलैया मेरे कुँअर कन्हैया
दाउ के संग आके जल्दी छवि दिखाना ॥ बृज चंद्र ॥
२.माखन और रोटी ये संग दे रही हूँ
बाबा से मांग करके रस्ते में आप खाना ॥ बृज चंद्र ॥
३.यह बांसुरी तुम्हारी मैं सँवार कर धरूंगी
आकर यहाँ इसे फिर ब्रज धाम में बजाना ॥ बृज चंद्र ॥
४.यशोदा का प्रेम ऐसा है धन्य दास लक्ष्मण
पर है कठिन कन्हैया का फिर दर्श बताना ॥ बृज चंद्र ॥

-:o:-

कहे दास संगराम राम ने भजूं कीकर
भूल्यां भूंडी होय माजनो जावे बिखर
बिखर जावे माजनो देवे गधा की जून
ताकी मारा बीच में ऊपर लादे लूण
ऊपर लादे लूण करे नहीं कोई फिकर
कहे दास संगराम राम ने भजूं कीकर

भजन ५१

दशा मुझ दीन की भगवन सम्हालोगे तो क्या होगा
अगर चरणों की सेवा में लगा लोगे तो क्या होगा ॥ टेर ॥
१.के नामी पातकी मैं हूँ और नामी पाप हर तुम हो
जो लज्जा दोनों नामों की बचा लोगे तो क्या होगा ॥ दशा मुझ ॥
२.जिन्हों ने तुमको करुणाकर पतित पावन बनाया है
उन्हीं पतितो को तुम पावन बना लोगे तो क्या होगा ॥ दशा मुझ ॥
३.यहाँ सब मुझसे कहते है तू मेरा है तू मेरा है
मैं किसका हूँ ये झगड़ा तुम मिटा दोगे तो क्या होगा ॥ दशा मुझ ॥
४.अजामिल गीध गणिका जिस दया गंगा में बहते हैं
उसी में बिन्दु सा पापी मिला लोगे तो क्या होगा ॥ दशा मुझ ॥

भजन ५२ (राग: यमन)

सभी तुझसे कहते हैं हाल अपना अपना ।
दिखाते हैं तुझको कमाल अपना अपना ॥ टेर ॥
१.है बाजारे मजहब में हर दिल का सौदा ।
बताते हैं सब सच्चा माल अपना अपना ॥ सभी तुझसे ॥
२.किसी में तू आकर फँसे, इसलिये सब
बिछाते हैं उल्फत का जाल अपना-अपना ॥ सभी तुझसे ॥
३.भरे सबको आँखों में आँसू के कतरे ।
गुहार अपना अपना है, माल अपना अपना ॥ सभी तुझसे ॥
४.खरे दो हैं, दोनों के दृग बिन्दु सूने ।
पसन्द अपनी अपनी खयाल अपना अपना ॥ सभी तुझसे ॥

-:०:-

राधे तू बडभागिनी कौन तपस्या कीन ।
तीन लोक तारण तरण है तेरे आधीन ॥

भजन ५३ (रसिया)

जाकी हरी से लगन लगी है लगन ना छुटेगी प्यारे ॥ टेर ॥
१.लगन लगी प्रह्लाद भक्त को गिरवर से डारे ।
खम्ब फाड़ नरसिंह प्रगट भये हिरणाकुश मारे ॥ जाकी हरी ॥
२.लगन लगी ध्रुवजी राजा को राम नाम धारे ।
अपने भक्त को दर्शन देने चतुर्भुज रूप धारे ॥ जाकी हरी ॥
३.लगन लगी हरिशचन्द्र राजा को संत रूपधारे ।
अपने सत के कारण राजा कुटम्ब बेच डारे ॥ जाकी हरी ॥
४.लगन लगी मोरध्वज राजा को संत रूप धारे ।
राजा रानी दोनों मिलकर कुंवर चीर डाले ॥ जाकी हरी ॥
५.लगन लगी नरसी मेहता को बणिक नाम धारे ।
प्रभु ने भाव भक्ति के कारण भात भरे न्यारे ॥ जाकी हरी ॥
६.लगन लगी बाई मीरा को राम नाम धारे ।
जहर का प्याला राणा भेजा अमृत कर डारे ॥ जाकी हरी ॥

भजन ५४ (मारवाडी तमाशा)

थे सुणो साँवरा थारी भक्ति में, कुण सुख पाईयो ॥ टेर ॥
१.नाम लियो प्रह्लाद भक्त थारो, गिरवर से गिरवायो
पांच बरस को ध्रुव करी तपस्या, बन में ध्यान लगायो ॥ थे सुणो ॥
२.बालपना को मित्र सुदामा, कणकण ने तरसायो
हरिशचन्द्र सतवादी राजा, नीच घर नीर भरायो ॥ थे सुणो ॥
३.पाण्डव थारा मित्र कहिजे, वाने भी मिथ्या लडायो ।
मोर ध्वज सा दानी राजा, पुत्रन चीर गिरायो ॥ थे सुणो ॥
४.मीरा थारी दासी कहिये, वाने भी जहर पिलायो
तु थारा भक्ता न साँवरा, लोहा ज्यान तपायो ॥ थे सुणो ॥
५.कह नरसीलो सुन साँवरिया, चरणाँ शीश नवायो॥
तू थारा भक्ताँ न साँवरिया, आछो नाच नचायो ॥ थे सुणो ॥

भजन ५५ (राग: काफी)

नाथ म्हारो कोई बिगडे हो नाथजी ॥ टेर ॥
ओ जायेगी लाज तिहारी ओ मुरली वाले-ओ मुरली वाले
१.सूर समूह सकल मिली बैठे, बड़े बड़े वृतधारी जी
भीष्म द्रोण कर्ण दुषाशन, इनने कुमती बिचारी जी ॥ नाथ ॥
२.मती के हीन भये पांचो पति, धरमी धरम श्रुति हारी जी
ना रही पैख प्रबल पारथ की, भीम गदा महि डारी जी ॥ नाथ ॥
३.तुम तो दीनानाथ कहावत, मैं आधीन तुम्हारी जी
जैसे जल बिन मीन तडप रही, खेंचो चीर मुरारी जी ॥ नाथ ॥
४.अब ही तो कछु बिगड़्यो नाहीं, खेंचत चीर पुकारी जी
सूर श्याम तुम लाज मरोगे, आखिर मोहे देख उघारी जी ॥ नाथ ॥

भजन ५६ (किर्तन)

आओ हरिनाम जपें, कि भव से तिरने का भाइयों
ऐसा कोई जतन करो ॥ टेर ॥
१.प्रभु अविनाशी का घट घट वासी का,
निशदिन ध्यान धरे भाईयों ॥ ऐसा ॥
२.श्याम सलोने की मुरली मनोहर की
मूर्ति मन में धरे भाईयों ॥ ऐसा ॥
३.गिरवर धारी से मदन मुरारी से
प्रेम बढाने का भाईयों ॥ ऐसा ॥
४.तन मन और धन से, हरी का भजन करें भाईयों ॥ ऐसा ॥
५.जब लग स्वास रहे ओ लाज पुकारेगी भाईयों ॥ ऐसा ॥

-:o:-

एक भरोसो एकबल एक आस विश्वास ।
स्वाति बूंद रघुनाथ है चातक तुलसीदास ॥

भजन ५७ (राग: पहाडी)

पायो जी मैने रामरतन धन पायो ।। टेर ।।
१.वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ।। पायो जी ।।
२.जनम-जनम की पूंजी पायी, जग में सभी खोवायो ।। पायो जी ।।
३.खरचे न कोई चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ।। पायो जी ।।
४.सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो ।। पायो जी ।।
५.मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख हरख जस गायो ।। पायो जी ।।

भजन ५८ (कव्वाली)

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी,
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी ।। टेर ।।
१.जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते,
किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी ।। कृपा ।।
२.गरीबों की दुनियाँ है आबाद तुमसे,
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी ।। कृपा ।।
३.न मुलजिम ही होते न तुम होते हाकिम,
न घर में होती अदालत तुम्हारी ।। कृपा ।।
४.तुम्हारी उल्फत के दृग बिन्दु है यह,
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ।। कृपा ।।

भजन ५९ (तर्ज: दिल तो मेरा हर लिया गोवींद)

गोविन्द गोविन्द गाओ रे भाई, हरि कीर्तन में आयके ।
जनम सफल करलो रे भाई, हरि कीर्तन में आयके ।। टेर ।।
१.कैसा प्यारा नाम है, गोविन्द माधव श्याम का ।
मिलता मुक्तिधाम है, हरि कीर्तन में आयके ।। गोविन्द ।।
२.जिसने गाया राम नहीं, मिलता उसे आराम नहीं ।
चुपचुप रहना ठीक नहीं, हरि कीर्तन में आयके ।। गोविन्द ।।
३.राम नाम रस पीजिए, मनवा राम नाम रस पीजिए।
पीकर बन गये हरि भक्त, सब हरि कीर्तन में आयके ।। गोविन्द ।।

भजन ६०

नाथ म्हें थारो जी थारो, नाथ म्हें थारो जी थारो ॥ टेर ॥
चोखो बुरो कुटिल अरू कामी, जो कुछ हूँ सो थारो ॥ नाथ ॥
१.बिगड्यो हूँ तो थारो बिगड्यो, थे ही म्हने सुधारो ।
सुधर्‌यो तो प्रभु सुधर्‌यो थारो, थाँ सूं कदे न न्यारो ॥ नाथ ॥
२.बुरो बुरो म्हे बहुत बुरो हूँ, आखिर टाबर थारो ।
बुरो कहा कर म्हें रह जास्यूँ, नाम बिगड़सी थारो ॥ नाथ ॥
३.थारो हूं थारो ही बाजूँ, रहस्यूँ थारो थारो ।
बुरो कहा कर म्हें रह जास्यूँ , नाम बिगड़सी थारो ॥ नाथ ॥
४.मेरी बात जाय तो जाये, अब मारो चाहे तारो ।
जांघ उघाड्या लाज मरोगा, ऊँडी बात बिचारो ॥ नाथ ॥

भजन ६१ (रिीक्षर: भीम पलास.तर्ज: नन्दलाल गोपाल दया करके)

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में ।
यह विनती पल छिन छिन की, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ टेर ॥
१.चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥मिलता है ॥
२.चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे काँटों पर मुझे चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥मिलता है॥
३.चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥मिलता है॥
४.जिव्हा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे ।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरमों में ॥मिलता है ॥

-:o:-

तुलसी जग में आय के, कर लीजै दोय काम ।
देवे को अन्नदान है, लेवे को हरि नाम ॥

भजन ६२

ऐजी म्हारा नटवर नागरिया, भगताँ रे क्यूँ नहीं आयो रे ॥
१.धन्ना भगत काँई भगत पुरबलो ज्याँ रो खेत निपायो रे ।
बीज लेर साधाँ ने बाँट्यो, बिना बीज निपजायो रे ॥
२.नामदेव काँई नानो लागे, ज्याँ रो छप्पर छायो रे ।
मार मंडासा छावण लाग्यो, लछमी बँध बँधायो रे ॥
३.सैन भगत काँई सुसरो लागे, ज्याँ रो कारज सारयो रे ।
बगळ रछाणी नाई बणग्यो, नृप को सीस संवार्‌यो रे ॥
४.परसो काँई थारे फूँफो लागे, ज्याँ रो पेड़ो पूठ्यो रे ।
बिना बुलायाँ आप ही आयो, रात्यूँ लकड़ी कूट्यो रे ॥
५.कबीर काँई थारे काको लागे, ज्यां घर बाळद ल्यायो रे ।
खाँड खोपरा, गिरी छुहारा, आप लदावण आयोरे ॥
६.भिलणी काँई थारी भुवा लागे, ज्याँ रो जूठण खायो रे ।
ऊँच-नीच की काण न मानी, रूच रूच भोग लगायो रे ॥
७.करमा काँई थारी भुवा लागे, ज्याँ रो खीचड़ खायो रे ।
धाबलिया रो पड़दो करती, रुच रुच भोग लगायो रे ॥
८.मीरा काँई थारी मासी लागे, जिणरा संकट टार्‌यो रे ।
राणो विष रो प्यालो भेज्यो, विष अमृत कर डार्‌यो रे॥
९.बाळ भोग को भूखो रे बाळा, कोस खा गयो बोर रे ।
नानी बाई रो माहेरो भरतो, थने आवे जोर रे ॥
१०.जीमण रो जिमणारो रे बाळा फिर फिर सार्‌यो काम रे ॥
नानी बाई को माहेरो भरतां घर का लागे दामरे ॥
११.कह नरसीड़ो सुण साँवरिया, आणो ह तो आव रे ।
ब्याही-सगाँ में भूँडा बाजाँ, यूँ काँई लाज गमावे रे॥

-:०:-

आज प्रभु तेरी आस है, कल भी तेरी आस ।
आस तिहारी निश दिना, छह ऋतु बारह मास ॥

भजन ६३ (राग: भीम पलास, तर्ज: नन्दलाल गोपाल दया करके)

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ॥ टेर ॥

१.है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ॥
मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥ अब ॥

२.जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथों में ॥ अब ॥

३.यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूँ
इस पूजक की इक इक रग का हो, तार तुम्हारे हाथों में ॥ अब ॥

४.जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, सरकार तुम्हारे हाथों में ॥ अब ॥

५.मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में ॥ अब ॥

भजन ६४ (तर्ज: दशा मुझ दीन की भगवन)

मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे तो रूठन दे ॥ टेर ॥

१.कुटुम्ब परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकन की ।
प्रभु का भजन करने से, अगर छूटे तो छूटन दे ॥ मुझे ॥

२.बैठ संगत में संतन की, करूँ कल्याण मैं अपना ।
लोग दुनिया के भोगों में, मजे लूटे तो लूटन दे ॥ मुझे ॥

३.प्रभु का ध्यान करने की, लगी दिल में लगन मेरे ।
प्रीत संसार विषयों से अगर, टूटे तो टूटन दे ॥ मुझे ॥

४.धरी सिर पाप की गठरी, मेरे गुरुदेव ने झटकी ।
वो ब्रह्मानन्द ने पटकी, अगर फूटे तो फूटन दे ॥ मुझे ॥

-:०:-

वृन्दावन की कुंज में मुक्ति रही बिलमाय ।
उड़ उड़ रज मस्तक चढे तेरी सहज मुक्ति हो जाय ॥

भजन ६५ (कव्वाली)

मस्ती में हमारी भी जो परवा नहीं करते ॥ टेर ॥
हम उनकी खुशी के लिए क्या क्या नहीं करते ॥
१.हक उनको ये हासिल है हुकूमत करें हम पर ।
हम उनकी गुलामी का भी दावा नहीं करते ॥ मस्ती ॥
२.हम उनकी मनाते हैं जो हर बात में हम से ।
लड़ कर भी ये कहते हैं कि बेजा नहीं करते ॥ मस्ती ॥
३.दुनियाँ के जो परदे से भी बेपरदे हैं उनसे ।
हम पर्दानशीं होके भी परदा नहीं करते ॥ मस्ती ॥
४.दृग बिन्दु की जंजीर पिन्हाते हैं जो हमको ।
हम उनको नजर कैद से निकला नहीं करते ॥ मस्ती ॥

भजन ६६ (राग: दरबारी)

श्याम तोरी नेह नगरिया न्यारी,
बाहर से कछु देखि परत नहिं भीतर शोभा भारी ॥ टेर ॥
१.कहन सुनन में सुखद मनोहर सब सुख साज सँवारी ।
जापै कोउ सहन चहै तो बाकी अति ही विषम कटारी ॥ श्याम ॥
२.तन के नयन लखें तो भांसे अति सूनी अंधियारी ।
मन के नयन लखें तो भांसे कोटि भानु उजियारी ॥ श्याम ॥
३.योगीजन रो जहँ नाहीं ज्ञानिन की मति हारी ।
तहाँ बिहार करत निशि बासर गोकुल को पनिहारी ॥ श्याम ॥
४.भीतर पवन रात दिन सु लगे बिरहनाल विनगारा ।
बाहर दोऊ दृग बरसत है प्रेम बिन्दु जल झारी ॥ श्याम ॥

-:०:-

आगाह हो अपनी मौत से, कोई बसर नहीं
सामान सौ वर्ष का है, पल की खबर नहीं ॥

भजन ६७

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ॥ टेर ॥
गोविन्द नाम लेकर , तब प्राण तन से निकले ।

१.श्री गंगाजी का तट हो, जमुना या वंशीवट हो ।
वह साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

२.सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पे काली लट हो ।
तेरा ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

३.वह साँवरा खड़ा हो, बंशी का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

४.जब प्राण कण्ठ आवे, कोई रोग ना सतावे ।
नहीं त्रास यम दिखावे, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

४.मेरे प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुख से, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

५.सुधि होवे नाहीं तन की, तैयारी हो गमन की ।
लकड़ी हो वृन्दावन की, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

६.श्री वृन्दावन का स्थल हो, विष्णु चरण का जल हो ।
मेरे मुख में तुलसी दल हो, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

७.निकले ये प्राण सुख से, प्रभु नाम निकले मुख से ।
बच जाऊं घोर नरक से, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना ॥

-:०:-

कहे दास संगराम, सुनो चौधरीया जाटां
गरीबां ने सतायां नहीं छुटोला न्यटां
न्हान स्युं छुटी-ही पड़स्यो नरकां कुंड
कीडा चूटे चामडो जम कुटेला गूंड
जम कुटैला मुंड कपट की छोड़ो गाठां
कहे दास संगराम, सुनो चौधरीया जाटां

भजन ६८

प्रेमी बनकर प्रेम से ईश्वर के गुण गाया कर
मन मन्दिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया कर ॥ टेर ॥

१.सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा ।
इसी तरह बरबाद जिन्दगी, करता अपनी आप रहा ।
प्रातः समय उठ ध्यान से, सत्संगत में जाया कर ॥ प्रेमी ॥

२.नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं ।
जनम-जनम के शुभ कर्मो का, होता जब तक मेल नहीं ।
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर ॥ प्रेमी ॥

३.पास में तेरे दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या ।
भूखा प्यासा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या ।
पहले उसको पूछ कर फिर से भोजन पाया कर ॥ प्रेमी ॥

४.ईश्वर को तू भूल गया है, जिसने तुझ को जन्म दिया ।
मन में अपने सोच प्रभु ने, कितना ही कल्याण किया ।
मोहमाया को भूल कर प्रभु से प्रीत लगाया कर ॥ प्रेमी ॥

भजन ६९ (राग: दरबारी)

मैं नित भगतन हाथ बिकाऊँ
आठों याम हृदय में राखूँ पलक नहीं बिसराऊँ ॥ टेर ॥

१.कल न परत बैकुंठ बसत मोहि, जोगिन मन न सलाऊँ ।
जहाँ मम भगत प्रेमजुत गावहिं तहाँ बसत सुख पाऊँ ॥ मैं नित ॥

२.भगतन की जैसी रूचि देखूं तैसो वेष बनाऊँ ।
टारूं अपने वचन भगत लगि, तिनके वचन निभाऊँ ॥ मैं नित ॥

३.ऊंच नीच सब काज भगत के, निज कर सकल बराऊँ ।
पद धोऊँ, रथ हाँकू,बासन मांजू , छानि छवाऊँ ॥ मैं नित ॥

४.माँगू नाहि दाम कछू तिनते, नहिं कछु तिनहि सताऊँ ।
प्रेम सहित जल, पत्र, पुष्प, फल, जो देवे सो खाऊँ ॥ मैं नित ॥

५.निज सरबस भगतन को सौंपू, अपनी स्वत्व भुलाऊँ ।
भगत कहै सोइ करूँ निरंतर बेचैं तो बिक जाऊँ ॥ मैं नित ॥

भजन ७० (राग: दरबारी)

प्रभू म्हारे मन मंदिर में पधारो
म्हारो स्वागत नाथ सिकारो प्रभू ॥ टेर ॥

१.करूँ पूजन प्राण पिया रो, प्रभू म्हारे मन मंदिर में पधारो
चिन्मय नै पाषाण बनाऊँ , ओ परिचय जडता रो
स्वयं अमल अविकार प्रभू तो, स्नान करांऊ क्यां रो ॥ प्रभू ॥

२.फल फूलाँरी भेंट करूँ के, जीवन अर्पण म्हारो
अगर, नगर, चंदन के, जीवन अर्पण म्हारो ॥ प्रभू ॥

३.नहीं ताल कंसाल बजाऊं, धूप न दीप उजारो
केवल लय मय स्तवना गाऊं, ध्याऊँ ध्यान गुणारो ॥ प्रभू ॥

४.मन चन्द्र हो और मलिन है, ओ है ढीढ धुतारो
सब कुछ है तब ही तो, संकण दृष्टि निहारो ॥ प्रभू ॥

५.प्रवीत राग हो प्रिय दर्शी हो, समता रस सनारो
तुलसी तारण तरण तीरथपात, अपणो विरुद्ध किनारो ॥ प्रभू ॥

भजन ७१ (राग: भैरव)

राम तेरी रचना अचरज भरी, जाको वर्णन कर सब हारी ॥ टेर ॥

१.जल की बूंद से देह बनाई, तामे नर अक नारी
हाथ पाँव सब अंग मनोहर, भीतर प्राण संचाई ॥ राम तेरी ॥

२.नभ में नभचर जीव बनाये, जल में रचे जलचारी
वृक्ष लता बन पर्वत सुंदर, सागर की छवी न्यारी ॥ राम तेरी ॥

३.चांद सूरज दोऊ दीपक कीने, रात दिवस उजियारी
तारा गण सब फिरत निरंतर, चहूं दिशी पवन सवारी ॥ राम तेरी ॥

४.ऋषी मुनि निश दिन ध्यान लगावे,लखन सके गत सारी
ब्रह्मानन्द अनंत महाबल, इश्वर शक्ति तुम्हारी ॥ राम तेरी ॥

-:०:-

राम नाम मनि दीप धरूं , जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बारेहु जो चाहसि उजियार ॥

भजन ७२ (राग: भैरव)

हरि तेरे चरणन की हूं मैं दासी ॥ टेर ॥
मेरी काटो जनम केरी फांसी ॥

१.ना जावुं मथुरा, न गोकुल ना जावु मैं काशी
मोहे भरोसे एक तु मारो दीन बन्धु अविनाशी ॥ हरि तेरे ॥

२.कोई वरत कोई नेम करत है, कोई रहे वन वाशी
मैं चरणन को ध्यान लागवुं सबसे होय उदासी ॥ हरि तेरे ॥

३.नहि विद्या बाहुबल मेरे, नहि संचय धन राशी
शरणागत मोहे जान दयानिधि राखिये चरणन पासी ॥ हरि तेरे ॥

४.नहिं मैं राज पाट कछु मांगु, नहिं सुख भोग विलासी
ब्रह्मानंद शरण में तुम्हारी, केवल दरस पीयासी ॥ हरि तेरे ॥

भजन ७३ (राग: भैरव)

नाथ तेरी माया जाल बिछाया,जामें सबजग फिरत भुलाया ॥ टेर ॥

१.कर निवास नौ मास गर्भ में, फिर भूतल में आया
खान पान विषया रस भोगन, मात पिता सिखलाया ॥ नाथ॥

२.घर में सुन्दर नारी मनोहर, देख देख ललचाया
सुन सुन मीठी बात सुतन की, मोहपाश में फंसाया ॥ नाथ ॥

३.गृह काजन में निशदिन फिरते, सकलो जन्म बिताया
आशा प्रबल भी मन भीतर, निर्बल हो गई काया ॥ नाथ॥

४.पाप पुण्य संचयकर पुन पुन, स्वर्ग नरक भटकाया
ब्रह्मा नंद कृपा बिन तुमरी मोक्ष नहीं कोई पाया ॥ नाथ॥

-:०:-

बिगरी बात बने नहीं ,लाख करो किन कोय
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ॥

भजन ७४ (राग: भैरव)

ऊधो मुझे संत सदा अति प्यारे,जा की महिमा वेद उचारे ।। टेर ।।

१.मेरे कारण छोड़ जगत के, भोग पदारथ सारे
निशदिन ध्यान धरे हिरदे में, सब घर काज बिसारे ।। ऊधो ।।

२.मैं संतन के पीछे जावूँ , जहाँ जहाँ संत सिधारे
चरणन रज निज अंग लगावुं शोघुं गात हमारे ।। ऊधो ।।

३.संत मिलें तब मैं मिल जावुँ, संत न मुझ से न्यारे,
बिन सत संग मुझे नहि पारे, कोटि जतन कर डारे ।। ऊधो ।।

४.जो संतन के सेवक जल में, सो मुझ सेवक भारे
ब्रह्मा नंद संत जन पल में सब भव बंधन टारे ।। ऊधो ।।

भजन ७५ (तर्ज: मेरे मालिक की दुकान में)

जो भजते मुझे भाव से मैं उनका ही बन जाता ।। टेर ।।

१.बिना भाव से खूब पुकारे कभी नहीं मैं आता
भाव भरी सुनु टेर भक्त की मुझसे रहा न जाता ।। जो भजते ।।

२.शुद्ध हृदय हो अनन्य मनसे मेरा ध्यान लगाता
उनके सारे योग क्षेम को मैं ही स्वयं चलाता ।। जो भजते ।।

३.सब कुछ कर दे भेंट, भाव बिन मैं नही नजर उठाता
करता हूँ स्वीकार, भाव से, जो एक फूल चढ़ाता ।। जो भजते ।।

४.मुझे नहीं परवाह वस्त्र की नही अन्न धन चाहता
जो मेरा बन गया हृदय से, उसको मैं अपनाता ।। जो भजते ।।

५.कैसा भी दोषी हो मेरा, मैं नहीं कभी रीसाता
जो करता अपराध भक्त का, मुझ को नहीं सुहाता ।। जो भजते ।।

६.जो मेरी शरणागत आवे, आवागमन मिटाता
भागीरथ आश्रय ले हरि का, क्यों इत उत भटकाता ।। जो भजते ।।

भजन ७६ (राग: मालकोंस)

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे ॥ टेर ॥
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि हो गई दासी रे ॥ पग॥

१.लोग कहै मीरा हो गयी बावरी, सास कहे कुल नासी रे ॥ पग॥

२.जहर का प्याला राणा ने भेजा, विष पिवत मीरा हांसी रे ॥ पग॥

३.मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बेग मिलो अविनाशी रे ॥ पग॥

भजन ७७ (तर्ज: म्हारा हरिया बनडा सुवटिया)

न जाने क्या क्या भरा हुवा, सरकार आपके नयनो में ॥ टेर ॥

१.शूचि ज्ञान ध्यान वैराग्य भरा, अनुराग भरा सब साज भरा
गहराई से ब्रह्माण्ड भरा, महाराज आपके नयनों में ॥ न जाने ॥

२.है प्रेम दया की मौज भरी, अमृत की निशदिन लगी झरी ।
जनके तारन की उमंग भरी, सुखसार आपके नयनों में ॥ न जाने ॥

३.इन नयनों से हैं जन तारे, तुम धनुर्दास को उद्धारे ।
निर्हेतुक बाना भरा हुवा, श्रीकान्त आपके नयनों में ॥ न जाने ॥

४.जन लक्ष्मण देख दिवाना है, उद्धार करन का बाना है ।
रस मधुर मधुर है भरा हुवा, रंगेश आपके नयनों में ॥ न जाने ॥

भजन ७८ (तर्ज: सखि वृन्दाबन की कुंज में)

सखी चलो सजन के देस जोगन बन धुनी डालेंगी ॥ टेर ॥

१.नैनन के बँगले में उन्हे शैनन से बुला लेंगी,
कोई पलकन की चितचोर पिया को पुतली में छिपा लेंगी ॥ सखी ॥

२.अश्रु बिंदु जल सींच प्रेम से चरण पखारेंगी,
शीतल मन्द सुगंध पवन प्राणों से धुलावेंगी ॥ सखी ॥

३.अष्ट कमल दल बिछा सेज सुख मन की सजावेंगी,
अनहद बाजे बजे पिया को मस्ती में सुलावेंगी ॥ सखी ॥

४.शम्भु सखी युगल चरणन की सेवा जो पालेंगी,
ग्यान योग बैराग मोद भर गोद खिलावेंगी ॥ सखी ॥

भजन ७९

म्हाने चाकर राखो जी
सांवरा गिरधारी म्हाने चाकर राखो जी ।। टेर ।।
१.चाकर रहस्या बाग लगास्याँ, नित उठ दर्शन पास्याँ
वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द का गुण गास्याँ ।। म्हाने ।।
२.चाकरी में दर्शन पावाँ, सुमरिन पावाँ खरची
भाव भक्ति जागीरी पावाँ, तीनूँ बाताँ सरसी ।। म्हाने ।।
३.मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजन्ती माला
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ।। म्हाने ।।
४.ऊँचा ऊँचा महल चिनावाँ, बिच बिच राखाँ बारी
सांवरिया का दर्शन पावाँ, पेर कसुमल साड़ी ।। म्हाने ।।
५.जोग करण न जोगी आया तप करने सन्यासी ।
हरि भजन न साधू आया, वृन्दावन का वासी ।। म्हाने ।।
६.मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हृदय राखो धीरा
अर्द्ध रात प्रभु दर्शन दीज्यो, प्रेम नदी के तीरा ।। म्हाने ।।

भजन ८० (रसिया)

तो से अरज करूँ साँवरिया, मोसै मन नहीं जीत्यो जाय ।। टेर ।।
१.मन मेरा यह चंचल भारी, छिन-छिन लेवे राड़ उधारी ।
तोड़ फेंक दे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय ।। तो से ।।
२.मन मेरा यह चंचल घोड़ा, सत्संग का मानत नहीं कोड़ा ।
ज्ञान ध्यान का लस्कर तोड़ा, पल-पल में हिन हिनाय ।। तो से ।।
३.मन हाथी नहीं काबू मेरे, न्हाय धोय सिर धूल बखेरे ।
महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहीं भय खाय ।। तो से ।।
४.कैसे राखूँ मन को बस में, मन कर रक्खा मुझको बस में ।
तुलसी का मन विषय कुरस में, पल-पल में ललचाय ।। तो से ।।

भजन ८९ (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो रे शरीर)

मैं तो हूँ भगतन को दास, भगत मेरे मुकुट मणी ।। टेर ।।

१.मौकूं भजे भजू मैं उनको हूं दासन को दास ।
सेवा करे करूं मैं सेवा, हो सच्चा विश्वास ।
यही तो मेरे मन में ठणी ।। मैं तो हूँ।।

२.जूठा खाऊँ गले लगाऊँ नहीं जाति को ध्यान ।
आचार विचार कछु नहीं देखूं, देखूं मैं प्रेम-सम्मान
भगत-हित नारि बणी ।। मैं तो हूँ।।

३.पग चाँपू और सैज बिछाऊँ नौकर बनूँ हजाम ।
हाँकू बैल बनूँ गडवारी, बिन तनखा रथवान ।
अलख की लखता बणी ।। मैं तो हूँ।।

४.अपनो प्रण बिसार भक्त को पूरो पूरण निभाऊँ ।
साधू जाचक बनूँ कहे सो, बेचे तो बिक जाऊँ ।
और क्या कहूँ घणी ।। मैं तो हूँ।।

५.गरूड़ छोड़ बैकुण्ठ त्याग के, नंगे पाँवों धाऊँ ।
जहाँ-जहाँ भीड़ पड़े भक्तों में, तहाँ-तहाँ दौड़ा जाऊँ ।
खबर नहीं करूँ अपणी ।। मैं तो हूँ।।

६.जो कोई भक्ति करे कपट से उसको भी अपनाऊँ ।
साम, दाम और दण्ड भेद से, सीधे रस्ते लाऊँ ।
नकल से असल बणी ।। मैं तो हूँ।।

-:०:-

बुद्धि बड़ी चतुराई बड़ी, मन में ममता अतिसय लिपटी है।
ज्ञान बड़ी धन धाम बड़ी, करतूल तड़ी जग में पलटी है ।
गज बाजी हूँ द्वार मनुष्य हजार, तो इन्द्र समान में कौन घटी है ।
सो सब विष्णु की भक्ति बिना, मनो सुन्दर नारि की नाक कटी है॥

भजन ८२ (श्री लक्ष्मीनरसींह वृतांत)(रसिया)

देखो मतलब को संसार, जगत में राम नाम एक सार ।। टेर ।।

१.चौ.हिरणाकुश शिव को वरदानी, माँग लई निर्भय जिन्दगानी,
लगे चाहे तेग तीर तलवार, सेन की अनी होय नहीं पार,
मरूँ घर माय न विकट उजार, उजले मरूँ न घोर अँधकार ।
दोहा: बारह महीना ना मरूँ, मरूँ नहीं दिन रैन
विश्व भर में आपसे, यह वर आयो लेन ।।
देख तपस्या हिरणाकुश की, वर दीनों त्रिपुरार ।। देखो ।।

२.चौ.जब प्रहलाद जनम घर लीनो, वंश उजागर अपनो कीनो,
पढन को जाय रहे चटसार, बिलाई रोवत बारम्बार,
लगे जो पुछन राजकुमार, बिलाई कहे पुकार पुकार
दोहा : अबा माटी बच्चा मेरे, भये अग्नी में बंद
वही सहायक होयेंगे, करुणा सिंधु मुकुन्द
और न कोई जग में मेरो, राम बचावन हार ।। देखो ।।

३.चौ.सुन के वचन अबा खुलवायें, बच्चन ने तब शब्द सुनाये,
बचाई बच्चन की प्रभु जान, अग्नि ते राख लिये भगवान
भयो प्रहलाद भगत को ग्यान, ज्ञान को लग्यो हृदय में बान
दोहा: राम नाम लेते गये, पँहुच गये चटसार
राम नाम चट्टान पे, लिख बाँच्यो हर बार
देख राम को नाम गुरु ने बहुत दई फटकार ।। देखो ।।

४.चौ.पकड कुँअर राजा ढिंग लाये, हिरणाकुश को वचन सुनाये,
दई इन सब चटसार बिगार, कहे तब हिरणाकुश ललकार,
मती बैरी को नाम उचार, मति तु कुल की रीत बिसार,
दोहा: जब बोले प्रहलाद जी, सुनो पित चित लाय,
यह पढ़ना छोडुँ नहीं प्राण रहे चाहे जाय ।।
नहीं जगत से काम, मेरे तो राम नाम आधार ।। देखो ।।

५.चौ.राजा ने जल्लाद बुलाये, परबत पे ते कुँअर गिराये,
लई जिण राम नाम की ओट, मरे नहीं दियो जहर बिष घोट,
होरिका बनी अग्नि की कोर, गिरे परवत से लगी न चोट
दोहा: कृपा करे भगवान जब विष अमृत हो जाय
बचे कुँअर जी जहर से, सूली दिये चढाय ।।
सुली सेज भई फुलन की, लगी न पैनी धार ।। देखो ।।

६.चौ.भुपती ताते खम्ब कराये, जब प्रहलाद खैंच बँधवाये
म्यान ते काढ़ खडग लियो धार, बता प्रहलाद कहाँ तेरो राम,
करूँ मैं तेरो काम तमाम, छोड बैरी को अबहुँ नाम
दोहा : मोमें तोमें खडग में, रहयो खम्ब में व्याप्त,
टेर सुनी प्रहलाद की, प्रकट भये प्रभु आप
खम्ब फाड़ नरसिंह रूप धर, मारी तब हुँकार ।। देखो ।।

७.चौ.नाय घर माही नाहीं छत आँगन पर
बीच देहरी रख लियो जाँघन पर
नखन से डारयो उदर बिदार, लियो प्रहलाद भक्त निस्तार,
सात पीढी गई स्वर्ग सिधार, प्रभु की लीला अपरम्पार
दोहा : लीला अपरम्पार है, को कवि कहे बनाय,
जैसी जा की भावना, वैसी करे सहाय
घासीराम नाम के उपर, छीतरमल बलिहार ।। देखो ।।

भजन ८३ (राग: दरबारी)

भजो रे मन प्रेम सहित सत नाम ।। टेर ।।

१.जग माया का स्वप्न तमाशा झूठा खेल तमाम ।
आज पड़ा है सब कुछ अपना कल आवे नही काम ।। भजो रे ।।

२.जा दिन तार कटे श्वासा का, छोड चले धन धाम ।
बैठ चलो मन शब्द तुरंग पर पकड़ो सूरत लगाम ।। भजो रे ।।

३.जाय बिराजे शून्य शिखर पर लखले अलख अनाम ।
प्रेमनाथ कहे मस्त रहो मन हर दम आठो याम ।। भजो रे ।।

भजन ८४ (राग: मांड)

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ।। टेर ।।

१.दल बल के साथ माया, घेरे है मुझको आके
तुम देखते न रहना, बस आ के बचा लेना ।।भगवान मेरी ।।

२.बनकर के मोर मोहन, नाचा करेंगे वन में
तुम श्याम घटा बनकर, मेघों में रमा करना ।।भगवान मेरी ।।

३.बनकर के हम पपीहा, पिहु पिहु रटा करेंगे
तुम स्वाती बून्द बनकर, प्यासों पे दया करना ।।भगवान मेरी ।।

४.हम राधेश्याम मोहन, तुम को ही निहारेंगे
तुम दिव्य ज्योति बनकर, नयनों में रमा करना ।।भगवान मेरी ।।

भजन ८५ (लावणी)

कुण जाण या माया श्याम तेरी अजब निराली रै,
यो त्रिलोकी को नाथ जाट को बणगयो हाली रै ॥ टेर ॥

१.सौ बीघा मं खेत जाट को, राम भरोसे खेती रै,
आधा मं बोया गेहुं चणा, आधा मं दाणा मेथी रै,
बिना बाड़ को खेत जाट क राम रुखाली रै ॥ यो त्रिलोकी को ॥

२.भूरि भैंस चिमकणी जाट क, दो भेली दो न्यारी रै,
बिना बाड़ को बाड़ो जाट क, बांध न्यारा न्यारा रै,
चोर आवै और चक्कर लगावै जावै खाली रै ॥ यो त्रिलोकी को ॥

३.जाट जाटणी सुख सुं सोवै, सोवै टाबर टोली रै,
श्याम धणी क पहरा मं या, कैयाँ होवै चोरी रै,
चोर आवै और ऊबो दीख, जावै खाली रै ॥ यो त्रिलोकी को ॥

४.बाजरै की रोटी खावै, ऊपर घी को लचको रै,
पालक की तरकारी सागै, भर मूली को बटको रै,
छाछ राबड़ी का करै कलेवा, भर भर थाली रै ॥ यो त्रिलोकी को ॥

५.नामदेव को छपरो छायो, लक्ष्मी बन्ध खिचायो रै,
चेजारो बण चिणबा लाग्यो, हाथां गारो ल्यायो रै,
चोबारो चिण तालो जड़ दियो, ले गयो ताली रै ॥ यो त्रिलोकी को ॥

६.सोहनलाल लुहार श्याम यो घर भगतां क आवै रै,
धाबलिया क पड़दा की ओट म, श्याम खीचड़ो खावै रै,
भगतां क संग नाचै गावै, दे दे ताली रे ॥ यो त्रिलोकी को ॥

-:०:-

गजब की बाँसुरी बजती है वृन्दावन बसईया की ।
करूँ तारीफ मुरली की या मुरलीधर कन्हैया की ॥

भजन ८६ (हरियाणा)

हे भगवान तेरी माया का कोनी पायो बेरा ।
राजा न कंगाल बणा दिया निर्धन न धन देरा ॥ टेर ॥

१.एक समय की कहूं बारता, बात नहीं से झूठी,
नलराजा मं भिका पडा जद हार निंगल गई खूंटी,
अर्जुन योधा भीमसेन को, जाय गोपियाँ लुटी,
शक्ति लगी जब लक्ष्मणजी को, हनुमत लाया बूटी
जै हनुमत संग में नहीं होता, तो होता घोर अंधेरा ॥ हे भगवान ॥

२.राजाओं में राजा होलिया, हुवै हरिशचन्द्र दानी,
महल अटारी छोड़ भूप न, तजदी भोम बिरानी,
काशीजी मं जाकर बिकगे, संग में लड़का रानी,
जगह मिली जब नहीं भूपनै, भरा नीच घर पानी,
नगरी तो बैकुंठ न चाली, दिया धरम न धेरा ॥ हे भगवान ॥

३.भक्तों में एक भगत होलिया, हुवा भगत एक नरसी,
महल अटारी छोड़ भक्त ने, बाहर लगा लेई सरकी,
माला तो तुलसी की लेली, लेली माला हर की,
जैसे माला फिरै भक्त की, जैसे फिरती चरखी,
जा बेटी का भात भर्‌या जद, दान दिया बहुतेरा ॥ हे भगवान ॥

४.कर्म रेखा टाली नहीं टलती, लाख करो चतुराई,
दो दिन आगै पाछे भाइयों, सबकी होत सुणाई,
पाप रूप न घोले र भाई, सतसंग गंगा माई,
पाप रूप धोवण की खातिर, संत रूप बनवाई,
कह लखमीचंद आज्या भवानी, दर्शन कर ल्यु तेरा ॥ हे भगवान ॥

-:०:-

जहाँ चलता न था कुछ काम तीरों से कमानों से ।
विजय नटवर की होती थी वहाँ मुरली की तानों से ।।

भजन ८७ (राग: पहाड़ी)

बंगला मेरा ऐसा बना दो भगवान जामे सारी उमर कट जाय
जामे सारो बुढ़ापो कट जाय ।। टेर ।।

१.यमुना किनारे बृन्दावन में मोहन कदमों के नीचे
ब्रिज रज से यमुना जल साजो उसकी भीत डला कर के
लता पता से बंगला छाजो मोहन जरा दया कर के
दरवाजे पर राधा लिख दो मोहन लिख दो किवाड़ ।। बंगला ।।

२.भाव भक्ति से भरा हुवा उस बंगले में एक आला हो
राधा रूकमण उस में बैठे सखियाँ भी संग में होवे
बाँके बिहारी की होवे आरती लुक छिप झलक दिखाय ।। बंगला ।।

३.बंगले के द्वार पे मोहन तुलसी और केला होवे
गेंद गुलाब के फूल खिले और कदमों की छाय्या होवे
उन फूलों का हार बनाऊँ जब इच्छा पुरी होवे
राम सखी कहे तुमको मोहन अपने हाथो से हार पहनाऊँ ।। बंगला ।।

४.अमावस पुनम उस बँगले में संतों की सेवा होवे
लड्डु कचोरी का भोग लगे ओर मालपुवा हलवा होवे
भर भर दोना सब को बाँटू तब इच्छा पुरि होवे
भक्त और भगवान पावें जूठन मोहे मिल जाय ।। बंगला ।।

५.अषाढ में मेह जोर को बरसे मोहन बँगले में छुपना
सावन रक्षा बंधन होवे बँगले में राखी बँधवाना
भादव मे तेरी सालगिरह है बँगले में ही टीका कडवाना
आसोज महिने शरद पुनम है बँगले में रास रचाना ।। बंगला ।।

-:o:-

बिरहिन जलती देख के, साईं आवै धाय ।
प्रेम बूंद से सींच के, तन में लेय मिलाय ।।

भजन ८८ (राग: भैरव)

हरि अपार तेरी माया, कोई तेरा पार न पाया ।। टेर ।।

१.ब्रह्माजी ने सृष्टि बना कर, चार वेद दर्साया ।
चारों मुख से गाकर थक गये, नेति नेति समझाया ।। हरि अपार ।।

२.शंकरजी से योग क्रिया करि, ध्यान अखंड लगाया ।
रूप मोहिनी देख के तेरा, पागल बनकर माया ।। हरि अपार ।।

३.नारद को जब काम जीत का, नव अभिमान समाया ।
लपट गई बस माया तेरी, बानर रूप बनाया ।। हरि अपार ।।

४.दुर्वासा को तप का अपने, अंहकार मन आया ।
चक्र सुदर्शन पड़ा है पीछे, तीन लोक भरमाया ।। हरि अपार ।।

५.ज्ञानी ध्यानी तपसी योगी, सुर नर असुर निकाया ।
जिसने थाह लगाना चाहा, उसी ने गोता खाया ।। हरि अपार ।।

६.रटे प्रेम से नाम भक्त जो, वही भेद कुछ पाया ।
वही बचा है तेरी माया से, प्रेम नाथ गुण गाया ।। हरि अपार ।।

भजन ८९ (राग: यमन)

गजब का दावा है पापियों का अजीब जिद पर सम्हल रहे हैं ।। टेर ।।
उन्हीं से झगडे पर तुल रहे हैं कि जिनसे त्रिलोक पल रहे हैं ।।

१.ये कह रहे है कि श्याम सुन्दर अधम उधारन बने कहाँ से ।
खिताब हमसे ही नाथ लेकर हमी से फिर क्यों बदल रहे हैं ।। गजब ।।

२.गरीब अधमों के तुम हो प्रेमी ये बात मुद्दत से सुन रहे हैं ।
इसी भरोसे पे तुमसे भगवन झगड़ रहे हैं, मचल रहे हैं ।। गजब ।।

३.हमारा प्रण है कि पाप कर लें तुम्हारा प्रण है कि पाप हर लें ।
तुम अपने वादे से टल रहे हो हम अपने वादे पे चल रहे हैं ।। गजब ।।

४.नहीं है आँख की अश्रु धारा तुम्हारी उल्फत का ये असर है ।
पड़े थे पापों के दिल में छाले वो बिन्दु बनकर निकल रहे हैं ।। गजब ।।

भजन ९०

यूं अगर आप मोहन मुकर जायेंगे ।
तो भला हमसे पापी किधर जायेंगे ॥ टेर ॥

१.अब तरेंगे नहीं तो ये सच जानिये ।
आपका नाम बदनाम कर जायेंगे ॥ यूं अगर ॥

२.चाहते कुछ हो रिश्वत, तो है क्या यहाँ ।
हाँ गुनाहों से भण्डार भर जायेंगे ॥ यूं अगर ॥

३.थी जो नफरत तो घर में बिठाया ही क्यों ।
जाय सर गैर के अब न घर जायेंगे ॥ यूं अगर ॥

४.है यह की बिन्दु गर चश्मे तर से बहे ।
तो तुम्हें करके तर खुद भी तर जायेंगे ॥ यूं अगर ॥

भजन ९१ (राग: मांड)

मेरे राम मुझे अपना लेना, दुखी दीन को दास बना लेना ॥ टेर ॥

१.ठोकरें खाई बहुत झूठे जगत के प्यार पर,
इसलिये आये हैं सीतापति तुम्हारे द्वार पर,
अब मुझे तारो न तारो यह तुम्हारे हाथ है,
जो न तारोगे तो बदनामी तुम्हारे हाथ है,
जरा नाम की लाज बचा लेना ॥ मेरे राम मुझे ॥

२.नीच गणिका गज अजामिल की खबर ली आपने,
भक्ति द्वारा भीलनी की मुक्ति कर दी आपने,
भक्त कितने आप पर जीवन निछावर कर गये,
नाम लेकर आपका पापी हजारों तर गये,
उन्ही अधमों के साथ मिला देना ॥ मेरे राम मुझे ॥

३.काम क्रोधादिक लुटेरों का हृदय में वास है ,
पातकों का बोझ है अधमों की संगति पास है,
पवन माया की चली है भ्रम भँवर है साथ,
बीच भव सागर में बेडा बिन्दु का बहता है नाथ,
मुझे धार के पार लगा देना ॥ मेरे राम मुझे ॥

भजन ९२

अधमों का नाथ उबारना, तुम्हें याद हो न याद हो ।
मद खल जनों का उभारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ टेर ॥

१.प्रहलाद जब मरने लगा खंजर पर सिर धरने लगा ।
उस दिन का खम्भ विदारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ अधमों ॥

२.धृतराष्ट्र के दरबार में, दुःखी द्रोपदी की पुकार में ।
साड़ी के थान सवाँरना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ अधमों ॥

३.सुरराज ने किया जो प्रलय, व्रजधाम बसाने के समय ।
गिरवर नखों पर धारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ अधमों ॥

४.दृग बिन्दु जिनके निराश हो केवल तुम्हारी आश हो ।
उनकी दशा सुधारना, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ अधमों ॥

भजन ९३

मुझसे अधम अधीन उबारे न जायेंगे ।
तो आप दीन बन्धु पुकारे न जायेंगे ॥ टेर ॥

१.जो बिक चुके हैं और खरीदा है आपने ।
जब बस गुलाम गैर के द्वार न जायेंगे ॥ मुझसे ॥

२.पृथ्वी से भार आपने सौ बार उतारे ।
क्या मेरे पाप उतारे न जायेंगे ॥ मुझसे ॥

३.खामोश हुआ मैं भी अगर आप यह कह दें ।
तब तक न चरण आपके संतोष पायेंगे ।
दृग बिन्दु से जब तक ये पंखारे न जायेंगे ॥ मुझसे ॥

-:०:-

नारी आवे बल के भये, दाऊ कुल होत विनाश
कौरव पांडव वंश को कियो द्रोपदी नाश
कियो द्रोपदी नाश कैकई दशरथ मारे
राम लखन से पूत दोऊ बनवास सिधारे
कहे गिरधर कविराय, रहे कुल सहा दुखारी
वे घर सत्यानाश जहाँ है अति बल नारी ॥

भजन ९४ (रसिया)

मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता चाहे कर लो कोटि उपाय ।। टेर ।।

१.मिलें न जमुना सरस्वती में मिले न गंगा नहाय।
प्रेम सरोवर में जो डूबे, प्रभु की झलक लखाय ।। मोहन ।।

२.मिले न पर्वत में निर्जन में मिले न ध्यान लगाय।
प्रेम बाग में घूमे तो हरि को ले घट में पधराय ।। मोहन ।।

३.मिले न पण्डित को ज्ञानी को मिलै न ध्यान लगाय ।
ढाई अक्षर प्रेम पढ़े तो नटवर नयन लखाय ।। मोहन ।।

४.मिले न मन्दिर में, मूरत में मिले न अलख जगाय ।
प्रेम बिन्दु दृग से टपके तो तुरंत प्रगट हो जाय ।। मोहन ।।

भजन ९५ (रसीया)

झीनी झीनी प्रेम की डोरी, मो से तोड़ी न छोड़ी जाय ।। टेर ।।

१.साँकल होय तो तोरी दिखाऊँ, खम्ब होय तो फारी दिखाऊँ ,
धनुष होय तो तोरुँ छिन में, प्रीत न तोड़ी जाय ।। झीनी ।।

२.अग्नि होय तो, मैं पी जाऊँ, पर्वत होय तो धारी बताऊँ,
सागर होय तो बाँध बताऊँ
तीन लोक लेऊँ नाप चरण सों, प्रीत न नापी जाय ।। झीनी ।।

३.बीस भुजा छिन माहीं उताँरूँ , सहस्त्रबाहु को काटी मैं डारूँ
चर्र चीर हिरणाकुश मारूँ
भोंह मरोर उलट दऊँ, सृष्टि प्रीत न उलटी जाय ।। झीनी ।।

४.भोग चाहे तो भोग दे डारूँ, योग चाहे तो योग दे डारूँ ,
मुक्ति चाहे तो मुक्ति दे डारूँ
भक्त तो लेन न देन करे, कछु वा को ढार्‌यो न जाय ।। झीनी ।।

५.सबही नाथ को नाथ कहायो, मेरी माया को पार न पायो,
सबही छोड़ मोकु शीश नवायो,
जो मैं चाकर बनूँ भक्त को प्रेमानन्द बढ़ जाय ।। झीनी ।।

-:०:-

छिन ही चढै छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय ।
प्रगट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय ॥

भजन १६ (तर्ज: डरते रहो ये जिन्दगी बेकार ना हो जाये)

संसार के कर्तार का आकार न होता ।
तो उसका यह संसार भी साकार न होता ॥ टेर ॥

१.साकार से जाहिर निराकार की हस्ती ।
साकार न होता तो निराकार न होता ॥ संसार ॥

२.हम मान भी लेते कि वो दृष्टि से परे है ।
आँखों में अगर उसका चमत्कार न होता ॥ संसार ॥

३.व्यापक ही सही सब में वो रहता मगर कहाँ ।
रहने को अगर जिस्म का आधार न होता ॥ संसार ॥

४.आँखों से निकलते न कभी बिन्दु के मोती
निर्गुण का सगुण से जो बंधा तार न होता ॥ संसार ॥

भजन १७ (तर्ज: म्हारा हरिया बनडा सुवठिया)

रे मन प्रति स्वांस पुकार यही जय राम हरे घनश्याम हरे ।
तन नौका का पतवार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ टेर ॥

१.जग में व्यापक आधार यही, जग में लेता अवतार यही ।
है निराकार साकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ रे मन ॥

२.ध्रुव को ध्रुव पद दातार यही, प्रहलाद गले का हार यही ।
नारद वीणा का तार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ रे मन ॥

३.सब संकृतों का आगार यही, गंगा यमुना की धार यही ।
श्री रामेश्वर हरिद्वार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ रे मन ॥

४.सज्जन का साहूकार यही, प्रेमी जन का व्यापार यही ।
सुख बिन्दु सुधा का सार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ रे मन ॥

-:o:-

संपत्ति सारे जगत की श्वांसा सम नहीं होय ।
सो श्वांसा रघुनाथ बिन, तुलसी वृथा न खोय ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

भोग

भजन ९८ (तर्ज: कानुडा लाल घडो म्हारों)

ओ गणपती गणेश तुमको लाखों प्रणाम ।
अब काटो सब कलेश, तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥

१.गज का बदन तेरा, करुणा निकंदन ।
भक्तजनों के देवा, तुम दुःख भंजन ।
गौरी के गणेश, तुमको लाखों प्रणाम ॥ओ गणपती ॥

२.जो कोई नाम तेरा प्रथम मनावे ।
चरणों में तेरे देवा शीश नवावे ।
मूसे की सवारी वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ ओ गणपती ॥

३.भक्ति से नाम तेरा जो कोई ध्यावे ।
कारज सारे सदा सफल होय जावे ।
दीन के दयाल तुमको लाखों प्रणाम ॥ ओ गणपती ॥

४.कोई तो मेवा फल-फूल चढ़ावे ।
दीवाना तेरा तुझे भजन सुनावे ।
लाज के बचाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ ओ गणपती ॥

भजन ९९

दूध पीवो नी म्हारा मदन गोपाल, मदन गोपाला नन्दजी का लाला ॥ टेर ॥
१.काला बछिया कपिला गायी, दूध दुहन को नामा आई ॥ दूध ॥
२.कनक कटोरो भरो दूध भर लाई, सो नारायण आगे धरिया ॥ दूध ॥
३.श्यामजी मुरत दूध नहीं पीवे, खाय पछाड़ो नामा रोवे ॥ दूध ॥
४.मन्द मन्द मुस्काय मुरारी, दूध पियो गोवर्धनधारी ॥ दूध ॥
५.ऐसो भक्त कबहू नहीं देख्यो, सो नारायण दूध पिलायो ॥ दूध ॥

-:०:-

मथत मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय ।
रहिमन सोही मीत है, भीड़ पड़े ठहराय ॥

भजन १०० (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो है शरीर)

म्हारी कुटिया में आवो भगवान, जिमाऊँ थाने मिजमानी ॥ टेर ॥

१. ऊँचा आसण आप बिराजो, सेवा करूँ भरपूर ।
चरण धोय चरणामृत लेऊँ, लेऊँ जी जनम सुधार ॥ म्हारी ॥

२.चावळ दाळ गवाँ का फलका खूब बणायो साग ।
पुड़ी पकोड़ी ओर कचोरी, मुठड़ी बणाई मजेदार ॥ म्हारी ॥

३.लाडु पेड़ा ओर जळेबी फीणी है भरपूर ।
मोतीचूर मगद का लाड़ु, खूब बणायो चकणाचूर ॥ म्हारी ॥

४.सीरो लापसी मालपुवा ओर चक्की है भरपूर ।
मीठो खट्टो बण्यो रायतो, दाखां चारोळी भरपूर ॥ म्हारी ॥

५.मीठा चावल राम खीचड़ी पुड़ी मसालादार ।
अमरस भोजन खूब बण्यो ह, केरी को छमक्यो अचार ॥ म्हारी ॥

६.पापड़ फलियाँ चटणी आलू मीठी ह अमचूर ।
खटरस भोजन खूब बण्यो ह, छांछ बणाई भरपूर ॥ म्हारी ॥

७.मावो बरफी और मिठाई मेवा ह भरपूर ।
दही दूध सूँ भरया कटोरा, मिसरी घाली ह भरपूर ॥ म्हारी ॥

८.थंडो जळ जमना को पाणी, बिड़ला पान चबाय ।
दास करण ने भगती दीज्यो, चरणा में राखीज्यो भगवान ॥ म्हारी ॥

-:०:-

कहै दास संग्राम ठाकरां खाली जास्यो ।
खर्ची दीवि खोय, अगाड़ी कांई खास्यो ॥
परमात्मा मोटा करया, नीति धर्म के काज ।
खमा खमा दुनिया कहे, और कहे महाराज ॥
और कहे महाराज, कियां थे थारां पास्यो ।
कहै दास संग्राम ठाकरां खाली जास्यो ॥

भजन १०१

म्हारा कानुड़ा गिरधारी, खीचड़ खाले रे बनवारी
कर्मा विनती कर कर हारी, बेटी जाटां की, हो हो.. ॥ टेर ॥

१.बापू बाहर गांव सिधायो, म्हांने मंदिरीयो भोलायो
सारो पूजा ढंग सीखायो, ॥ बेटी जाटां की हो...

२.बेटी तड़के उठके अईयो, म्हारा ठाकुर न नहलाईयो
पूजा करके भोग लगईयो ॥ बेटी जाटां की हो...

३.मीठे पानी से नहलाईयो, ऊंचे आसन पर बैठाईयो
लंबो चंदन तिलक लगईयो ॥ बेटी जाटां की हो...

४.जड़कर मंदिरया के ताली, आतो गीत गावती चाली
ल्याई खीचड़लो भर थाली ॥ बेटी जाटां की हो...

५.संवारे छाछ राबड़ी ल्याऊँ, मीठे गुड़री खीर बणाऊँ
थांने भोरा भोरा जीमाऊँ॥ बेटी जाटां की हो...

६.बापू बाहर गांव से आवे, म्हाने मूंकिया धमकावे
कर्मा आँसूड़ा ढलकावे ॥ बेटी जाटां की हो...

७.आगे गरदन काट चढ़ावुँ, या मैं जहर खाय मर जाऊँ
तो भी थांने आज जीमावुँ ॥ बेटी जाटां की हो...

८.बापु बाहर गांव से आयो, कर्मा सारो हाल सुणायो
सुणकर बड़ो अचंभो लायो ॥ बेटी जाटां की हो...

९.थारो दास भंवर हर्षाये, लोला भक्ता का जसगावे
म्हारी नैया पार लगावे ॥ बेटी जाटां की हो...

-:०:-

करणी करे तो क्यों करे, कर कर क्यों पछिताय ।
बोवै पेड बबूल का, आम कहाँ से खाय ॥

-:०:-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे,मोती मानुष चून॥

भजन १०२ (तर्ज: डस गयो रे भुजंगी कालो नाग)

थोड़ो अरोगोजी मदन गोपाल, करमा बाई को खीचड़लो ॥ टेर ॥

१.प्रभुजी थांरो प्रेम पुजारी, गयो तीर्थां न्हाण
जातो जातो दे गयो म्हांने, सेवा री भोलाण
जद मैं आई थारै मंदिरिये में चाल ॥ थोड़ो ॥

२.मैं हूं दीन अनाथणी, नहीं जाणु पूजा पंथ
नयो नवेलो ले लियो ओ, धंधो गोकुल चंद
तू ही राखणीयों, भगताँ री बाजी भाव रे ॥ थोड़ो ॥

३.नहीं कर जाणु षटरस भोजन, खाटा सुं अनुराग
रूखो सूखो राम खिचड़ो, गंवार फली रो साग
मीठो दही ल्याई, बाटकिये में घाल ॥ थोड़ो ॥

४.रूठयां क्यूं बैठयाजी राधा, रुकमण जी रा घनश्याम
भूखा मरताँ बणे न सौदो, मास दिवस रो काम
थारा भूखा रा चिपजासी दोनो गाल ॥ थोड़ो ॥

५.समझ गई सरमा गए ठाकुर, लखि गये नई नुवाह
धाबलिया को पडदो तान्यो रुच रुच भोग लगाय
हरख्यो हिवड़ा में मन लहरी मोती लाल ॥ थोड़ो ॥

भजन १०३

म्हारो बालो भूखो छ प्रेम नो रे ॥ टेर ॥
नहीं जोवे आचार विचार प्रेम देखे जठई बालो जीम लेवे रे ॥ म्हारो ॥
हरि जात पात देखि नहीं रे, खायो जुठारे भिलनी रा बेर ॥ म्हारो ॥
काचा पाका मोटा मोटा रोटला रे, खायो करमां नो रूखो खीच रे ॥ म्हारो॥
राजा दुर्योधन रा मेवा त्यागो रे, खायो शाक विदुर घर जायी॥ म्हारो ॥
काचा तान्दुल सुदामा रा खा गयो रे, बिन छीज्या रे कर कर स्वाद ॥म्हारो॥
ऐन खाबा पीबा री परबा नहीं रे, ऐसो त्रिलोकी रो नाथ ॥ म्हारो ॥
अचल राम प्रभु वासी रे, प्रेमी भक्ताँ रो राखे मान ॥ म्हारो ॥

भजन १०४

बाबो म्हानै भोलाय गयो पूजा, गांव गयो दुजा,जिमो ना काँई आंट की ।
कर्मा म्हारो नाम, ओही है म्हारो गांव मैं बेटी जाट की ।। टेर ।।

१.उठताँ ही स्नान मैं किन्हों, खोल मन्दिर बुहारो दीन्हो ।
ल्याई धोली गाय रो दूध, प्रभुजी मुंडो धोय कर पील्यो ।।
है खीचड़ो तैयार,घी री काँई बात, कढी रे घालूँ छाछ की ।।बाबो म्हानै ।।

२.काल थारै ताणी सीरो मैं बनावूँ पाणी मिठोडो कुवें रो ल्याऊँ ।
मुंगा री दाल ज्यामे घी री नाल, थानै छोटा छोटा फलका जिमाऊँ ।।
थानै भावै जिया ही ले लिज्यो, थे म्हानै कह दीज्यो, शरम काँई बात की ।। बाबो म्हानै ।।

३.बोली पडदो उठाय, काई ल्यावूँ, थे जिमल्यो तो चलु मैं कराऊँ ।
थारै धाबलियो रो पड़दो लगावूँ, मै पीठ फेर बैठ जावूँ।।
प्रभु बोले आज मै जावूँ,काल बेगो आवूँ, बात बड़ी प्रेम की ।। बाबो म्हानै ।।

४.बाबो दूर गाँव सूँ आयो, कर्मा सारो ही हाल सुणायो ।
बाबो सुण के अचम्भो ल्यायो, कर्मा मैं नहीं दर्शन पायो ।।
कर्मा जोड़े है दोनुं हाथ, सुणो रे रुघनाथ, अरज शिवलाल की ।। बाबो म्हानै ।।

भजन १०५

आज हरि आए विदुर घर पावणा ।।टेर।।

१.विदुर नहीं, घर थी विदुरानी, आवत देखे सारंगपानी,
फूली अंग न समावे, चिन्ता भोजन क्या बनावणा ।। आज हरि ।।

२.केला तोड़ प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई,
छिलका देत श्याम मुख माँही, लागे परम सराहना ।। आज हरि ।।

३.इतने माँही विदुरजी आए, खारे खोटे बचन सुनाए,
छिलका देत श्याम मुख माँही, कहाँ गँवाई भावना ।। आज हरि ।।

४.केला विदुर ले निजकर माँही, गिरी देत गिरीधर मुख मांही
कहे कृष्णजी सुनो विदुरजी, वो स्वाद नहीं आवणा ।। आज हरि ।।

५.ठंडे बासी रूखे सूखे, हम तो विदुरजी प्रेम के भूखे,
शंभुदास धन धन विदुरानी, भक्तन मान बढावणा ।। आज हरि ।।

भजन १०६ (हरियाणा)

राबड़ी खाव तो मोहन आजा तडके
जमुना जी के पार मिलूँगी, नीचे बड़ के ।। टेर ।।

१.मीठी मीठी मक्का ल्यास्युं, राबड़ी बणास्यूं,
गाढ़ी गाढ़ी छाछ घालकर, थारै ताणी ल्यास्यूं
सांगरियाँ रो साग बणास्युं, बाजरै री रोटी,
बाँट चूँटकर खाज्यो मोहन, थारी आदत खोटी,
म्हारी दाँयी आँख फड़के ।। जमुना जी ।।

२.आवे मरोड़ो और उबासी, राबड़ी खायाँ,
मन्ने आवे नींद गूजरी, आच्छी बड़ की छाया,
म्हारो जीव धड़के ।। जमुना जी ।।

३.न्यूतो म्हारो पक्को छ, गोपाल भूल मत जाज्यो,
मैं नाचूँगी साथ आपके, मुरली आप बजाज्यो,
कदम पर तारा चिमके ।। जमुना जी ।।

भजन १०७ (तर्ज: चाँदी की दीवार, राग: दरबारी कनाडा)

थाली भर कर ल्याई खीचेड़ो, उपर घी की बाटकी ।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जीमावे बेटी जाट की ।। टेर ।।

१.बाबो म्हारो दूर गयो है, ना जाने कद आवेलो,
उके भरोसे बैठ्यो रेवे तो, भूखो ही रह जावलो
आज जिमाऊँ तने खीचेड़ो, काल राबडी छांछ की ।। जीमो ।।

२.बार बार मंदिर मे जाती, बार बार पट खोलती
कइयाँ कोनी जीमे मोहन, करड़ी -२ बोलती
थे जीमो जद मैं जीमुँला, मानु ना कोई लाटकी ।। जीमो ।।

३.पड़दो भूल गई साँवरिया, पड़दो फेर लगायो है
धाबलिया की ओट बैठ कर, शाम खीचेड़ो खायो है
भोला भाला भक्तासुँ , साँवरिया कैसी आंट जी ।। जीमो ।।

४.भक्ति होतो करमा जैसी, साँवरियो घर आवलो
सोहनलाल लुहाकर प्रभु का, हरख-२ गुण गावेलो
सांची प्रीत हरी में हो तो, मूरत बोले काठ की ।। जीमो ।।

भजन १०८

मैके से पंडितजी आवे, यशोदा मैया भोजन करावे ।। टेर ।।

१.भोजन बनाय के भोग लगावे, मोहन आय के खावे ।। यशोदा ।।

२.देख के पंडित यशोदा से बोले, लाला ने भोजन झुठायो ।।यशोदा।।

३.बिनवै यशोदा मैया फिर से बनाय लो, लाला को कोठड़ी में राखे ।।यशोदा।।

४.खीर औ पूरी को भोजन बनावे, कोठड़ी से निकल मोहन भागे ।।यशोदा।।

५.क्रोधित हो पंडित यशोदा से बोले, भूखे चले हम जावें ।।यशोदा।।

६.बोली यशोदा मैया काहे कन्हैया, बार बार भोजन झुठावे ।।यशोदा।।

७.बोले कन्हैया मैया मैं ना जाऊँ,आँख मूंद मुझको बुलावे ।।यशोदा।।

८.बार बार घंटी बजावे, यशोदा मैया भोजन करावे ।।यशोदा।।

९.धन्य यशोदा मैया भाग तुम्हारे,लाला को गोदियाँ खिलावे ।।यशोदा।।

भजन १०९ (तर्ज: ढोला ढोल मजीरा बाजे रै)

तनै माल मलीदा भावे रे, टूटी फूटी झोपड़ी में क्यूँ नहीं आवे रे ।।टेर।।

१.दिन उगता हीं सबसे पहले लाडू खावे चार,
आँखड़ल्याँ माखड़ल्याँ मसलै दूध मिल तैयार ।
साग फल को भोग लगावे रे ।। टूटी फूटी ... ।।

२.चाँदी की चौकी के ऊपर, जीमण की तैयारी,
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, खीर जलेबी न्यारी ।
खाकर मीठो पान चबावे रे ।। टूटी फूटी ... ।।

३.माखन मिश्री बीच बीच म, जी भर कर के खावे,
बनवारी दिन में जो खावे, रात पसंद नहीं आवे ।
म्हासूं कैंया प्रेम बढावे रे ।। टूटी फूटी ... ।।

-:०:-

दीजे दीन दयाल मोही, बड़ो दीन जन जान ।
चरण कमल को आसरो, सत् संगत् की बान ॥

भजन ११० (तर्ज: पीलु)

जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है,
ताजो ताजो लाई यो हलवो गरम है ।। टेर ।।

१.केसर ईलायची की देखो बहार है,
दूध जलेबी श्याम बड़ी मजेदार है ।
कचोरी मैं लाई गरमागरम है,
जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है ।। ताजो ताजो ।।

२.राजभोग चमचम कलाकन्द खिलाऊँ,
पिस्ता बादाम की बरफी जिमाऊँ ।
किसमिस की लौंजी किसी से न कम है,
जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है ।। ताजो ताजो ।।

३.घेवर के संग में इमरती गरम है,
ताजी ताजी लाई ये पुड़ियाँ गरम है ।
केसरिया भात घी में तरमातरम है,
जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है ।। ताजो ताजो ।।

३.मालपुआ खीर के संग समोसा गरम है,
बेसन की चक्की औ भुजिया गरम है ।
लच्छेदार रबड़ी ये नरमानरम है,
जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है ।। ताजो ताजो ।।

४.मीरा जैसी भक्ति हमें प्रभु दीजो,
विनती है आपसे श्रीनाथजी सुनलीजो ।
शारदा मण्डल तुम्हारी शरण है,
जीमो श्यामसुन्दर जलेबी गरम है ।। ताजो ताजो ।।

-:o:-

कबीर आप ठगाईये, और न ठगिये कोय ।
आप ठग्यां सुख होवसी, ओर ठग्यां दुःख होय ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिवजी

भजन १११

आज म्हारो सुण्ड सुण्डालो आयो जी ठाडो पार्वती के संग ॥ टेर ॥

१.कर अस्नान चढाऊँ चन्दन, मोतियन चौक पुरावूँ
सिंहासन पर आप बिराजो, गौरी पुत्र गणेश
आज मैं मोदक भोग लगाऊँ जी, ठाडो पार्वती ॥ आज म्हारो ॥

२.मात तुम्हारी पारबती है, पिता शम्भु कैलाशी,
विघ्न हरण है नाम तुम्हारो, रिध सिध के भरतार
आज मैं गुण थाँका ही गावूँ जी, ठाडो पार्वती ॥ आज म्हारो ॥

३.सब देवों में देव बडे हो, माने दुनिया सारी,
मंगलकारी अमंगल हारी, मूसक हो असवार,
थाने साराँ पेली मनावूँजी, ठाडो पार्वती ॥ आज म्हारो ॥

४.लाला बाल कृष्ण थारी शरणे आयो, राखो चरण के माय,
भगवती मण्डल का है कहना, रखो हृदय के माय,
आज चरणाँ में शीश झुकाऊँ जी ॥ आज म्हारो ॥

भजन ११२ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम मे)

करे पलक में न्याल, सदा शिवशंकर भोला है, भरदे झोला है ॥ टेर ॥

१.जटा जूट बिच गंग विराजे, नाग लपट रया काला है
भस्मी सोहे अंग संग, गिरजा अनमोला है ॥ भरदे झोला है॥

२.रुण्ड माल गल बीच सुहावे, शीश चंद्रमा सोया है।
कर डमरू त्रीशूल हाथ, भस्मी का गोला है ॥ भरदे झोला है॥

३.आक धतुरा अमल अरोगे, और भंग का गोला है।
नंदी गण असवार संग, भूतों का टोला है ॥ भरदे झोला है॥

४.हर हर कहकर निरमल जल, कोई शिव के उपर चोडा है
अनधन भरे भंडार खुले, हिरदा का ताला है ॥ भरदे झोला है॥

५.हंसराज यूं कहे प्रेम से, जो कोई शिव शिव बोला है
चला जाय कैलाश, छुटे चौरासी चोला है ॥ भरदे झोला है॥

भजन ११३ (लावणी)

धन धन भोलेनाथ बाँट दिये, तीन लोक इक पल भर में
ऐसे दीनदयाल मेरे दाता, भरे खजाना पल भर में ॥ टेर ॥

१.प्रथम वेद ब्रह्मा को दे दिया, बना वेद का अधीकारी
विष्णु को दिये चक्र सुदर्शन, लक्ष्मी सी सुंदर नारी
इन्द्र को दे दिये काम धेनु, और ऐरावत सा बलकारी
कुबेर को सारी वसुधा का, कर दिया तुमने भंडारी
अपने पास पात्र नहीं रक्खा, रक्खा तो खप्पर कर में॥ ऐसे दीनदयाल ॥

२.अमृत तो देवताओं को दे दिये, आप हलाहल पान करे
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसी को, जिसने आपका ध्यान धरे
भागीरथ को गंगा दे दई, सब जग ने अस्नान करे
बड़े बड़े पापियों को तारे, पल भर में कल्याण करे
अपने तन पर वस्त्र न रक्खा, मगन रहे बाघंबर में ॥ ऐसे दीनदयाल ॥

३.लंका गढ़ रावन को दे दिये, बीस भूजा दस सीश दिये
रामचंद्रजी को धनुष बान, और हनुमान को गदा दिये
मन मोहन को मुरली दे दई, मोर मुकुट बक्शीश किये
मुक्ती हेतु काशी में वास, भक्तों को बिस्वाबीश किये
आप नशे में रहे चूर भोला, भांग पिये नित खप्पर में ॥ ऐसे दीनदयाल ॥

४.नारद जी को वीणा दे दई, गंधर्वों को राग दिये
ब्राह्मण को दिया कर्म काण्ड,और सन्यासी को त्याग दिये
जिसने आपका ध्यान लगाया, उसको तो अनुराग दिये
देवी सींग कहे बनारसी को, सबसे उत्तम भाग दिये
जिसने ध्याया उसी ने पाया, महादेव तुम्हरे वर में ॥ ऐसे दीनदयाल ॥

-:०:-

शिव समान दाता नहीं, विपत्ति विदारण हार,
लज्जा मेरी राखियो, नन्दी के असवार ।

भजन ११४ (तर्ज: मिलो न तुम तो)

एक दिन वो भोले भंडारी बनकर के बृज नारी, गोकुल में आ गये
पारवती भी मना के हारी ना माने त्रिपुरारी- गोकुल में आ गये ।

१.पारवती से बोले, मैं भी चलूंगा तेरे संग में,
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे संग में,
रास रचेगा बृज में भारी, हमें दिखाओ प्यारी - गोकुल में आ गये ।

२.हंस के सती ने कहा, कैसे ले जाऊं तुम्हे रास में
मोहन के सिवा वहाँ कोई, पुरुष न होवे रास में
हंसी करेगी बृज की नारी, मानो बात हमारी - गोकुल में आ गये

३.पारवती से बोले, ऐसा बनादो मुझे आज तो
मैं हूं सहेली तेरी, ऐसा बताना बृजराज को
लगा के बिन्दिया, पहन के सारी चाल चलो मतवाली - गोकुल मे आ गये

४.पारवती ने कहा, बलीहारी जाऊं मैं तो आपको
एक दिन तुम्हारे लिये, आयो मुरारी इस वेश में
मोहनी रूप बनाया प्रभु ने, अब के तुम्हारी बारी - गोकुल में आ गये

५.देखा मोहन ने जब, समझ गये इस राज को
ऐसी बजाई बंशी, सुध-बुध भूले भोलानाथ जी
सिर से खिसक गई जब सारी, मुस्काये बनवारी - गोकुल में आ गये

६.ए मेरे भोले स्वामी, वृन्दावन में हुआ तेरा धाम रे
तबसे ओ नाथ तेरा, गोपेश्वर हुआ नाम रे
ताराचंद कहे त्रिपुरारी रखियो लाज हमारी - गोकुल में आ गये

-:o:-

अती का भला न बोलना, अती की भली न चुप ।
अती का भला न बरसना, अती की भली न धूप ॥

भजन ११५ (गारी)

हँस कर पारवती शिवजी ने, बचन सुणावती जी ।
स्वामी म्हें ना होती तो, कुण थाने ब्यावती जी ।।टेर।।

१.थारा लम्बा लम्बा केस, थारो अति भयानक भेष ।
थाने देख्यां ही अबला नारी डर जावती जी ।। स्वामी ।।

२.थारो बूढ़ो वाहन बैल, थारे भूत प्रेत रह गेल ।
थारे डमरू बजे सुरेल, थारे गेल सूं सुन्दर नारी, डर जावती जी ।। स्वामी ।।

३.थे नहीं सीक्या माखण खाबो, थे नित आक धतूरा चाबो
थारे तन पर नहीं है गाबो, थारे कोडी नहीं ह पास में लखावती जी ।। स्वामी ।।

४.सुणकर यूं बोल्या त्रिपुरारी, बन में तपस्या कीनी भारी
जद में ब्याही दया विचारी, अब तो मोटी मोटी बाता ते बणावती जी।। स्वामी ।।

५.सुनकर पड़ी गोरजा चरणा, स्वामी हँसी रोश नहीं करणा
दासी लिया आपका सरणा, दरजी नाथुराम जस बरणा
थारी सुरतां मांय सूरत मिलावती जी ।। स्वामी ।।

भजन ११६ (तर्ज: म्हारा कानुडा गिरधारी खिचड खाले रे)

१.भोले नाथ है तू मतवाला, तेरे गल सर्पन की माला ।
तू है भक्तों का रखवाला, भोले भण्डारी, ओ भोले भण्डारी ।।

२.तेरी सूरत भोली भाली, जिस पर पारवती मतवाली ।
तू है तीन जहाँ का मालिक, भोले भण्डारी हो भोले...।।

३.तेरी बैल सवारी साजे, तेरी जटा में गंगा बिराजे ।
तेरा डम-डम डमरू बाजै, भोले भण्डारी हो भोले .. ।।

४.पारवती जब आई, तब सोने की लंका बनाई ।
उसकी रावण करे सफाई, भोले भण्डारी हो भोले...।।

५.तेरा जो कोई ध्यान लगावे, उसका बेड़ा पार हो जावे,
तेरा प्रेम मण्डल गुण गावे, भोले भण्डारी हो भोले...।।

भजन ११७

आ रिम झिम करती भिलणी कठीने चाली रे ।
शंकर बैठे कैलाश में भोले बैठे कैलाश में ।।
बठीने चाली रे ।। आ रिम झिम करती ।।

१. शंकर भोले जमा के गोले, बैठे थे हरि ध्यान में ।
रिम झिम रिम झिम पायल की, झनकार पड़ी थी कान में ।।
रूप देख कर दंग रह गये, सुध बुध खो डाली रे
।। आ रिम झिम करती ।।

२. कहे सदाशिव सुनो भीलणी, आओ पास हमारे ।
इस तन मन की बनो मालकिन, हम हैं दास तुम्हारे ।
तीन लोक की तनें बनाय देऊँ, मैं पटरानी रे
।। आ रिम झिम करती ।।

३. कहे भीलणी सुनो सदाशिव, भंवर भील म्हारे घर में ।
बि ने मार थे म्हनै ले जाओ, चर्चा होय घर-घर में ।
थे तो बैठा भजन करो शिव, दे दे ताली रे
।। आ रिम झिम करती ।।

४. थारा घर में गवराँ पार्वती, जटा में गंगा रेवे ।
अपना हक वो छोड़ सदाशिव, मोय कहँ रेवण देवे ।
नित उठ होय लड़ाई घर में, दे दे गाली रे
।। आ रिम झिम करती ।।

५. कहे सदाशिव सुनो भीलणी, तू मत डर थारा मन में ।
जटा मुकुट में तने छिपाया लेवूं, मालूम पड़सी कुँण ने ।
कोई बात यूं डर मत भिलणी, थारी करूँ मैं रखवाली रे
।। आ रिम झिम करती ।।

-:०:-

नयना सुरमो डारके और माथे बिंदियाँ लगाय ।
रुण झुण करती भिलणी, शंकर छलबा जाय ।

६. गवराँ पार्वती ने पिहर भेज देऊँ सुनो भिलनी राणी ।
गंगा थारी करे चाकरी, तू घर की पटरानी ।
पी पी भंग का प्याला भिलणी, बन मतवाली रे
॥ आ रिम झिम करती ॥

७. बैल चढूँ तो डरूँ सदाशिव, सिंह देख भय लागे ।
पाली तो मैं कदी ना चाली, साँच कहूँ थारे आगे ।
बोले शंकर आवो नी बैठो, पीठ हमारी रे
॥ आ रिम झिम करती ॥

८. इतणी सब कुछ देख भिलणी, माया अपनी हटाई ।
तामें ऊभी हँसे गोरजा, शंकर गये शरमाई ।
मोची बणकर थे म्हाने छलिया, आं थाकी बारी रे
॥ आ रिम झिम करती ॥

९. भिलणी बनकर शंकर छलिया, भोला नाच नचाया ।
हे जगदम्बे तेरी माया का, पार कोई नहीं पाया ।
माधो सिंह कहे शिव शक्ति म्हारी, तू रखवाली रे ।
॥ आ रिम झिम करती ॥

भजन ११८

जटा में तेरे गंग विराजे गल सर्पों की माला
डमरु वाला, ओ ओ डमरु वाला ॥टेर ॥

१.तेरी माया कोई न जानी, तू तो सबसे बड़ा है दानी
ओ कैलाशी ओ अविनासी, तू है देव निराला ॥ डमरु वाला ॥

२.शिव हो तुम बागम्बर धारी, करते नन्दी की असवारी
ओ त्रिपुरारी भोले भंडारी, तू सबका रखवाला ॥ डमरु वाला ॥

३.कोई द्वार तिहारे आवे, तुमसे जो मांगे सो पावे
कोई सवाली जाये ना खाली, सबको देने वाला ॥ डमरु वाला ॥

४.हम आये हैं शरण तुम्हारी, भोले सुनलो अरज हमारी
ताराचंद भी निशदिन भोले, जपे तुम्हारी माला ॥ डमरु वाला ॥

भजन ११९

तुम हो दयालु, ओ डमरू वाले, नैया हमारी तेरे हवाले,
तो आके बचाले बाबा आके बचा ले ॥ टेर॥

१.हमने सुना है जो कोई तेरा ध्यान लगाता है
दरश वो तेरे पाता है, चरण में शीश नवाता है
देवों में तुम हो देव निराले, भक्तों के कारज सारने वाले,
तो आके बचाले बाबा, आके बचा ले ॥ आके बचाले ॥

२.तेरे दर से भी ना कोई खाली आया है
जो मांगा तुमसे पाया है, ये भोले तेरी माया है
वरदान सबको ओ देने वाले, भक्तों के संकट काटने वाले,
तो आके बचाले बाबा, आके बचा ले ॥ आके बचाले ॥

३.आशा लेकर भोले तेरे दर पे आये हैं
दरश की आश लगाये है, सुनाने अरजी आये हैं
अरजी यही है जग रखवाले, ताराचंद को दास बना ले,
तो आके बचाले बाबा, आके बचा ले ॥ आके बचाले ॥

भजन १२० (राग: यमन)

मैने शंकर का बड़ा रूप निराला देखा
जटा में गंग हाथ भंग का प्याला देखा ॥ टेर॥

१.पलक लगा के शिवजी बैठे थे कैलाश में
नन्देश्वर वही खड़ा गिरजा थी पास में
उनकी गोदी में गजानन्द सा लाला देखा ॥ मैने शंकर ॥

२.भक्तों का काम है जो शंकर का नाम लेते हैं
भोले का काम है जो गिरते को थाम लेते हैं
उनके डमरु का मै ने खूब उजाला देखा ॥ मैने शंकर ॥

३.चाँदनी सी रात जैसे सबको भाती है
शंकर की मूरत सामने तो नींद किसको आती है
उनके गले में मैंने नाग सा काला देखा ॥ मैने शंकर ॥

भजन १२१ (धमाल)

भोलानाथ अमली, भोला शंकर अमली
बागाँ माय भांगडली घुटाय राखूंली ॥ टेर ॥

१.काँई बोऊँ काशीजी मं, काँई जी प्रयाग ।
काँई बोऊँ हर की पेडयाँ, काँई जी कैलास ॥ भोलानाथ ॥

२.काशीजी मं केशर बोऊँ, चंदन प्रयाग
हर की पेडयां बिजिया बोऊँ, धतूरो कैलास ॥ भोलानाथ ॥

३.काँई मांगे नांदियो, काँई जी गणेश
काँइ चाहे भोला शम्भु, जोगियाँ रो वेष ॥ भोलानाथ ॥

४.दुर्वा मांगे नांदियो मोदक गणेश
विजया चाहे भोला, शम्भु जोगियाँ रो वेष ॥ भोलानाथ ॥

५.घोटे घोटे नांदियों जी, छाणत गणेश
भर भर प्याला देवे गोरजा, पिवे छ महेश ॥ भोलानाथ ॥

६.आकड़ा की रोटी पोऊँ, धतूरा को साग
बिजिया का पकवान बनाऊँ, जीमो भोलानाथ ॥ भोलानाथ ॥

७.नाचे नाचे नांदियोजी, नाचे जी गणेश
नाचे म्हारा भोला शिवजी, जोगियाँ रो वेष ॥ भोलानाथ ॥

८.कोढी मांगे निर्मल काया, राजन मांगे रूप
निर्धन मांगे अनधन लक्ष्मी, बांझ मांगे पुत ॥ भोलानाथ ॥

९.कोढि देस्या निर्मल काया, राजन देस्या रूप
निर्धन देस्या अनधन लक्ष्मी, बांझ देस्या पूत ॥ भोलानाथ ॥

-:०:-

चढियो मैन तुरंग पर, चलियो पावक मांहीं ।
प्रेम पंथ अति कठिन है, सबसे निबहत नांही ॥

-:०:-

कबीरा सीप समुद्र की, रटै पिया पिया ।
सकल बूंद को नागनै, स्वाति बूंद की आस ॥

भजन १२२

नैनों में ज्वाला है, गर्दन में नाग काला है
बालों में गंगा है, माथे पे चंदा है
फिर कौन सी जगह है खाली, ओ डमरू वाले
मैं कहाँ रहूँगा, ओ भोले कहाँ रहूँगा ॥ फिर कौनसी ॥

१.तेरी भक्ति का रावण था दिवाना
तेरी भक्ति का भस्मासुर था दिवाना
लेके वर दोनों ने कैसी धूम मचाई
बना रूप नारी का भस्मा की शान मिटाई
युद्ध किया राम से रावण की आन मिटाई
मर कर दोनों ने स्वर्ग की सीढ़ी पाई
बाजू में गौराँ है, गोदी में छोरा है ॥ फिर कौनसी ॥

२.लीला तेरी न्यारी है ओ भोले भण्डारी
महिमा तेरी न्यारी है ओ भोले भण्डारी
तुमने भरदी है भक्तों कि झोली खाली
देवों में निराले हो, पीते भंग के प्याले हो ॥ फिर कौनसी ॥

३.सीखे कोई तुमसे यूं भोले बनके
रहना सारे जग के दाता और तनपे भस्म रमाना
मेरे भोले बाबा मैं कैसे तुम्हें मनाऊँ
भांग धतूरा लाऊँ या गाजां चिलम बनाऊँ,
कानों में कुंडल है, हाथों में कमंडल है ॥ फिर कौनसी ॥
बस एक ही जगह है खाली, ओ डमरू वाले
चरणों में रहूँगा, चरणों में रहूँगा ॥ फिर कौनसी ॥

-:०:-

देवों में देव मेरे महादेव निराले है।
रहते है सदा अलमस्त और पिते भंग के प्याले है ॥

भजन १२३

शिव शंकर चले कैलाश कि बुन्दिया पड़ने लगी ।
भोले बाबा चले कैलाश कि बुन्दिया पड़ने लगी ॥ टेर ॥

१.गौराँ ने बोई हरी हरी मेंहदी, भोले बाबा ने बोई भांग
कि बुन्दिया पड़ने लगी, शिव शंकर चले कैलाश कि....

२.गौराँ की पक गी हरी-हरी मेंहदी, भोले बाबा की पक गई भांग,
कि बुन्दिया पड़ने लगी, शिव शंकर चले कैलाश कि..

३.गौराँ ने काटी हरी-हरी मेंहदी, बोले बाबा ने काटि है भांग,
कि बुन्दिया पड़ने लगी, शिव शंकर चले कैलाश कि...

४.गौराँ ने पीसी हरी-हरी मेंहदी, भोले बाबा ने पीसी है भाँग,
कि बुन्दिया पड़ने लगी, शिव शंकर चले कैलाश कि...

५.गौराँ की रच गी हरी-हरी मेंहदी, भोले बाबा के चढ गई भांग,
कि बुन्दिया पड़ने लगी, शिव शंकर चले कैलाश कि...

भजन १२४ (प्रभाती)

शिव दुख भंजन हारी भजो मन ॥ टेर ॥

१.महा ज्योति एक लिंग बड़ा है, द्वादस लिंग मझारी ।
दीप अखंड यही है घट में, भ्रकुटी ज्योति पुजारी ॥ शिव ॥

२.इसी ज्योति का नाम पड़ा है, महादेव त्रिपुरारी ।
त्रिगुण रुप त्रिपुरासुर कारण, शिव त्रिशुल कर धारी ॥ शिव ॥

३.शिव का रुप अनूप मनोहर, छबि पर रति पति वारी ।
सोहे शीश गंग की धारा, पाप नसावन हारी ॥ शिव ॥

४.यही धार त्रिकुटी में आई, जहाँ संगम है भारी ।
इस त्रिवेणी में नहाये जो, जनम मरण दुख टारी ॥ शिव ॥

५.धरे ध्यान जो निस दिन शिव का, बनकर अटल पुजारी ।
सो तीनों गुण जीत बनत है, गुणातीत आचारी ॥ शिव ॥

६.प्रेमनाथ कहे सुनो संत जन, यह पूजन विधि न्यारी ।
सकल करम करि रहे अकर्मा, अंत मोक्ष अधिकारी ॥ शिव ॥

भजन १२५ (हरीयाणवी)

कान्हुडा थारी बांसुरी की तान प्यारी लागी ।।टेर।।

१. वृन्दावन मं रास देखने, गिरिजा जावण लागी,
बोले बाबा मैं भी चालुंगा, आज तो मन में आगी ।। कान्हुडा ।।

२. हँसकर गिरिजा कही नाथ, थारै या के मन म आगी,
एक पुरुष ही रहे रास में, कृष्ण चंद्र बड़ भागी ।। कान्हुडा ।।

३. काजल टीकी और घाघरो, चुनड़ कुडती आंगी,
थारी एक पोशाक आज तो, म्हानै दे दो मांगी ।। कान्हुडा ।।

४. डमरू और त्रिशूल अलग कर, भालविभुति त्यागी,
नहांय धोय भोला भंडारी, गोपी बणग्या सागी ।। कान्हुडा ।।

५. कर सौलह श्रृंगार घुंघटो, काड र गाती चाली,
देख भोला को रूप सुहाणो, गिरिजा चक्कर खागी ।। कान्हुडा ।।

६. नई सखी न साथ म लेकर, गिरिजा रास म आगी,
और बंशी बाजी नाचण लाग्या, शिव भोला बैरागी ।। कान्हुडा ।।

७. सरकी चुनर खुल्यो घुंघटो, नैन मिल्या सरमागी,
हाथ पकड़ कर कहे बिहारी, या गोपी मन भागी ।। कान्हुडा ।।

भजन १२६ (दरबारी)

शिव आदि पुरुष अविनाशी रे, भोला आदि पुरुष अविनाशी रे ।।टेर।।

१.जटा मुकुट बिच गंग बिराजे, शीतल जल सुखराशी रे ।। शिव ।।

२.रुंडमाल मृगछाल विराजे, अंग विभूति विलाशी रे ।। शिव ।।

३.गजानन्द से पुत्र कहीजे, और गौरजा दासी रे ।। शिव ।।

४.वरदायक संतन के सहायक, शिव कैलाशी वासी रे ।। शिव ।।

५.द्वादश ज्योति लिंग जमी पर, जिगमिग ज्योति प्रकाशी रे ।। शिव।।

६.हंसराज हरहर गुणगावे, कटे फंद चौरासी रे ।। शिव ।।

-:o:-

नख सिख गहना पहिन के कर सौलह श्रृंगार ।
नर से नारी बन गये शिव कन्धे झोली डार ।।

भजन १२७ (मारवाडी गारी)

ओहो काशी के नाथ चरणां थारे चित लाग्यो
विश्वेश्वर नाथ चरणां थारे चित लाग्यो ।। टेर ।।

१.काशी शहर के मांय ने रे, अणगिणती विश्वनाथ
सिमरयांही संकट कटे रे, भज भव उतरे पार ।। ओहो काशी ।।

२.चिणा चबीणा गंगाजल रे, जो पूरे करतार,
काशी कबहून छांडिये रे, विश्वनाथ दरबार ।। ओहो काशी ।।

३.नगर उज्जयनी महाँकालेश्वर, इकलंग श्रीजीद्वार,
जगन्नाथ में भुवनेश्वरजी, उत्तराखण्ड केदार ।। ओहो काशी ।।

४.गोदावरी में त्र्यम्बकेश्वर, रामेश्वर रामनाथ,
कांची में शिव शंकर कहिये, रंगेश्वर रंगनाथ ।। ओहो काशी ।।

५.वृन्दावन में विन्देश्वर कहिये, मथुरा में मथुरेश,
नारी भेष बणायो शंभु, गोकुल में गोपेश ।। ओहो काशी ।।

६.द्वारा पुरी में दीनेश्वरजी हैं, दीनन के नाथ,
दास व्यास न मुक्ति दीनी-शरणे श्री गोवरधन नाथ ।। ओहो काशी ।।

भजन १२८ (दरबारी)

शिव भोले भण्डारी साधु शिव भोले भण्डारी ।। टेर ।।

१.भस्मासुर ने करी तपस्या वर दीनो त्रिपुरारी ।
जिसके सिर पर हाथ धरूं भस्म होय नर नारी ।। शिव भोले ।।

२.शिव के सिर पर हाथ धरण की मन में दुष्ट विचारी ।
तब तो शिव चहूँ दिश डोले लग्यो दैत्य भारी ।। शिव भोले ।।

३.तब गिरीजा का रूप धर हरि बोले बात दुष्ट से प्यारी ।
जो तु मुझको नाच नचावे, बनूं नार तिहारी ।। शिव भोले ।।

४.अपने कर धर नाच किया तब भस्म भया मति मारी ।
शिव मण्डल मांगे सो देवे शिव भक्त हितकारी ।। शिव भोले ।।

भजन १२९ (लावणी)

कैलाशी काशी के वासी, सुनते नाथ सबकी करुणा
मन की दुविधा दूर करो, बम भोले नाथ का लो शरणा ।।टेर ।।

१.एक समय देव दानवों ने मिलकर, क्षीर सिन्धु का मथन किया
रतन जो चौदह निकले उसमें, एक एक कर बाँट लिया
अमृत धारण कियो देवता, जहर हलाहल शम्भु पिया
नीलकण्ठ तब नाम पड़ा, ओ कैलाशपुरी में वास किया
ऐसे भोले भण्डारी शिव का, ध्यान निरंतर सब धरणा ।। मन की ।।

२.कठिन तपस्या करी भस्मासुर, बारह मास लग्यो तपना
अंग अंग सब जार दियो, तब कैलाश छोड़ दिये दर्शना
मांगना है सो मांग भक्त तू, तोपर हूँ मैं बहुत प्रसन्न
देऊँ राज तोहे तीन लोक का, रहे देवता तेरी शरण
वर दो नाथ हाथ धरूँ जिस पर होए तुरन्त उसका मरणा ।। मन की ।।

३.वरपा नियत ढीगी निशचर की शंकर को मारे चाहा
आगे आगे चले विश्म्भर वैकुण्ठ द्वार का लिया सहारा
खगपती चौकी देख शम्भु की उतर गयी तन कोपीनवार
देख दिगम्बर रूप शम्भु का लक्ष्मीजी दीना पट डार
ब्रह्मा विष्णु महेश एक है, इनमें अन्तर नहीं करना ।। मन की ।।

४.देखी ऐसी हालत शम्भु की, तुरन्त मोहिनी रूप धरे
जीत लिया निश्चर के मन को, तब यूं बोले वचन खरे
आक धतूरा पिने वाले का, क्या इसका एतबार करे
अपने सिर पर हाथ धरो तो, सांच झूठ की ठाह पड़े
मन निश्चय कियो निशाचर, देखा निश्चर का मरणा ।। मन की ।।

५.रतन जठित कैलाश शम्भु का मणि कपाट द्वार सजा
आक धतूरा तोता मैना, सब पंछी रहते ताजा
वाहन जिनका है नांदिया, सब देवन के हैं राजा
कामधेनु ओ कल्पवृक्ष नित ढमरू के बाजे बाजा
शिवलाल पसारी दास तुम्हारा प्रभु के चरण में चित धरणा ।। मन की ।।

भजन १३०

प्यारा लागे भोलानाथ मोरी मैया मोय प्यारा लागे ॥ टेर ॥

१.देवन में महादेव बड़ा है,
सब जुग जश विख्यात मेरी मैया ॥ प्यारा ॥

२.भेष अनेक करे भोलाशंभु,
माया है उनके हाथ मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

३.जन्म जन्म के वो पती हमारे,
मैं हूँ उनके साथ मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

४.नंदीगण असवारी है शिव के,
भूत प्रेत रहे साथ मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

५.आदि पुरुष अविनाशी है शिवजी,
तीन लोक के नाथ मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

६.सुरनर मुनिजन सब गुण गावे,
वेद शास्त्र विख्यात मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

७.हंसराज हर हर गुण गावे,
भव सागर तिर जात मोरी मैया ॥ प्यारा ॥

भजन १३१ (राग: यमन)

एक शिव का भक्त चला, शिव को रिझाने के लिये ।
हाथ में लोटा लिए वो, जल चढ़ाने के लिये ॥ टेर ॥

१.जल चढ़ाने जब लगा तो, नजर घंटे पर गई ।
सोचने मन में लगा, घंटा चुराने के लिये ॥ हाथ में ॥

२.घंटा चुराने जब लगा तो, घंटा ऊँचा हो गया ।
मूर्ती पे वो चढ़ा, घंटा चुराने के लिये ॥ हाथ में ॥

३.मूर्ती पे जब चढ़ा तो, शंभु प्रकट हो गये ।
मांग ले वर मांग ले, जीवन बिताने के लिये ॥ हाथ में ॥

४.गिड़-गिड़ा कर जब वो बोला, मैं अधर्मी हूँ प्रभु ।
फूल फल दुनिया चढ़ावे, मैं तो सारा चढ़ गया ॥ हाथ में ॥

५.ऐसे भोलेनाथ रहते, हर घड़ी तैयार है ।
जो भी उनका नाम लेवे, होवे भव से पार है ॥ हाथ में ॥

भजन १३२ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम में)

धर हिरदा में ध्यान सदा शिवजी को ध्यावोला, न्याल हो जावोला ॥ टेर ॥

१.दूध पतासा गंगाजल से शिव को स्नान करावोला,
चंदन चावल पुष्प सुगन्धी बिल पत्र चढ़ावोला ॥ न्याल हो ॥

२.आक धतूरा अमल भांग कोई शिव के भेंट चढ़ावोला,
धूप दीप फल फूल मिठाई भोग लगावोला ॥ न्याल हो ॥

३.पान सुपारी लौंग एलायची श्रीफल भेंट चढ़ावोला,
दुःख दारीदर दूर होय सुख संपति पावोला ॥ न्याल हो ॥

४.हर हर करके जो कोई शिव के सन्मुख गाल बजावोला,
हर हर से दुःख हरे गाल से न्याल हो जावोला ॥ न्याल हो ॥

५.हंसराज हर वक्त सदाशिवजी का दर्शन पावोला,
जन्म मरण मिट जाय अन्त कैलश सिधावोला ॥ न्याल हो ॥

भजन १३३ (धमाल)

गांजो पीजा रे सदाशिव भोला लहरी गांजो पीजा रे ॥ टेर ॥

१.काहे से बोऊँ थारे भांग धतुरा, काहे से बोऊँ लड़ गांजा की ॥गांजो॥

२.क्यारां म बोऊँ थार भांग धतुरा, धोरां म बोऊँ लड़ गांजा की ॥गांजो॥

३.काहे से सींचू रे थारे भांग धतुरा, काहे से सींचू लड़ गांजा की ॥गांजो॥

४.झारी से सींचू थारे भांग धतुरा, कलशां से सींचू लड़ गांजा की ॥गांजो॥

५.काहे से तोडूँ थारे भांग धतुरा, काहे से तोडूँ लड़ गांजा की ॥गांजो॥

६.चिमटा से तोडूँ थारे भांग धतुरा, खुरपी से लड़ गांजा की ॥गांजो॥

७.काहे से पिलाऊँ तनै भांग धतुरा, काहे से पिलाऊँ लड़ गांजा की॥गांजो॥

८.प्याला से पिलाऊँ तनै भांग धतुरा, चिलम से पिलाऊँ लड़ गांजा की ॥गांजो॥

९.शिवजी के चढ गयो भांग धतूरो, नन्दी के लड़ गांजा की ॥गांजो॥

-:०:-

दास दशा भुंडी भली जानत हो जगन्नाथ ।
मेरो बननो बिगड़नो है हरि तेरे हाथ ॥

भजन १३४ (तर्ज: फाग खेले गिरधारी, गारी मारवाडी)

सदाशिव शरणा तेरा सब अपराध क्षमा कर मेरा ॥ टेर ॥

१.लख चौरासी भटकत घाया गर्भवास में अति दुख पाया.
जब ईश्वर से अरज सुनाया, कोल वचन गया भूल मोह माया ने घेरा रे ॥ सदाशिव ॥

२.बालपना हंस खेल गंवाया चकरी भँवरा खूब चलाया,
शिव सुमरण मन में नहीं लाया, छाय रहा आन ध्यान हिरदे नहीं ठेरा रे ॥ सदाशिव ॥

३.करुण हुआ तन यौवन छाया निशि दिन ऐस आराम जमाया,
तिरिया तीरथ कर सुख पाया, होय रयाअंधा धुंध छाय रया घोर अंधेरा रे ॥ सदाशिव ॥

४.वृद्धावस्था ऐसी आई ताकत रही नहीं तन माई,
सुध बुध शक्ति सभी बिसराई, मान नहीं मर्याद हुआ एकान्त में डेरा रे ॥ सदाशिव ॥

५.तीन अवस्था मुफत गवांई नेमधरम कुछ कीना नांई,
जन्म बीत गया बातां मांई, लाख गुनाह कर माफ पुरबला पाप समेरा रे ॥ सदाशिव ॥

६.पाप पुण्य परगट जुगमांई अज्ञानी नर समझे नाहीं,
माफ करो शंकर सुखदाई, हंसराज रख लाज पारकर बेड़ा मेरा रे ॥ सदाशिव ॥

भजन १३५ (तीर्ज: मेरी पत राखो गिरधारी)

दर्शन दे त्रिपुरारी रे, मोहे दर्शन दे त्रिपुरारी रे।
मैं दुखिया शरण तिहारी रे, मोहे दर्शन दे त्रिपुरारी रे ॥ टेर ॥

१.जटा जूट सिर गंग बिराजे, शेषनाग शुभकारी रे ।
तीन नेत्र त्रिशूल हाथ में, भाल चन्द्र अधिकारी रे ॥ मोहे दर्शन ॥

२.अंग विभूति गले मुण्ड माला, नंदीगण असवारी रे ।
गजानन्द और कार्तिक स्वामी, गौरी प्राण पियारी रे ॥ मोहे दर्शन ॥

३.आक धतुरा अमल अरोगे, विजय की तरकारी रे ।
हँसराज हर हर गुण गावे, चरणकमल पर वारी रे ॥ मोहे दर्शन ॥

-:o:-

जो तांको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल ।
तोहि फूल को फूल हो, वा को है तिरसूल ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

माताजी

भजन १३६ (तर्ज: शिक्षा दे रही जी हमको)

मनाया म्हारे आवणाजी गौरी रा लाल गणेश ॥ टेर ॥
१.रणत भँवर थारो बैठनोजी । देवा रिद्ध-सिद्ध रा भरतार ॥ मनाया ॥
२.माता थारी पारबता । देवा पिता तो शंकर देव ॥ मनाया ॥
३.घिरत सिंदूर थारे घणो चढ़े रे । देव गल पुष्पन को हार ॥ मनाया ॥
४.राजा सुमिरे बादशाह जी । देवा ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ मनाया ॥
५.गोकुलदास री बीनती जी । देवा चित चरणां रे माय ॥ मनाया ॥

भजन १३७ (तर्ज: भजो मन तुलसी सीता राम)

आवो म्हारे कंठा मैया बसो हे भवानी ॥ टेर ॥
१.कौन देव थारी करे थरपना कौन देव थने मानी ।
कौन देव थारे तपे रसोई कौन भरे जल जमुना को पानी ॥आवो म्हारे॥
२.आप निरंजन करी थरपना पाँचों पांडव मानी ।
चाँद सूरज थारे तपे रसोई, इन्द्र भरे मैया जल जमुना को पानी॥आवो म्हारे॥
३.सिंह चढ़ी पर्वत पर गाजे धवला गढ़ की रानी ।
महिषासुर ने पटक पछाड़्यो भक्तजनों की मैया तू है रखवाली ॥ आवो म्हारे ॥
४.मारवाड़ मुरधर के माही गोठ माँगलोद माई
देस नोक में करणी माता, दर्शन करे हो नर-नारी ॥ आवो म्हारे ॥
५.मुम्बई में मम्बा देवी कलकत्ता में काली ।
अहमदाबाद में भद्रकालिका संतन के प्रतिपाली ॥ आवो म्हारे ॥
६.हरियो पीपल थारे द्वारे लाल ध्वजा फहरायी
तुलसीदास भजो भगवाना, सब देवन में मैया तू ही अगवानी ॥ आवो म्हारे ॥

-:०:-

जननी सदा संभारती लखि रोगी संतान ।
तै से दिन ही नित लखे दीन बन्धु भगवान ॥

भजन १३८ (तर्ज: श्याम तेरे मिलने का सतसंग ही बहाना है)

माँ का दरबार है यह, यहाँ माँ का ठिकाना है।
माँ के चरणों में हमें, सब ही को आना है ।। टेर ।।

१.देवों के राजा जो यहाँ बैठे गजानन्द हैं
बैठे गजानन्द जहाँ वहाँ आनन्द ही आनन्द है
करना है तो काम कोई, पहले इनको मनाना है ।। माँ का ।।

२.मारूति बजरंग बली दया भक्तों को इनकी मिली
जो भी शरण आये बजरंग करते हैं सबकी भली
भक्ति का अभय वरदान, बजरंग से पाना है ।। माँ का ।।

३.भाग्य विधाता है शिव जो दुनिया के दाता है
धर्मपाल यहाँ पर तुझे शीश झुकाता है
माताओं की माता तुम, तेरी शरण में आना है ।। माँ का ।।

भजन १३९

मैया दे दुर्गा वरदान, तेरा गुण गाऊँगा ।। टेर ।।

१.मैया तू ब्रह्मा की पुत्री, वेद ले स्वर्ग लोक से उतरी ।
मैया तेरी वरण रही है सुथरी, मैं तुझ को ध्याऊँगा ।। तेरा गुण ।।

२.मैया तेरा भवन बना जाली का, जूड़ा गुथवाया माली का ।
धरूं मैं ध्यान सदा काली का, पुष्प चढ़ाऊँगा ।। तेरा गुण ।।

३.मैया तेरी महिमा सबसे न्यारी, करती सिंहन पे असवारी ।
पांव में पायल की छबि न्यारी, पदम नवाऊँगा ।। तेरा गुण ।।

४.मैया तैने महिसासुर को मारा, मैया तैने सकटासुर संहारा ।
मैया तैने दुष्टन को संहारा, तुझको मनाऊँगा ।। तेरा गुण ।।

५.शंकर कहत लटूरी वाला, जपूँ मैं तेरे नाम की माला ।
मैया तू खोल हृदय का ताला, शीश नवाऊँगा ।। तेरा गुण ।।

-:०:-

तरुवर सरवर सन्तजन, चौथे बरसे मेह ।
परमारथ के कारने चारो धारे देह ।।

भजन १४०

आई सिंह पे सवार मैया ओढ़े चुनरी, मैया ओढ़े चुनरी
ओढ़े चुनरी, मैया ओढ़े चुनरी ॥ टेर ॥

१.आदिशक्ति है मात भवानी, जय दुर्गे माँ काली ।
बड़े-बड़े राक्षस संहारे, रणचंडी मतवाली ।
करती भक्तों का उद्धार, मैया ओढ़े चुनरी ॥ आई सिंह पे ॥

२.महिषासुर था महाबली, देवों को खूब सताया
छीन लिया इन्द्रासन और देवों को मार भगाया
करी देवों ने पुकार, मैया ओढ़े चुनरी ॥ आई सिंह पे ॥

३.दुर्गा का अवतार लिया, झट महिषासुर संहारी
दूर किया देवों का संकट, लीला तेरी न्यारी
किया देवों पे उपकार, मैया ओढ़े चुनरी ॥ आई सिंह पे ॥

४.जो कोई जिस आशा से माता द्वार तिहारे आता ।
हर इच्छा होती है पूरण, मुँह माँगा फल पाता ।
तेरा गुण गावे संसार, मैया ओढ़े चुनरी ॥ आई सिंह पे ॥

५.कष्ट अनेकों मुझको घेरे, कौन हरे दुख मेरे ।
नाम तेरा रटता हूँ मैया, मैं हर साँझ सवेरे ।
सेवक करता है पुकार, मैया ओढ़े चुनरी ॥ आई सिंह पे ॥
मैया करदे बेड़ा पार, मैया ओढे चुनरी ॥

भजन १४१ (तमाशा)

शरणागत की परतंग्या राखोजी माँ परमेश्वरी ॥ टेर ॥

१.शरण तिहारी आयो मैया, कर कर मन में आसजी ।
औरन को मैं अब नहीं जाचूँ, मोय तेरो विश्वास ॥ शरणागत ॥

२.हम ही सो कछु जानत नाहीं, आप करो जी चाहे ।
हमरो तो कुछ बिगड़त नाँही, तेरो विरद लजाय ॥ शरणागत ॥

३.आपही जानो माया अपनी, अरज करूँ हर बार ।
हम हैं बालक भोले भाले, संकट है अति भार ॥ शरणागत ॥

४.बालकृष्ण मनमोहन ध्यावे, दूर करो जंजाल ।
हम तो हैं चरणन के तेरे, राख सदा खुशहाल ॥ शरणागत ॥

भजन १४२ (तर्ज: ये देश है वीर जवानों का)

क्या शान है तुलजा भवानी की, जहाँ भीड़ लगी है भक्तों की ।
भई तुलजापुर का क्या कहना मैया के दर्शन कर लेना ॥ क्या शान ॥
१.ओ ऽ आती है टोलियां भक्तों की, भरती है झोलियां मां सब की ।
यहाँ नित-नित मेले भरते हैं, नित ढोल और बाजे बजते हैं ॥ क्या शान॥
२.ओ ऽ माँ मंगल काम करे सबके, आये जो श्रद्धा लेकर के ।
दुःख दूर करे मां पल भर में, कुछ कमी नहीं तुलजापुर में ॥ क्या शान॥
३.ओ ऽ सांचा दरबार है मैया का, सोया भाग जगे यहाँ भक्तों का ।
आशा पूरण यहाँ हो जाये, जो भी मैया के गुण गाये ॥ क्या शान ॥
४.माँ लाल चुनरिया ओढे है, माथे पे बिंदिया सोहे है ।
मेरी माँ की छबि का क्या कहना मैया के दर्शन कर लेना ॥ क्या शान॥

भजन १४३ (राग: केदार)

व्यापक हो सब घट घट में माँ माता ईश्वरी ए ॥ टेर ॥
१.हो व्यापक सबके घट घट में दर्शाये दर्शन नैन में ।
आदि निरंजन ज्योत सदा परमेश्वरी ए ॥ व्यापक हो ॥
२.तू ही अम्बा तूही जगदम्बा तू ही देवी रम्भा ।
तू ही बुगला चूड़ामणि मात विश्वम्भरी ए ॥ व्यापक हो ॥
३.तू ही द्रौपदा सीता पार्वती शारद सावित्री ।
रुद्राणी कमला इन्द्राणी मात सुन्दरी ए ॥ व्यापक हो ॥
४.कष्ट निवारण रचना रचनी आप ही जानो माया अपनी ।
महिसासुर हतनी जग जननी मात मोहीनी ए ॥ व्यापक हो ॥
५.मन मोहन है दास तिहारो मैया भव से पार उतारो ।
मम हृदा बिच बस रही मूरती साँवरी ए ॥ व्यापक हो ॥

-:०:-

जननी जने तो भक्तजन, क्या दाता क्या सूर ।
नहीं तो बाँझ भली, काहे गंवावे नूर ॥

भजन १४४ (तर्ज: चार भुजा सु म्हारी बीनती जी)

ऊँचा नीचा परबत हद बन्या, म्हारा अम्बाजी हेलो ।। टेर ।।
म्हारा माताजी हेला चरणाँ बेवै गंगा यमुना नीर, माताजी

१.पेरण पठोडो ए, अम्बा रानी हद बने,
ओ मैया ओढन ढिकणी रो चीर माता जी,

२.पाँवाँ माँही बाजे हे अम्बा रानी घूघरा,
थारी ठिम ठिमचाले हे चाल माताजी

३.अम्बाजी ने भावे हे चकता चकता चूरमा
ऊपर मधु री धार माताजी

४.सोना री सुराही है, अम्बा रानी मद भरी
हे मैया नकशी रो प्यालो हाथ माताजी

५.मैया तू ने ध्याऊँ ए, अम्बा रानी चौगुणो
तू जग जायो हे संसार माताजी
मैं तो तने ध्याऊँ ए
अम्बा रानी चौगणो, म्हारो चित्त चरणाँ रे माँय माताजी

४.दास व्यास की विनती, हे मैया म्हारा आवागमन मिटाय माताजी

भजन १४५ (राग: केदार)

कर सहाय रख लाज, आज जगदम्ब भवानी ।
शक्ति देओ मोहे सिंह वाहीनी ।। टेर ।।

१.रतन जडित सिंहासन सोहे, छबि लखि त्रिभुवन जन मोहे ।
दर्शन कर अति सुख पावे, कष्ट निवारीणी ए ।। कर सहाय ।।

२.कण कण में माँ ज्योति तिहारी, योगन हो बिन शक्ति तुम्हारी ।
मोक्ष राह की राह की बतावे, मोक्षदायीनी ए ।। कर सहाय ।।

३.चंड मुंड महिसासुर खलसे, धरा भयी जब अति अकुलानी ।
महाकोप कर दानव मारे, विपत विडारिणी ए ।। कर सहाय ।।

४.उर में ग्यान की ज्योति जगा दे, भव के सारे जाल छुडादे ।
तेरी दया माँ निर्भय विचरुं, अभय दायिनी ए ।। कर सहाय ।।

५.नव दुर्गा माँ तेरा काली, भक्तवत्सल तू है मतवाली ।
मन वांछित फल दो जोगी को, माँ वर दायिनी ए ।। कर सहाय ।।

भजन १४६ (तर्ज: नाथ मैं थारो जी थारो)

लाज तुम रखियो महाराणी,
गणनायक की मात गौरजा शिवकी पटराणी ॥ टेर ॥

१.ब्रह्मा ध्यावे, विष्णु ध्यावे, इन्दर ध्यान लगावे जी ।
तैंतीस कोटी देवता तेरे, द्वारे हुकम उठावे जी ।
रखो तुम उन पर मेहरबानी ॥ लाज तुम ॥

२.नारद शारद शेष फनीसा, नित उठ ध्यान लगावे माँ ।
नेती नेती कह वेद पुकारे, अंत कोई नहीं पावे माँ ।
जोगन रहती अगवानी ॥ लाज तुम ॥

३.विष्णु के घर बनी तू लक्ष्मी, ब्रह्मा के घर ब्रह्माणी ।
शंकर के घर बनी गौरजा, राम घरां तू महाराणी ॥
देवता कहे देव दानी ॥ लाज तुम ॥

४.काली बन कलकत्ते बैठी, मुम्बा बन मुम्बई में माँ ।
तुलजापुर में बसे भवानी, दिन दिन ज्योत सवाई माँ ।
दुखियों की दुर्गा रानी ॥ लाज तुम ॥

५.अष्ट भुजा को धार सिंह की, करती है असवारी जी।
शुम्भ निशुम्भ पछाड करी माँ, संतों की रखवारी जी ।
निभाती भक्तों की वाणी ॥ लाज तुम ॥

६.जो जन तेरा ध्यान लगाया, मन इच्छा फल पाया माँ ।
'हनुमान' को राख शरण में, निर्मल कर दे काया माँ ।
तेरा गुण गाने की ठानी ॥ लाज तुम ॥

-:o:-

कहे दास हाकम से, संगराम कहै आँधो मत हो यार ।
औरां के दो आँखियाँ, थारे चहिये चार ॥
थारे चहिये चार, दोय देखन के बारे ।
दोय हदय के बीच, ताही सूं न्याय निहारे ॥
जस अपजस रेसी अठे, रेणा है दिन चार ।
हाकम से संग्राम कहे, आँधो मत हो यार ॥

भजन १४७

हे अम्बे जगदम्बे भवानी, दयामयी कल्याणी माँ
दर पे आये भक्तों की तू, भर देती है झोली माँ ॥ टेर ॥

१.नभ में सूरज चँदा तेरी, माया ही सब बतलाये
कल कल बहते झरने भी सब, गाथा तेरी ही गाये
तेरी माया तू ही जाने, और न शेराँ वाली माँ ॥ हे अम्बे ॥

२.मधु कैठभ और महिसासुर का, माँ तू ने संघार किया
रक्त बीज था अतुल भयंकर, रण में उसे पछाड़ दिया
दैत्यों का सब नाश किया माँ, उँचे भवनों वाली माँ
तेरे दर पे आकर के, ध्यान और मुक्ति पाई थी ॥ हे अम्बे ॥

३.शीश काट कर उस भक्त ने तेरे, दर पे ज्योत जलाई थी
तेरी शक्ति माँ अपार है, भरे भण्डार खाली माँ
चाहा था अकबर ने भी, मैया तुझको अजमाना
मान गया शक्ति को वह, ज्योति ऊपर जल पाया
दूर हुआ अभिमान सब उसका, भक्ति कीनी तेरी माँ ॥ हे अम्बे ॥

भजन १४८

देवीजी रा दर्शन की बलिहारी, सोहे सिंह चढी असवारी ॥ टेर ॥

१.म्हारी भूल माफ कर माता, अपनो विरद बिचारी
मोय भरोसो है जगदम्बा, अब मैं बेग उबारी ॥ देवीजी ॥

२.ना कोई देव दूसरो जानूं, आप तनै आधारी
आप बिना म्हारो कुण धनी है, कानल तू हितकारी ॥ देवीजी ॥

३..म्हारे कहा आप पधारे, माँ थांरी बात सुधारी
दास ही जान दया कर माता, समझ है मन सारी ॥ देवीजी ॥

४.मैं शरणांगत हूँ चरणन को, माता मान बघारी
दोय कर जोड़ अरज करत हूँ, विनती नांही बिसारी
जब ही भीड़ पड़े भक्तन पे, पल में बेग पधारी ॥ देवीजी ॥

भजन १४९ (राग : हरियाणा)

शारद माता शारद माता शारद माता जी ।
तू बानी बरदानी अम्बे शीश झुकाता जी ॥ टेर ॥
१.चार भुजा सिर मुकुट बिराजै हंसा की असवारी ।
बुद्दि बिधाता जगकी माता तौपर तनमन वारी ॥ शारद माता ॥
२.ब्रह्म बखानी वेदन मानी देवों ने यश गाया ।
रामकृष्ण होग्या अवतारी पार न तेरा पाया ॥ शारद माता ॥
३.मती हरी तुमने कैकयी की वन में राम पठाये ।
तू ही जा रावण घट बैठी दानव सकल खपाये ॥ शारद माता ॥
४.महर करो बानी बरदानी पार न तेरा पाया ।
बंशीधर पर किरपा कीन्ही पिंगल ज्ञान बताया ॥ शारद माता ॥

भजन १५० (तर्ज : श्री व्यंकटेश भगवान तुम ही हो सुख धाम)

जगदम्ब करो ना विलम्ब भक्त की करो सहाय जी ॥ टेर ॥
१.गोठ नगर अस्थान अति आला, जहां पर कृपा कीनी ज्वाला ।
ग्वालियो हुकुम से माने, गोडो पुजवायी जी ॥ जगदम्ब ॥
२.फिर राजा को सपनो दीनो, नाम बतायो दधमति अपनो ।
तेरा सिद्ध होय सब काज, देवो मन्दिर बनवायी जी ॥ जगदम्ब ॥
३.राजा चित्तौड़ पर करी चढाई, दधमति कृपा सू फते वहां पायी ।
मांगलोठ मन्दिर है भारी, दर्शन करबा आवे नर नारी जी ॥ जगदम्ब ॥
४.ऋषि शिवदयाल भया दक्षिण में, ध्यान लगावे अति तनमन से ।
निश्चय वो नर मुक्ति पावे, होय संकट सब दूर कामना हो मन चाही जी ॥ जगदम्ब ॥
५.मोतीलाल नित ध्यान लगावे, उठ तेरे चरणन में आवे ।
बंसीलाल दधिमत की महिमा गाय सुनायी जी ॥ जगदम्ब ॥

-:०:-

प्रेम न बाडी उपजे, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा प्रजा जेहि रुचै, शीश देय ले जाए ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हनुमानजी

भजन १५१ (राग: यमन)

रुनक झुनक पग नेवर बाजे, गजानन्द नाचे,
गजानन्द नाचे हो देवा, गणपत जी नाचे ॥ टेर ॥
१.पिता तुम्हारा है शिव शंकर, नन्दीश्वर साजे
मात तुम्हारी है श्रीगिरजा सिंह चढी गाजे ॥ रुनक झुनक ॥
२.मूसे वाहन दूध दुन्धालो, एक दन्त साजे,
गल पुष्पन की माल बिराजे, कोटी काम साजे ॥ रुनक झुनक ॥
३.विघ्न निवारम मंगल कारण, राजनपति राजे,
तुलसीदास गणपत को सुमिरे, दुख दारिद्र भागे ॥ रुनक झुनक ॥

भजन १५२ (तर्ज: रावणा क देस गयो)

कूदके समुंदर गढ़ लंका हु के बीच जाय
लायके सिया कि सुध राम ने सुणायो है ॥ टेर ॥
१.बानराँ को दल जोड्या सागर की ओर उड्या
लंका गढ़ तोड सब असुर खपायो है ॥ कूदके ॥
२.बाग को उजाड कपि असुर संहार कियो
रावना को पूत मार लंक ने जलायो है ॥ कूदके ॥
३.लक्ष्मण के लागी चोट गया है धरती पर लोट
कस के लंगोट सरजीवन बुटी लाया है ॥ कूदके ॥
४.कहे हरी राम रघुनाथ को गुलाम राम
सीताराम जी के चरण कमल सिर नायो है ॥ कूदके ॥

-:०:-

नाम चतुर गुण पंच युत, दुई गुण वसु हर शेष ।
राम समायो सकल में, तुलसी यह शत लेख ॥

भजन १५३

हनुमंत से बोली यूं माता क्यूँ मुख मुझे दिखाया है,
तू तो मेरा लाल नहीं जिसे मैंने दूध पिलाया है ॥ टेर ॥
१.मैं ने ऐसा दूध, पिलाया, तुझ को क्या बतलाऊँ ये
पर्वत के टुकड़े हो जाये, धार अगर मैं मारूँ ये
मेरी कोख से जन्म लिया, मेरा ही दूध लजाया है ॥ तू तो ॥
२.भेजा था श्रीराम के संग में, करना उनकी रखवाली
लक्ष्मण शक्ति खा के पड़ा, रावण ने सीता हर डाली
माँ का शीश कभी ना उठेगा, ऐसा दाग लगाया है ॥ तू तो ॥
३.छोटी सी एक लंका जला के, क्यों मन में गर्वाया
रावण को जिंदा छोडा और सीता साथ नही लाया
अपना मुख मुझे कभी न दिखाना, माँ ने हुकुम सुनाया है ॥ तू तो ॥
४.हाथ जोड़कर बोले हनुमत, इस में दोष नहीं मेरा
श्रीराम का हुकुम नहीं था, माँ विश्वास करो मेरा
मैं ने वही किया जो, श्रीराम ने मुझे बताया है ॥ तू तो ॥
५.धन्य धन्य हे अंजनी माता, ऐसे लाल को जन्म दिया
हाथ जोड़कर श्रीराम ने, उस देवी को नमन किया
बनवारी कहे क्रोध तजो माँ, ये सब प्रभु की माया है ॥ तू तो ॥

भजन १५४ (तमाशा)

अंजनी सुत लाला, देख्यो सालासर थारो देवरो ॥ टेर ॥
१.पेली पोळ थारी सबसे ऊँची, दूजी लंका कानी रे, बजरंग....
तीजी पोळ पश्चिम में सौबे, चौथी सूरज सामी जी ॥ अंजनी ॥
२.दूर दूर से आवे रे जातरी, सोना का छत्र चढ़ावे रे, बजरंग...
नित उठ थारे विप्र जिमावे, सुन्दर दर्शन पावे जी ॥ अंजनी ॥
३.तीन बेर थारी होवे आरती, बाजे नौबत बाजा जी, बजरंग...
मन वांछित फल पावे जातरी, पूरे सब का काजा जी ॥ अंजनी ॥
४.बाग बगीचा हद बण्या, थारे कुवे ठंडो नीर रे, बजरंग...
नरसी ब्राह्मण गावे चित सूं, सब संतन को सीर जी ॥ अंजनी ॥

भजन १५५ (तर्ज: ढोला ढोल मजीरा बाजे रे)

झालर शंख नगारा बाजे रे, बाजे रे,
सालासर का मन्दिर में, हनुमान बिराजे रे ॥ टेर ॥

१.भारत राजस्थान में जी, सालासर एक धाम ।
सूरज सामो बण्यो देवरो, महिमा अपरंपार ॥
थारे लाल ध्वजा फहरावे रे.. ॥ सालासर ॥

२.नारेळां री गिनती नहीं ह, सुवरण छत्र अपार ।
दूर देश सूं दरसण करबा, आवे है नर-नार ।
थारे जात झडुला लागे रे, ॥ सालासर ॥

३.चेत सुदी पूनम रो मेळो, भीड़ लगे अति भारी ।
नर नारी थारा दरसण करबा, आवे बारी बारी ।
बाबो अटक्या काज सँवारे रे, ॥ सालासर ॥

४.रामदूत अंजनी के सुत रो, धरो हमेशा ध्यान
चेनसिंह चरणां रो चाकर, लाज रखे हनुमान
बाबो बेड़ा पार लगावे रे, सालासर ॥ सालासर ॥

भजन १५६

तुम सुन लो भरत भाई,बजरंग बली से उऋण नाहीं ॥ टेर ॥
कपी से उऋण हम नार्ही, भरत भाई ।

१.सौ योजन मर्याद सिन्धु की, कूद गयो क्षण माहीं ।
लंका जाय सिया सुध लायो, गर्व नहीं मनमाही ॥ तुम सुन लो ॥

२.शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के, शोर भयो दल माही ।
जाय द्रोणागिरी लाय संजीवनी, भोर होय नहीं पाई ॥ तुम सुन लो ॥

३.अही रावण की भुजा उखाडी, बैठ गयो घट माही ।
जो आपर हनुमत नही होता, कुण लातो रघुराई ॥ तुम सुन लो ॥

४.आज्ञा भंग कबहु नहीं किनी, जहाँ भेजो तंह जाई ।
तुलसीदास मारुत सुत महिमा, आप हरि मुख गाई ॥ तुम सुन लो ॥

भजन १५७ (राग : पहाडी)

म्हारो साचो धणी रे हनुमान, मैं सुमरूँ बाबा बजरंग ने ॥ टेर ॥

१.शीश मुकुट और लाल लंगोटा, शोभा बरणी न जाय ।
एक हाथ में गदा बिराजे, दूजे में ध्वजा रे फहराय ॥ मैं सुमरूँ...

२.बालपणा में खेलत-खेलत सूरज पकड्यो जाय
देवन आय करी है विनती, मुख से दियो रे छिटकाय ॥मैं सुमरूँ...

३.सीता की सुधि लेवण आयो, सात समुन्दर पार
लंका जाय राक्षस को मार्‌यो, पटक्यो है अक्षय कुमार ॥ मैं सुमरूँ...

४.शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के, पड्यो धरणी अकुलाय
लाय संजीवन प्राण बचायो, मगन भयो रघुराय ॥ मैं सुमरूँ...

५.राम लखन ने चुरा ले गयो, अहिरावण निजधाम
जाय पतालाँ राम ने ल्यायो, असुर पठायो सुरधाम ॥ मैं सुमरूँ...

६.बड़ा बड़ा तो कारज सार्‌या, अंजनी का हनुमान
देवन आन करी ह बिनती, बेड़ा लगाय दीज्यो पार ॥ मैं सुमरूँ...

भजन १५८ (तर्ज : वारी जाऊँ बाला ने)

एक बार आवोनी बालाजी म्हारे पावणा,
थारी घणी रे करूँला मनवार, म्हारे घर आवोनी ॥ टेर ॥

१.मन मन्दिर में थने बिठाऊँला,
थारी पूजा करूँ ला दिनरात, म्हारे घर आवोनी ॥ एक बार ॥

२.हिवड़े में थारी ज्योत जगाऊँला ।
थां ने झुक झुक करूँ रे प्रणाम, म्हारे घर आवोनी ॥ एक बार ॥

३.नैना री पलकाँ सूं आरती ऊतारूँला,
थाँ ने ध्याऊँला दिन और रात, म्हारे घर आवोनी ॥ एक बार ॥

४.चमन मंडल वाला थाँ ने बुलावे,
म्हारो जीवन सफल होय जाय, म्हारे घर आवोनी ॥ एक बार ॥

भजन १५९ (तर्ज : भजो मन तुलसी सेता राम तो कहो रे)

वा रे हनुमान म्हारो दूध तू लजायो रे वा रे हनुमान ॥ टेर ॥

१.अंजनी धार दिवी रे पर्वत पर खंड खंड कर डाल्यो रे
उसी दूध को पीने वालो वा रे म्हारा हनुमत बेटा नाम तो लजायो रे ॥ वा रे ॥

२.शिव को अंश तू पुत्र पवन को केसरी नाम कहायो रे
वो तेरो तेज कहा गयो लाला,उगता सुरज ने बेटा मुख म दबायो रे ॥ वा रे॥

३.ऐसो हि राम तेरो ऐसो हि लक्ष्मण जो त न दास बनायो रे
मात सीया न रावण ले गयो,तू काई बौठयो बैठयो ढपली बजायो रे॥ वा रे॥

४.लंका जाकर काई करयो लाला बाग तोड कर खायो रे
लंका उठाय धरी क्युंना सर पर सीता न उठाकर लाला पाछो क्यो नी ल्यायो रे
॥ वा रे॥

५.लंका उठाकर कैसे लाऊ माता,राम हुकुम नहीं पायो रे
तुलसीदास भजो भगवाना असुरा न थोडो मैय्या जोर म बतायो रे ॥ वा रे॥

भजन १६० (तर्ज: एक बार आवोनी)

लाल लंगोटो बाबा हाथ में सोटो,
थारी जय हो पवन कुमार, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ टेर ॥

१.सालासर थारो देवरो बाबा,
थारी ध्वजा फरुके असमान, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

२.ढोल नगारा नौबत बाजे,
थारे झालर री झणकार, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

३.तेल सिंदुर बाबा अंग चढ़त है,
थारे मंगल और शनिवार, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

४.चेत सुदी पूनम ने रे बाबा,
थारे मेळो भरीजे भरपूर, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

५.बाटी चूरमा को भोग लगत है,
थारे मोटा मोटा रोट, वारी जाऊँ बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

६.भक्त मंडली की विनती है बाबा,
म्हाको बेड़ो लगाय दीज्यो पार, वारी जाऊं बाबा ने ॥ लाल लंगोटो॥

भजन १६१ (तर्ज : मैं तेरा दास तुम मेरे पितु माता)

जय हनुमान सुजान राम अनुरागी ॥ टेर ॥

१.अंजनी सुवन श्री मारुति नन्दन, दुष्ट निकंदन अतुल बलि
कंचन देह विशाल सुकंज ललामी ॥ जय हनुमान ॥

२.सिंधु उलांघी लंक दही क्षण में, अक्षयकुमार दनुज हति रण में
सिय मन सोंच निवारे वीर तुम नामी ॥ जय हनुमान ॥

३.मैं विनती कर जोरी सुनाऊँ, बार बार पद सीस नवाऊँ
राम भक्ति मोहि दीजे नमामी नमामी ॥ जय हनुमान ॥

४.बाल वचन सुनि सरल सुबानी, करऊँ कृपा सुत सेवक जानी
लोचन अरुण विशाल सुमति देऊँ स्वामी ॥ जय हनुमान ॥

भजन १६२ (तर्ज: लहर लहर लहराये रे)

हवा में उड़ता जाए रे मेरा राम दुलारा
राम दुलारा मेरा अंजनी का लाला ॥ टेर ॥

१.देखा मैं ने देखा उसे पम्पापुरी में - २
सुग्रीव से भेंट कराया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

२.देखा मैं ने देखा उसे अशोक वाटिका में - २
सीता का पता लगाया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

३.देखा मैं ने देखा उसे लंकापुरी में - २
रावण की लंक जलाया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

४.देखा मैं ने उसे रणभूमि में - २
लक्ष्मण के प्राण बचाया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

५.देखा मैं ने उसे पाताल नगरी में - २
अहिरावण को मार गिराया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

६.देखा मैं ने उसे अयोध्यापुरी में - २
रामजी के मन को भाया रे मेरा राम दुलारा ॥ हवा ॥

-:०:-

प्रेम बराबर योग ना, प्रेम बराबर ध्यान ।
प्रेम बिना जप योग तप, सब ही थोथा जान ॥

भजन १६३ (तर्ज: श्री व्यंकटेश भगवान तुमही हो सुख धाम)

श्री सालासर महाराज, राखले लाज
भक्त रखवाला, जय जय बजरंगी बाला ।। टेर।।

१.रघुवर से आज्ञा पाई थी, माता की खबर लगाई थी,
किया सात समुन्दर पार, अंजनी लाला ।। श्री सालासर ।।

२.बाटिका अशोक उजाड़ी थी, दानव सेना संहारी थी
आये ब्रह्म फांस में बंध, बणा भोला ढाला ।। श्री सालासर ।।

३.लंका में आग लगाई थी, सारी जनता घबराई थी,
कर काल रूप विकराल, भये मतवाला ।। श्री सालासर ।।

४.सागर में पूंछ बुझाई थी, माता से आज्ञा पाई थी,
फिर लौट चले बलवान, गर्ज कर चाल्या ।। श्री सालासर ।।

५.तू पहने लाला लंगोटा है, बाबा हाथ मे तेरे सोटा है,
करे आलुसिंह गुणगान, सालासर वाला ।। श्री सालासर ।।

भजन १६४

हनुमान पियारा आज बचाले मेरो बीर ।। टेर ।।

१.लक्ष्मण भ्राता गये थे रण में, बाण लग्यो है वांके तन में,
कैसे धीर धरूं मेरे मन में, फूट गयी तकदीर ।। हनुमान ।।

२.घर जाऊँ तो पूछेगी माता, कहाँ छोडा तेरा लक्ष्मण भ्राता,
ऐसा दुखड़ा सहा नहीं जाता, कूँण बंधावे म्हान धीर ।। हनुमान ।।

३.जो मेरे भाई भरत संग होता, ऐसा दुःखडा पल में खोता,
त्रिलोकी के रघुवर रोता, नैनों से ढल रहा नीर ।। हनुमान ।।

४.थे हनुमान, संजीवन ल्यावो, लक्ष्मण जी के प्राण बचाओ,
सूर्य उदय से पहले आये, उठ के मिल्या है दोनों बीर ।। हनुमान ।।

-:o:-

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय ।।

भजन १६५

जय हो बजरंग बाला, जय हो बजरंग बाला ।। टेर।।
पांव में घूंघरू बांध के नाचे, रटे राम की माला ।। बजरंग ।।
केसरी नन्दन राम दुलारे, मा अजनी के लाला ।। बजरंग ।।
१.सीया राम ही राम पुकारे, लंका जाय असुर सब मारे,
सीता की सुध लाने खातिर, क्या से क्या कर डाला ।। बजरंग ।।
२.तेरे बल का पार ना पाया, तेरा ऋषि मुनी ध्यान लगाया,
घृत सिन्दूर चढावे थारे, उसका संकट टाला ।। बजरंग ।।
३.तुमसा देव नहीं कोई दानी, तेरी गाथा जाये न बखानी,
सब पर कृपा करो बजरंगी, लाल लंगोटे वाला ।। बजरंग ।।
४.तेरी निश दिन ध्यान लगावुँ , तुमको जहाँ सुमरूँ वहाँ पावुँ ,
ताराचंद कहे तुम बजरंगी, संकट मेटन वाला ।। बजरंग ।।

भजन १६६ (तर्ज: नन्द लाल गोपाल दया करके, राग :भीम पलासी)

बजरंग बली मेरी नाव चली, जरा बल्ली कृपा की लगा देना,
मुझे रोग ने शोक ने घेर लिया, मेरे पाप को नाथ मिटा देना ।। टेर।।
१.मै दास तो आपका जन्म से हूँ, बालक और शिष्य भी धर्म से हूँ ,
बेशर्म विमुख निज कर्म से हूँ, चित्त से मेरा दोष भुला देना ।। बजरंग।।
२.दुर्बल हूँ गरीब हूँ ,दीन हूँ मैं, निज कर्म क्रियागत क्षीण हूँ मैं,
बलवीर तेरे अधीन हूँ मैं, मेरी बिगडी को नाथ बना देना ।। बजरंग ।।
३.बल दे के मुझे निर्भय कर दो, यश शक्ति मेरी अक्षय कर दो,
मेरे जीवन को सुखमय कर दो, संजीवन लाय पिला देना ।। बजरंग ।।
४.करुणानिधि आपका नाम भी है, शरणागत राधेश्याम भी है,
इसके अतिरिक्त यह काम भी है, सिया राम से मोहे मिला देना ।। बजरंग ।।

-:o:-

जैसा अन जल खाईये, तैसा ही ही मन होय ।
जैसा पानी पीजीये, तैसी बानी होय ।।

भजन १६७ (राग: बृन्दावनी सारंग)

बजरंग बाला, फेरूँ थारी माला,
सालासर हनुमान, विनती सुण लीजो ॥ टेर ॥

१.सालासर तेरा भवन बिराजे, झालर शंख नगारा बाजे हरदम थारे
नौबत बाजे, चढ रया घीरत सिंदूर ॥ विनती ॥

२.रामचन्द्र जी को सार दिये काजा, सागर ऊपर बाँध दिया पाजा
रावण सरीखा मार दिये राजा, कर दिये चकना चूर ॥ विनती ॥

३.तुम हनुमन्ता हो दुःख भंजन, दुष्ट मार कर कर दिये खंडन
मोटे पांव बड़े भुज दंडन, मुख पर बरसे नूर ॥ विनती ॥

४.बजरंग को संसार मनावे, सबका बेड़ा पार लगावे
लच्छीराम ब्राह्मण गावे, विद्या देओ भरपूर ॥ विनती ॥

भजन १६८

सालासर वाले हरो ना विघ्न सब दूर ॥ टेर ॥

१.सालासर तेरा भवन बिराजे, नित उठ थारै नोबत बाजे ।
झालर शंख नगाड़ा बाजे, चढता है घिरत सिन्दूर ॥ सालासर ॥

२.तुम बजरंगी हो रण मंडल, मोटे पाँव बड़े भुज दण्डन ।
दुष्ट मार के कर दिया खंडन, कर दिया चकनाचूर ॥ सालासर ॥

३.रामचन्द्रजी के सार दिये काजा, समुदर उपर बांधी पांजा ।
रावण सरीसे मार दिये राजा, मुख पर बरसे है नूर ॥ सालासर ॥

४.बजरंग ने संसार मनावे, सबका बेड़ा पार लगावे ।
बद्रीराम बिरामण गावे, देवो विद्या भरपूर ॥ सालासर ॥

-:०:-

बनैतो रघु वर ते बनै बिगडै तो भरपूर ।
जो बिन रघुबर के बनै ता बनूबे पर घूर ॥

भजन १६९ (तर्ज: नखरालो देवरियो)

अंजनी रो लालो जी, सियाराम जी के मन बसग्यो ।। टेर ।।

१.लाल लंगोटो पहने बाबा, मुख में नागर पान
वीर हठीलो बडो ही बांको, बजरंगी हनुमान ।
मतवालो बजरंगी, सियारामजी के मन बसग्यो ।। अंजनी ।।

२.लक्ष्मणजी रो प्राण बचायो, लंका जाय सीया सुध लायो ।
रामचन्द्रजी रा कारज सारयो, जग में नाम कमायो ।
अंजनी रो जायोजी, सीया रामजी के मन बसग्यो ।। अंजनी ।।

३.एक भरोसो थारो बाबा, आस है अब तो थारी
म्हारी आसा पूरण करज्यो, रूद्र रूप अवतारी ।
अब थारो ही भरोसो बाबा, म्हारे मन में जंचग्यो ।। अंजनी ।।

भजन १७० (तर्ज: गुरु देव दया करके)

ना स्वर है ना सरगम है, ना लय ना तराना है
हनुमान के चरणों में, एक फूल चढ़ाना है ।। टेर।।

१.तुम बाल रूप में प्रभु, सूरज को निगल डाले
अभिमानी सुरपति के, सब दर्प मसल डाले
बजरंग हुए तब से, संसार ये जाना है ।। हनुमान ।।

२.सब दुर्ग ढहा करके, लंका को जलाये तुम
सीता की खबर लाये, लक्ष्मण को बचाये तुम
प्रिय भरत सरिस तुम को, श्रीराम ने माना है ।। हनुमान ।।

३.जब राम नाम तुम ने, पाया ना नगीने में
तुम फाड़ दिये सीना, सीया राम थे सीने में
विस्मित जग ने देखा, कपि राम दीवाना है ।। हनुमान ।।

४.हे अजर अमर स्वामी, तुम हो अन्तर्यामी
ये दीन हीन चंचल अभिमानी अज्ञानी
तुम ने जो नजर फेरी, फिर कौन ठिकाना है ।। हनुमान ।।

भजन १७१ (तर्ज: जिया बकरार है)

आज मंगलवार है महावीर का वार है
सच्चे मन से ध्यान लगाओ, होगा बेड़ा पार है ।। टेर ।।

१.चेत सुदी पूनम को जनमे, शनिवार को जाए हो,
भक्त तेरी शरणागत आए, अंजनी लाड़ लड़ाये हो,
शंकर का अवतार है, महिमा अपरम्पार है ।। सच्चे...।।

२.मेघनाद ने शक्ति चलाई, रामा दल में आई हो,
लक्ष्मणजी के लगी कलेजे, दुःख पाये रघुराई हो,
दुःख का पारावार है, मच गई हाहाकार है ।। सच्चे...।।

३.सेना में संभारा छाया, महावीर वहाँ आये हो,
रामचंद्रजी की आज्ञा से ही, द्रोणाचल को लाये हो,
लक्ष्मणजी को घुटी पिलाई, सोया सिंह जगाये हो,
मिलना बारंबार है, हनुमत बल आधार है ।। सच्चे...।।

४.भजन मंडल तेरा भजन बनाकर, भरी सभा में गाए हो,
दास तुम्हारा तुमको सुमिरे, चरणों में शीश नवाये हो,
ध्यावे सब संसार है, हनुमत बड़ो अवतार है ।। सच्चे...।।

भजन १७२

कौन दिशा से आयो पवनसुत, कौन दिशा से आयो पवनसुत ।। टेर ।।

१.कौन के पुत्र कौन के पायक, कौन तोहे दूत पठायो ।
किण के सत से सागर उतरयो, कौन संदेशो लायो ।। पवन ।।

२.अंजनी पुत्र के राम के सेवक, लछमन दूत पठायो ।
सिया जी के सत से सागर उतरयो, राम संदेशो लायो ।। पवन ।।

३.कहाँ प्यारे रामजी कहाँ भाई लछमण, कहाँ से संदेशो लायो ।
बन में राम जी बन में ही लछमण, बन से संदेशो लायो ।। पवन ।।

४.अब मत सोच करै जगजननी, राम सहित दल आयो ।
निशिचर मार तुम्हे ले जइयें, तुलसीदास जस गायो ।। पवन ।।

भजन १७३

भरत पियारा मेरो नाम हनुमान ।। टेर ।।

१.कोन दिशा से आयो भाई, इस पहाड़ को करसी काँई
देख लई तेरी प्रभुताई, झेल्यो मेरो बाण ।। भरत ।।

२.लंकपुरी से आयो भाई, लक्ष्मणजी ने मुर्छा आई,
रावण सुत ने बाण चलायो, मार्‌यो शक्ति बाण ।। भरत ।।

३.कहो भरत क्या जतन उपाऊँ, लंगडा कर दिया कैसे जाऊँ,
संजीवन कैसे पहुंचाऊँ, उदय होसी भान ।। भरत ।।

४.आवो बाला बैठो बाण पे, तनै पहूंचा देऊँ लंका धाम में ।
ऐसी मेरे जच रही ध्यान में, बाण बण्यो विमान ।। भरत ।।

५.ले संजीवन हनुमत आये, लक्ष्मणजी को घोल पिलावे,
सुखीराम भाषा में गावे, धर चरणों में ध्यान ।। भरत ।।

भजन १७४ (तर्ज: श्री व्यंकटेश भगवान तुमही हो सुख धाम)

मेरी विनती सुनो हनुमान, धरूँ तेरा ध्यान,
पवन का प्यारा, अंजनी के लाल दुलारा ।। टेर।।

१.सिर मुकुट गले फूल माला, श्री लाल लंगोटे वाला,
थारे कुण्डल झलके कान चन्द्र उजियारा ।। अंजनी ।।

२.शिव शंकर के अवतारी, सियाराम के आज्ञाकारी,
हो पवन पुत्र बलवान, तेज अति भारी... ।। अंजनी ।।

३.अहिरावण मार गिराये, लक्ष्मण के प्राण बचाये,
श्रीराम के भक्त सुजान, किया निसतारा... ।। अंजनी ।।

४.नित नाम रटूं मैं तेरा, दुःख संकट हरियो मेरा,
कहै अनतू करो कल्याण, मै भगत तुम्हारा... ।। अंजनी ।।

-:०:-

नहाये धोये क्या भया, जो मन का मैल नजाय ।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय ॥

भजन १७५ (तर्ज: कुद के समुंदर गड)

रावणा के देश गयो सीया का संदेशो लायो ।
कबहू ना किनी वो तो बात अभिमान की ॥ टेर ॥
१.छिन में समुंदर कूदे पल में पहाड़ लाये
लाये संजीवन बूटी लक्ष्मण के प्राण की ॥ रावणा ॥
२.जब जब भीड़ पड़ी, तब तब आ सहाय करी
लंका तो फूँक आये रावण बेईमान की ॥ रावणा ॥
३.कह भाई भरत दुहाई दशरथ की
जो न होते पवनसुत आवती ना जानकी ॥ रावणा ॥
४.तुलसीदास बलिहारी हो धनुर्धारी
कहाँ तक बड़ाई करुँ वीर हनुमान की ॥ रावणा ॥

भजन १७६

अंजनी को लाल निरालो रे अंजनी को ॥ टेर ॥
१.घुँघरू बांध बाबो छम-छम नाचे
लाल लंगोटे वालो रे ॥ अंजनी को ॥
२.रोम रोम में राम रमइयो
राम नाम मतवालो रे ॥ अंजनी को ॥
३.भीड़ पड़्याँ बाबो दोड्यो दोड्यो आवे
भक्ताँ को रखवालो रे, ॥ अंजनी को ॥
४.आप भी नाचै बाबो भक्त नचावे,
नाचे नाच नचावे रे ॥ अंजनी को ॥
५.संकट मोचन है रखवालो
बन्ध वालो बाबो हमारो रे ॥ अंजनी को ॥

-:०:-

कागा सब तन खाईयो, चुन चुन खाई ये मांस ।
दो नैना मत खाईयो, प्रभु मिलन की आस ॥

भजन १७७ (राग: भैरवी)

कथा सुनाऊँ सबको यह पवन पुत्र बलवान की,
जय बोलो हनुमान की, जय बोलो ॥ टेर ॥

१.पवन पुत्र बजरंगबली लाल लंगोटे वाला,
सिया राम का परम भक्त वो जपे राम की माला ।
राम नाम की धुन में रहता हरदम वो मतवाला,
कौन बिगाड़ सके जग में जिसका है वो रखवाला ।
जिसके मन में बसी मूरत श्री भगवान की ॥ जय बोलो ॥

२.एक समय बजरंगबली के पास शनिजी आये,
कहने लगे मुझे रहने को आप जगह बतलाएँ ।
हनुमान ने कहा क्या जग में कहीं ठौर नहीं पाये,
जो मेरी भक्ति में यहाँ विघ्न डालने आये ।
शनि देव समझाए ये बातें प्रभु विधान की ॥ जय बोलो ॥

३.मनमें किया विचार बलि ने लगा प्रभु का ध्यान,
कैसे टाल सकूं जब इसको है ये प्रभु विधान ।
शनि देव बोले कहां बैठूं आप जगह बतलाएँ,
हँसकर बोले हनुमान मेरे सिर पर बैठ जाएँ ।
शनि देव मुस्काए सुन बातें राम दिवान की ॥ जय बोलो ॥

४.शनि देव जब सिर पर बैठे हनुमान मुस्काए,
जाकर उतराखण्ड से पहाड़ उठा कर लाए ।
रखा अपने सिर के ऊपर शनि देव घबराए,
किसके पाले पड़ा अब कैसे छुटकारा पाएँ ।
आया था मैं खुश होकर अब मुश्किल पड़ गयी जान की॥ जय बोलो ॥

-:०:-

मात तात सुत नार धन, कोउ न आवत काम ।
विपत परै रक्षा करै, केवल रघुवर नाम ॥

५.नारदजी के कहने से मैं लेन परिक्षा आया,
ऐसी भक्ति और शक्ति का भेद नहीं था पाया ।
खुश होकर के कहता हूँ मैं अब शनिवार भी तेरा,
तेरे भक्त को कष्ट न दूँगा इतना वचन है मेरा ।
घर घर में पूजा होती है अंजनी सुत बलवान की ॥ जय बोलो ॥

६.शनिदेव और हनुमान को नारदजी मिलवाए,
सबने मिलकर राम नाम की महिमा के गुण गाए ।
ताराचन्द कहे हनुमान का जो कोई ध्यान लगावे,
मन की इच्छा पूरण होवे जीवन भर सुख पाए ।
हरदम दया रहे उस पर श्री दयानिधान की ॥ जय बोलो ॥

भजन १७८

दुनिया चले ना श्रीराम के बिना, रामजी चले ना हनुमान के बिना ।

१.जब से रामायण पढ़ली है, एक बात मैने समझ ली है
रावण मरे ना श्रीराम के बिना, लंका जले ना हनुमान के बिना।।दुनिया।।

२.लक्ष्मण का बचना मुश्किल था, कौन बूटी लाने के काबिल था
लक्ष्मण बचे ना बूटी के बिना, बूटी मिले ना हनुमान के बिना ।।दुनिया।।

३.सीता हरण की कहानी सुनो, बनवारी मेरी जबानी सुनो
सीता मिले ना श्रीराम के बिना, पता चले ना हनुमान के बिना।।दुनिया।।

४.बैठे सिंहासन पे श्रीराम जी, चरणों में बैठे हैं हनुमान जी
मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना, भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ।।दुनिया।।

-:०:-

कबीरा गर्व न कीजिये काल गहे कर केस ।
ना जाने कित मारी है क्या घर क्या परदेश ॥

भजन १७९

तेरे जैसा राम भक्त कोई हुआ न होगा मतवाला,
एक जरा सी बात पर तू ने सीना फाड़ दिखा डाला ।। टेर ।।

१.आज अवध की शोभा देखो स्वर्गलोक से भी न्यारी,
चौदह वर्ष बाद राम के राजतिलक की तैयारी ।
हनुमान के दिल ना पूछो झूम रहा है मतवाला ।। एक जरा ।।

२.जितने भूप अधीन अवध के सभी सभा में आए थे,
अपनी हैसियत से बढ कर के तोहफा लाये थे ।
लंकापति विभीषण ने भी हार दिया है इक आला ।। एक जरा ।।

३.रत्नजड़ित हीरों का हार जब लंकापति ने नजर किया,
राम ने समझा आभूषण है सीताजी की ओर किया ।
सीता ने हनुमान को दे दिया इसे पहन मेरे लाला ।। एक जरा ।।

४.हार हाथ में लेकर हनुमत घुमा फिरा कर देख रहे,
नहीं समझ में आया सबको तोड़ तोड़ कर फेंक रहे ।
लंकापति ने मन में सोंचा पड़ा है बन्दर से पाला ।। एक जरा ।।

५.लंकापति का धीरज टूटा क्रोध की भड़क उठी ज्वाला,
भरी सभा में बोल उठे तुम पागल हो अंजनी लाला ।
हार कीमती तोड़ दिया क्या वृक्ष का समझा फल आला ।। एक जरा ।।

६.जिसमें मेरे राम नहीं है वो माला मेरे काम की नहीं,
जिसमें मेरी सिया नहीं है वो माला मेरे काम की नहीं ।
भरी सभा में सीना फाड़ सिया राम का दर्श करा डाला ।। एक जरा ।।

-:०:-

लाल देह लाली लसे, अरुधर लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री रामचन्द्रजी

भजन १८० (लावणी)

गण विघन हरण, शुभ करण बुद्धि के दाता
मैं तेरा दास तुम हो मेरे पितु माता ॥ टेर ॥

१.तेरी लीला अद्भुत चरित्र मनोहर भारी,
सोने का मुकुट सिर छत्र दिगम्बर धारी,
मोतीयन की माल गलता की शोभा न्यारी,
कानों में कुण्डल झलक रहे अति प्यारी,
तेरा नाम लिये से विघन दूर हो जाता ॥ मैं तेरा ॥

२.छूम छून नन नन नन पाँवों में पैंजन बाजे,
तेरा भगत जगत में कोई नहीं मोहताजे,
चढे घिरत सिन्दूर सिर मोतियन माल बिराजे,
दुश्मन के ऊपर सदा सिंह ज्यूँ गाजे,
मुझे तेरी आस तुम रखो सदा सुख दाता ॥ मैं तेरा ॥

३.सब शुभ कारज में पहले पूजा तेरी,
तुम बिना काम ना सरे, अरज सुन मेरी
रिध सिध को लेकर करो भवन में फेरी,
करो ऐसी कृपा नित करूँ मैं पूजा तेरी,
दे तेरी भक्ति मैं और कछु नहीं चाहता ॥ मैं तेरा ॥

४.तुम सकल देव के देव शिरोमणी राजा
तेरे सन्मुख सुन्दर बाजे नौबत बाजा,
तेरे लाकर भोग लगाऊँ मोदक ताजा
करो लहर महर की ओ गणपति महाराजा,
ये हरिराम सिखवाल तेरा गुण गाता ॥ मैं तेरा ॥

भजन १८१

घर आया हो लक्ष्मण राम आयोध्या फूल रही ।। टेर ।।

१.बाड़ी फूल बगीचा फूल्या, ओर फूली फुलवारी
नगर अयोध्या सारी फूली, फूली कौसल्या हर की माय ।। आयोध्या ।।

२.सुरे गाय को गोबर मंगावो, घर आंगन निपवावो
कंचन कलश भरावजो जी, मोतियन चोक पुराय ।। आयोध्या ।।

३.पहल भाई भरत से मिलीया, पीछे कैकयी मात से राम
नगर आयोध्या सारी मिलिया, मिल्या कौशल्या हर की माय ।। आयोध्या ।।

४.हँस हँस मात कौशल्या पूछे, कहो लंक की बात
किण विध रावण मारीयो जी, कीन विध आयी सीता हाथ ।।आयोध्या ।।

५.घाट घाट मद लक्ष्मण रोप्या, औ घट रोप्या राम
सिरे दरवाजो अंगद रोप्या, कुद पड्यो जी हनुमान ।। आयोध्या ।।

६.सीताराम सिंहसन बैठ्या, हनुमत चंवर ढुलावे
मात कौशल्या करे आरती तुलसीदास जस गये ।। आयोध्या ।।

भजन १८२

म्हारा हरिया बन रा सुवटिया, तने राम मिले तो कहिये रे,
तने राम मिले तो कहिये रे, म्हारो राम मिले तो कहिये रे ।। टेर ।।

१.एक नगर अयोध्या सरयु तट, इक दशरथ घर ऊबी कौशल्या,
नैणाँ में आँसु भर बोली, म्हारो राम मिले तो कहिये रे ।। म्हारा।।

२.आँख्याँ सूं अब सुझै कोनी, कानाँ सूं अब सुणै कोनी,
म्हारा प्राण अटक रहा मन मांहि, म्हारो राम मिले तो कहिये रे ।। म्हारा।।

३.राम बिना मेरी सुनी अयोद्या, लक्ष्मण बिना ठुकराई रे,
सीता बिना मेरी सुनी रसोई, कोण कर चतुराई रे ।। म्हारा ।।

४.आगे आगे राम चलत है, पीछे लक्षमण भाई रे,
बीच बीचाले चले जानकी, राजा जनक की जाई रे ।। म्हारा ।।

५.सावण गरजे भादवो बरसे, पवन चले पुरवाई रे,
कौन वृक्ष तले भिजे रे जानकी, राम लखन दोनुं भाई रे ।। म्हारा ।।

६. रावण मार राम घर आये, घर घर बंटत बधाई रे,
मात कौशल्या करत आरती, तुलसीदास जस गाई रे ।। म्हारा ।।

भजन १८३ (तर्ज: नगरी नगरी द्वारे द्वारे)

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया ।
रघुकुल नन्दन कब आवोगे भिलणी की डगरिया ।। टेर ।।

१.मैं सबरी भिलनी जाति की भजन भाव नहीं जाणूं रे ।
राम तुम्हारे दर्शन खातर वन में बाट जोऊँ रे
चरण कमल से निर्मल कर दे दासी की झोपडिया ।। रामा रामा ।।

२.रोज सवेरे वन में जाकर फल चुन चुन कर लाती हूँ ।
अपने प्रभु के सन्मुख रखकर प्रेम से भोग लगाती हूँ
मीठे मीठे बेरों की भर लायी रे छबडिया ।। रामा रामा ।।

३.सुन्दर श्याम सलोनी सूरत नैणां बीच बसाऊँगी
पद पंकज की रज धर मस्तक जीवन सफल बनाऊँगी
भूल गये क्यों प्रभुजी मेरे दासी की डगरिया ।। रामा रामा ।।

४.नाथ तेरे दर्शन की प्यासी मैं अबला इक नारी हूँ
दर्शन बिन ये नैना तरसे सुन लो बड़ी दुखियारी हूँ
एक झलक दिखला दो रामजी डालो एक नजरिया ।। रामा रामा ।।

भजन १८४ (तर्ज: माला को कैसे भुल आई)

थोड़ा सा पांव धुलवालो, जो बैठन चाहो नैया ।। टेर ।।

१.इन चरणों में जादू दीखे, छूअत छू हो नैया
क्यूं मैं काम करूँ जोखम को, खो बैठूँगा नैया ।। थोडा सा ।।

२.इन चरणों की रज पाने से, पत्थर भी उड़ जैया ।
मेरी नाव काठ की प्रभूजी, फेर करूँ क्या भैया ।। थोडा सा ।।

३.तिरछी नजर से देख रहे हैं, तुमरे छोटे भैया
पग धोये बिन नाव न लाऊँ, चाहे मारो धनुष चढ़ैया ।। थोडा सा ।।

४.धोले चरण नीर ले आओ, यूं बोले रघुरैया ।
केवट कुटुम्ब सहित पग धोये, बार बार बलि जैया ।। थोडा सा ।।

५.बैठ नाव प्रभु पार उतर गये, देन लगे उतरैया
कह केवट ना लूं उतराई, एक ही काम करैया ।। थोडा सा ।।

६.छोड़ प्रभु केवट घर लौट्यो, नैना नीर भरैया ।
हनुमान केवट करणी पर, बार बार बलि जैया ।। थोडा सा ।।

भजन १८५ (लावणी)

वो रामचन्द्र महाराज बड़े जालम है, बेशक सायबी उनसे आपकी कम है ॥ टेर ॥

१.तीन लोक के नाथ सुनो कहलावे, सुर नर मुनि सारे उनका ध्यान लगावे
सूरवीर चोरी पर चित्त जमावे, पर नारी हरता तुम्हें शरम नहीं आवे ॥
वो आकर के करदे दस शीश कलम है ॥ बेशक सायबी ... ॥

२.एक बन्दर दरिया कूद यहाँ पर आया, वो सारी गढ लंका के तई हलाया ।
अक्षय कुमार को जान से मार गिराया, जाते जाते वो सारी लंक जलाया ॥
असुरों के तई कर दिया खूब नरम है ॥ बेशक सायबी ... ॥

३.ऐसे अनेक वानरों का दल है भारी, अंगत मयंग नल नील बडे बलकारी ।
दे देवो जानकी मानों बात हमारी, वरना गारत हो जाएगी लंका सारी ॥
जिन रामचन्द्र को पूजे सब आलम है ॥ बेशक सायबी ... ॥

४.उनकी शरणागत गया तुम्हारा भाई, सारे गढ का वो देगा भेद बताई ।
अभिमान मान तज पडो शरण में जाई, मैं बार बार दिया तुम्हें रही समझाई ॥
लक्ष्मण की तबीयत देखो बडी गरम है ॥ बेशक सायबी ... ॥

५.कहे हरिराम मन्दोदरी यूँ समझावे, रावण के दिल में एक बात नहीं आवे ।
पोकर बभूत जगसा भोला फरमावे, ये हरिराम सिखवाल सभा में गावे ॥
पाराशर कहे दुश्मनों से कातिल हम हैं ॥ बेशक सायबी ... ॥

भजन १८६ (लावणी)

क्या रामचन्द्र से मेरी सायबी कम है, नहीं दूंगा जानकी जबतक दम में दम है ॥ टेर ॥

१.यूं हाथ पकड कर मन्दोदरी समझावे, औरों के धोके पिया भूल मत जावे,
सुवरण की लंका क्यों तू मुफत गमावे, तू रामचन्द्र से जरा पार नहीं पावे ।
जब गुस्से में भरा रावण में एक दम है ॥ नहीं दूंगा.. ॥

२.रावण के दिल में यही है बात बिचारी, क्यों त्रिया चरित्र दिखावे मुझे तू नारी,
अब तलक तो तेरी मैं सुनी है बहुत कहानी, क्या मुझे समझावे मेरी मन्दोदरी रानी ।
तूज जा घर अपने बैठ मुझे नहीं गम है ॥ नहीं दूंगा.. ॥

३.रावण कहता कि मैं भी लडूँ और मारूँ, जीतेजी जानकी कभी नहीं मैं हारूँ ,
सारे दल में मैं खूब लडूँ सँघारूँ, दोनों तपसिन की जाकर भुजा उखाडूँ ।
क्या मेरे सामने और कोई हाकम है ॥ नहीं दूंगा.. ॥

४.सीता की कारण ठानी असुर लड़ाई, श्री रामचन्द्र से खासी मुक्ति पाई,
गुरु विशाल गिरी उस्ताद ने ये बतलाई, छंद आसाराम पिरे बक्स मदारी गाई ।
कहे दौलत गिरी सब कुछ काफिये दम है ॥ नहीं दूंगा.. ॥

भजन १८७ (तर्ज: भगवान तुम्हारे चरणों में)

आज अयोध्या की गलियों में घूमे जोगी मतवाला,
अलख निरंजन खड़ा पुकारे, देखूंगा दशरथ लाला ॥ टेर ॥

१.शैली सिंगी लिये हाथ में, अरु डमरू त्रिशूल लिये,
छमक छमा छम नाचे जोगी, दरस की मन में चाह लिये,
पग के घुंघरू छमछम बाजे कर में जपते है माला ॥ अलख ॥

२.अंग भभूत रमावे जोगी, बाघम्बर कटि में सोहे,
जटा-जूट में गंग विराजे, भक्त जनों के मन मोहे,
मस्तक पर श्रीचन्द बिराजे गल में सर्पन की माला ॥ अलख ॥

३.राज द्वार पे खड़ा पुकारे, बोलत है मधुरी बानी,
अपने सुतको दिखा दे मैया, ये योगी मन में ठानी,
लाख हटाओ पर ना मानूँ , देखूँगा तेरा लाला ॥ अलख ॥

४.मात कौशल्या द्वार पे आई अपने सुत को गोद लिये,
अति विभोर हो शिव जोगी ने बाल रूप के दरस किये,
चले सुमिरते राम नाम को, कैलासी काशीवाला ॥ अलख ॥

भजन १८८ (तर्ज: तेरे पुजन को भगवान बना मन मन्दिर आलिशान)

नार मोहे शंकर रो वरदान, क्या करसी श्री भगवान ॥ टेर ॥

१.एक दिन शिवजी मेरे घर आए, मेरे पिता ने निवत जिमाये ।
जीम जूठ कर मगन भए और लंका कर दी दान ॥ नार मोहे ॥

२.लंका जैसे कोट हमारे, सात समुन्दर लगे किनारे ।
मेघनाथ सा पुत्र हमारे कुम्भकरण बलवान ॥ नार मोहे ॥

३.अहिरावण भये बसे पताला, जिनके जड़े बजर के ताला ।
राम लक्ष्मण को पकड़ मंगाओ,संग आये हनुमान ॥ नार मोहे ॥

४.राम राम सिया राम रटो रे हरि चरणन में ध्यान धरो रे ।
तुलसीदास यूं कहत मंदोदरी, भावी बडी बलवान ॥ नार मोहे ॥

भजन १८९ (तर्ज: यशोदा मैया भोजन करावे)

मीठे लगे तेरे बेर, भीलनी मीठे लगे ।। टेर ।।

१.रामा को देख भीलनी हो गई दिवानी ।
चुन चुन के लाई मीठे बेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

२.ऐसे रसीले कबहु न खाये,
तुम भी तो खाओ भय्या बेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

३.लक्ष्मणजी को बेर जो दीना
वो तो पीछे को फेक दीना बेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

४.लक्ष्मण भैया क्यूँ नहीं खाये
खाने पड़ेंगे तुम्हें बेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

५.लक्ष्मणजी को शक्ति लगी जब
संजीवन हो गये बेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

६.तुलसीदास भजो भगवाना,
अपने भक्तों की रख लई टेर ।। भीलनी मीठे लगे ।।

भजन १९० (तमाशा)

गढ़ लंका माँही आयी असवारी राजाराम की ।। टेर ।।

१.कहत मंदोदरि सुण पिया रावण, सपनों बिसवा बीस,
कूदत देख्या बांदरा सजी, टूटत देख्या शीष जी ।। गढ़ लंका ।।

२.तुं क्युं डरपे नार मंदोदरि पिहर दूं भिजवाई
एक बार सन्मुख होय लडस्युं युग युग होत बढाई ।। गढ़ लंका ।।

३..नार मंदोदरि कह पिया रावण आ काँई कुबद्धि कमाई ।
जिनकी जानकी तुम हर लाये वे तपसी दोउ भाई जी ।। गढ़ लंका ।।

४.तिरिया जात बुद्धि की ओछी, उनकी करत बड़ाई,
भू मण्डल से पकड़ मँगाऊँ वे तपसी दोऊ भाई जी ।। गढ़ लंका ।।

५.मेघनाद सा पुत्र हमारे कुम्भकर्ण सा भाई,
लंका सरीसा कोट हमारा, सात समन्दर खाई जी ।। गढ़ लंका ।।

६..हनुमान से पायक उनके लक्ष्मण जैसा भाई,
जलती अगन में कूद पड़े वो, कोट गिने नहीं खाई जी ।। गढ़ लंका ।।

७.रावण मार राम घर आये, घर घर बटत बधाई,
मात कौशल्या करे आरती, तुलसीदास जस गाई जी ।। गढ़ लंका ।।

भजन १९१ (तर्ज: जमुना किनारे मोरा गाँव साँवरिया आ जाना)

खड़े गंगा किनारे सियाराम राम राम जाना पार है ।। टेर ।।

१.यहाँ खड़ी बहुत सी नैया, कोई दिखत नाय खिवैया,
उसने आने से किया इन्कार कार कार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

२.प्रभु एक शर्त पर आऊँ, पग धोऊँ कठोता लोऊँ,
फिर नैया में करूँ असवार वार वार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

३.सियाराम लखन मुसकाये, झट अपने चरण धुलवाये,
फिर नैया में हुये असवार वार वार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

४.सीता ने किया इशारा, प्रभु दिखत नाय किनारा,
नैया बीच पड़ी है मझधार धार धार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

५.प्रभु देने लगे किराया, केवट के समझ न आया,
उसने लेने से किया इनकार कार कार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

६.तुम आये घाट हमारे, हम जब आवें घाट तुम्हारे,
फिर मेरा भी करना बेड़ा पार पार पार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

७.हम नदी नाव खेवटिया, तुम भव सागर केवटिया,
इस नाते से किया इनकार कार कार जाना पार है ।। खड़े गंगा ।।

भजन १९२

राम नाम का सार समझले, राम नाम का सार ।। टेर ।।

१.रकार से रम रहा है सब में निर्गुण ज्योति पसार ।
रूप रंग रस बनकर सब का सगुण ब्रह्मा विस्तार ।। राम नाम का ।।

२.अकार से है अलख अकर्मा अगम अनादि अपार ।
आप बनावे आप ही पाले आप ही मेटन हार ।। राम नाम का ।।

३.मकार से मन माया बनकर खेले खेल अपार ।
मूल बीज है महामंत्र यह शिव लीन्हे उर धार ।। राम नाम का ।।

४.प्रेमनाथ कहे सुन लो भाई राम शब्द का सार ।
रटो प्रेम से नाम समझ कर बेड़ा होगा पार ।। राम नाम का ।।

भजन १९३

मेरी छोटी सी है नाव, तेरे जादू भरे पाँव,
डर लागे मोहे राम, कैसे बिठाऊँ तुम्हें नाँव में ।। टेर ।।

१.जब पत्थर से बन गई नारी, ये तो लकडी की नाव हमारी,
करूँ यही रुजगार, पालूँ निज परिवार, सुनो सुनो जी दातार
।। कैसे बिठाऊँ ।।

२.एक बात मानो तो बैठा लूँ, तेरे चरणों की धूल धुवाऊँ,
यदि तुमको हो मंजुर, बात मेरी ये हुजुर, मेरा होय अंदेशा दूर
।। कैसे बिठाऊँ ।।

३.केवट चरणों को धोये, पाप जन्म जनम के धोये,
होके बडे परसन, किये राम दरशन, संग सिया लक्ष्मण
।। कैसे बिठाऊँ ।।

४.चरणामृत सबको पिलाऊँ, फल फूल मैं भेंट चढाऊँ,
ऐसा समय बार बार, नहीं आता सरकार, सुनो सुनो प्राणाधार
।। कैसे बिठाऊँ ।।

धीरे धीरे से नाव चलाता,वो तो गीत खुशी के गाता,
कहता मन में यही बात, हो न जाए कँही रात, सूरज सुन लो मेरी बात
।। कैसे बिठाऊँ ।।

ले लो मल्लाह ये उतराई,मेरे पल्ले कछु नहीं पाई,
ये तो कर लो स्वीकार, तेरा होगा बेडा पार, होगी जग में जय जयकार
।। कैसे बिठाऊँ ।।

६.जैसे तुम खेवटिया हम है, भाई भाई से लेना शरम है,
हमनें किया नदी पार, करना तुम भवसागर पार, परमानन्द की पुकार
।। कैसे बिठाऊँ ।।

-:०:-

तुलसी जाके मुखन से, धोके निकसे राम ।
वांके के तन की चामरी, मेरे तन को चाम ।।

भजन १९४

राम नाम रटो चाहे, दिन चाहे रात है
राम मेरे तात और सीता मेरी मात है ॥ टेर ॥

१.राम नाम रट के तो भीलनी भी तर गयी
जग में वो आय कर नाम रोशन कर गयी
रामजी नाम में ना कोई जात है ना कोई पात है ॥ राम मेरे ॥

२.साधु और महात्मा गीत तेरे गायेंगे
देवता भी हाथ जोड, शीश नवायेंगे
राम की तारीफ करूँ, क्या मेरी औकात है ॥ राम मेरे ॥

३.रावण अहंकारी को जग बीच मारिया
भक्त विभिषण को शरण लगा लिया
अयोध्या के राजा राम भरतजी के भ्रात है ॥ राम मेरे ॥

४.दासी दिन रात तू रामजी को ध्याये जा
जनम मरण अपना सुफल बनाये जा
आयेगा न जनम फिर बार बार हाथ है ॥ राम मेरे ॥

भजन १९५

अयोध्या में मधुरा मधुरा बोले मोर,
दादर मोर पपिया बोले, कोयल करे रे किलोर ॥ टेर ॥
१.त्रेता युग के चैत मास में, रामजी लियो है अवतार ॥अयोध्या ॥
२.सरयू के तीर अयोध्या नगरी, रामजी लियो है अवतार ॥अयोध्या ॥
३.ऋषि रे मुनि थारे चरणे आवे, हो रही जय जय कार ॥अयोध्या ॥
४.धन्य धन्य इण मात कौशल्या, रामजी खिलाया गोद ॥अयोध्या ॥
५.हाथी रे घुडला दान दिरीजे, हो रहा मंगलाचार ॥अयोध्या ॥
६.धन्य धन्य इण अवधपुरी ने, रामजी खिलाया दिन रात॥अयोध्या ॥
७.तुलसीदास भजो भगवाना, म्हारो चित चरणां रे मांय ॥अयोध्या ॥

भजन १९६ (लावणी)

राम लिखूँ रघुनाथ लिखूँ या दशरथ के फरजन्द लिखूँ
सिया रमण दुख हरण लिखूं या पूरण कौशलचन्द लिखूँ ।। टेर ।।

१.शिवधनु भंजनहार लिखूँ या तुम्हे सुनो रघुनंद लिखूँ
सत्यसिन्धु सुखधाम लिखूँ या बाली असुर निकंद लिखूँ
सुरतनय के सखा लिखूँ या रघुवर आनन्द कंद लिखूँ
खरदुषण त्रीसिरा मारे प्रभु बधे बिराध कबंध लिखूँ
भवसागर की नाव लिखूँ या तारे शिळा समंद लिखूँ ।।सिया रमण।।

२.लक्ष्मण अनुज दनुज कुल घालक या मारे दशकंध लिखूँ
भक्त वत्सल भगवान लिखूँ या निराकर निरद्वन्द लिखूँ
अखिल कोट ब्रह्माण्ड के नायक सूक्ष्म तुम्हे बुलन्द लिखूँ
भव भय भन्जन मुनि मन रन्जन गंजन गरुड़ पसन्द लिखूँ
शिला अहिल्या तारणहारे, काटे सुर के फन्द लिखूँ ।।सिया रमण ।।

३.कृष्ण कन्हैया वासुदेव वसुदेव तनय नंद नंद लिखूँ ,
गोपीजन गोपाल लिखूँ या माधव बालमुकुन्द लिखूँ
कान कन्हैया लाल लिखूँ या हते कन्स जरासन्ध लिखूँ
माखन चोर मुरार लिखूँ या गिरधारी गोविन्द लिखूँ
काली नाग नाथन हारे या तारे नृप मुचकुंद लिखूँ ।।सिया रमण ।।

४.नारायण नरसिंग नरहरि अच्युत परमानन्द लिखूँ
रामायण और भागवत जिसके बारह स्कंद लिखूँ
ज्ञान खान गुण सिंधु लिखूँ या तुमको वेद प्रबंध लिखूँ
कलिमल ग्रसित जीव पापी में किस प्रकार तव छंद लिखूँ
हरिराम सिखवाल सभा में कहे छंद कड़ि बंद लिखूँ ।।सिया रमण ।।

-:०:-

एक भरोसो एक बल, एक आत्म विश्वास ।
एक राम धनश्याम हित, चातक तुलसीदास ।।

भजन १९७ (राग: केदार)

गावो बधावा आज श्री रघुवर परण पधार्या रे
लक्ष्मी रूपा सीता जी न ब्याह कर लाया रे ॥ टेर ॥

१.जनक पुरी की सीता प्यारी अयोध्या पुरी के है श्री रघुवर
जुगल जोड़ी पर वारी जाऊँ आनन्द छायो रे ॥ गावो बधवा ॥

२.मात कोशल्या अति हरषावे लाडलडी पर मोती लुटावे
राजा दशरथ फुल्या फुल्या रतन लुटाया रे ॥ गावो बधवा ॥

३.राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन चारो दुल्हा बन गए सुन्दर
चन्दा लाजे सुरज लाजे काम लजाया रे ॥ गावो बधवा ॥

४.सभी देवता अति सुख पावे देने आशीष गगन मे छाये
बरसा फुल गगन से सबने शीश झुकाया रे ॥ गावो बधवा ॥

५.नौबत शन्ख नगारा बाजे सब सखीयों ने मंगल साजे
झूम झूम कर नाचे दासी तन मन वार्या रे ॥ गावो बधवा ॥

भजन १९८

रामजी को ढूंढो लक्ष्मणजी को ढूंढो
कोई उन्हे ढूँढ कर लाय रे मेरा राम खो गया ॥ टेर ॥

१.रामजी ने धनुष तोड़ा सीता घर आई, कैकई ने कुबद कमाई रे ॥ मेरा राम ॥
२.मात कैकई की आज्ञा पाकर वन को चले रघुराई रे ॥ मेरा राम ॥
३.रामजी भी वन को चले लक्ष्मण जी भी वन को
संग में जानकी माई रे ॥ मेरा राम ॥
४.आगे आगे राम चले पीछे पीछे लक्ष्मण
बीच में जानकी माई रे ॥ मेरा राम ॥
५.रामजी ने रावण मारा सीता घर आई
राज तिलक प्रभु पाई रे ॥ मेरा राम ॥
६.मात कोसल्या करत आरती
तुलसीदास यश गाई रे ॥ मेरा राम ॥

भजन १९९ (राग: देखा न वीर हनुमान जैसा)

राजे भी देखे, महाराजे भी देखे,राजे भी देखे, महाराजे भी देखे
देखा ना कोई मेरे राम जैसा, कोई राजा न देखा मेरे राम जैसा ।। टेर ।।

१.दीन दयालू उदार शिरोमणी कौन भक्त भय हारी
पद पंकज रज परस अहिल्या कौन देव ने तारी...
देवता भी देखे महादेवता भी देखे, देखा न कोई मेरे राम जैसा ।।राजे।।

२.सुख तज राज अवध का, कानन किसको भाया
केवट कोल किराट जनों को, किसने गले लगाया
त्यागी भी देखे, महात्यागी भी देखे, देखा न कोई मेरे राम जैसा ।।राजे।।

३.किसका विसद पतित पावन है, कौन गीध को तारे
किसने शबरी के फल खाये, कपि को कौन पुकारे
योगी भी देखे महायोगी भी देखे, देखा न कोई मेरे राम जैसा ।।राजे।।

४.बानर भालू विभिषण को, कब किसने मित्र बनाया
गिरिधर जैसे अमित सखों को, किसने कब अपनाया
स्वामी भी देखे महास्वामी भी देखे, देखा न कोई मेरे राम जैसा ।।राजे।।

भजन २००

श्री राम नाम धन पूँजी पल्ले बांधो रे मना ।। टेर ।।

१.जाती को भिखारी सुदामा ब्राह्मणा
तीन मुट्ठी चावल की दीनी पाया माल घना ।। श्री राम नाम ।।

२.लंका बांधी बंका बांधी बांधी सजना
मीरा बाई ऐसी बांधी पायो है कान्हा ।। श्री राम नाम ।।

३.ध्रुव बांधी प्रहलाद बांधी बांधी जाट घना
दास कबीरा ऐसी बांधी ताना खूब तना ।। श्री राम नाम ।।

४.अजामिल से पापी तारे पतित घना
सूर स्वामी अन्तर्यामी मेरा क्या है गुनाह ।। श्री राम नाम ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कृष्ण

भजन २०१ (तर्ज: फाग खेले गिरधारी)

हाँ गजानन्द मंगलकारी, मुसे की सोहे असवारी,
भाल लिया है हाथ नाथ तुम अंकुश धारी रे ॥ टेर ॥

१.कोमल बदन चार भुज सोहे, वक्रतुण्ड देख्या मन मोहे,
एक दंत दयावंत सुण्ड थारी लागे प्यारी रे ॥ हाँ गजानन्द ॥

२.ठुमके चाल चले महाराजा, पुरन करे मनोरथ काजा,
रणत भंवर के नाथ लाज अब रखियो म्हारी रे ॥ हाँ गजानन्द ॥

३.पूजन करे सभी मन चित सूँ, मोदक भोग लगावे हित सूँ,
टेर करे भरपूर आपकी रिध सिध नारी रे ॥ हाँ गजानन्द ॥

४.सर्व काज सिद्ध करो हमारा, तुम बिन कोई नहीं हमारा,
पूनम चंद सिखवाल भजो गणपति अवतारी रे ॥ हाँ गजानन्द ॥

भजन २०२ (राग: मांड)

हरजी न जांचण जावो जी पीया, थांरो भायलो गोपाल ॥ टेर ॥

१.ओराँ के तो अनधन लक्ष्मी, थे क्यूँ भया कंगाल
यादव पति ने जायर जाँचो, पल में करदे न्याल ॥ थांरो ॥

२.विप्र सुदामा की पटराणी, बोली वचन रसाल
वे है थांरा परम सनेही,पढ़िया एक पोसाल ॥ थांरो ॥

३.तांदुल लेकर चले सुदामा, मन में नहीं खुशहाल
यादव पति ने जायर देस्यूँ, ऐसी कौन रसाल ॥ थांरो ॥

४.चार पैंड प्रभु सामा आये, मिलिया भुजा पसार
चरण धोय चरणामृत लीनो, राण्याँ देखे हाल ॥ थांरो ॥

५.दो मुठ्ठी चावल की चाबी, तुष्ट्या दीनदयाल
टूटी टपरी महल चिणाया, जड़ दिया हीरा-लाल ॥ थांरो ॥

६.छिन में रंक राव कर डाले, ऐसो दीनदयाल
नरसी के स्वामी साँवरिया, भक्तन को प्रतिपाल ॥ थांरो ॥

भजन २०३ (राग: मांड)

आज्यो म्हारे देश, बंसी वाला आजो म्हारे देश ।। टेर ।।

१.सावण आवण कह गयो साँवरो, कर गयो कोल अनेक
गिणताँ गिणताँ घिस गई म्हारी, आँगलिया की रेख ।। बंसी वाला ।।

२.कागद नांही स्याही नांही, लेखण नहीं इण देश
पंछी को परवेश नहीं है, किण विध लिखुँ संदेश ।। बंसी वाला ।।

३.सांवरा ने मैं ढूंढन चाली, कर जोगन को वेश
ढूँढत ढूँढत जुग गया जी, धोला हो गया केश ।। बंसी वाला ।।

४.क्रीट मुकुट कठ कांछली जी, घुंघर वाला केश
मीरा ने गिरधर मिलया जी, धर नटवर को वेश ।। बंसी वाला ।।

भजन २०४

आये आये जी हमारे बालापन के मित्र सुदामा आये आये जी ।। टेर ।।

१.आवत देखे यादव नाथ, उठकर दौड़े भर लई बांथ
भैया भोजाई नहीं साथ, कहाँ तुम छोड़ आये जी ।। हमारे ।।

२.ऊँचे सिंहासन बैठाये, राणी रूकमणी चंवर डुलावे
भैया कहाँ है वो जो गाँठ, तुम भोजाई से लाये जी ।। हमारे ।।

३.हँस कर गाँठ लई जब खोल, चावल थे उसमे अनमोल
गाँठ के साथ करम दिया खोल, एक मुट्ठी भर खाये जी ।। हमारे ।।

४.दूजी फंकी भर कर मारी, देखे राण्याँ रुकमण सारी
हुई जब तीजी की तैयारी, रूकमण कोस बगाये जी ।। हमारे ।।

५.मारण दिया नहीं तैने बंका, आई क्या तेरे मन में शंका
प्यारी रहे मित्र दरीद्र कलंका, मुझसे सहा न जाये जी ।। हमारे ।।

६.राणी रुकमण कहे कर जोड़, कुछ तो हमें भी छोड़ो तो
जो मारो तीजी फंकी और, संपदा सब चलि जाये जी ।। हमारे ।।

७.ऐसे कहते हीरालाल, है हर दिल का यही ख्याल
जिनके साथी मदनगोपाल, महल कंचन के बनाये जी ।। हमारे ।।

भजन २०५ (तर्ज: खबर करदो रघुनन्दन को)

कृष्ण की सूरत मन मोहनी दिवानी सब पनिहारन बनी ।। टेर ।।

१.सखी तो सब जल भरने को चली, कृष्ण वहाँ रोक खड़ा है गली
जाने ना देवे करे खलबली, सुबह की निकली दोपहर टली
सास ननंद का डर मुझे, सुनो कृष्ण महाराज
हम परघर की नार कहावें, लेत हमारी लाज
घर में मारेगा हमारा धनी, दिवानी सब पनिहारन ।। दिवानी ।।

२.कृष्ण कहे सुनो सखी एक बात, आज तुम रहो हमारे साथ
जोबन धन लूटूँ सारी रात, कृष्ण जब धरा अंगियो पर हाथ
अंगियो के बल टूटे गये चोली तारोतार
नथ बेसर सब टूट पड़ी है टूटा गले का हार
हार की झलक बडी अलबली ।। दिवानी ।।

३.ग्वालन कहती है मुख जोर, कृष्ण लाखों चोरों का चोर
समझकर अब तो पीछा छोड़, करे क्यूँ परनारी संग झोड़
जाय पुकारूँ कंस को अभी मेरी फरियाद
नाहक जो तू हमें सतावे लेत हमारी लाज
कंस तेरी कर डालेगा हानी ।। दिवानी ।।

४.कृष्ण कह रो तू भौं तेरा, कंस कछु कर न सके मेरा
जभी तो धन माया ने घेरा, काल का उसके सिर पे डेरा
कंस मार निरवंश करुँ, दैत्यन को चकचूर
वक्रदन्त शिशपाल, सभी को गर्व करूं मैं दूर
काल की उसके शीष पर ठनी ।। दिवानी ।।

५.इतना सुन ग्वालन घबराई, नाथ मैं आपकी कहलाई
हाथ जोड़ चरणां सिर नाई, लाज मेरी रखियो यदुराई
तुकम कहे एक हारी गवालन, जीते यादव राय
सिर चरणों में धर दिया, वो मन में रही शरमाय
हाथ जोड़ चरणां दासी पडी ।। दिवानी ।।

भजन २०६

आज सखि बंसी बाजी है, जमुना पे राधा प्यारी ॥ टेर ॥

१.कित से आये कान, हो कित आई राधा प्यारी
कित से आये हो, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

२.गोकल से आये कान, बरसाने राधा प्यारी
कैलास से आये हो, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

३.क्या करते कान, क्या करती राधा प्यारी
क्या करते हैं, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

४.बंसी बजावे शाम, रास रचावे राधा प्यारी
तांडव करते हैं, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

५.क्या देव कान, क्या देवे राधा प्यारी
क्या देवे हो, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

६.भक्ति देवे कान, भाव देवे राधा प्यारी
मुक्ती देवे हो, शिवशंकर जटाधारी ॥ आज सखि ॥

भजन २०७ (रसिया)

नख पर धार लियो गिरीराज, नाम गिरधारी पायो है ॥ टेर ॥

१.सुरपती पूजा मेरी करण, गिरी राज पुजायो है
सवा लाख मण सामग्री को, भोग लगायो है ॥ नख पर ॥

२.भई स्वर्ग में खबर, क्रोध सुरपति को आयो है
धूमधाम से आय इंद्र, पाणी बरसायो है ॥ नख पर ॥

३.सब ब्रज वासी उठ धरण, गिरि राज उठायो है
पडी न ब्रज पर बूंद, तभी इंदर घबरायो है ॥ नख पर ॥

४.सुरभी श्याम करण घोड़ा, ऐरावत लायो है
चरणन शीश नवाय, क्षमा अपराध करायो है ॥ नख पर ॥

५.धन्य धन्य ब्रज चंद्र, इन्द्र को मान घटायो है
घासीराम गोर्वधन वालो, हरि यश गायो है ॥ नख पर ॥

भजन २०८ (रसिया)

ओजी थारी सब चिंता मिट जाय, सेवा गोवरधन की करलो ।। टेर ।।

१.थे सात परकमा दीजो, दूधाँ का स्नान कराय लो
थारा पाप जनम को जाय ।। सेवा ।।

२.थे मानस गंगा न्हायलो, सामग्री भोग लगायलो
बीडा का छैहन पार ।। सेवा ।।

३.गिरराज लगे मोहे प्यारो, वो कडा किलंगी वालो
हिचकी पर हीरालाल ।। सेवा ।।

४.माथा पर मुकुट विराजे, कानो में कुंडल छाजे
वाके गल पुष्पन को हार ।। सेवा ।।

५.इंद्रकोप कियो बृज भारी, वो बरस्यो मूसलधारी
नख पर गिरवर लियो उठाय ।। सेवा ।।

६.वारे पग में नुपूर बाजे, चलता की चाल सुहावे
वांरी ठुमक-२ चाल ।। सेवा ।।

७.थे करो प्रेम से सेवा, पावो अंत में मेवा
ओजी भवसागर उतरो पार ।। सेवा ।।

८.गोवर्धन लीला गावे, वो फेर जनम नहीं पावे
वांरा गऊ लोक मे वास ।। सेवा ।।

भजन २०९

कमल दल लोचना, कैसे नाथ्यो नाग भुजंग।

१.खेलत गेंद गिरी जमना में, कूद पड्यो है निशंक ।। कैसे ।।

२.जमना में काली बसे हो, जहर की उड़त फुरंग ।। कैसे ।।

३.जमना में हरि कूद पडे हैं, साथ नहीं कोई संग ।। कैसे ।।

४.नाग नाथ रेती परलाये, फण फण पर प्रभु करत नृत्य ।। कैसे ।।

५.मीरा के प्रभु गीरधर नागर, सुधरी सुदामा के संग ।। कैसे ।।

-:०:-

जल थल जीव जीते कते, पशु पक्षी सब और ।
खाली कबहु न देखिये, राम रमे सब ठौर ।।

भजन २१० (रसिया)

बन गये नन्दलाल ललिहारी लीला लिखवालो प्यारी ॥ टेर॥

१.लहंगा पहिन ओढ़ सिर सारी, अंगिया पै जाके जरी की किनारी
शीश पे शीश फूल बैना, लगा लिये काज दोऊ नैना ।
पहिन लिये नख सिखसे गहेना
नख शिख गहना पहनकर कर सोलह श्रृंगार
बलिहारी नन्द नन्दकी नर से बन गये नार
नर से बन गये नार नार के झोली कांधे पे डारी ॥ बन गये ॥

२.माथे पे लिख दे मदन मुरारी, शीश पे लिखदे श्री गिरधारी ।
दृगन पे लिख दे दीनदयाल, नासिका पर लिख दे नन्दलाल ।
कपोलन पर लिख दे कृष्णगोपाल
श्रवन पर लिख साँवरो अधरन आनन्द कंद
ठोडी पर ठाकुर लिखो गले गोकुल चन्द
छाती पर लिख छेल दोऊ, बाहन पे लिखो मुरारी ॥ बन गये ॥

३.हस्तन पर हलधरजी के भैया, अंगुली पर आनन्द करैया,
पेट पर लिख दे परमानन्द, नाम में लिख दे तू नंद नंद
जांघ पर लिख दे श्री गोविन्द
घुटनु में घनश्याम लिखो, पिंडी पे प्रतिपाल
चरनन में चितचोर लिखो नख नख में नन्दलाल
रोम रोम में लिखो रूपावती राधे बनवारी ॥ बन गये ॥

४.लीला गौद प्रेम रस आयो, तन मन को याने होश भुलायो
खबर झोली झंडन की नाय, धरण पै चरण नहीं ठहराय
सखी सब देखत ही रह जाय
देखत सखी सब रह गयी, परी प्रेम के फंद
विश्वा बिस दिखे सखी छलन आयो नन्द नन्द
घासीराम जुगल छबी ऊपर जाऊँ जाऊँ बलिहार ॥ बन गये ॥

-:०:-

पढ़ने कि हद समझ है, समझण की हद ज्ञान ।
ज्ञान कि हद हरि नाम है, यह सिद्धान्त उर आन ॥

भजन २११

उधो नहीं ये मथुरा, लगती हमें प्यारी
छिन छिन भूलती नही है बृज की लता सुखारी ॥ टेर ॥

१.गऊओं का वह चराना बंसी का ये बजाना
कदमों की छाह थी ये कैसी प्रमोद कारी ॥ उधो नही ॥

२.मोरों का पुंछ धरना क्रीडा विपिन में करना
पाऊं कहाँ इहाँ मैं वृषभान की दुलारी ॥ उधो नही ॥

३.मेरा दुलार करते थे नंद ओ यशोदा
उनके बिना इहाँ मै रहता सदा दुखारी ॥ उधो नही ॥

४.उन ग्वाल बाल प्यारों की क्या कहुँ मिताई
हारे हुए जिताते थे वे मुझे खिलाड़ी ॥ उधो नही ॥

५.जिनने मुझे किया था निज आत्म का समर्पण
उनका वियोग हा हा यह क्या दशा हमारी ॥ उधो नही ॥

६.लक्ष्मण कहे सही है तुमको कठोर प्यारे
रो रूं भरे भलो हम तुम तो रहो सुखारी ॥ उधो नही ॥

भजन २१२ (तर्ज: आया मदन मोहन घनश्याम कुंदनपुर)

आयो आयो रे सांवरियो रुक्मण कारणा रे ॥ टेर ॥

१.नृप भीषण जी बात चलायी, शठ रूकमैयो कुबद बिचारी
चीठी भेज बुलायो डाहल बारना रे ॥ आयो आयो ॥

२.जान देख डगरी हरषाई, जद रुक्मणी मन में दुःख पाई
लीनी काढ़ कटारी मरबा कारणा रे ॥ आयो आयो ॥

३.रूकमणी चीट्ठी तुरन्त लिखाई, द्विज हरीया के हाथ पठाई
बांचत बेग पधारिया असुर सहांरणा रे ॥ आयो आयो ॥

४.दास पदम स्वामी अधिकारी, मार असुर दुख मेट्या भारी
लोक लाज के काज साथ,भक्त उबारणा रे ॥ आयो आयो ॥

भजन २१३ (तर्ज: एक दिन गिरिजा शिवशॅकर)

आया मदनमोहन घनश्याम कुंदना पुर पाहुना जी ।
बाई रुक्मण रा भरतार म्हारे तो मन भावना जी ॥ टेर ॥

१.श्याम थान कुंडनापुर की नारी, वा तो गावे हँस हँस गारी ।
एजी बाई रुक्मण रा भरतार म्हारे तो मन भावना जी ॥ आया मदन ॥

२.श्याम थारी भुआ कुंती नारी, एजी वातो जायो कंवर कंवारी ।
एजी व्यांकी सूरज के संग यारी, रंग मचावना जी ॥ आया मदन ॥

३.श्याम थारी सगी सुभद्रा बहना, उनका लग्या अर्जुन से नैना ।
एजी वो तो करी न कुल की कान, अर्जुन संग जावना जी ॥ आया मदन ॥

४.श्याम थारा गोरा पिता और माता, श्याम थारा गोरा बलदाउ भ्राता ।
एजी थारी माय किन्हो काँई काम, श्याम सुत जावणा जी ॥ आया मदन ॥

५.जो कोई इस गारी ने गावे, वोतो भव सागर तर जावे ।
एजी वोतो होवे भव से पार फेर नहीं आवणा जी ॥ आया मदन ॥

भजन २१४ (तर्ज: थे तो आरोगोनी मदन गोपाल)

आवो आवोजी सांवरिया म्हारे देश, उबी जोऊँ बाटड़ली ॥ टेर ॥

१.मन मंदिर में ज्ञान बुवारी दीनी है भरपूर
पाप का कुण्डा बे गया, और फेंक दिये सब दूर ।
म्हारा मन्दिरया में दर्शन दिखाय ॥ उबी जोऊँ ...॥

२.पलका पर पग मेलती जी, उतीरी मंदिर बीच
दर्शन पास्यां भोग लगास्यां, दीनुँ अँखियां मीच
मेरे नैंना में बसोजी भगवान ॥ उबी जोऊँ ...॥

३.ठाकुर के सिंहासन उपर, भाव बिछायो चीर
मैं तो कुछ जानुँ नहीं जी, थे जाणो रघुवीर
मेरे हृदय में बसोजी भगवान ॥ उबी जोऊँ ...॥

४.मैं दासी हूँ आपकी जी, राधा म्हारो नाम
रोम रोम थारे अर्पण है जी, सुध लीन्योजी भगवान
मीरा बाई भजन बनाकर केवे मेरे तो सिर पर श्री भगवान
॥ उबी जोऊँ ...॥

भजन २१५

मेरी मटकी का कर गया टूक, मैया तेरो बनवारी ।। टेर ।।
मैया तेरो गिरधारी तेरो बनवारी

१.मेरी मोड दी कलाई बिन दया कोनी आयी,
मेरे मगरया मे मेरे मगरया मे मारी एक डूक ।। मैया...।।

२.ग्वालियान लाय घर म रूसनो मचा दियो
दहि दूध चुटीयासू माटी म मिला दियो, म्हासु बोल्यो कोनी जाव
म्हारो हियो भर आव म्हारा कालजा मे उठ रही हुक ।। मैया...।।

३.पानीडो भर ही मै तो यमुना पे जाय के
इतने मे मारी कुबदी गीडी की घुमाय के
मै तो क्या सु लाऊँ पाणी म्हारी लाडेगी जिठानी
मारे डर के रही मै तो धूज ।। मैया...।।

४.सोवणी सी छाट कर मैं ल्याई थी कुम्हार से
एक दिन भी कोनी चाली जुलमी की मार से
देखो कर के जुलम वो तो चड गयो कदम, रयो मुख से मुरलीया फूँक ।। मैया... ।।
सोगी थी नचीत मै तो छिके उपर मेल के

भजन २१६ (तर्ज: नखरालो देवरियो)

हट पकडयो नन्दजी को लाल मैय्यारी मोहे चन्दा ला दे
चन्दा ला दे मैय्या चन्दा ला दे ।। हट पकड्यो ।।

१.मात यशोदा बोली कान्हाँ ना रो मेरे होते
हाय ये कैसी लाल भई है अखियाँ रोते रोते ।। हट पकड्यो ।।

२.हाथी घोडा खेल खिलोना जो चाहे मंगवादू
माखन मिश्री खाले चल कर न्हाले मैं न्हलादू ।। हट पकड्यो ।।

३.चन्दा मामा दूर बसे हैं कैसे लेकर आऊँ
फिर भी तू ना माने तो मै थाली मे दिखला दू ।। हट पकड्यो ।।

४.इतना कह कर मात यशोदा थाली ले कर आई
पानी भर कर के दिखलाई चन्दा की परछाई ।। हट पकड्यो ।।

५.कृष्ण कन्हैया खुश होकर के लगे बजाने ताली
मैय्या के बहकावे मे आ हँसते है बनवारी ।। हट पकड्यो ।।

६.जिन चरणो की ठगनी माया ठगनी है कहलाती
कहता राजू वो अविनाशी को मैय्या बहकाती ।। हट पकड्यो ।।

भजन २१७ (पणिहारी)

चार भुजा सूं म्हारी वीनती सुणजो बारम्बार
नैया पड़ी है मझधार उतारो पार ।। टेर ।।

१.मथुरा शहर सुहावणो जी, प्रगट्या कृष्ण मुरार
घर घर मंगलाचार ।। उतारो पार ।।

२.मोर मुकुट सिर सोहनो जी, कानां कुण्डल झलकेदार
गल माय वैजयन्ती माल ।। उतारो पार ।।

३.राधा जी को रूप सुहावणो जी, संग में कृष्ण मुरार
जुगल जोड़ी रा भरतार ।। उतारो पार ।।

४.रुकमण पूजे अंबिका जी, भर भर मोतीयाँ को थाल
संग में सहेल्याँ हजार ।। उतारो पार ।।

५.रोल गाँव रंगनाथ को जी, मंदिर गुलजार
दर्शन करबा आवे नरनार ।। उतारो पार ।।

६.लाडुजी पेड़ा दोवटा जी, बरफी बणी मजेदार
भोग लगावो दीना नाथ ।। उतारो पार ।।

७.कनक कटोरो दूधां भर्‌यो जी, जामे मिश्री मिलाय
अरोगोनी दीनदयाल ।। उतारो पार ।।

८.फतेलाल की बीनती जी, सुणजो सिरजन हार ।। नैया पडी ।।

भजन २१८ (रसिया)

तेरी शरण पड़ा मैं आय, नाथ मोहे दे दर्शन प्यारा ।। टेर ।।

१.गोकुल ढूँढी मथुरा ढूँढी, वृन्दावन सारा,
काशीपुरी सकल फिर ढूँढी, ढूँढा हरिद्वारा ।। तेरी शरण ।।

२.कोई वैकुण्ठ कैलाश बतारे, कोई सागर पारा,
कोई कहे सब जग के भीतर, व्यापक करतारा ।। तेरी शरण ।।

३.सन्त बतावे घट के माही, परगट उजियारा,
कोई कहे वो अलख निरंजन, सबसे है न्यारा ।। तेरी शरण ।।

४.चार भुजा पीताम्बर सोहे, शीश मुकुट धारा,
ब्रह्मानन्द दरस मैं पाऊँ, जाऊँ बलिहारा ।। तेरी शरण ।।

भजन २१९ (रसिया)

रे माखन की चोरी छोड़ कन्हैया, म्हें समझाऊँ तोय ॥ टेर ॥

१.मैं भेज्यो तने गऊ चरावण, रहयो खिडक में सोय ।
कोऊ एक ग्वालिन ने बतलाई, दई कमरिया खोय ॥ रे माखन ॥

२.नौ लख धेनु नंद घर दूधे, नित नयो माख होय ।
बड़ो नाम है नन्द बाबा को, हँसी हमारी होय ॥ रे माखन ॥

३.बरसाने तेरी भई सगाई, हर दिन चर्चा होय ।
बड़े घराने की है राधा, नहीं वरेगी तोय ॥ रे माखन ॥

४.चाहे माता मारो पीटो, चाहे धमकाओ मोय ।
चोरी की मोहे टेक परी है, शादी होय न होय ॥ रे माखन ॥

५.लिये लकुटिया जसोदा ठाड़ी, कान्हा मारूँ तोय ।
सूर श्याम भज बालकृष्ण छवी, दिनौ नैन भर रोय ॥ रे माखन ॥

भजन २२०

वो आ गया मुरली वाला, वो आ गया बंसी वाला
भक्तों का रखवाला, वो आ गया मुरली वाला ॥ टेर ॥

१.मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजयन्ती माला ॥ वो आ ॥

२.वृंदावन में रास रचाया, माधव वन में धेनु चराया
नाचे नन्दजी का लाला ॥ वो आ ॥

३.राम नाम तुम क्यों नहीं रटते, कृष्ण नाम तुम क्यों नहीं रटते
क्या जुबां पे लग गया ताला ॥ वो आ ॥

४.राम नाम भवसागर तारे, कृष्म नाम भवसागर तारे
होरे जम का मुँह काला ॥ वो आ ॥

५.हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
चक्र सुदर्शन वाला ॥ वो आ ॥

-:०:-

मोर मुकुट कटि काछनी पीतांबर वनमाल ।
यह मुरति मम मन बसो सदा बिहारी लाल ॥

भजन २२१ (रसिया)

इकली घेर लई मधुबन में, श्याम तैने कैसी ठानी रे ॥ टेर ॥

१.श्याम मोहे वृन्दावन जाणो, लौट कर बरसाणे आणो,
श्याम मेरी विनती तुम मानो, जो कछु होय अबेर
लड़े घर सास जिठानी रे ॥ इकली ॥

२.दान दही को दे जा मोय, ग्वालिन तब जाने देऊँ तोय,
नहीं तकरार बहुत सी होय, जो कर दे इनकार मोय
होय खेंचा तानी रे ॥ इकली ॥

३.दान हम कबहूँ नहीं दियो, रोक मेरा मारग काहे लियो,
बहुत सो उधम तैने कियो, आज तलक या ब्रज में
कोई हुआ न दानी रे ॥ इकली ॥

४.ग्वालिन बातें बड़ी बनाय, ग्वाल बालन को लेऊँ बुलाय,
देऊँ तेरो माखन सबही लुटाय, इठलाये तू बार बार
तोय छायी जवानी रे ॥ इकली ॥

५.राजा कंस पे करूँ पुकार, मुश्क बंधवाय दिलाऊँ मार
तेरी ठकुराई देऊँ निकार, जुलम करे ना डरे
तके तू नार बिरानी रे ॥ इकली ॥

६.कंस क्या खसम लगे तेरो, मार के कर दूँगो ढेरो,
वाहि को जनम भयो मेरो, कंस करूँ निर्वंश
मिटाय देऊँ नाम निशानी रे ॥ इकली ॥

७.आय गये इतने में सब ग्वाला, पड़े आँखन में डोरा डाल,
घूम के चले अदा की चाल, लुट गयी ग्वालिन मारग में
हो गयी खिसियानी रे ॥ इकली ॥

-:०:-

राम नाम को अंक हैं सब साधन हैं सून ।
अंक गये कछु हाथ नहिं अंक रहे दस गुन ॥

भजन २२२ (रसिया)

भारी पड़ी भगत पर भीड़ भरोसो गिरवरधारी को,
भरोसो गिरवरधारी को, भरोसो कुंजबिहारी को ॥ टेर ॥

१.भँवर में नाव पड़ी मझधार, न दीखे कोई खेवन हार ।
दीन की सुनो दुःख भरी पुकार, लेवो डूबत से मोई ऊबार ।
तुम बिन और न दीखे कोई, दीन दुखारी को ॥ भारी पडी.. ॥

२.बन्यो कोई तीरथ बरत न धाम, किये सब खोटे काम तमाम ।
नाय में मिलो नहीं विश्राम, बिताये बिरथा आँठों याम ।
झूठो नातो देखो या सब दुनियादारी को ॥ भारी पडी.. ॥

३.आप निर्धन के धन भगवान, सदा संतन के जीवन प्राण ।
दास दीनन के दयानिधान, कृपा कर करो मेरा कल्याण ।
तुम बिन और कौन रखवईया, लाज हमारी रे ॥ भारी पडी.. ॥

४.भक्त तो भये हैं एक से एक, आपने तारे अधम अनेक ।
ना मेरे हृदय भक्ति विवेक, सदा संतन की राखो टेर ।
घासीराम नाम छीतरमल कृष्णमुरारी को ॥ भारी पडी.. ॥

भजन २२३ (लावणी)

ले जा गाँठ तिहारी, लेजा गाँठ तिहारी ॥ टेर ॥

१.गाँठ तिहारी तिहारी, मोडो आयो गिरधारी
ब्याई सगा में भूण्डा लागां, जावे लाज तिहारी ॥ ले जा गाँठ ॥

२.और सगा ने महल मालिया, बारी झरोखा भारी,
नरसी भगत ने टूटी टपरी, वा भी जग से न्यारी ॥ ले जा गाँठ ॥

३.और सगां ने जिमवा भोजन, राम खीचड़ी न्यारी,
नरसी डा ने लूखी खीचड़ी, बिना साग तरकारी ॥ ले जा गाँठ ॥

४.और सगां ने हिगँलू डोल्या, सिरस पतरना भारी,
नरसी डा ने फाटी गुदड़ी, लीर लीर कर डाली ॥ ले जा गाँठ ॥

५.आनो है तो आओ साँवरा, चरण कमल बलिहारी,
नरसी भगत थारो गुण गावे है, बार बार बलिहारी ॥ ले जा गाँठ ॥

भजन २२४ (रसिया)

खातिर कर ले नई गुजरीया, रसिया ठाडो तेरे द्वार ॥ टेर ॥

१.ये रसिया तेरे नित्य ना आवे प्रेम होय तब दर्शन पावे,
अधर अमृत को भोग लगावे, कर मेहमानी अब मत चूके,
जीवन है दिन चार ॥ रसिया ठाडो तेरे द्वारा ॥

२.हृदय की चौकी कर हेली नेह की चन्दन बसव नवेली,
दिक्षा ले बन जाईयो केली, पुतलीन पलंग बिछाय,
पलक के करले बंद किवाड ॥ रसिया ठाडो तेरे द्वारा ॥

३.जो कुछ रसिया कहे सो करिये सास ननद को डर परि हरिये,
सोलह कर बत्तीस पहरिये कर ले, दान सुम की सम्मत,
मन भर मोद मनाय ॥ रसिया ठाडो तेरे द्वारा ॥

४.सबसूं तोड़ नेह की डोरी जमुना पार उतर चल गोरी,
श्याम रंग चढ़ जाय जा दिन हो जाए बेडा पार,
॥ रसिया ठाडो तेरे द्वारा ॥

भजन २२५ (राग: पहाडी)

भजो राधे गोविन्दा गोपाला तेरा प्यारा नाम है,
गोपाला तेरा प्यारा नाम है, नंदलाला तेरा प्यारा नाम है ॥ टेर ॥

१.मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्तीमाला,
ग्वाल बाल संग धेनू चरावे, मोहन मुरली वाला ॥ भजो ॥

२.बृन्दावन में रास रचावे, गोवर्धन गिरधारी,
कदंब की डाली झूला झूले, संग ने राधा प्यारी ॥ भजो ॥

३.पाँडवों का युद्ध हुआ था, कुरुक्षेत्र में भारी,
सारथी बनकर रथ को हाँका, चक्र सुदर्शन धारी ॥ भजो ॥

४.शबरी तारी गणिका तारी, और अहिल्या नारी,
बालपना प्रह्लाद उबारे, भक्तन के हितकारी ॥ भजो ॥

५.कुंज बिहारी गिरवर धारी, मुख पर मुरली धारी,
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल बलिहारी ॥ भजो ॥

भजन २२६ (राग: दरबारी कनाडा)

सरवरिया के तीर खड़ी या नानी नीर बहावे है ।
माँ का जाया बीर बिना कुण भात भरण ने आवे है ॥ टेर ॥

१.एक दिन म्हारो भोळो बाबुल, अरबपति कहलायो थो ।
अन धन रा भण्डार घणेरा ओर छोर नहीं पायो थो ।
ऊँचा ऊँचा महल मालिया, नगर सेठ कहलायो थो ।
अणगिणती का नोकर चाकर, याद म्हने सब आवे है ।
॥ सरवरिया के तीर ॥

२.लाड़ प्यार में पळी लाड़ली, बड़ा घरां जद ब्याही थी ।
दान दायजो हाथी घोड़ा, दास दासियाँ ल्यायी थी ।
सोना चाँदी हीरा मोती, गाड़ा भर भर ल्यायी थी ।
बीती बाताँ याद करूँ जद, हिवड़ो भर आवे है ॥
॥ सरवरिया के तीर ॥

३.तेरे भरोसे सेठ साँवरा, भोळो बाबुल आयो ह ।
गोपीचंदन और तूमड़ा, साधाँ ने संग ल्यायो ह ।
घर घर मांगत फिरे सूरिया, म्हारो मान घटायो ह ।
देवरियो म्हने ताना मारे, नणदल जीव जलारे ह ॥
॥ सरवरिया के तीर ॥

४.और सगां ने मेल मालिया, टूटी टपरी नरसी ने ।
और सगां न शाल दुशाला, फटी गूदड़ी नरसी ने ।
और सगां ने माल मलीदा, रूखी सूखी नरसी ने ।
डूब मरूँ पर घर नहीं जाऊँ, बाबुल म्हने लजावे ह ॥
॥ सरवरिया के तीर ॥

-:०:-

दरिया दूषण दास में नहीं राम में दोष ।
दास चले एक पांवड़ो हरि आवे सौ कोस ॥

भजन २२७ (लावणी)

आप तो बाहर ही ठहरे, भीतर भेजा पाँचाली को ।
पतिवर्ता बाबा के चरणों में, जाकर अपना सर रख दो

१.अर्धरात्री की बेला में, भीष्म की लगी समाधि थी,
मन हरि चरणों में लीन हुआ, उस जगह न कोई व्याधि थी,
कृष्णा ने जाकर सिर रक्खा, चरणों में भीष्म पितामाह के,
चरणों में कौन झुका देखूँ, बाबा भीष्म एकदम चौंके ।।

२.देखा एक सधवा नारी है, चरणों में शीश झुकाती है
उसके तन पर रँगी साड़ी, सधवापन को दर्शाती है,
आशीर्वाद ये मुख से निकला, सौभाग्यवती भव: री बेटी,
तेरे हाथों से मेंहदी का रंग कभी न छूटे री बेटी ।।

३.आशीर्वाद मैं देता हूँ , सिन्दूर से माँग न खाली हो,
वर देता हूँ मैं ये बेटी तू वीर कुमारों वाली हो,
कृष्णा ने सुनकर कहा, तुरन्त बाबा ये क्या बतलाते हो,
कल और आज कुछ और कहा, तुम सत्यवती कहलाते हो ।।

४.मेरे पाँचों पतियों में यदि एक भी मारा जाएगा,
तो आशीर्वाद तेरा बाबा क्या झूठा नहीं कहलायेगा,
अब आया होश पितामह को, हाथों से माला छूट गयी,
मन प्रभु चरणों में लीन हुई, चितचोर समाधि टूट गयी ।।

५.बोले बेटी इन प्रश्नों का उत्तर पीछे दे पाऊँगा,
तेरे सुहाग का निर्णय भी, मैं पीछे ही कर पाऊँगा,
एक बात खटकती है दिल में, हैरान जिसे है कर डाला,
बतला बेटी वो कहाँ छुपा, इस जगह तुझे लाने वाला ।।

६.बूढ़ा होने को आया है, पर अब तक गई नहीं चोरी,
नित नयी रीतियाँ चलता है, तुमसे चोरी मुझसे चोरी,
बाहर आकर देखा, ड्योढी का दृश्य निराला था,
पीताम्बर का घूँघट काडे, वहाँ खड़ा बाँसुरी वाला था ।।

७.कहते हैं द्रौपदी का जूता, था पीताम्बर के कोने में,
उर में करूणा का भार लिये, फिर लगे पितामह रोने में,
चरणों से जाकर लिपट गये, छलिया छलने को आया है,
निज भक्तों की रक्षा हेतू, दासी का वेष बनाया है ॥
८.हे द्रुपदसुता मेरी बेटी, जाओ अब विजय तुम्हारी है,
पतियों का बाल न हो बाँका, जब रक्षक कृष्ण मुरारी है
निज भक्तों के कारण प्रभु ने, यहाँ नाना भेष बनाया है,
कथ सूरश्याम यह कहे प्रभु की कैसी अद्भुत माया है ॥ आप ॥

भजन २२८ (रसिया)

छोटो सो कन्हैया, जमुना तट पर खेलन आयो री ॥ टेर ॥
१.काहे की हरि ने गेंद बनाई,
काहे को डण्डा लायो री ॥ छोटो सो...॥
२.पुष्पन की हरि ने गेंद बनाई,
चन्दन डण्डा लायो री ॥ छोटो सो...॥
३.मारी टोल गेंद गिरि जमुना,
गेंद के कारण धायो री ॥ छोटो सो...॥
४.नाग नाथ हरि बाहर आये
फण-फण नृत्य करायो री ॥ छोटो सो...॥
५.पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत,
हरख-निरख गुण गायो री ॥ छोटो सो...॥

-:०:-

बलिहारी गुरु आपने घड़ि-घड़ि सौ सौ बार ।
मानस से देवत किया करत न लागी बार ॥

भजन २२९ (लावणी)

मोरध्वज सो हुयो न कोई दानी दुनिया माहीं ।
अपणा कुंवर ने चीरण लाग्यो सिंह के भोजन तांही ॥ टेर ॥
१.साधू का कर भेस पधारे अर्जुन संग बनवारी ।
लम्बी लम्बी जटा बढ़ाई भस्मी रमायी भारी ॥
धूणी दीनी घाल द्वार पे आसन दियो जमाई ॥ अपणा ॥
२.राजा बोले सुणो मुनि जन, अरज करां म्हें देवा ।
दिल चाहे तो करलो भोजन, करूँ आपकी सेवा ।
क्या जीमेगा सिंह आपका मुख से दो फरमाई ॥ अपणा ॥
३.ब्राह्मण बोले सुनोजी राजा, निश्चय है यह हमारा ।
भूखे सिंह को भोजन दे दो, फिर अनजल हो म्हारा ।
म्हें बैरागी संत बिराजाँ रेवाँ पहाड़ाह माही ॥ अपणा ॥
४.मोटा ताजा बकरा ला दूँ कहो तो ला दूँ भैंसा ।
हिरण और खरगोस मैं ला दूँ फरमावोगे जैसा ।
क्या खायेगा सिंघ आपका हुकुम देवो पवमाई ॥ अपणा ॥
५.राजा राणीजी रतन कंवर की दोय फाँक कर देणा ।
सिंघ उसी का भोजन करेगा, और नहीं कुछ केणा ।
सिंघ की मनसा हुई न पुरी फिर गये दुनिया सारी ॥ अपणा ॥
६.राणी को समझावे राजा मेहलाँ माँय पधारे ।
एक कुंवर दीनो रघुराई, काळ आ गयो द्वारे ।
रतन कुंवर बोला इस तन का भोजन दे दो माई ॥ अपणा ॥
६.संत जनों को दो पत्तळ में भोजन पुरसे राणी ।
रतन कुंवर ने हेलो दीनो आय गयो सुत ज्ञानी ।
तीजी पत्तल पुरस कुंवर की जिमा रही है माई ॥ अपणा ॥
७.सागे रूप बणाकर प्रगट्या अर्जुन कृष्ण मुरारी ।
नर नारायण दरसण दीन्हा, देखे दुनिया सारी ।
तीनों प्राणी संग सिधाये बैकुंठा के माहीं ॥ अपणा ॥
८.धनारामजी गुरु हमारा करी मेहर लख दाता ।
चुही नगर में भजन बणाया भेरुसिंग कथा गाता ।
गावे सुणे वो आनन्द पावे भक्त मंडल हरषाई ॥ अपणा ॥

भजन २३० (राग: दरबारी कनाडा)

कृष्ण की दीवानी बनकर मीरा ने घर छोड़ दिया ।
एक राठौड़ की बेटी ने गिरधर से नाता जोड़ लिया ।। टेर ।।

१.नाचे गावे मीरा बाई, कर में लेकर इकतारा ।
पाँव में घुँघरू गले में माला, भेष जोगिनी कर डाला ।
राणा कुल की आन बान को मीरा ने सब तोड़ दिया ।। कृष्ण ।।

२.ज्ञान तार का इकतारा था, हर धुँघरूं में नाद भरा ।
हर गायन में बसे कन्हैया, भाव भक्ति का रंग भरा ।
प्रेम दिवानी मीरा ने गिरधर से नाता जोड़ लिया ।। कृष्ण ।।

३.पी गयी मीराबाई देखो राणा का विष का प्याला ।
कौन बिगाड़ करेगा उसका जिसका गिरधर रखवाला ।
गिरधर की भक्ति में मगन हो जग से नाता तोड लिया ।। कृष्ण ।।

भजन २३१ (राग: तिलंग)

ये झगड़ा है मोहन हमारा तुम्हारा ।
कि अब क्या हुआ बल वो सहारा तुम्हारा ।। टेर ।।

१.जो निज कर्म से होते तरने के काबिल ।
तो फिर ढूँढते क्यों सहारा तुम्हारा ।। ये झगड़ा ।।

२.न तारो तो ऐसा अधम ही बनादो ।
कि अवतार हो फिर दुबारा तुम्हारा ।। ये झगड़ा ।।

३.गरीबों की आँखों में जिस दिन से आया ।
उसी दिन से है बिन्दु प्यारा तुम्हारा ।। ये झगड़ा ।।

-:०:-

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तलवार को, पडा रहन दो म्यान ।।

भजन २३२ (राग: रंगत गौरी सांझ)

कहन लगी बालकृष्ण से मैया ॥ टेर ॥
१.नन्दगोपाल चढ़ि टेरत यशोदा ले ले नाम कन्हैया ।
दूर खेतन मत जाओ प्यारे ललना मारेगी काडु की गैया ॥ कहन लगी ॥
२.अपने अंगना में तुलसी को विरवा व्हां खेलों दोनो भैया ।
पायल पहिर बाबाजी देखैं नाचो ता था थैया ॥ कहन लगी ॥
३.नन्दरायजी से बाबा बोलो बलदाऊँ से भैया ।
मेरे लाल को ब्याह रचूंगी लाऊँगी नवल दुल्हैया ॥ कहन लगी ॥
४.बहुत भांति के खेल रचत है दे देकर विलु कैया ।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि यशुमति लेत बलैंया ॥ कहन लगी ॥

भजन २३३ (राग: रंगत गौरी सांझ)

ग्वालिनी क्यों ठाडी नन्द पौरी ॥ टेर ॥
१.बार बार इत उत फिर आवत बिजिया खाय धई बौरी
नन्दन से कौन काम है हमसे क्यों न कहोरी ॥ ग्वालिनी ॥
२.सुन्दर श्याम सलोने ढोटा उन दधि लेन कहय्योरी ।
हमसे कहो तुम नेक खडी रहु आतुहि बैठि रहय्योरी ॥ ग्वालिनी ॥
३.नौ लख धेनु नन्द बाबा घर तेरोहिं लेन कहय्योरी ।
जोबन माती फिरत गुवालिनतैं मेरो कृष्ण ठग्योरी ॥ ग्वालिनी ॥
४.इतनी सुनि के निकसिआये मोहन दधिकी मोलक होरी
परमान्दस्वामी रुप निहार कयो द्धि भलो बिक्योरी ॥ ग्वालिनी ॥

भजन २३४ (राग: पीलू)

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥ टेर ॥
१.तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुन्दा ॥ भजो रे ॥
२.सब देवन में कृष्ण बडे हैं, ज्यूँ तारा बीच चन्दा ॥ भजो रे॥
३.सब सखियन में राधाजी बडी है, ज्यूँ नदिया बीच गंगा ॥ भजो रे ॥
४.धुव तारे, प्रहलाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता ॥ भजो रे ॥
५.कालीदह में नाग ज्यो नाथो, फण-फण नृत्य करंता ॥ भजो रे ॥
६.वृन्दावन में रास रचावे, नाचत बाल मुकुन्दा ॥ भजो रे ॥
७.मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम का फन्दा ॥ भजो रे ॥

भजन २३५

गिरधारी बीरा भात भरन ने बेगा आई जो जी
म्हारी भावज राधा रुकमण ने साथे लाई जो ॥ टेर ॥

१. नहीं माँ जायो भाई, जनम की माई, बाप घर
निर्धन ताई पिहर पणो थे, आय बताई जो ॥ गिरधारी ॥

२.सासू नणद सताई,देवे बुराई, कहे मोड्या की जाई,
ताना सुनबा सूं मोय बचाई जो ॥ गिरधारी ॥

३.जीती मायड़ रहती, काँचली देती, माहेरो मान मैं लेती,
मायड़ बन कर प्रभु आप पधारी जो ॥ गिरधारी ॥

४.भक्त वत्सल प्रण थारो, दीन दयालो,
खोलो कुबेर - भण्डारो, मोहरा मेह बरसाई जो ॥ गिरधारी ॥

५.दरजी नाथु नानी, जोड युग प्राणी, भक्ति भुल्या अग्यानी,
प्रभुता दिखला कर प्रभु चेताई जो ॥ गिरधारी ॥

भजन २३६ (तुला दान)

सत्यभामा ने कर दिया दान पति ॥ टेर ॥

१.नारद मुनी कहने लगे सुनो सत्यभामा सती
तेरा जनम जनम श्री कृष्ण पति ॥ सत्यभामा ॥

२.नारद मुनी के वचन से सत्यभामा संकल्प किया
मेरा जनम जनम श्री कृष्ण पति ॥ सत्यभामा ॥

३.हिरा पन्ना लाय के सत्यभामा तोलन लगी
वे तो कृष्ण झुक्या नहीं एक रत्ती ॥ सत्यभामा ॥

४.नारद मुनी कहने लगे सुनो सत्यभामा सती
तुलसी पत्र धरो ए सत्यभामा सती ॥ सत्यभामा ॥

५.तुलसी पत्र लाय के सत्यभामा तोलन लगी
वो तो कृष्ण जी हो गये एक रत्ती ॥ सत्यभामा ॥

६.दान ले नारद चले श्री कृष्ण उनके संग में
कर जोड खड़ी सत्यभामा सती ॥ सत्यभामा ॥

७.जनम जनम के हो पति और इस जनम में ले चलो
देखो ब्राह्मण वचन की उलटी गती ॥ सत्यभामा ॥

८.कृष्ण लिला देख कर नारद मुनी चकित भये
सत्यभामा का हर लिया मान हरी ॥ सत्यभामा ॥

भजन २३७

बोल हरि बोल हरि, हरि हरि बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥

१.नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेगे क्षण में भारी ।
नाम के पीले अमृत घोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

२.सबरी अहिल्या सदन कसाई, नाम जपन से मुक्ति पाई ।
नाम का महिमा है बेतोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

३. सुबा पढ़ावत गणिका तारी, बड़े बड़े निशिचर संहारी ।
गिन-गिन पापी तारे तोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

४.नरसी भगत की हुण्डी सिकारी, बन गयो सांवल शाह बनवारी ।
घुण्डी अपने मन की खोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

५.जो-जो शरण पड़े प्रभु तारे, भवसागर से पार उतारे ।
तेरा क्या लगता है मोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

६.राम-नाम के सब अधिकारी, बालक वृद्ध युवा नर नारी ।
हरि जप इत उत कबहूँ न डोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

७.चक्रधारी भज हर गोविन्दम मुक्तिदायक परमानन्दम ।
हरदम कृष्ण मुरारी बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

८.रट ले मन तू आठों याम राम राम नाम में लगे न दाम ।
जन्म गँवाता क्यों अनमोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

९.अर्जुन का रथ आप चलाया, गीता कह कर ज्ञान सुनाया ।
बोल,बोल,हित-चितसे बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥ बोल हरि ॥

-:०:-

लकड़ी जल कोयला भई, कोयला जल भई राख ।
मैं बिरहिन ऐसी जली, कोयला भई न राख ॥

भजन २३८ (तर्ज: वो आ गया मुरलीवाला)

तेरी पार करेगो नैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। टेर ।।

१.निशि दिन भज गोपाल पियारे, मोर-मुकुट पीताम्बर बारे ।
भक्तों के रखवैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

२.सांस-सांस भज नन्द-दुलारे, वो ही बिगड़े काज संवारे ।
नटवर चतुर रिझैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

३.अर्जुन के हित रथ को हाँका, साँवरिया गिरधारी बाँका ।
भारत युद्ध जितैय्या, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

४.ग्वाल-बाल संग धेनु चरावे, लूट-लूट दधि माखन खावे ।
कालीनाग नथैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

५.भक्त सुदामा चावल लाये, गले लगाकर भोग लगाये ।
कहकर भैया-भैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

६.नरसी जीने टेर लगाई, सांवल शाह नहिं देर लगाई ।
ऐसे भात भरैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

७.संकट से प्रहलाद उबारयो, खंभ फाड़ हिरनाकुश मारयो ।
नरसिंह रूप धरैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

८.जल डूबत गज हरिहि पुकारयो, छाड़ि गरुड़ प्रभु तुरत सिधारयो ।
गजकी टेर सुनैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

९.अबला को दे शरण न कोई, भरी सभा में द्रोपदी रोई ।
आ पहुंचे चीर बढ़ैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

१०.बन में एक शिला थी भारी, चरण छुवाय अहिल्या तारी ।
ऐसे स्वर्ग पठैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

११.दीनानाथ सर्व हितकारी, संकट-मोचन कृष्ण मुरारी ।
जनका पत रखवैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ।। तेरी पार।।

-:०:-

कथनी मीठी खांडसी करनी विष की लोय।
कथनी तज करनी करे, विष से अमृत होय ॥

भजन २३९ (राग: पहाडी)

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
लताओं में ब्रज की गुजारा करेंगे ॥ कन्हैया... ॥
१.कहीं तो मिलेंगे वो बाँके बिहारी,
उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे, कन्हैया...॥
२.बना करके हृदय में हम प्रेम मंदिर,
वहीं उनको झूला झूलाया करेंगे, कन्हैया...॥
३.उन्हें हम बिठावेंगे आँखों में, दिल में,
उन्हीं से सदा लो लगाया करेंगे कन्हैया...॥
४.जो रूठेंगे हम से वो बांके बिहारी,
चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे, कन्हैया....॥
५.उन्हें प्रेम डोरी से हम बांध लेंगे
तो फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे, कन्हैया...॥
६.उन्होने छुडाये थे गज के वो बन्धन,
वही मेरे संकट मिटाया करेंगे, कन्हैया...॥
७.उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे,
मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे, कन्हैया... ॥
८.भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द-नन्दन,
कन्हैया छबि को दिखाया करेंगे, कन्हैया...॥

भजन २४० (धमाल)

भरजा मायरियो सांवरिया थारी नानी बाई को भरजा मायरियो ॥ टेर ॥
१.और संगा के कान्हा महल मालियो, नरसीला भगत के या टूटी टपरी ॥ भरजा ॥
२.ओर सगां के कान्हा हिगँलू रे डोल्या, नरसिला भगत के या टूटी मंचली ॥ भरजा ॥
३.ओर सगां के कान्हा सिरख पथरना, नरसीला भगत के या फाटी गुदडी ॥ भरजा ॥
४.ओर सगां के कान्हा लाडू रे पेडा, नरसीला भगत के या बासी खिचडी ॥ भरजा ॥
५.नानी रे बाई तेरी आस करत है, भाई बन आओ प्रभु गिरधारी ॥ भरजा ॥

भजन २४१

नाचे नन्दलाल, नचावे हर की मैया ॥ टेर ॥
१.मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धरो री कन्हैया ॥ नाचे ॥
२.रुनुक झुनुक पग नूपुर बाजे, ठुमक ठुमक पग धरो री कन्हैया ॥ नाचे ॥
३.धोती न बांधे जामो न पहिरे, पीताम्बर को बड़ो री पहरिया ॥ नाचे ॥
४.टोपी न ओढे फेंटा न बांधे, मोर मुकुट को बड़ो री धरैया ॥ नाचे ॥
५.शाल न ओढे दुशाला न ओढे, काली कमरिया को बड़ो री ओढेया॥ नाचे॥
६.दूध न भावे याने दही न भावे, माखन मिसरी को बड़ी री खरैया ॥ नाचे ॥
७.खेल न खेले खिलोना न खेले, बंसुरी को लाला बड़ो री बजैया ॥ नाचे ॥
८.चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि, हंस हंस कण्ठ लगावै हरि मैया ॥ नाचे ॥

भजन २४२

तेरे लाला ने ब्रज-रज खाई, यसोदा सुन माई ॥ टेर ॥
१.अद्भुत खेल सखन संग मेलो, छोटी-सी माटीको ढेलो ।
तुरन्त श्याम ने मुख में मेलो, याने गटक-गटक गटकाई ॥ यसोदा॥
२.दूध दही को कबहूं न नाटी, क्यों लाला तैने खाई माटी ।
यसोदा समझा रही ले सांटी, याने नेक दया नहीं आई ॥ यसोदा॥
३.मुखके मांहि आंगुली मैली, निकल पड़ी माटी की ढेली ।
भीर भई सखयिन की भेली, याने देके लोग लुगाई ॥ यसोदा॥
४.मोहन को मुखड़ो फरवायो, तीन लोंक वा में दरशायो ।
तब विश्वास यसोदा ही आयो, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई ॥ यसोदा॥
५.ऐसो रस नहीं माखन में, मेवा मिश्री नहीं दाखन में ।
जो रस है बृज रस चाखन में, या ने मुक्ति की मुक्ति कराई ॥ यसोदा॥
६.या रज को सुर नर मुनि तरसे, बड़भागी जन नित उठ परसे ।
जाकी लगन लगी रहे हरि से, यह तो घासीराम कथा गाई ॥ यसोदा॥

-:०:-

चार बेद षट शास्त्र में, बात मिली है दोय ।
दुख दीने दुख होत है सुख दीने सुख होय ॥

भजन २४३ (रसिया)

नाना ही भाँती नचायो, भक्तन ने मोकु नाना भाँती नचायो,
लोक लाज तज इन ही काज मैं बैकुण्ठाँ बिसरायो जी आयो ॥ टेर ॥

१.गज ने पुकार्‌यो तब गरुड़ बिसारयो,
जाय ग्राह को संहारो सुनि प्रेम की पुकार ।
जब द्रौपदी पुकारी बोली आवो गिरधारी,
मोहे आस है तिहारी, जाऊँ और कित द्वार ।
सुनि टेर नहीं करी देर, मैं तो तुरत ही चीर बढायो ॥ नाना ही ॥

२.भक्त नरसी बुलायो, सेठ साँवरियो बण आयो,
म्हे भात भरायो, लाज राखी जन की ।
प्रह्लाद ने उबारयो, नरसिंग रूप धारयो,
हिरणाकश्यप को मारयो, सुध भूल्यो तन की ।
छोड मिठाई दुर्योधन की, शाक बिदुर घर खायो ॥ नाना ही ॥

३.भई ध्रुव को गिलानी, मेरी माया पहचानी,
छोड दीनी रजधानी, मोसे मिलयो है बिंहस ।
नामदेव न बुलायो, वांको छपर छंवायो,
भेष मोहिनी बनायो, लियो अमृत कलश ।
देवन सुधा पिलायो प्रेम सुं, दैत्य ने सिंग बतायो ॥ नाना ही ॥

४.मैं तो मीरा को गोपाल, गिरधारी नन्दलाल,
और कंस को हूँ काल, दास तुलसी को राम ।
लक्ष्मीजी को भरतार, चारों वेदन को सार,
मैं हूँ नन्द को कुमार, सूरदार को हूँ श्याम ।
सोही बृषभान दुलारी ने चरणन को दास बनायो ॥ नाना ही ॥

-:०:-

नाम राम को कल्पतरु कलि कल्याण निवास ।
जो सुमिरत भया भाग तें तुलसी तुलसीदास ॥

भजन २४४

म्हारो माखन सगलो खाय गयो रे, ओ नन्दजी रो लाल ।
ओ नन्दजी रो लाल साँवरो, ओ भायलो गोपाल ॥ टेर ॥

१.सास लड़े रे म्हारी नणंद लड़े रे
म्हारा घर माय रार मचाय गयो रे ॥ ओ नन्दजी रो लाल॥

२.ग्वाल बाल संग घर माय बड़ग्या
म्हारो छींको तोड़ गिराय गयो रे ॥ ओ नंदजी रो लाल ॥

३.हाथ लकुटियाँ कांधे कमलियाँ
म्हाने बंशी की तान सुनाय गयो रे ॥ ओ नन्दजी रो लाल ॥

४.उँगली पकड़ मोरी बैयाँ मरौडी
म्हारां नैणाँ सूँ नैण मिलाय गयो रे ॥ ओ नन्दजी रो लाल ॥

५.बाई मीरा केवे म्हारो नटवर नागर
म्हाने मनड़ाँ रो मीत बणाय गयो रे ॥ ओ नन्दजी रो लाल ॥

भजन २४५ (राग: दरबारी)

महलन देख डरे हो सुदामा, डरे हो सुदामा महलन देख डरे ॥ टेर ॥

१.कहाँ रे गई मेरी राम झुपडिया, या कोई नृपती उतरे हो रामा
कहाँ रे गया मेरा तुलसी का बिडला, कंचन महल करे हो रामा ॥ महलन ॥

२.इधर उधर क्या देखे रे पाण्डे, मन में क्यूं सोच करे हो रामा
महलां ऊबी परम सुंदरी, आवो नी कंत खडे हो रामा ॥ महलन ॥

३.पहली पोल गज हस्ती झूमे, दूजे तुरंग नचे हो रामा
तीजी पोल विच कर मध्य ठाडे, खम्बा रतन जडे हो रामा ॥ महलन ॥

४.चार पदारथ दिया रे भवन में, दीनानाथ खडे हो रामा
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दुख दारिद्र हरे ओ रामा ॥ महलन ॥

-:०:-

दो बातन को भूल मत, जो चाहे कल्याण,
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान ।

भजन २४६ (राग: जोनपुरी)

सुनो प्यारे ऊधो तुम मथुरा को जाना,
कन्हैया को मेरा सन्देशा सुनाना ॥ टेर॥

१.कहना कि पहले काहे प्रीत लगाई,
प्रीत लगा के काहे सुध बिसराई,
अच्छा नहीं है मेरे दिल का दुखाना ॥ कन्हैया से मेरा ॥

२.कहना तू जाके उस नन्द के नन्दन से,
प्राण क्यूँ ना ले गया मेरे इस तन से,
पड़ता न हमको आँसू बहाना ॥ कन्हैया से मेरा ॥

३.जमुना के निरे-तीरे रास रचाना,
चोरी चोरी आके घर में माखन चुराना,
ये सब बातें उनको याद दिलाना ॥ कन्हैया से मेरा ॥

४.मथुरा की नारी तुझको ऐसा बिलमाया,
क्या तेरा वादा तुझे याद न आया,
ऐसा निठुर हमने तुमको न जाना ॥ कन्हैया से मेरा ॥

५.चन्द्रसखी की है एक अर्जी,
गर मानो तो कान्हा है तेरी मर्जी
हम सबको अपनी शरण में बुलाना ॥ कन्हैया से मेरा ॥

भजन २४७ (तर्ज: ओ गणपती गणेश तुमको लाखों प्रणाम)

कन्हैया लाल घड़लो म्हारो भर दे रे,
भर दे उठा दे सिर पर धर दे रे ॥ टेर ॥

१.तू मत जानै कान्हा, मैं हूँ अकेली,
ब्रज की सहेल्याँ म्हारे सँग है रे ॥ कन्हैया ॥

२.तू मत जानै कान्हा, बिनु माँ बाप की,
बरसानो मेरो पिहर है रे ॥ कन्हैया ॥

३.तू मत जानै कान्हा, मैं हूँ कँवारी,
नन्द को छबीलो म्हारो वर है रे ॥ कन्हैया ॥

४.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि,
श्याम को चरण में म्हारो मन छै रे ॥ कन्हैया ॥

भजन २४८

जमुना किनारे म्हारो गांव साँवरिया आ जाना ।। टेर ।।

१.जमुना किनारे म्हारी ऊंची हवेली
मैं हूं गोपिका ब्रज की नवेली
राधा रंगीली म्हारो नाम ते दर्शन दे जाना ।। जमुना ।।

२.खस खस का एक बंगला बनावूँ
चुन चुन कलीयाँ सेज बीछावूँ
धीरे धीरे दाबु दोनों पांव, प्रेम रस पी जाना ।। जमुना ।।

३.घस घस चंदण लेप लगावूँ
गंगा जलसुं मै स्नान करावूँ
सेवा करूंगी सुबे शाम, माखन को खा जाना ।। जमुना ।।

४.कब की देखु मैं बाट तुम्हारी
जल्दी आवो कृष्ण मुरारी
नयना बरसे नीर, प्रेम रस पी जाना ।। जमुना ।।

५.तुम में फसियो प्रेम हमारो
जैसे सागर में घुल मिल सारो
बाबा मीरा म्हारो नाम, दरसन मोहें दे जाना ।। जमुना ।।

भजन २४९

आज साँवरिया को मुख निरखो
मुख निरखो जी याँ को अंग निरखो ।। टेर ।।

१.मोर मुकुट पिताम्बर सोहे,
काना माय कुण्डल को कैसो भलको ।। आज ।।

२.गल वैजन्ती माला सोहे,
मुख पर मुरली को प्यारो लटको ।। आज ।।

३.बायें अंग श्रीराधाजी सोहे,
जुगल जोडी रो देखो कैसो लटको ।। आज ।।

४.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि
चरण कमल में म्हारो चित अटक्यो ।। आज ।।

भजन २५० (राग: भैरवी)

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
अपनी मुक्ति का मारग बनाते चलो ॥ टेर ॥

१.काम करते रहो नाम जपते रहो, पाप करने से हर दम डरते रहो
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो ॥ कृष्ण ॥

२.लोग कहते है घनश्याम आते नहीं, द्रोपदी की तरह से बुलाते रहो
टेर गज की तरह से लगाते चलो ॥ कृष्ण ॥

३.लोग कहते है भगवान खाते नहीं, शबरी की तरह से खिलाते नहीं
शाक जेसे विदूर घर खिलाते चलो ॥ कृष्ण ॥

४.सुख में भूलो नही दुःख में रोवो नही,अपने दिल से प्रभू को बिसारो नहीं
माया जालों से दिल को हटाते चलो ॥ कृष्ण ॥

५.दया आवेगी उनको कभी ना कभी, नाथ देंगे दर्शन कभी ना कभी
यही विश्वास दिल में जमाते चलो ॥ कृष्ण ॥

६.सुनते आये अनोखा के वे नाथ है, अपने भक्तों के रहते सदा पास है
मन के विषयों से मन को हटाते चलो ॥ कृष्ण ॥

भजन २५१

मन्दिर जाती मीरा ने, साँवरियो मिल गयो रे,
श्याम काँई जादु कर गयो रे ॥ टेर ॥

१.मीरा ने राणो समझावे, काँई हुयो थारे क्युँ न बतावे,
फीका पड़ गया नैन फरक बोली में पड़ गयो रे ॥ श्याम ॥

२.मनमोहन है पति हमारो, सारा जग को रखवारो,
चुरा लिया मेरा नैन, दिल पर तालो जड़ गयो रे ॥ श्याम ॥

३.मीरा ने राणो समझावे, बड़ा घरा की लाज गमावे,
कुल के लगाय दियो दाग, पति थारो जीवित मर गयो रे ॥ श्याम ॥

४.आज मिले म्हाने बनवारी, पल पल में जाऊँ बलिहारी,
गाता राधेश्याम मीरा ने मोहन मिल गयो रे ॥ श्याम ॥

भजन २५२

बड़ी दूर से भाग रह्यो तेरी गाडुली क लार,
मन भी बैठाले बाब जाणो है नगर अंजार ॥ टेर ॥

१.कह नरसीलो म्हारै साथ मं के करसी,
ओढण कपड़ा नाँय, बठ सियां मरसी,
गाडुली मं ठौर नही है, पगां तू जासी हार ॥ मन भी ॥

२.नानी बाई रो भात देखण मं चालुंगो,
पूण पावलो थाली मं भी घालूंगो,
चार पांच दिन आछी आछी जिमुंगा जिमणवार ॥ मन भी ॥

३.ज्ञानदासजी कह गाडुली न तोड़गो,
ध्यानदासजी कहै तूमड़ा फोड़गो,
घणी भीड़ मं टुटै म्हारै इकतारै को तार ॥ मन भी ॥

४.जुड़ा ऊप बैठ हांक सुं मैं नारा,
थे करियो आराम, दाबस्युं पगथारा,
घरां सगाँ क जाय उतारूँ घड़ी लागसी चार ॥ मन भी ॥

५.देख पाँव रे मय कांटा और पाती है,
किसनो है मेरो नाम जात मेरी खाती है,
बूढ़ा बैल टुटेड़ी गाड़ी गाड़ी देवुँ सुधार ॥ मन भी ॥

भजन २५३ (राग: पीलू)

सुन बरसाने वाली, गुलाम तेरो बनवारी ॥ टेर ॥

१.तेरी पायलिया पे, बाजे मुरलिया, छम छम नाचे मुरारी ॥ गुलाम ॥

२.चँदा से आनन पे, बड़ी बड़ी अखियाँ, लट लटके घुंघराली ॥ गुलाम ॥

३.बड़ी बड़ी अखियंन पे झीनो झीनो कजरो, घायल कुँज बिहारी ॥ गुलाम ॥

४.वृन्दावन के राजा हो कर छाछ पे नाचे मुरारी ॥ गुलाम ॥

५.वृन्दावन की कुँज गलिन में, रास रच्यो गिरधारी ॥ गुलाम ॥

६.कदम की डाल पे झूलो पड्यो है, झोटा देवे बिहारी ॥ गुलाम ॥

भजन २५४

म्हारा श्री नन्दलाल थारा रे बागा म म्हारी नथली खुवाई ।। टेर ।।

१.छोटी म्हारी नथली म जड्या माणिक मोती
सारा रे कुन्जा म म्हेतो चालू जोती जोती ।। म्हारा श्री ।।

२.आस ढून्ढी पास ढून्ढी ढून्ढी चारू ओर
राधाजी की नथली को सांवरो ही चोर ।। म्हारा श्री ।।

३.आल्यो थारी नथली थे मन म्हारो दे दो
म्हार साग चालो थे तो म्हारा हो कर रह्ल्यो ।। म्हारा श्री ।।

४.म्हारा श्री नन्दलाल थारा रे बागा म
म्हारी नथली गमाई म्हारा श्री नन्दलाल ।। म्हारा श्री ।।

भजन २५५ (तर्ज: ढोला ढोल मजीरा बाजे रे)

मीरां साधाँ रो संग छोडो ए,
लाजे थारो मेड़तो, मेवाड़ सारो ए ।। टेर ।।

१.मीरां को हरि देवरो जी, राणा को दरबार,
मीरां नाचे प्रेम से जी, कर सोलह सिंणगार ।। मीरां साधाँ ।।

२.मीरां हरि की लाडली जी, राणो बन को ऊँट,
समझायो समझ्यो नहीं जी, ले जाती बैकुंठ ।। मीरां साधाँ ।।

३.साँप पिटारो राणों भेज्यो, देवो मीरा न जाय,
साँप पिटारो देखण लागी, हो गयो नौसर हार ।। मीरां साधाँ ।।

४.विष रो प्यालो राणों भेज्यो, देवो मीरां कें हाथ,
कर चरणामृत पी गई जी, सहाय करे रघुनाथ ।। मीरां साधाँ ।।

५.बृन्दावन की कुँज गलियन में, मच्यो दहि को कीच,
मीरां ने हरि दर्शन दीना, सब सखीयों के बीच ।। मीरां साधाँ ।।

-:०:-

जब लग मरने से डरै तब लग जीवन नाहि ।
बडो दूर है प्रेम घर समझ लेहु मन माहि ।।

भजन २५६ (तर्ज: सावना का महीना, राग: पहाडी)

साँवरिया के आगे खड़ा हूँ कर जोर,
माहेरो भरैलो मेरो प्यारो नन्द किसोर ॥ टेर ॥

१. तेरी ही दया से दाता, लुटी रे कमाई,
तेरी ही दया से नानी हुई रे पराई,
नरसी के कलेजे में उठे रे हिलोर ॥ माहेरो भरै लो ॥

२. तेरी ही दया से दाता, तन्दूरा उठाया,
तेरी ही दया से सारा, लोक हँसाया,
नाचता फिरूं मै जहाँ में चहुं ओर ॥ माहेरो भरै लो ॥

३. घर घर माँगू रोटी, खड़ा खड़ा खावूँ,
नानी को माहेरो मै कैसे भर पांवूँ,
नरसी के कलेजे की नानी बाई कोर ॥ माहेरो भरै लो ॥

४. तेरे ही भरोसे कान्हा ब्याह रचायो
तेरे ही भरोसे प्रभु लोग बुलायो
तू नही आवे प्रभु , चले ना कुछ जोर ॥ माहेरो भरै लो ॥

५. कृष्ण कन्हैया अब, सह नहीं पाये,
गठड़ी उठाके प्रभु दौड़े दौड़े आये,
खजाना लुटोये भंवर चित्त चोर ॥ माहेरो भरै लो ॥

भजन २५७ (राग: तिलंग)

भरवादे मदन गोपाल, पानीड़ो भरवादे,
थारे लुड़ लुड़ लागूँ पाँव, पानीड़ो भरवादे ॥ टेर ॥

१.मैं जल जमुना भरने गई थी, घर सूँ निकली चाल ॥ पानीड़ो ॥

२.नित का रस्ता रोककर बैठ्यो, आ काँई थारी चाल ॥ पानीड़ो ॥

३.घाघड़ली म्हारी फूट जायेगी, काँकरली मत मार ॥ पानीड़ो ॥

४.घराँ लडेगी सास हमारी, नणदल देगी गाल ॥ पानीड़ो ॥

५.नाथुराम श्याम के शरणे, सदा करो प्रतिपाल ॥ पानीड़ो ॥

भजन २५८

म्हार सिर पर श्री भगवान,
राणाजी म्हारो काँई करसी ॥ टेर ॥

१. साधाँ री संगत छोडो मीरां, छोडो साधाँ सू प्यार,
महलाँ र माय बिराजो मीरां, संग सहेल्याँ रो साथ ॥ राणाजी ॥

२. ना छूटे साधाँ री संगत राणा, ना छूटे साधाँ सू प्यार,
ना भावे महल मालिया राणा, ना भावे सहेल्याँ रो साथ ॥ राणाजी ॥

३. विष का प्याला राणा भेजिया, द्यो मीरां र हाथ,
कर चरणा मृत पी गई, थे ही जाणोला दीनानाथ ॥ राणाजी ॥

४. सांप पिटारा राणा भेजिया, द्यो मीरां न जाय,
पेहर गलां म सो गई, हो गयो चंदर हार ॥ राणाजी ॥

५. त्यारूँ पीहर सासरो, त्यारूँ गढ चित्तौड,
मीरां ने गिरिधारी मिल्यो, नटवर नंदकिशोर ॥ राणाजी ॥

भजन २५९ (तर्ज: फाग खेले गिरधारी)

हाँ, सखी सुन हाल हमारा , श्याम सुन्दर मोहे लागे प्यारा,
खान पान सब भूल गई, घर काज बिसारा रे ॥ टेर॥

१.मैं जल जमुना भरकर आई, मारग रोक्यो आज कन्हाई,
पीताम्बर तन, मोर मुकुट सिर ऊपर धारा रे ॥ सखी सुन ॥

२.बनमाला गल बीच सुहावे, बंसी अधर लगाये बजावे,
सुन मीठी धुन, प्रेम मगन होय गई अपारा रे ॥ सखी सुन ॥

३.देख रूप मैं भई दिवानी, मन्द हंसी मेरे मुख आनी,
नैनन बीच समाय गयो वो नन्द दुलारा रे ॥ सखी सुन ॥

४.किस विधि मनमोहन घर लाऊँ, ब्रह्मानन्द दरस मैं पाऊँ
जनम सफल हो जाय, मिटे भव बन्धन सारा रे ॥ सखी सुन ॥

-:०:-

घटका पर्दा खोलकर, सन्मुख ले दीदार ।
बाल सनेही साईयां, आवा अन्त का यार ॥

भजन २६०

बाजी बाजी रे श्याम तेरी पैंजनिया,
बाजी बाजी रे ललन तेरी पैंजनिया ॥ टेर॥

१. यशोदा लाल को चलना सिखावे,
अंगुरी पकर सखी दोउ जनियाँ ॥ बाजी ॥

२. नन्द बाबा सु बाबा कहत है,
तीन लोक को वो धनिया ॥ बाजी ॥

३.शिव ब्रह्मा या को पार न पायो,
ताही नचावत ग्वालनिया ॥ बाजी ॥

४.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि,
चरण कमल पर जाँऊ बलियाँ ॥ बाजी ॥

भजन २६१

डस गयो जी भुजंगी कालो नाग,राधे जी की उंगली में ॥ टेर॥

१.राधे झुलण चली बाग में, संग सखीयन के साथ
ऐसो डंक लगायो लहरी, पीलो रे पड़ गयो हाथ ॥ राधे ॥

२.नस नस सेती चुवे पसीनो, अंग रयो कुम्हलाय
नाड़ी की गति मंद भई है, करज्यो रे कोई उपाय ॥ राधे ॥

३.एक सखी तो पलंग बिछाव, दूजी च़वर ढुलाय
तीजी सखी तो केवड़ो छीड़ के, चौथी तो ब़ैद बुलाय ॥ राधे ॥

४.बरसाना से वैध बलायो, पीलँगा बैठो आय
नाडी कि तो कदर न जाने, नैना से नैन मिलाय ॥ राधे ॥

५.असी कोसां मे खडो रे साँवरो, पलका बैठो आय
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवी, दिनो है जहर उतार ॥ राधे ॥

-:०:-

हिरण बडा के हर बडा सुगन बडा के श्याम ।
अर्जुन रथ ने हाक दे पारी भली करे भगवान ॥

भजन २६२

बार बार जब कहे ब्राह्मणी हुए सुदामा त्यार,
चावल की पोटली ले पहुँचे कन्हैया के द्वार ॥ टेर ॥

१.पहुँच नगरी माँहि पूछे कन्हैया कहाँ बसे,
फाट्या कपड़ा देख नगर के सभी हँसे,
इतने में एक मिला दयालु दिनो महल बताय ॥ चावल ॥

२.द्वारपाल जा कहे आदमी एक आयो,
फाट्या कपड़ा नाम सुदामा बतलायो,
इतना सुनकर कृष्णचन्द्रजी दौड़े नंगे पांव ॥ चावल ॥

३.लिनो कंठ लगाय सिंहासन बैठायो,
फाट्या कपड़ा देख जीवड़ो दुःख पायो,
अंसुवन जल से पांव धो रहे जग के पालनहार ॥ चावल ॥

४.हुयी खातरी बहुत सुदामा शरमाये,
चावल की वह पोटली बगल में छिपाये,
नजर पड़ी जब कृष्णचन्द्र की लीनी भुजा पसार ॥ चावल ॥

५.दो मुट्ठी गए खाय तिसरी भरने लगे,
रुकमणी पकड्यो हाथ नाथ क्या करने लगे,
तीन लोक तो दिया उन्ही को हो गए बे घरबार ॥ चावल ॥

६.ठहरे दिन दो चार जब वो विदा हुए,
मांगे मुख से नाही प्रभु ने कुछ ना दिये,
लगे सोचने पूछे ब्राह्मणी देगा क्या रे जवाब ॥ चावल ॥

७.पहुंचे नगरी माय झोपड़ी दिखी नहीं,
महलाँ माही खड़ी ब्राह्मणी बुला रही,
दासी आकर कहे आपको बुला रही घरनार ॥ चावल ॥

८.लगे सोचने आज कन्हैया खूब करी,
लीला अपरम्पार नाथ री गावे हरी,
भजन मण्डली मिलकर गावो, प्रभुजी की जय जयकार
॥ चावल ॥

भजन २६३

साँवरीया थारी माया को कोनी पायो पार
थारो भेद नही जान्यो रे दयालु दिनानाथ ।। टेर ।।

१.नभ म सुरज चन्दा तारा चमक दिन ओर रात
बीन बिणा खम्बा टहरायो रे दयालु दिनानाथ ।। साँवरीया ।।

२.कणकण पर थे नजरा रखता ओ जी दिनानाथ
सीता न कियाँ गमाई जी दयालु दिनानाथ ।। साँवरीया ।।

३.बड़ा बड़ा थे राक्षस मार्या ओ जी दिनानाथ
गुजरी सु कियाँ ठगायो रे दयालु दिनानाथ ।। साँवरीया ।।

४.नीत का माखन मिश्री खाता ओ जी दिनानाथ
मीरा का विष क्युँ कर पीया ओ जी दिनानाथ ।। साँवरीया ।।

५.सूरदास जी भजन बनाव बैठा दिन ओर रात
बीन आन्धो कियां बनायो रे दयालु दिनानाथ ।। साँवरीया ।।

भजन २६४

घर घर बन्धो बान्दरवाल बजे शहनाई आँगण मे ।। टेर ।।

१.गोबर आँगण चोक निपावे गज मोतियन सु चोक पुरावो
ल्यावो ल्यावो कलश सजाय बजे शहनाई आँगण मै ।। घर घर ।।

२.लाल जी न चालो उबटन नहळावो जामो केसरीया पहनावो
लाल जी न केसर तिलक लगाय बजे शहनाई आँगण मै ।। घर घर ।।

३.माखन मिश्री भोग लगावो जमुना जल झारी भर ल्यावो
लाल जी न बीड़ा पान खुवाओ बजे शहनाई आँगण मे ।। घर घर ।।

४.सब सखियान मिल जुल कर आवो
लाल जी पर राइ लुण उवार बजे शहनाई आँगण मे ।। घर घर ।।

-:०:-

मन जाणे माया करुं और करुं गुमान ।
सांई हाथ कतरनी राखे लो उनभान ।।

भजन २६५

तेरी बंसी पे जाऊँ बलिहार रसिया
मै तो नाचुँगी तेरे दरबार रसिया ॥ टेर॥

१.ओढ के आई मैं तो लाल चुनरीया
मटकी उचाके मैं तो भई रे बावरीया
मै तो कर आई सोलह श्रृंगार रसिया ॥ मै तो नाचुँगी॥

२.तेरी कारण मैं तो आई रे अकेली
बडे गोप की नई नवेली
आई करने को तेरी मनुहार रसिया ॥ मै तो नाचुँगी॥

३.जब से लगी मोहे तेरी लगनवा
बिसर गया मेरा आंगनवा
मैं तो छोड आई सारा संसार रसिया ॥ मै तो नाचुँगी॥

भजन २६६ (तर्ज: महलों का राजा मिला रानी बेटी)

साँची साँची कहो तो सरी, आँगण कद आवोला हरी ॥ टेर॥

१.जोशीजी न बेग बुलावो सावण आसी यू फरमायो
फागुन बीत्यो ए सखी अजहू नहीं आया ए हरी ॥ साँची साँची ॥

२.मुँग मोतिडा सु चौक पुराऊँ चाँदी की बाजोट बिछाऊँ
मखमल गलीचा बिछाय बैठन कद आवोला हरी ॥ साँची साँची ॥

३.दाल भात और घी का भोजन छ्प्पन भोग छतिसों व्यंजन
बीच म खिचड़ी कढी जीमण कद आवला हरी ॥ साँची साँची ॥

४.लूँग इलायची का बिडला बनाऊँ चाँदी का जापर वरक लगाउँ
बिडला मै लियाँ ही खड़ी चाबन कद आवोला हरी ॥ साँची साँची ॥

५.ढोल्या ऊँपर सेज बिछाऊँ मखमल का थार तकिया लगाऊँ
पंखो मैं लियाँ ही खड़ी, पोढ़न कद आवोला हरी ॥ साँची साँची ॥

-:०:-

कागा किसका धन हरे कोयल किसको देत ।
मिठा बचन सुणाय कर जग अपना कर लेत ॥

भजन २६७ (लावणी)

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी ।
दुख हरो द्वारकानाथ शरण में तेरी ॥ टेर ॥

१.दुश्शासन वंश कुठोर अति दुख दायी ।
कर पकरत मेरो चिर लाज नहीं आयी ॥
अब भयो धर्म को नाश पाप रह्यो छाई ।
लखी अधम सभा की नारी बिलखाई ॥
शकुनी दुर्योधन करण खड़े खल घेरी ॥ दुख हरो ॥

२.तुम दीनन की सुध लेत देवकी नन्दन ॥
महिमा अनन्त भगवन्त भक्त दुख भंजन ।
तुम किया सिया दुख दूर शंभु धनु खण्डन ॥
अति आरति मदन गोपाल मुनिन मन रंजन ।
करुणा निधान भगरान करी कहँ देरी ॥ दुख हरो ॥

३.तुन सुनि गयन्द की टेर विश्व अधनाशी ।
ग्रह मारी छुड़ायो फंद काटि पग फाँसी ॥
मैं धरौं तुम्हारा ध्यान द्वारका वासी ।
अब काहे राज समाज करावत हाँसी ॥
अब कृपा करो यदुनाथ जानी चित चेरी ॥ दुख हरो ॥

४.तुम पत राखी प्रह्लाद दिन दुख टारी ॥
भये खण्भ फाड़ नरसिंह असुर संहारी ।
ब्रज खेलत केशी आदि बकासुर फारो ॥
मथुरा मुष्टिक चाणूर कंसको मारो ।
तुम मात पिता की जाय छुडाई बंधी ॥ दुख हरो ॥

५.भक्तन हित ले अवतार कन्हाई तुमने ।
नल कूबर की जल योनि छुडाई तुमने ॥
जब बरसत प्रभुता अगम दिखाई तुमने।
नख पर गिर धारि ब्रज लियो बचाई तुमने ॥
प्रभु अब विलंब क्यों करो हमारी बेरी ॥ दुख हरो ॥

६.बैठे सब राज समाज नीति निज खोई ।।
नहि कहत धर्म की बात सभा में कोई ।
पाँचों पति बैठे मौन कौन गति होई ।।
ले नन्द नंनद को नाम द्रौपदी रोयी ।
कर विलाप सन्ताप सभा में टेरी ।। दुख हरो ।।

७.सुन दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी ।
हरि भये चीरमय आप हरो दुख भारी ।।
खैंचत हारो मतिमंद वीर बलकारी ।
रख लई दीन की लाज आप बनवारी ।।
हरषत बरसत सुर सुमन बजावत भेरी ।। दुख हरो ।।

८.क्या करी द्वारकानाथ मनोहर माया ।।
अंबर का लगा पहाड़ अंत नहि पाया ।
तिहूँ लोक चतुर्दश भुवन चीर दर्शाया ।।
बंदिश गणेश परसाद कृष्ण गुण गाया ।
दीनन की दीनानाथ विपति नीर वेरी ।। दुख हरो ।।

भजन २६८

मांई मैने गोविन्द लीनो मोल ।।टेर ।।
१.कोई कहे महंगो, कोई कहे सस्तो, कोई कहे अनमोल ।। मांई ।।
२.कोई कहे हलको, कोई कहे भारी, लीनो तराजू में तोल ।। मांई ।।
३.वृन्दावन की कुंज गलिन में, लीनो बजाकर ढोल ।। मांई ।।
४.सुर नर मुनि जाको पार न पावै, ढक लिया प्रेम पटोल ।। मांई ।।
५.विष को प्यालो राणा भेज्या, पियो मैं अमृत झोल ।। मांई ।।
६.मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल ।। मांई ।।

-:०:-

पीतम नहीं बजार में, वही बजार उजार ।
प्रियतम मिले उजाड़ में, वही उजाड़ बजार ।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अन्य

भजन २६९ (तर्ज: शिक्षा दे रही जी रामायण)

मनाया म्हारे आवजो जी, गौरी रा लाल गणेश ॥ टेर ॥

१.रणत भँवर थारे बैठनो जी,
देवा रिध सिध रा भरतार ॥ गौरी रा ॥

२.माता थारी पार्वती जी,
देवा पिता तो शंकर देव ॥ गौरी रा ॥

३.घिरत सिन्दूर थारे घणो चढ़े रे
देवा गल पुष्पन को हार ॥ गौरी रा ॥

४.राजा सुमिरे बादशाह जी,
देवा ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ गौरी रा ॥

५.गोकुल दास री वीनती जी
देवता चित्त चरणा रे माय ॥ गौरी रा ॥

भजन २७० (तर्ज: नार मोहे शंकर रो वरदान)

ओजी ना टूटे दूध के दंत, उमर मेरी कैसे कटे बाली ॥ टेर ॥

१.इक रैन मैं सपने में सूती, टूट गया मेरे नथ का मोती
आप पिया परलोक पधारे, पडी सेज खाली ॥ उमर ॥

२.पहले तो पीहर की मारी, दूजी राम मोय विपदा डारी
तीजा बैर लक्ष्मण ने साजा, चौथी गोद खाली ॥ उमर ॥

३.आम पके केला घुल आये, डारम पके सुरखी पर आये
नवल बाग का सीचन हारा, मार दिया माली ॥ उमर ॥

४.रावण सुसरो कद को बैरी, सूतो नाग जगा दिया जहरी
रामचन्द्र का चले दुधारा, कैसे जाय खाली ॥ उमर ॥

५.तुलसीदास भजो भगवाना, मांगे शीश सुलोचना रानी
रामा दल में फिरे भटकती, ज्यूं नागिन काली ॥ उमर ॥

भजन २७१ (तर्ज: मेरी विनती सुनो हनुमान)

श्री व्यंकटेश भगवान तुम्ही हो सुख धाम
भक्त हितकारी मैं आयो शरण तिहारी ।। टेर ।।

१.वेदों में ऐसा गाया है तेरा पार न किसने पाया है
प्रह्लाद के कारण नृसिंह रूप लियो धारी ।। मैं आयो ।।

२.रंका बंका मीरा बाई तारेथे सेन भक्त नाई
गज के कारण तुम छोड़ी गरूड़ असवारी ।। मैं आयो ।।

३.नरसी जी नगर अंजार गये उनके भी कारज सार दिये
वो भर्‌यो मायरो बन के सेठ गिरधारी ।। मैं आयो ।।

४.भिलनी के जूठे बेर लिये कर्मा का खीचड़ खाय गये
वो दुर्योधन का मेवा दिया बिसारी ।। मैं आयो ।।

५.द्रौपदी की लज्जा राखी है नामा की छान छवादी है
वो नारि अहील्या जाके तुमने तारी ।। मैं आयो ।।

६.सिर स्वर्ण मुकुट सुहाता है कानों में कुंडल भाता है
वो तिलक भाल पर शोभा दे रहे न्यारी ।। मैं आयो ।।

७.हृदय में लक्ष्मी विराजे है भृगलता पास में छाजे हैं
वो गल बिच मोतियन की माला है न्यारी ।। मैं आयो ।।

८.इक हाथ में शंख सुहाता है दूजे में चक्र अति भाता है
तीजा है प्रहस्थ चौथे में पद्म है भारी ।। मैं आयो ।।

९.श्रीदेवी जिनके पास खड़ी भूदेवी जिनके साथ सजी
ये छवि देखकर चकित भये नरनारी ।। मैं आयो ।।

१०.रामानुज आज्ञाकारी है जाने जो दुनिया सारी है
श्री वैष्णव धर्म का जिन ने किया प्रचारी ।। मैं आयो ।।

११.दासानुदास एक बाल भी है ये श्रीनिवास सूँठवाल भी है
सबको तो प्रभुजी भव से कर दो पारी ।। मैं आयो ।।

-:०:-

कबीरा मन तो एक है भावे जठे लगाय ।
चाहे हरी का भजन कर चाहे विषय कमाय ।।

भजन २७२ (तर्ज: दरबारी कनाडा)

हम तो तेरी शरण में आये श्री बालाजी गोविन्दा
लाज बचालो आज हमारी वेंकटरमणा गोविन्दा ॥ टेर ॥

१.दूर देश से चलकर भगवन तिरूपति हम आये हैं
तेरे दर्शन करने के खातिर प्रेम भेंट हम लाये हैं
आज हमें भी दर्शन दे दो श्री बालाजी गोविन्दा ॥ लाज बचा..

२.गोविन्द राज के दर्शन करकर तिरुमलै हम आये हैं
वेद शास्त्र की महीमा सुनकर पुष्करणी में न्हाये हैं
वराह राज की करी अर्चना तेरे खातिर गोविन्दा ॥ लाज बचा..

३.प्रथम आपकी नगरी में हम सारे दर्शन पाये हैं
तेरे दर्शन करने खातिर धर्म की बार लगाये हैं
इस बारी के पिंजरे में हम नाम रटे हैं गोविन्दा ॥ लाज बचा..

४.जैसे तैसे चल कर भगवन तेरे सन्मुख आये हैं
जरगुंडी-२ कह कर हमको दूर भगाये हैं
मन की इच्छा अधूरी रह गई दर्शन की तेरे गोविन्दा ॥ लाज बचा..

५.प्रभुजी तुम हो जग के ठाकुर इतना तो बस किया करो
छोटो सी है अर्ज हमारी मन में दर्शन दिया करो
भक्त मंडली लिख दई हुंडी आप सिकारो गोविन्दा ॥ लाज बचा..

-:०:-

जब दांत न थे तब दूध दियो, अब दांत दियो जोको अन्न भी दे है ।
जल में थल में पशु पक्षिन में सबकी सुधलेत वो तेरी हुं लैही है ।
जन को देत, अजान को देत, जहान को देत व तोको भी दैई हैं ।
रे मन मूरख सोंच करे क्यूं सोंच करे कछु हाथ न अैयीं है ॥

-:०:-

दुर्बल को न सताईये, जा की मोटी हाय ।
बिना जीव की स्वास से, लोह भस्म हो जाय ॥

भजन २७३

ठाकुर भला बिराजो जी, महाराजा भले विराजो जी ।
छोटी सी जगन्नाथ पुरी में, आप विराजोजी ॥ टेर ॥
भई ओरीसा जगन्नाथ पुरी में, आप वीराजोजी
बाई सोदरा का वीर समुंदर, तीर विराजोजी ॥ ठाकुर ॥
१.कब लग छोड़ी मथुरा नगरी, कब लग छोड़ी काशी
झारखण्ड मे आन विराजे, वृन्दावन के वासी ॥ ठाकुर ॥
२.द्वापुर छोड़ी मथुरा नगरी, त्रेता छोड़ी काशी
कलयुग माँई आन विराजे, वृन्दावन के वासी ॥ ठाकुर ॥
३.उडीया मांगे खीचड़ी, बंगाली मांगे भात
साधु मांगे दरशन, महापरशाद ॥ ठाकुर ॥
४.उडीया देस्यां खीचड़ी, बंगाली देस्यां भात
साधु देस्यां दरशन, महापरशाद ॥ ठाकुर ॥
५.दाल रांधु भात रांधु, परवल की तरकारी
मीन मार कर भोग लगावे, अधम जात बंगाली ॥ ठाकुर ॥
६.काला रे काला टिंगर वाला, जिनकी गरदन मोटी
भाव भक्ति को मरम न जाने, राखें लाम्बी चोटी ॥ ठाकुर ॥
७.सोलह हाथ की साड़ी, पहिरे बारह हाथ को लहंगो
सास ननद की काणन राखे, आधी टांग उघारी ॥ ठाकुर ॥
८.गली गली में बाग बगीचा, गली गली फुलवारी
घर घर देखा नारियल केला, घर घर ठाकुर बारी ॥ ठाकुर ॥
९.दो दो कोस पर हाट लगाई, पांच कोस पर चट्टी
चलते चलते पैर बिराने, तन की हो गयी मट्टी ॥ ठाकुर ॥
१०.चलती चक्की बणिया लूटे, और लूटे फिरंगी
सिंघ दरवाजे पंडा लूटे, यात्री भए उदासी ॥ ठाकुर ॥
११.नील चक्र पर ध्वजा विराजे, मस्तक सोहे हीरा
ठाकुर आगे दासी नाचे, गावे दास कबीरा ॥ ठाकुर ॥

भजन २७४

भजो श्री वेंकटेश बाला, भजो श्री लक्ष्मणजी बाला ।
अटलराज महाराज धणी का सदा बोल बाला ।।
सदा होय कल्याण धणी का सदा बोल बाला ।। टेर ।।

१.चार जणां मिल मतो विचार्‌यो, चालो दक्षिण चालाँ ।
हुकुम हुयो श्री बालासाब को, माल मोकळो ल्यावाँ ।। भजो ।।

२.पेहली आया ब्राह्मण बणिया, पीछे सेवग नाई ।
चार जातने हुकम हुयो है, करो यात्रा भाई ।। भजो ।।

३.फाटी अंगरखी फाटी पगड़ी, नहीं पावाँ में जोड़ा ।
हुकम हुयो श्री बालासाब को, चढ़ण मिल्या घोड़ा ।। भजो ।।

४.मुम्बई में मुम्बादेवी, कलकत्ता में काली ।
जोधपुर चामुंडा बिराजे, लाल चुनरी वाली ।। भजो ।।

५.पंढरपूर में पंढरीराया, तुलजापुर में माई ।
देवळगाँव में बसे बालाजी, वांकी जोत सवाई ।। भजो ।।

६.चार गाँव में चार देवरा, चारूँ शिव का थाणा ।
नासिक सेती गंगा निकली, गोदावरी का न्हाणा ।। भजो ।।

७.कलकत्ते की क्या कहूँ महिमा, निसदिन गंगा नहाना
गंगा नहाय गोमती नहाना, बद्रीनाथ जाना ।। भजो ।।

८.जोधाणे घनश्याम बिराजे, मुरलीधर नागोर ।
काशी में विश्वनाथ बिराजे, द्वारका रणछोड ।। भजो ।।

९.मारवाड़ मरुधर के अन्दर, गोट मांगळोद माई ।
बीकानेर की करणी माता, वांकी ज्योत सवाई ।। भजो ।।

१०.खाटू नगरी श्याम बिराजे, सालासर हनुमान
मेंहदीपुर में बसे बालाजी, भक्ताँ का प्रतिपाल ।। भजो ।।

११.काचीगुड़ा में सिंह असवारी, शंकरबाग में माई ।
देवी बाग में अष्टभुजा है, भक्ताँ की रखवारी ।। भजो ।।

१२.काचीगुड़ा में खाटु रे श्यामजी, नोबतपाड बालाजी ।
शिवरामपल्ली में रामदेवरा, करे भक्ताँ की रखवाली ।। भजो ।।
१३.नदी नाळा, खाडा रे बाळा, जहाँ बाळा रखवाळा ।
मारवाड़ में मात पिता है, बेग भेज बाळा ।। भजो ।।
१४.मारवाड़ी भण्डारो कीनो, बड़बागण की छाया ।
ब्राह्मणाँ ने भोजन दक्षिणा, बहुत बढ़े माया ।। भजो ।।
१५.मारवाड़ को तेजो बिरामण, जनम रोहिणी पायो ।
हुकुम हुयो श्री बालासाब को, छंद जोड़ गायो ।। भजो ।।

भजन २७५

ले ले हरि का नाम विट्ठल पांडुरंगा
पांडुरंगा पंडरीनाथा पांडुरंगा पंडरीनाथा ।। टेर ।।
१.राम वही है श्याम वही है, लक्ष्मण और बलराम वही है
सबमें उसका नाम समाया, सबमें रहती उसकी छाया
शक्ति उसकी महान, विट्ठल पांडुरंगा ।। ले ले हरि ।।
२.पंढ़रपुर की महिमा भारी, आते हैं लाखों नर नारी
उसके लिए है कोई न छोटा, उसके लिए है कोई न मोटा
लीला उसकी महान, विट्ठल पांडुरंगा ।। ले ले हरि ।।
३.सावली सूरत है मूरत प्यारी, हरिचरणों की महिमा भारी
एक ईंट पर प्रभुजी खड़े हैं सबके लिए द्वार खुले हैं,
महिमा इन की महान, विट्ठल पांडुरंगा ।। ले ले हरि ।।
४.संग में खड़ी रूक्मिणी माता, वो तो है अन धन की दाता
दोनों जग के भाग्य विधाता, दोनों जग के त्राता भ्राता
दोनों ही है महान, विट्ठल पांडुरंगा ।। ले ले हरि ।।

-:०:-

प्रेम गली अति सांकरी ता मे दो न समाय ।
मैं जो हुं तो हरि नहीं हरि है तो मैं नाहि ।।

भजन २७६ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम)

आव आव अजमल जी रा लाला
थानै भगत बुलावै रै बाबा बेगो आव ॥ टेर ॥

१.आप कह्यो जद देश छोड़ परदेश कमावण आयो रे ।
जहाजड़ली म्हारी डुबण लागी, म्हारो जी घबरायो रे ॥ थानै ॥

२.चारूं कानी समदरियो बाबा म्हारो कोई नाही रे ।
बीच भंवर में नैया म्हारी, गोता खावै रे ॥ थानै ॥

३.छोटा छोटा टाबरिया म्हारा रुणिचै म रुलसी रे ।
इन छोटा टाबरियां को बाबा, पालन कुण करसी रे ॥ थानै ॥

४.राम देव बिरमदेव दोनुं भाई चौपड़ पासा खेल रे ।
रमता रमता भुजा पसारी, जहाज तिराई रे ॥ थानै ॥

५.देश देश का आवे यात्री परचा थांका भारी रे ।
दास व्यास चरणां मं थाकै लीला गाई रे ॥ थानै ॥

भजन २७७

चार दिशा में चार धाम दर्शन कर आवोला,
घणासुख पावोला ॥ टेर ॥

१.पूरब में श्री जगन्नाथ बलभद्र सोदरा जावोला,
लेकर महा परसाद हृदय में मोद बढावोला ॥ घणासुख ॥

२.पश्चिम में श्री द्वारका धाम रणछोड़ चरण चित लावोला,
जनम जनम का पाप पलक में सभी गमावोला ॥ घणासुख ॥

३.उतरा खण्ड में नर नारायण तपत कुण्ड में न्हावोला,
अरस परस होने से आवा गमन मिटावोला ॥ घणासुख ॥

४.दक्षिण में श्री सेतू बन्ध रामेश्वर पद परसा वोला,
प्रेम हृदय से श्रीगंगाजल भेंट चढ़ावोला ॥ घणासुख ॥

५.चार धाम की महिमा भक्तों साँझ सवेरे गावोला,
हरिराम सिखवाल कहे हरि भक्त कहावोला ॥ घणासुख ॥

भजन २७८ (लावणी)

बड़े रूणीचे धाम ओ बाज रया बाजा,
म्हारी अरज सुनो सरकार रामदेव राजा ॥ टेर ॥

१.भक्ति कीनी अजमलजी ने भारी,
तुम प्रकट भये अवतार सुदर्शन धारी,
जय जय बोले नर नार होत आवाजा ॥ म्हारी ॥

२.किया बोलता याद जहाज बाकी तारी,
चोपड़ रमता रमता भुजा पसारी,
राखी भक्त की लाज सार दिये काजा ॥ म्हारी ॥

३.दलजी बनके माय विपद भई भारी,
दियो सेठ न माल याद करे थारी,
होय लीले असवार आये महाराजा ॥ म्हारी ॥

४.लख बिणजारो भार से मिसरी लायो,
वो बोलो आपसे झूठ नहीं शरमायो,
मिसरी पलट भयो नून आप रखी लाजा ॥ म्हारी ॥

५.चेताराम गुरुदेव भेद बतलाया,
प्रभु किजो मेरी सहाय आपको ध्याया,
कर जोड़करे परणाम द्वार है साजा ॥ म्हारी ॥

भजन २७९ (रसिया)

बली छलने को चले रे त्रिलोकी ॥ टेर ॥

१.बली छलन को चले त्रिलोकी, कला बनाली ओछी
हाथ में लेली ब्रह्म लकुटिया, सिर पर घरली हरि ने पचरंग टोपी ॥ बली ॥

२.स्नान करके बाँधी धोती, सूरज को जल दीनो,
पाँव पदम और सुघट खडाऊँ, बगल में धरली हरि ने भगवत पोथी॥ बली॥

३.भरी सभा राजा की बैठी, बात कही एक छोटी,
तीन पैर धरती दे राजा, जामें ब्राह्मण करके,खावे,एक रोटी ॥ बली ॥

४.तुलसीदास भजो भगवाना, बलिहारी चरणों की,
राजा बली ने दान दियो है, क्षण में नाप लियो त्रिलोकी ॥ बली ॥

भजन २८० (राग: शुद्ध कल्याण, तर्ज: जहाँ डाल डाल पर)

ओ शेषाचल पर बसने वाले, फेरे सब तेरी माला ।
जय गोविन्दा गोपाला, जय गोविन्दा गोपाला ।। टेर ।।

१.तेरे दर्शन खातिर दूर दूर से लाखों भक्त है आये,
मन मांगी मुरादें पाने को, श्रद्धा के फूल चढ़ाये ।
ओ भक्ति धन झोली में भरता, हर कोई आने वाला ।। जय ।।

२.सब बैठे धर्म की बारी में, दर्शन की प्यास लगाये,
जब पिंजरे का ताला खोले, तो दर्शन तेरा पाये ।
जब झूम के गावे जब खुल जाए इस पिंजरे का ताला ।। जय।।

३.जब तरसा तरसा कर भक्तों को अपना दर्श दिखावे,
तब जरगंडी जरगंडी कह कर हमको दूर हटाये ।
नैना प्यासे ही रह जाते, तेरे दर्शन को बाला ।।जय ।।

४.हम बालक तेरे तुझसे, शिकायत नहीं है अंतर्यामी,
भजन मण्डल को दर्शन दो, हे मन मन्दिर के स्वामी ।
कोई गोविन्दा गोविन्दा गाते, जाये कहे गोपाला ।।जय ।।

भजन २८१ (धमाल)

मेलो बाबा को साथीड़ा आपाँ, खाटू चालाँ रे मेलो बाबा को ।। टेर ।।

१.रंग बिरंगी तरह तरह की ध्वजा हाथ में ले लो रे ।
गाता और बजाता आपाँ खाटू चालां रे मेलो बाबा को ।। मेलो ।।

२.चंग बजाता हरिगुण गाता मिल कर हेलो देल्यो रो ।
श्याम धनी का चरणाँ में शीश नवाश्यां रे मेलो बाबा को ।। मेलो ।।

३.फागुन माँही मेलो रे भारी सब घर का न ले ल्यो रे ।
श्याम कुण्ड म न्हाकर जीवन सफल बनाओ रे मेलो बाबा को।। मेलो ।।

४.बाबा की असवारी निकले सब कोई दर्शन करल्यो रे ।
ग्यारस की है रात श्याम की ज्योत जगावो रे मेलो बाबा को ।। मेलो ।।

५.बारस के दिन खीर चूरमो भोग श्याम क धरलो रे ।
साँझ सवेरे मन्दिर जाकर घूमर घालो रे मेलो बाबा को ।। मेलो ।।

भजन २८२ (तर्ज: आओ बच्चों तुम्हें दिखायें)

धन तेरस की पूजा करलो आई दिवाली की रात है ।
लक्ष्मीजी को आज मनालो कर देगी बरसात है ।। टेर ।।

१.लक्ष्मीजी की कृपा हुई जो भण्डार आपका भर देगी,
बडी दयालु है महाराणी घर में आनन्द कर देगी ।
लक्ष्मीजी के वश में देखो तिरलोकी के नाथ है ।। धन तेरस ।।

२.बडी ही चंचल है मनवा की सबको नाच नचाती है,
दुष्टमान जिस पर हो जावे, उसी के हाथों में आती है ।
सारी दुनिया लक्ष्मीजी की विनती करे दिन रात है ।। धन तेरस ।।

३.जिससे रूठ गई ये मैया उसका नहीं ठिकाना है,
उसके घर में रहती है जिसने उसको पहचाना है ।
कृपा होय तो देती है भर भर दोनों हाथ है ।। धन तेरस ।।

४.हाथ जोड कर करलो वन्दन मैया मेरे घर आवो,
सदा करूँ गुण गान आपका, मैया मुझको अपनावो ।
शेष की शैया पर रहती हो माँ, नारायण के साथ है ।। धन तेरस ।।

५.भक्त मण्डली कहती है, लक्ष्मी को खूब मनाओजी,
चरणकमल में शीश नवाओ, मैया देगी हँस हँस के ।
इस जीवन में लक्ष्मीजी सबकी पिता गुरु मात है ।। धन तेरस ।।

भजन २८३

श्री जगन्नाथ चरणांर विंद में नैन हमारे अटके ।। टेर ।।

१.जो और गेहूँ ज्वार बाजरा, तजके बिरज से सटके
उड़ीसा में आन बिराजे, दाल भात के अटके ।।श्री जगन्नाथ ।।

२.मथुरा वृन्दावन के बासी, जमुना जी के तट के,
नन्द बाबा की धेनू चराये, तीरे बंसी बटके ।।श्री जगन्नाथ ।।

३.पाँडवों की पंचायत में, दुर्योधन के खटके,
उनके गर्व हरे प्रभु क्षण में, कंस केश धर पटके ।।श्री जगन्नाथ ।।

४.जो कोई जाकर अटका चढ़ावे, कटे जनम के खटके,
लाल दास बैरागी गावे, चेला नागर नट के ।।श्री जगन्नाथ ।।

भजन २८४

तृपति धाम लागे प्यारो धाम लागे प्यारो ।
बिराजे बालाजी महाराज तृपति धाम लागे प्यारो ॥ टेर ॥
१.दक्षिण में सवालक्ष पर्वत सोवना - २,
ज्याँ में शेषाचल शिरताज ॥ तृपति धाम ॥
२.एक तो विराजे सीतारामजी - २,
दूजा गोविन्द गिरिराज ॥ तृपति धाम ॥
३.एक तो वैकुंठ कोयल सुहावनी - २
दूजी गंगा रही गाज ॥ तृपति धाम ॥
४.दक्षिण के नरेश बाला साहब है - २,
जैसे बृज में बृजराज ॥ तृपति धाम ॥
५.शंख चकधारे सोवना - २,
दूजा सजे सबसाज ॥ तृपति धाम ॥
६.श्री देवी भू देवी संग में खड़ी - २
हिरदे महालक्ष्मी बिराज ॥ तृपति धाम ॥
७.पांडव तीर्थ पाप नाशिनी - २
दूजा हनुमान गणराज ॥ तृपति धाम ॥
८.हंसराज हरियश कहे - २
प्रभु करे मनोरथ काज ॥ तृपति धाम ॥

भजन २८५ (प्रभाती)

हे गंगा जय जय जग जननि, जय संतन सुखदाई ॥ टेर ॥
१.भक्ति हेतु भागीरथ के हित, प्रकट धरणी पै आई
जोकोई ध्यानधरे हित चित से, कीर्ति विमल यश गाई ॥ जय ॥
२.चरण कमल अनुराग मानकर, ले ब्रह्मा उर लाई
प्रबल प्रताप कहां लग बरणौ, शंकर जटा समाई ॥ जय ॥
३.चार खान जग जीव उधारणी, वेद सुकिरत गाई
गनि गंधर्व नाग सुर नर मुनि, सदा रहत लौ लाई ॥ जय ॥
४.राम नाम कलि केवल गंगा, और न कछु क उपाई
कान्हरदास धन्य वह जग में, रहत नित्य चित्त लाई ॥ जय ॥

भजन २८६ (लावणी)

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करे शिव संहारे
धन्य धन्य श्री गंगा मैया अधम पापीयों को तारे ॥ टेर ॥

१.गणेश जी विद्या का वर दे, बुद्धि बुद्धि का दान करे
सूर्य तेज दे शरीर में इस जगत में सब सन्मान करे
शीतल ताही दे चन्द्रमा सतगुण को परदान करे
हनुमान जी चाहे तो एक पल भर में बलवान करे
भैरव जी भय हरे डरे नही दुष्टन को पल में मारे ॥ धन्य ॥

२.इन्द्र का सुमिरण करे तो, पावे सुन्दर सी अबला नारी
दुर्वासा जी पवन अहारी, कामी को करे ब्रह्मचारी
कुबेर के जो भक्त है वो तो बडे बडे माया धारी
धर्मराज जी धर्म बतावे जो है उनके अधिकारी
शेषजी अपने सहस्त्र मुख से नये नाम नित उच्चारे ॥ धन्य ॥

३.तन का रोग दूर कर देते बडे वैद्य अश्वनी कुमार
वेदव्यास पुराण के मुनि है, वेद का निस दिन करे उच्चार
बालपने से त्याग बतावे, सनक सनन्दन सनत कुमार
करो शनिश्चर की पुजा तो, सकल विघन को देवे टार
जितने देवी देवता होगे सब गुरु ब्रहस्पति को घारे ॥ धन्य ॥

४.तैतीस कोटी देवी देवता, देते है सब अपना फल
अति प्रसन्न होते है उन पर, चड़ता है जब गंगा जल
देवीसिंह कहे कभी न भुलूँ , मैं श्री गंगा को एक पल
सबसे ऊँचे शिवजी जिनके शीश उपर गंगा जल
बनारसी के अधम पाप को धोवे गंगा की धारे ॥ धन्य ॥

-:०:-

बिलग बिलग सुख संग दुख जनम मरन सोइ रीति ।
रहिअत राखे राम के गए ते उचीत अनीत ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

होरीयाँ

भजन २८७ (धमाल)

सिमरन कर पहले गजानंद को, सिमरन कर ॥ टेर॥
१.मखनो रे हाथी जरद अम्बारी, रूप नगर को राव बण्यो ॥ सिमरन ॥
२.मस्तक उपर ध्वजा रे बिराजे, क्रीट मुकुट सोहे उनको ॥ सिमरन ॥
३.सूँड सुँडालो रे बाबो दूंद दुंदालो, ओछी-२ पिंडियाँ बाबो मतवाला ॥सिमरन॥
४.दायें रे हाथ वारे रिद्ध सिद्ध सोहे, जीवणे हाथ लाडू अमरत को ॥ सिमरन ॥
५.जठ तो भवानी देवा थारो यश गावे, मन रो मनोरथ पूर्ण करा ॥ सिमरन ॥
६.सारा रे गेरिया थारो यश गावे, भरी रे सभा में दियो ढंका ॥ सिमरन ॥
७.तानसेन गणपति गुण गावे, गण सिमरया सब विघ्न टरे ॥ सिमरन ॥

भजन २८८ (तर्ज: पल्लो लटके)

ऐसी होली खेली रे कान्हा भांग चढगी ।
मुरारी-कानुड़ा-कन्हैया मानजा म्हारी आँख्याँ में गुलाल पड़गी ॥ टेर ॥
१.कहाँ गिरायो मोर मुकुट और कहाँ गिरायी माला - माला
मुख की मुरली कहाँ गिरायी कहाँ पिताम्बर डाला ।
पाँवा की पैजनियाँ थारी कठ गमगी ॥ मुरारी-कानुड़ा ॥
२.कौन पिरायो लंहगो चोली, कौन पिरायी साड़ी - साड़ी ।
माथे बिंदिया कौन लगाई, कौन बनायो नारी ।
संग की सहेलियाँ थारी कठ गमगी ॥ मुरारी-कानुड़ा ॥
३.कहाँ से लाये रंग चिकारी, कहाँ गूलाल उड़ायी - उड़ायी
ग्वाल बाल संग मिलकर कान्हा बृज में धूम मचायी ।
चोखी चोखी बाताँ म्हारे चित चढ़गी ॥ मुरारी-कानुड़ा ॥

-:०:-

यह अनुरागी चित्त की गीत नहि समुझै कोय ।
ज्यों ज्यों डुबे श्याम रंग त्यों त्यों उज्जवल होय ॥

भजन २८९ (धमाल)

आप धरी रे महाराज धरी, श्री ठाकुर किलंगी आप धरी ।।टेर।।
१.काहे की रे तेरी बणी रे किलंगीया, काहे कौन जड़ाव जड़या ।।श्री।।
२.मोर पंख की बणी रे किलंगीया, हीरा मोती लाल जड़ाव जड़या ।।श्री।।
३.कौन नार तेरी गुंथी रे किलंगीया, कौन नार तेर शीश धरी ।।श्री।।
४.बहन सोदरा गुंथी रे किलंगीया, मात यशोदा हर के शीश धरी ।।श्री।।
५.कौन मास तेरी गुंथीरे किलंगीया, कौन मास तेरे शीश धरी ।।श्री।।
६.माघ मास तेरी गुंथीरे किलंगीया, फाग मास तेरे शीश धरी ।।श्री।।
७.कृष्ण जीवण रचिराम के प्रभु प्यारे, चीरंजी रहो ये वत्सल जोडी ।।श्री।।

भजन २९० (राग: काफी)

होरी या रंग धूम मचाऊँ, जपे मन मोहन पाऊँ ।। टेर।।
१.अबीर गुलाल को अंबर थांमू, रवि को रथ ठहराऊँ
दसूँ द्रगपाल रहे चकवी जद, ब्रह्म को ब्रह्म भुलाऊँ
सहस्रवा को नाच नचाऊँ ।। होरी या ।।
२.केसर घोल गुलाल अबीर से, कंचन माट भराऊँ
अपने शाम पर छिडकुं उमंग से, ब्रज जननी मन भाऊँ
श्याम संग प्रीत लगाऊँ ।। होरी या ।।
३.बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, लेकर बीण बजाऊं
नरहर नृत्य करूँ प्रभु सनमुख, सारंग रास रचाऊं
गजानन्द नाच नचाऊँ ।। होरी या ।।
४.जाकी सहाय करे करूणानिधि, वाको भी रंग में भिगोऊँ
सूर श्याम संग फाग खेल के, भूल चूक बिसराऊँ
गुनाह सब माफ कराऊँ ।। होरी या ।।

-:०:-

आवत गारी एक है, उलटन होय अनेक ।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक ॥

भजन २९१ (धमाल)

बृज मंडल देश दिखाओ रसिया ।।टेर ।।
१.थारी रे बिरज माई चोखा चोखा चावल्या, हरिया-२ मूंग उड़द गठिया ।।बृज।।
२.थारी रे बिरज माई गऊआँ घणेरी, गोरी गोरी गाय सुरंग बछिया ।।बृज।।
३.थारे रे बिरज माइ गऊअें घणेरी, पिव पिव दूध बनत पठिया ।।बृज।।
४.थारे रे बिरज माई मोर घणेरा, कूकत मोर फटत छतिया ।।बृज।।
५.थारे रे बिरज माई घणा रे वानरा, सून्हा घर माई वे बडगया ।।बृज।।
६.थारे रे बिरज माई नार घणेरी, भोली-२ नार चतुर रसिया ।।बृज।।
७.थारे रे बिरज माई नार घणेरी, ओछी-२ नार मरद रसिया ।।बृज।।
८.थारे रे बिरज माई चोखा-२ चावल्या, पुरसत नार जिमत रसिया ।।बृज।।
९.थारे रे बिरज माई चोखी-२ चुन्दडिया, ओढत नार रिझावे रसिया ।।बृज।।
१०.कृष्ण जीवन रचिराम के प्रभु प्यारे, चिरंजी रहो बृज के बसिया ।।बृज।।

भजन २९२ (धमाल)

दधि दूँगी रे साँवरिया थोडी बंसरी बजाय दधि दूँगी रे ।। टेर ।।
मुख मुरली बजाय दधि दूँगी रे
१.ऐसी बजाय जैसे यमुना तट पर बाजी रे
बहतो नीर तुरत थम जाय ।। दधि ।।
२.ऐसी बजाय जैसे माधो बन में बाजी रे
चरती धेनु मगन होय जाय ।। दधि ।।
३.ऐसी बजाय जैसी वृन्दावन में बाजी रे
बृज की सखियाँ मगन होय जाय ।। दधि ।।
४.ऐसी बजाय जैसी कुन्जन वन में बाजी रे
संग का सखा सब मगन हो जाय ।। दधि ।।
५.चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवी
चरण कमल मे चित रमजाय ।। दधि ।।

भजन २९३ (धमाल)

लक्ष्मण के बाण लग्यो रे शक्ति, वो पड्यो रे धरती लक्ष्मण के ।। टेर।।

१.है कोई अैसो म्हारा लक्ष्मण ने जिवावे
आधो देवूँ राज सवाई धरती ।। लक्ष्मण के ।।

२.कै तो जिवावे माता सीता सतवंती
कै तो जिवावे हनुमान जति ।। लक्ष्मण के ।।

३.काहे से जिवावे माता सीता सतवंती
काहे से जिवावे हनुमान जति ।। लक्ष्मण के ।।

४.सत से जिवावे माता सीता सतवंती
बल से जिवावे हनुमान जति ।। लक्ष्मण के ।।

५.बूंटी ल्याय दियो रे हनुमंता
जाग उठयो वो लखन जति ।। लक्ष्मण के ।।

६.'कृष्ण जीवण' रची राम के प्रभु प्यारे
चिरंजी रहो या भाईयाँ की जोड़ी ।। लक्ष्मण के ।।

भजन २९४ (धमाल)

शिव के मन भाय रही काशी ।। टेर ।।

१.आधी रे काशी में ब्राह्मण बणिया, आधी काशी में सन्यासी
काहे करण को ब्राह्मण बणिया, काहे करण को सन्यासी
नेम धरम को ब्राह्मण बणीया, तप करने को सन्यासी ।। शिव के।।

२.काहे करण के चंदन घसिया, काहे करण केशर घोरी
तिलक करण को चंदन घसिया, फाग रमण को केसर घोरी ।।शिव के ।।

३.कौन शिखर पर गँवरा बिराजे, कौन शिखर पर अविनाशी
हिम आंचल पर गवरा विराजे, कैलास परवत अविनाशी ।।शिव के ।।

४.काशी में विश्वनाथ विराजे, भोलो बाबो अविनाशी
कृष्ण जीवण रची राम के प्रभु प्यारे, चिरंजी रहे काशी के वासी ।। शिव के ।।

भजन २९५ (राग: सारंग)

महिनो फागुण को सांवरिया थारी ओल्यूं आवे रे
बार बार थारी याद सतावे रे महीनो फागण को ॥ टेर ॥
१.मोहन तुम मथुरा में आये,
कुब्जा दासी सौत हमारी, मौज उडावे रे ॥ महीनो ॥
२.याद पडत हित चित की बतियाँ
बिन देखे नंद लाल, हमारो मन लालचावे रे ॥ महीनो ॥
३.खान पान कछु नांही सुहावे,
साथण और सहेल्या थारी बात बणावे रे ॥ महीनो ॥
४.प्रीत लगाई भई हम पीली,
उध्दव के संग लिखकर कान्हो योग पठावे रे ॥ महीनो ॥
५.सोलह सहस्त्र गोपीका त्यागी,
निर्मोही नंदलाल तनिक सी दया न लावे रे ॥ महीनो ॥
६.राम सखी चरणन की चेरी,
मै तो नाथ अनाथ दरस बिन, क्यूं तरसावे रे ॥ महीनो ॥

भजन २९६ (राग: काफी)

कैसे होरी खेलो पिया संग
कैसे होरी खेलो पिया संग, दुविधा रार मचाय रही रे ॥ टेर ॥
१.पांच पचीसो ने फाग रच्यो है ममता रंग बनाय रही रे
नाचत लाल कर्म के आग, संशय भाव रंग बनाय रही रे ॥ कैसे ॥
२.करके सिंगार कुमती बैठी, भरम के घुंघरू बजाय रही रे
ये तीनो ताल मृंदग बजावे, मैं मैं रागिनी छाय रही रे ॥ कैसे ॥
३.कपट कटोरा मधु विष भर भर तृष्णा मन को हा खाय रही रे
याही जीव को वश कर अपने, हंस को काग बनाय रही रे ॥ कैसे ॥
४.जान बूझ के सुनो भाई साधु, संतजनों ने पीठ दे रही रे
दास कबीर कहत कर जोरे, हमारी तो ऐसे ही बीत गई रे ॥ कैसे ॥

भजन २१७

आज बीरज में होरी रे रसिया, होरी नही बर जोरी रे रसीया ॥ टेर ॥
१.अपने अपने घर से निकसी, एक श्याम दूजी गोरी रे रसिया ॥ आज ॥
२.उडत गुलाल, लाल भये बादल, पिचकारन झक झोरी रे रसिया ॥ आज ॥
३.चोवा चोवा चन्दन और अरगजा, केसर भरी कटोरी रे रसिया ॥ आज ॥
४.जो डारो सो सनमुख डारो, नहीं तैने देऊँ दोय गारी रे रसिया ॥ आज ॥
५.कृष्ण जीवण रचि राम के प्रभु प्यारे, चिरंजी रहो या जोडी रे रसिया ॥ आज ॥

भजन २१८

बाजे बाजे रे बिरज के माय बंसी बाजे रे ॥ टेर ॥
१.काहे की रे तेरी बांसरी, कौन सुनाई मीठी तान ॥ बंसी ॥
२.हरिया बांस की बांसरी, आ तो मोयो युग संसार ॥ बंसी ॥
३.कौन बजाई ऐसी बांसरी, कौन सुनाई मीठी तान ॥ बंसी ॥
४.कै नन्दजी को दावड़ो, ओ तो कै वसुदेवजी को लाड़ ॥ बंसी ॥
५.बंसी तो बाजी मथुरा शहर में, आ तो मोयो सकल संसार ॥ बंसी ॥
६.दास व्यास की वीनती, वांरो चित्त चरणां रे मांय ॥ बंसी ॥

भजन २१९

बाजे बाजे हो वृन्दावन मांय बाजे मोहन बांसरी
राणी राधे मोहन नन्दकिशोर बाजे मोहन बांसरी ॥ टेर ॥
१.रंग रंगीली तेरी बांसरी, रंग देवो हो सब बृज की नार ॥ बाजे ॥
२.चोवा चोवा चन्दन और अरगजा, ले आई हो सब बृज की नार ॥ बाजे ॥
३.उडत गुलाल लाल भये बादल, ले आओ रंग सब बृज के नार ॥ बाजे ॥
४.चलो सखी जहां जाईये, जहां ऊबी हो सब बृज की नार ॥ बाजे ॥
५.हिल मिल फाग परस्पर खेले, रंग देओ हो सब बृज की नार ॥ बाजे ॥
६.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, होरी खेलो हो सब बृज की नार ॥ बाजे ॥

भजन ३०० (धमाल)

राजा बल के द्वारा मची रे होली रे मची रे होली रे राजा बल के ।। टेर ।।
१.कित से आये कुंवर कन्हैया, कित आई राधा गोरी
गढ गोकुल से कुंवर कन्हैया, बरसाने राधा गोरी ।। राजा बल ।।
२.कौन बरण के कुंवर कन्हैया, कौन बरण राधा गोरी
श्याम बरण के कुंवर कन्हैया, गौर बरण राधा गोरी ।। राजा बल ।।
३.कितना बरस के कुंवर कन्हैया, कितना बरस राधा गोरी
पाँच बरस के कुंवर कन्हैया, सात बरस राधा गोरी ।। राजा बल ।।
४.किन के हाथ कनक पिचकारी, किन रे हाथ रंग की बोरी
श्याम के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ में रंग की बोरी ।। राजा बल ।।
५.कै मण लाल गुलाल मंगाई, कै गाडा केसर घोली
दस मण लाल गुलाल मंगाई, दस गाडा केसर घोली ।। राजा बल ।।
६.कुचवन कीच भयो आंगन में, खेले रंग जोडा जोडी
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, बाबा नन्द खडे पोरी ।। राजा बल ।।

भजन ३०१ (धमाल)

कैसे आऊँ रे सांवरिया थारी बृज नगरी ।। टेर ।।
१.तेरी नगरी में कान्हा जमुना बहत है, पाँव धरूँ भीजे गगरी
२.तेरी नगरी में कान्हा कीच मच्यो है, पाँव धरूँ बह जाऊँ सगरी
३.तेरी नगरी में कान्हा दान लगत है, होय रही झगड़ा झगड़ी
४.तेरी नगरी में कान्हा फाग मच्यो है, खेलत है जोड़ा जोड़ी
५.लारे से आऊँ तो कान्हा डर मोहे लागे, सामने आऊँ देखे सारी नगरी
६.धीरे चलूँ मेरी पायल बाजे, तेज चलूँ छलके गगरी
७.दिन में आऊँ मेरी सास लडत है, रात आऊँ बालम देवे गारी
८.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, प्रभु चरणन पर चित्त धर री

-:०:-

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख मांह ।
मनुआ तो दशदिश फिरे, यह तो सुमरन नांह ॥

भजन ३०२ (रसिया)

एरी मै सोय रही सपने में, मो पे रंग डाल्यो गोपाल ॥ टेर ॥

१.एक रैन श्याम मेरे घर आये, ग्वाल बाल कोई संग न लाये
बैठ पलकन पे मेरे संग, टटोलन लाग्यो मेरो अंग
दई पिचकारी भर भर रंग,
पिचकारी के लगत ही, मो मन उठी तरंग
मानो मिसरी कंद की, मैं जो पीली भंग
मैं जो पीली भंग, गाल कर दीने लाल गुलाल ॥ एरी मै ॥

२.हँस हँस के मोहे कंठ लगाये, मानो खोई दौलत पाई
सखी सपने में खुले मेरे भाग, मनाय रही हँस हँस फाग सुहाग
हँस हँस फाग मनावती, पाऊँ न ऐसी रैन
ओ र मिलन की है नहीं मोको ऐसी रैन
पाऊँ न ऐसी रैन, भई सपने में मालामाल ॥ एरी मै ॥

३.इतने में मेरे खुल गये नैना, देखूं तो कछु लेना न देना
पड़ी पलगा पर रही पछताय, क मलती रह गयी दोना हाथ ।
इतने में होय आयो परभात,
भयो फजर फूल्यो गजर, तीन ढाक के पात
तीन ढाक के पात, रही कंगालन की कंगाल ॥ एरी मै ॥

४.या होरी कोई रसिक ही जाने, कायर क्रूर कहाँ पहिचाने
जो रस बरसे बृज के माँय, वो रस तीन लोक में नाय
याको ब्रह्मादिक तरसते,धन्य धन्य ब्रज धाम
ब्रज चौरासी कोस में घासीराम सरनाम
घासीराम सरनाम कृष्ण के रचे अनेको ख्याल ॥ एरी मै ॥

-:०:-

खेलत बालक ब्याल संग मेलत पाफक हाथ ।
तुलसी सिसु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ ॥

भजन ३०३ (रसिया)

श्यामा श्याम सलोनी सूरत पर श्रृंगार बसंती है ॥ टेर ॥

१.मोर मुकुट की लटक बसंती,चन्द्रकला की चटक बसंती
मुख पर मुरली अधर बसंती,
सर पे पेच श्रवण कुण्डल नित छविदार बसंती है ॥ श्यामा ॥

२.माथे तिलक लग्यो बसंती, कटि पीताम्बर कस्यो बसंती
मन मोहन मन बस्यो बसंती,
गल सोहे वन माल, फुलन को हार बसंती है ॥ श्यामा ॥

३.कनक कडूला हाथ बसंती, पहिर रहे सब वस्त्र बसंती
चले चाल अलमस्त बसंती,
रुणक झुनक पग नेवर की, झंकार बसंती है ॥ श्यामा ॥

४.सब ग्वालन की टोल बसंती, बजे चंग डफ ढोल बसंती
बोल रहे सब बोल बसंती,
सब सखियन में श्री राधे जु सरदार बसंती है ॥ श्यामा ॥

५.परम प्रेम परसाद बसंती, लगे रसीलो स्वाद बसंती
होय रही मरयाद बसंती,
घासीराम नाम छीतरमल, सार बसंती है ॥ श्यामा ॥

भजन ३०४ (राग: भैरवी)

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया ॥ टेर ॥

१.ऐसी वो रंग दे रंग नाई छूटे, धोबनिया धोये चाहे सारी उमरिया

२.बिना रंगाये बाहर ना जाऊँ, चाहे तो बीत जाए सारी उमरिया

३.लाल न ओढूँ पीली न ओढूँ, ओढूँगी श्याम तेरी काली कमलिया

४.गागर जो भर दे, सिर पे जो धर दे, चलके बता दे श्याम तेरी नगरिया

५.बाई मीरा कहे गिरधर नागर, हरि के चरण चित्त लागी रे लगनिया

-:०:-

भाग्य हीन मति मंद के धर्म न आवें दाय ।
सत पुरूष साची कहे खर मिश्री से मर जाय ॥

भजन ३०५

आया फागुन मास सुनो हे सब बृजगोरी मोहन संग खेलो होरी ।। टेर ।।
१.मस्त मास फागुन का जारी खुशी मनावे सब नरनारी,
घर घर मांय मचे होरी मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।
२.गंगा जल का होद भराये रंग कसूंबा त्यार कराये,
मृगमद केसर हद घोरी मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।
३.सब सखियाँ श्रृंगार बनालो नंद बाबा के घर पर चालो,
गुलाल की भर भर झोरी मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।
४.बृज वनिता नंद घर पे आई नजर पडे नहीं कँवर कन्हाई,
ओ छल करके कही छिप गयोरी मोहन संग खेलो होरी ।।आया फागुन।।
५.श्याम सुन्दर छल कीया भारी सज श्रृंगार बने वृजनारी,
ओ सखियन के संग मिल गयो री मोहन संग खेलो होरी ।।आया फागुन।।
६.वृजवनिता यशोदा पे आई कहाँ छिपे तेरा कँवर कन्हाई,
तेरे लाला संग खेलो होरी मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।
७.श्याम सखी कब से हुई सागे इनके हाथ मरद से लागे,
ये मुख पर रोरी मलर्‌यो री मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।
८.घूंघट खोल हँसे गिरिधारी रही अचंभे सखियाँ सारी,
हंसराज कहे कर जोरी मोहन संग खेलो होरी ।। आया फागुन ।।

भजन ३०६ (धमाल)

मानत ना यशोदा तेरो बनवारी, मानत ना ।। टेर ।।
१.घर का तो छोड़ा माखन-मिसरी, गुजरी की छाछ लगे प्यारी ।।
२.घर का पलंग जड़ाऊ छोडा, कुब्जा की खाट लगे प्यारी ।।
३.घर का छोड़ा शाल दुशाला, कुब्जा की गुदड़ी लगे प्यारी ।।
४.चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, चरण कमल की बलिहारी ।।

-:०:-

संगत सार अनेक फल मान सरोवर गुंज ।
हरि हिरदे शिव शीश पर पाय पखालत गंग ।।

भजन ३०७

बद भादों की अष्टमी कानूरा रे ऊपर आधी रात,
जनम लियो संसार में कानूरा रे तीन लोक को नाथ
से नारा कानिया भँवर रंग गहरो लगाय गयो रे ॥ टेर ॥

१.मात जसोदा के लाडलो कानूरा रे बाबानंद जी को लाल,
खांदे काली कमलिया कानूरा रे नाम धर्यो जी नंदलाल ॥ से नारा ॥

२.माता थारी देवकी कानूरा रे पिता कहीजे वसुदेव,
बेन तुम्हारी सुभद्रा कानूरा रे भाई कहिजे बलदेव ॥ से नारा ॥

३.मोर मुकुट मुख बंसरी कानूरा रे गल वैजन्ती माल,
गऊवन की रक्षा करी कानूरा रे नाम धर्यो गोपाल ॥ से नारा ॥

४.आधी जमना कांकरा कानूरा रे आधी बेलू रेत ।
राधा रुकमण संग में कानूरा रे कुब्जा के संग हेत ॥ से नारा ॥

५.ब्रज पर इन्दर कोपियो कानूरा रे बरस्यो मूसलधार ।
नखपर गिरवर धारियो कानूरा रे ब्रज को लियो है उबार ॥ से नारा ॥

६.फागन महीनो लागियो कानूरा रे हिलमिल खेलो फाग ।
म्हे मुरधर का गेरिया कानूरा रे गांवां मीठी राग ॥ से नारा ॥

भजन ३०८ (राग: काफी)

श्याम मोसे खेलो न होरी, पाय लागुं कर जोरी ॥ टेर ॥

१.गय्या चरावन मैं निकसी हूँ, साथ नन्द की छोरी
सगरी चुंदरिया रंग ना भिगोवो, इतनी बात सुन मोरी ॥ श्याम ॥

२.छीन झपट मेरे हाथ से गागर, जोस से बैंया मरोडी
दिल धडकत मेरो सांस चढत है, देह कंपत गोरी ॥ श्याम ॥

३.अबीर गुलाल लपट गया मुख से, सारी रंग में बोरी
सास हजारन गाली देवे, बालम जीती न छोडी ॥ श्याम ॥

४.फाग खेल के तैने रे मोहन, क्या गति किन्ही मोरी
सूरदास आनन्द भयो उस, लाज रही नहीं थोरी ॥ श्याम ॥

भजन ३०९ (राग: काफी)

बृज में हरि होरी मचाई ॥ टेर ॥

१.इतते आई सुघड़ राधिका, उतते कँवर कन्हाई
हिल मिल फाग परस्पर खेले, शोभा बरणी न जाई
नन्द घर बटत बधाई ॥ बृज ॥

२.बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, मंजीरा शहनाई
उड़त गुलाल लाल भये बादल, केसर कीच मचाई
मानो मेघवा झरी लाई ॥ बृज ॥

३.लैले रंग कनक पिचकारी, सन्मुख सबै चलाई
छिड़कत रंग अंग सब भीजे, झुक झुक गारि गाई
परस्पर लोग लुगाई ॥ बृज ॥

४.राधे सैन चली सब सखियाँ, झुंड झुंड उठ धाई
पकरो री पकरो श्यामसुन्दर को, घर अब जान न पाई
करौं अपने मन चाही ॥ बृज ॥

५.छीन लई मुख मुरली पिताम्बर, फिर से चुनड़ी ओढाई
मेहन्दी भाल नयन बिच कजरा, नथ बेसर पहराई
मानो हरि नार बनाई ॥ बृज ॥

६.मुसकत हो मुख मोरि मोरि के, कहाँ गई चतुराई
कहाँ गये तेरे पिता नन्दजी, कहाँ जशोमति माई
तुझे अब लेय छुडाई ॥ बृज ॥

७.फगवा लिये बिन जाने न दूँगी, करलो लाख उपाई
लेऊँ चुकाय कसर सब दिन की, तुम चित्त चोर कन्हाई
छिन छिन माखन खाई ॥ बृज ॥

८.धन्य गोकुल धन्य वृन्दावन, धन यमुना यदुराई
राधा कृष्ण युगल जोड़ी पर, सूरदास बलि जाई
प्रीत उर रही न समाई ॥ बृज ॥

भजन ३१० (राग: काफी)

आत्माराम से होरी खेलत संत सुजान
छिन छिन पल पल घड़ि घड़ि होरी निशिदिन आठों जाम से ॥ टेर ॥
१.पंडित खेलै पोथी पत्रा मुल्ला किताब कुरान से,
जोगी खेले जोग जुगत से, राजा खेले अहंकार से ॥आत्माराम॥
२.कामी खेलै कामिनि के संग, लोभी खेलत दाम से,
पतिव्रता खेलै अपने पति संग, वैश्या सकल जहान से ॥आत्माराम॥
३.अति प्रचंड तेज माया को, तकि तकि मारत बान से,
कोटिन माहि बचे कोई बिरला, कहे कबीर गुरु ग्यान से ॥आत्माराम ॥

भजन ३११ (रसिया)

गोकुल के नेक उरम मथुरा के नेक परम
होली खेले नन्दलाल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ टेर ॥
१.गोकुल की कुंज गलिन में मथुरा की गली गली में
होली खेले नन्दलाल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ होली खेले ॥
२.पूरब से राधा प्यारी, पश्चिम से कृष्ण मुरारी
उत्तर दक्षिण गोपी ग्वाल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ होली खेले॥
३.वो भर पिचकारी मारी म्हारी भीगी सुन्दर साडी
ओ मेरो मुंह रंग दियो गुलाल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ होली खेले॥
४.सब ग्वाल बाल मिल आवे बरसाने धूम मचावे
हिल मिल खेले गोपी ग्वाल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ होली खेले ॥
५.यह घासीराम यश गावे चरणन में शीश झुकावे
यो तो रच्यो अनोखो ख्याल गोकुल की कुंज गलिन में ॥ होली खेले ॥

-:०:-

मोहनी मुरत श्याम की मम मन रही समाय ।
ज्यों मेँहदी के पात में लाली लखी न जाय ॥

भजन ३१२ (तर्ज: फाग खेले गिरधारी)

हाँ कन्हैयो जादूगारो, बन्सी बजाय मन मोह लियो म्हारो ।
सूती न आये चेत हेत, जद लग्यो उणारो ए ॥ कन्हैयो...॥
१.धुनी सुनी बंशी की भारी, सुध-बुध बिसर गई सखी सारी ।
लोकलाज कुल काँण काज सब, घर को बिसारो ए ॥ कन्हैयो...॥
२.उलट पुलट पोसागाँ साजी, राजी होय सखियाँ सब भागी ।
बाजी बंशी खूब मिल्यो, यो नन्द दुलारो ए ॥ कन्हैयो...॥
३.हरि का रूप निरख ब्रजनारी, मगन भई घर सुरति बिसारी ।
ठाड़े बिहारीलाल भेष, नटवर को धारो ए ॥ कन्हैयो...॥
४.और सखी सब आई वन में एक रही निज सखी भवन में ।
वा कियो मन में ध्यान, मिल्यो जाय कृष्ण पियारो ए ॥ कन्हैयो...॥
५.नाथुराम श्याम के शरणे, हरि जस वरणे पार उतरणे ।
प्रीत सखी की देख मुक्ति दीनी, बंसरी वारो ए ॥ कन्हैयो...॥

भजन ३१३

छिटक चाँदनी खिल रही रात, कान्हो कपटी पकड़्यो हाथ ॥ टेर ॥
१.जमुना जाती जल भर ल्याती, छूट गयो सखियन को साथ ॥कान्हो॥
२.कीनी जोरी दुलरी तोडी, बैयां मरोडी कर खोटी-खोटी बात ॥कान्हो॥
३.छोड मेरो बैयां पडूं तेरे पैयां, शरणागत तिरलोकी नाथ ॥कान्हो॥
४.गिरधर गणेश भणे ब्रजनारी, दरशन कर सखि घर सब जात ॥कान्हो॥

भजन ३१४ (धमाल)

रसिया न नार बनावोरी रसिया न ॥ टेर ॥
१.कण्ठी माला मणि मुक्तावल, वांके नकबेसर पहनावोरी ॥रसिया॥
२.अंगरी मुंदरी ओर आरसी, वांके कर कंगन पहनावोरी ॥रसिया॥
३.इलरी तिलरी और पंचलडी, बाँके बाजूबन्द पहनावोरी ॥रसिया॥
४.नैना बाँके कजरो सारो, बाँकूँ मोतियन माँग भरावोरी ॥रसिया॥
५.कर्णफूल कुण्डल अति बिन्दक, बाँके पग बायल पहनावोरी ॥रसिया॥
६.अतलस को लहंगो अँगिया छवि, बाँके सिर पे चुनरी ओढावोरी॥रसिया॥
७.सब सखियाँ मिल पकडले आओ,वाकूँ यशुमति पास नचावोरी॥रसिया॥
८.वृन्दावन हित रूप माधुरी, बाँके मुखन गुलाल लगावोरी ॥रसिया॥

भजन ३१५ (धमाल)

पनघट को श्याम बडो रसियो ॥ टेर ॥

१.गाँछा की ओच छिपै मनमोहन, गोपिया ने रोज दिखाये तसिया ॥पनघट॥

२.सब सखियाँ जल भरने आई, मोहन में बाँको मन फँसियो ॥पनघट॥

३.हँस-हँस मीठी बात बणावत, श्याम सुन्दर से मन फँसियो ॥पनघट॥

४.माँगत दान कान्ह गोपियन से, गागर फोड़ श्याम हँसियो ॥पनघट॥

५.रामसखी शरणागत आई, चरण कमल में चित बसियो ॥पनघट॥

भजन ३१६

होरी खेलन जाने खिलारी, उमर यूँ ही बीती सारी ॥ टेर ॥

१.फीको गुलाल रंग अति फीको मैल भरी पिचकारी,
रंग रंगीली मेरी पचरंग चूनर खेलत फाग बिगारी ।
ऐसो महामूढ अनारी ॥ होरी खेलन ॥

२.बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झांझ डफ भारी,
मति को हीन सुनत कुछ नाही होत शुद्ध धुन भारी ।
सुनत नहीं जात सँवारी ॥ होरी खेलन ॥

३.नाचत नाच भाव बतलावत गावत तान दे तारी,
अंतर छवि निरखे नहीं मूरख चेतन तत्व बिचारी ।
फूली अद्‌भुत फुलवारी ॥ होरी खेलन ॥

४.विषय बुद्धि ही सेवत सेवत निर्मल बुद्धि बिसारी,
नाम अमीरस चाखन नाँही देत नई नित गारी ।
कठिन निर्भय संसारी ॥ होरी खेलन ॥

भजन ३१७

होरी में लाज हँसगोरी ॥ टेर ॥

१.हम ब्रजरसिया तुम ब्रज गोरी भली बनी है ये जोरी ॥ होरी ॥

२.जो होरी में लाज करोगी, हम भी करेंगे बरजोरी ॥ होरी ॥

३.कृष्ण जीवन लच्छीरामजी कहो प्यारे दे तारी खेलत होरी ॥ होरी ॥

भजन ३१८ (राग: काफी)

अरि होनी होली सो होली, चेत अजहु मति धोली ॥ टेर ॥

१.जुगन जुगन से पांव पसारे, खूब पेटभर सोली,
आगम निगम जगावत हारे, कटुक मधुर बहु बोली ।
आँख तबहू नहीं खोली ॥ अरि होनी ... ॥

२.यह तन पाय आयू क्यों खोवत, इत उत डोली,
अंत समय यमदूत आयके, करी हैं पकड़ी ठिठोली ।
देख जिय जहे किलोली ॥ अरि होनी ... ॥

३.विनय अबीर स्वधर्म अरगजा, भज गुलाल की झोरी,
खेलन फाग चले निज प्रभु सौं, समता केसर घोली ।
शीश उन्हीं के डोली ॥ अरि होनी ... ॥

४.जग प्रचण्ड नश्वर माया कृत, कलपित कलित कपोली,
मानसरोवर में नानाविध, उठत तरंग झकोली ।
देखु उर मांही टटोली ॥ अरि होनी ... ॥

५.कहे कबीर सुहागिन सुनले, करो निज वृत्ती अडोली,
सुरत शब्द की धार पकड़ी चढ़ूं, गगन गुफा जहां पोली ।
वस्तु मिली है अनमोली ॥ अरि होनी ... ॥

भजन ३१९

ऐसी होली खिलाउ राम जी को रंग में डुबाऊँ ॥ टेर ॥
१.सरिता सरयु सिंधु बीच में केसर रंग घुलाऊँ ॥ ऐसी ॥
२.राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न चारो भइया मिलाऊँ ॥ ऐसी ॥
३.लेकर हाथ कनक पिचकारी प्रेम से रंग उडाऊँ ॥ ऐसी ॥
४.लाल अबीर गुलाल उडाऊँ केसर कीच मचाऊँ ॥ ऐसी ॥
५.लेकर ताल मृदंग हाथ में ढोल मजीरा बजाऊँ ॥ ऐसी ॥
६.रोम ही रोम में राम बसाकर हरख हरख गुण गाऊँ ॥ ऐसी ॥

-:०:-

मालिक का घर दूर है, जैसी ऊँची खजुर।
चढे तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

झूला

भजन ३२० (तर्ज: गिरधारी बीरा भात भरण बेगा आई जो)

गणपति मूसा पर चढकर बेगा आईजो ।
थांरी रिद्ध सिद्ध नारी ने संग लाईजो ॥ टेर ॥
१.क्रीट मुकुट सिर छतर बिराजे, छवि लखि रवि शशि लाजे,
सुन्दर छवि दर्श दिखाईजो ॥ गणपति मूसा .. ॥
२.त्रिपुण्ड भाल विशाल मोतियन माला, अंग पर पीत दुशाला,
जरकश वाल थे सज आईजो ॥ गणपति मूसा .. ॥
३.फरस कर में धारो विघन विदारो, कुमति निवारो,
सारो आनन्द रंग बरसाईजो ॥ गणपति मूसा .. ॥
४.रणतभंवर के राजा सारो काज श्री महाराजा,
ताजो मोदक भोग लगाई जो ॥ गणपति मूसा .. ॥
५.नन्दलाल गुरुवरजी कीन्ही, नाथू दरजी सरसी अरजी पे,
पेश चढाई जो ॥ गणपति मूसा .. ॥

भजन ३२१

प्रभु झूले हिण्डोरा निकुंजन में ।
१.हीरो जटित हिण्डोरा सोहे, माणिक झलकत खम्बन मे ।
२.कंचन भवन सजो अति सुन्दर, बाजत मृदंग पर में
३.श्री श्याम सुकुमार युगल छवि, सोहत भूषण आंगन में ।
४.श्री यतिराज झुलावत हर्षित, आना उपजत बंदन में ।
५.पडत फुहार कोकिला कूकत, नाचत मोर सुरंगन मे ।
६.यह वैकुण्ठधाम का उत्सव, हैं स्वर्ग वन नंदन मे ।
७.लक्ष्मणदास प्रेम को मारग, मिलत भक्त जन संगत में ।

-:०:-

बिगरो जनम अनेक को सुधरै अबही आजु ।
होहि राम को नाम जपु तुलसी तजु कुसमाजु ॥

भजन ३२२

सावण आयो सुघृड सुहावणो जी
एजी कोई नन्ही नन्ही पडत फुहार ॥ टेर ॥
१.हिल मिल सखी चालो बाग मेसजी
एजी कोई सज धज सब श्रृंगार ॥ एजी कोई ॥
२.आज नवल की तीज सखी री
एजी कोई झूलो डालो कदम की डार ॥ एजी कोई ॥
३.झूले तो रानी राधिका जी
एजी कोई झोटा देवे बृज नार ॥ एजी कोई ॥
४.चम्पा चमेली खिली बाग मे जी
एजी कोई नन्ही नन्ही पडे फुहार ॥ एजी कोई ॥
५.दादुर मोर पपीहा जो बोले
एजी कोई भंवर करे गुंजार ॥ एजी कोई ॥
६.चंद्र सखी की वीनती जी
एजी कोई दीजो भक्ती रो दान ॥ एजी कोई ॥

भजन ३२३

हिंडोरे माही झूलत है नन्दलाल-२ ॥ टेर ॥
संग राजत वृषभान नंदिनी, अंग अंग रूप रसाल ॥ हिंडोरे ॥
१.मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, और मुक्तावन माल,
रमक झमक पिय प्यारी, झुलत, सुख बरसत चहुकाल ॥ हिंडोरे ॥
२.गावत सरस सकल ब्रज बनिता, बांठ्यो रंग रसाल,
हँसत परस्पर झूलत चितवत, चंचल नयन विशाल ॥ हिंडोरे ॥
३.संग झूलत राधा अलबेली, उरगज मोतियन माल,
कंच वेली यो राजत है, उरझी शामत माल ॥ हिंडोरे ॥
४.बाजत ताल पखावज मुरली पग नूपर झनकार,
सूरदास प्रभु की छबि निरखत, विवश भई ब्रज बाला ॥ हिंडोरे ॥

भजन ३२४

गरजते हैं कैसे घनघोर, हिंडोरा, झूलत युगलकिशोर ॥ टेर ॥

१.कदम की छाया है आला, उसी में है झूला डाला ।
सिंहासन कंचन का डाला, दामिनी करती उजियाला ॥
मस्तक मुकुट जड़ाव का, शोभा देत अपार ।
श्री जी के तन सोहते, वे हीरों के श्रृंगार ।
दरश कर उठती प्रेम हिलोर ॥ हिंडोरा.. ॥

२.गले में झूल रही वन माला, लता लहराती श्यामा माल ।
झमक झूलन से दमके भाल, मनोहर गाते गीत रसाल ॥
स्वामी और स्वामिनी जी की, छवि वरणी नहीं जाय ।
परत फुहार गगन से धीमी, रहे युगल मुसकाय ॥
हमारे हैं ये ही चितचोर ॥ हिंडोरा.. ॥

३.बजत मिरदंग झाँझ न्यारी, मधुर धुनि वीणा की प्यारी ।
शारदा गाती सुकुमारी, नाथ पै तन मन वारी ॥
कूक रही है कोकिला नाच रहे है बन मोर ।
जै श्रीमन्नारायणजी की करते हरिजन शोर ॥
लक्ष्मण के हैं ये ही सिरमोर ॥ हिंडोरा.. ॥

भजन ३२५

राधा रानी ऐसी रूठी झूला झुले ना झूलन देय
बरसाने वाली ऐसी रूठी झूला झुले न झूलन देय ॥ टेर ॥

१. चंदन पटड़ी ललिता लाई रेशम डोर विशाखा लाई
मटक कर ऐसी बैठी झूला झुले न झूलन देय ॥ राधा रानी ॥

२.इतने में आय गये गिरधारी क्यूँ रूठी मेरी राधा प्यारी
घूँघट मार एसी बैठी घूँघट खोले न खोलन देय ॥ राधा रानी ॥

३.कृष्ण राधिका की प्रीत पुरानी क्या जाने ब्रज के नर नारी
प्रेम डोर ऐसी बाँधी वो तो तोड़े ना तोड़न देय ॥ राधा रानी ॥

भजन ३२६ (तमाशा)

घनश्याम बुलावे, झूलण ने चालो राधा बाग में ।। टेर ।।

१.झूलण चालो बाग माँयने, सज सोलह सिंगार,
छत्तीसों आभूषण पहरो, पहनों नौसर हार ।।घनश्याम।।

२.मलियागिरि को बन्यो हिन्डोरो, लगरया रेशम तार,
झूले आप झुलावे मोहन, गावे राग मल्हार ।।घनश्याम।।

३.घटा छबीली बाग की सजी, खिल रही केशर क्यार,
चम्पा चमेली खिली केतकी, भँवर करे गुजार ।।घनश्याम।।

४.दादुर मोर पपीहा बोले पीव पीव करे पुकार,
घन गरजे और बिजली चमके, शीतल पड़े फुहार ।।घनश्याम।।

५.शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, कोई न पायो पार,
दास नारायण शरण आपकी, करियो बेड़ा पार ।।घनश्याम।।

भजन ३२७

आई आई रे सावणीया री तीज कन्हैया हिन्डो घालो रे हरीया बाग म ।।टेर।।

१.कन्हैया सावण सुहानो प्यारो मास रे, मास रे, मास रे
चमक चमक रे हो चमक चमक रे आभा माय बीच ।।कन्हैया।।

२.कन्हैया रीम झीम बरसे रुडो मेवड़ा, मेवड़ो, मेवड़ो
म्हारी तारा छाई चुन्दड जाव भीज ।।कन्हैया।।

३.कन्हैया संग की सहेल्या जोव बाटड़ी, बाटड़ी, बाटड़ी
म्हारी सासु ननन्द जाव रुस ।।कन्हैया।।

४.कन्हैया राधा दिवानी थारा प्रेम की, प्रेम की, प्रेम की
म्हारा कंचन वरणी म्हारी केसर बरणी काया जाव छिज ।।कन्हैया।।

५.कन्हैया भक्त मंडल की है विनती, विनती, विनती
थे तो भोला सा भक्ता पर जावो रीझ ।।कन्हैया।।

भजन ३२८

राधा नन्द किशोर, भजो मन राधा नन्द किशोर ।। टेर।।
१.मातु यशोदा मैया पलना,झुलावे, खैंचति रेशम डोर ।। भजो ।।
२.नन्द बाबा के आंगन में खेलत, नूपुर के घनघोर ।। भजो ।।
३.जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, बंशी बजावे मुखमोर ।। भजो ।।
४.मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, चितवन की छवि ओर ।। भजो ।।
५.दोऊ हिलमिल प्रेम से झूलत, राधा माखन चोर ।। भजो ।।

भजन ३२९ (तर्ज: गुण गोविंद के गाऊँ)

वरसा रीतू के बीच मास सावन की छवि न्यारी,
झूले राधा श्याम झुलावे सुन्दर ब्रज नारी ।। टेर ।।

१.कालिंदी के तीर के ऊपर कदम का है डाला,
रेशम डोर मनोहर लाकर झूला बंद वाला,
रतन जटित का पाट सजाया है सुन्दर आला,
झूलन आये श्याम सखन संग और सब ब्रजबाला,
धन समान श्रीकृष्ण मुरारी, गोद में राधा चंद उजारी,
सखा सखी सब तारा तारी,
गावत राग मल्हार मधुर सुर में सखियाँ सारी ।।झूले।।

२.कृष्ण चंद्र सिर मुकुट कान कुण्डल गल में माला,
कसे पीत पट कमर शाम सुन्दर तन मन वाला,
बाँकी अलख खलक, निरखे मानो चमके काला,
बंसी अधर बजाय मधुर सुर नंदजी के लाला,
रुमझुम रुमझुम बादल बरसे नाचत मोर जिया मन हरषे,
बंसी मधुर बजाय अधर से,
दर्शन होत जिवडा तरसे मैं, जाऊँ बलिहारी ।।झूले।।

३.नंद नंदन ब्रषभान दुलासी, हिलमिल कर झूले,
झोटा देत बिसाखा ललिता, मन में अति फूले,
दर्शन कर मन छके नारी नर, तन की सुध भूले,
चित्त लिखे से भये कहे बिधी भये है अनुकूले,
पवन बेग सम रमक बढावे अंचल उड़कर भुजन पे आवे,
श्रीराधा मन में सकुचावे,
मन मोहन से कहे भँवर मोये आवत गिरधारी ।।झूले।।

४.राधा कृष्ण के चरित नये नित, कहाँ तक कथ गावे,
शारद शीश महेश देव मुनि, पार नहीं पावे,
हरिराम कथ कहे, दरस हित मनड़ो ललचावे,
देवो दर्शन नंदलाल कृपा कर पाप परा जावे,
भोलाराम बनजी का कहना, जगसा शरण कृष्ण की रहना,
हरदयाल के मधुरे बेणा,
राम पाल धर ध्यान प्रभु की भक्तन हितकारी ।।झूले।।

भजन ३३०

हिन्ड़ोरे में झूलत गिरवरधारी, झुलावे राधा रुकमण प्यारी ।।टेर।।
१.सोना रूप को बणियो हिण्डोरो रतन जड़े अतिभारी,
जगमग जगमग ज्योति झलझल झूलत कुंज बिहारी ।। हिन्ड़ोरे ।।
२.राधा रुक्मण और सत्भामा झूले सहेल्याँ सारी,
ग्वालबाल संग गोपियाँ झूले और झूले बृजनारी ।। हिन्ड़ोरे ।।
३.श्रावणमास सुहावे-सखी मोय आ वर्षा ऋतु प्यारी,
रिमझिम रिमझिम मेघा वर्षे बिजली चमकत भारी ।। हिन्ड़ोरे ।।
४.घटा चढ़ी घनघोर गगन में तो बादल की छिब न्यारी,
छिप गये चंद्र विषम गये तारा तो रजनी घोर अंधारी ।। हिन्ड़ोर ।।
५.सावन मास सखी संग झूले बागन में बनवारी,
चिमन खुले चौ तरफ मनोहर हवा चले अति प्यारी ।। हिन्ड़ोरे ।।
६.चंपा चमेली, गुलाब केवड़ा फल रहे फूल हजारी,
हंसराज के हिरदा मांही तो बस रहे कृष्ण मुरारि ।। हिन्ड़ोरे ।।

भजन ३३१

बगीचा में झूलत कुजंबिहारी, श्याम संग झूलत सखियाँ सारी ।।टेर।।
१.रेशम डोर को बन्ध्यो हिन्ड़ोरो राय चम्पेकी डारी,
झूले कृष्ण झुलावे राधा तो और सहेल्याँ सारी ।। बगीचा ।।
२.नवलख बाग बगीचा सुंदर लता पता अति प्यारी,
चंपा चमेली गुलाब मोगरा फूल रही फुलवारी ।। बगीचा ।।
३.घन गरजे बिजली हद चमके घुल रही रेन अँधारी,
दादर मोर पपीहा बोलत कोयल कूकत न्यारी ।। बगीचा ।।
४.फूलन खंभ फूलन की तणिया फूलन का झूला भारी,
फूलन के सब बाग बगीचा तो फूल रही फूलवाड़ी ।। बगीचा ।।
५.राधा झूले रुक्मण झूले कुब्जा कामनगारी,
घूम घूम झुलावे मोहन झूले सहेल्याँ सारी ।। बगीचा ।।
६.ग्वाल बाल गोप्याँ संग झूलत गोवर्धन गिरिधारी,
हंसराज वृजराज चरण पर बारबार बलिहारी ।। बगीचा ।।

भजन ३३२ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम)

आयो सावन मास श्याम संग झूलन चालो तो झूलो घालो तो ॥ टेर ॥
१.घर-घर हेला मार गयो वो मोहन बन्सी वालो तो
नैना से नैन मिलाय रह्यो इन नटवर झालो तो ॥ झूलो ॥
२.सज सोलह श्रृंगार सखी सब बन टन बागा चालो थो
आज नवल की तीज सखी अवसर मत टालो तो ॥ झूलो ॥
३.राधा रुक्मण और सत्तभामा कुबजा कामन गारी तो
झूला को सन्नाट ठाट कछु अजब निरालो तो ॥ झूलो ॥
४.घूम घूम झूला दे मोहन घूम रह्यो मत वालो तो
हँस रह्यो दे दे ताल सखी नटवर नन्द लालो तो ॥ झूलो ॥
५.झूला आवे जोर शोर से जरा कमर लछकालो तो
सब झूले बृजनार झुलावे बन्सी वालो तो ॥ झूलो ॥
६.बृज वनिता सब प्रभु को प्यारी, प्रीत पुरानी पालो तो
हंसराज की लाज रखे गिरधार गोपालो तो ॥ झूलो ॥

भजन ३३३ (राग: कजरी)

झूला पडा कदम की डाल, झुलावे राधा प्यारी ना ॥ टेर ॥
१.मल्यागिर को बनो हिण्डोरो रेश्म तारी ना
गावत सुन्दर तान झुलावे सखियाँ सारी ना ॥ झूला पडा ॥
२.दादूर मोर पपीहा बोले कोयल कारी ना
बन्सी श्याम बजावत मन को हरने वाली ना ॥ झूला पडा ॥
३.चम्पा चमेली खिली केतकी केसर क्यारी ना
घटा चहुँ ओर जोर से वर्षा वारी ना ॥ झूला पडा ॥
४.दमक दमक दमके दामिनी घन में मतवारी ना
टप टप टपकत बूँद बीजे रेश्म की सारी ना ॥ झूला पडा ॥
५.घटा अनोखी निरख बाग की तन मन वारी ना
कहे नारायण दास राधिका शरण तिहारी ना ॥ झूला पडा ॥

भजन ३३४ (तमाशा)

बिरखा ऋतु आईजी कृष्ण पधारो म्हारे देश में ।। टेर ।।

१.आषाढ महिनो लागियो जी छाई घटा घन घोर
घन गरजत है बिजली चमके बोले दादर मोर
बोले दादर मोर चमक रही दामिनी
बेग पधारो शाम उडीके कामिणी ।। बिरखा ।।

२.श्रावण मास सुहाणो लागे हरी हरी दूब अपार
तीज रमण चाली बृज वनिता सज सोलह श्रृंगार
सज सोलह श्रृंगार लगे सुहावणा
बेग पधारो शाम आज घर पावणा ।। बिरखा ।।

३.भादव भवन बेग तुम आओ प्रीतम नंदकुमार
घन गरजत है बिजली चमके बरसे मेघ अपार
बरसे मेघ अपार के आनन्द पूर है
लखे श्याम को रूप की छलके नूर है ।। बिरखा ।।

४.आसोजाँ में आशा पूरी तिरलोकी का भूप
शरद पुनम की रैन चाँदनी लखे कृष्ण को रूप
लखे कृष्ण को रूप के बंसी बाजणी
गावत राग मल्हार के रास रचावणी ।। बिरखा ।।

भजन ३३५

म्हाने वृन्दावन ले चालोजी, श्याम म्हाने वृन्दावन ले चालो ।।टेर।।

१.धूप पडे धरती तपे, पाँवाँ में पड़ रह्यो छालो,
आछाजी आछाजी आपाँ चालो श्यामजी, हाथाँ में प्रेम रस प्यालो ।।श्याम।।

२.झिरमिर झिरमिर मेहा जो बरसे, आँगन होय रह्यो आलो,
राधाजी की भीगे चुनरिया, श्यामजी को शाल दुशालो ।।श्याम।।

३.वृन्दावन की कुंज गलिन में, सहस्त्र हिंडोरो डालो,
झूलोजी राधा श्यामसुन्दरजी, सखियाँ देवे झालो ।।श्याम।।

४.वृन्दावन में रास रचावे, मोहन मुरलीवालो,
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, नन्दजी को लाल लागे प्यारो ।।श्याम।।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्ञान - वैराग्य - चेतना

भजन ३३६ (तर्ज: चार दिशा में चार धाम)

गणराज रखो मेरी लाज, आज मैं तुम्हें मनाता जी ॥ टेर ॥

१.गिरिजा पुत्र शंकर अधिकारी, मूसे वाहन होय सवारी ।
रिद्धि सिद्धि के भरता, आप विद्या के दाता जी ॥ आज ॥

२.कष्ट मिटाओ प्रभु आन हमारे, भक्तजनों के संकट टारे ।
तुम करो सिद्ध सब काज, विपत्ति में तुम्हें मनाता जी ॥ आज ॥

३.कष्ट निवारो प्रभु आन हमारे, सबकुछ हो प्रभु सरजन हारे ।
देव बल बुद्धि ज्ञान आपका गुण मैं गाता जी ॥ आज ॥

४.गंगाजल अस्नान कराऊँ, केसर चन्दन पुष्प चढाऊँ ।
प्रेम मगनचित होयकर मोदक भोग लगाता जी ॥ आज ॥

५.विद्या विमल बुद्धि के दाता सुमिरे ताई सदा सुख पाता ।
एकदन्त भुज चार मूसे असवारी जी ॥ आज ॥

६.शुक्ल वरण और स्थूल शरीरा, उज्वल दंत चढ़े नग हीरा ।
सुरनगर मुनिजन सेव, देव मैं आज्ञाकारी जी ॥ आज ॥

७.तानसेन गणपति गुण गावे, हरदम फतेह दंगल में पावे ।
करो मन इच्छा पूर, यही वर तुमसे माँगू जी ॥ आज ॥

भजन ३३७

हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी ॥टेर॥

१.व्यर्थ बिताती है क्यों जीवन, मुख मंदिर में पड़ी पड़ी ॥हरि॥

२.नित्य निकाल गोविन्द नाम की, साँस साँस से लड़ी लड़ी ॥हरि॥

३.जाग उठे तेरी धुन को सुन, इस काया की घड़ी घड़ी ॥हरि॥

४.बरसा दे प्रभु नाम सुधारस, बूंद बूंद से घड़ी घड़ी ॥हरि॥

-:०:-

परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्री राम ॥

भजन ३३८ (राग: दरबारी)

होत न एक समान सब दिन होत न एक समान ॥ टेर ॥
१.एक दिन राजा हरिश्चन्द्र घर सम्पति मेरू समान ।
एक दिन जाय स्वपच घर बिक गयो अंबर हरत मसान ॥ होत ॥
२.एक दिन सीता रुदन करत है वन अशोक उद्यान ।
एक दिन जानकी रामचंद्र संग विचरत पुष्प विमान ॥ होत ॥
३.एक दिन राजा धर्म सिंहासन अनुचर की भगवान ।
कब हुँक द्रौपदी नग्न करत है चीर दुश्शासन तान ॥ होत ॥
४.एक दिन दुल्हा बनत बराती चहुँ दिश मंगल गान
कब हुँक मृत्यु होत पल क्षिण में कर लम्बे पद तान ॥ होत ॥
५.कब हुँक जननी जनत अंक विधी लिखत लाभ अरू हान
सूरदास होनी सो होई है विधी ना अंक प्रमाण ॥ होत ॥

भजन ३३९ (तर्ज: वाह रे हनुमान म्हारो दुध)

भजो मन तुलसी, सीताराम तो कहो रे ॥ टेर ॥
१.सांझ पडी तुलसी घर आयो, मन मे सोच भयो रे
गऊ बाछडा बांध के तुलसी, लेय के लकड़ी ससुराल तो चलो रे ॥भजो॥
२.आगे नदियाँ आगम बहत है, मुर्दो जात ब्हयो रे
तुलसी जाण्यो नाव बहत है, बाने पकड़ तुलसी पार तो गयो रे ॥भजो॥
३.भटकत-भटकत फिरे भवन पर, द्वारो नाहीं मिलो रे
खिडकी उपर सांप लटकतो, वाने पकड़ तुलसी महल तो चढ्यो रे ॥भजो॥
४.इतनो हेत पिया मो मे कीनो, हरि से क्यूँ न कियो रे
चल्यो जाय वैकुंठ धाम को, वहाँ पे प्रभु को दरबार तो खुल्यो रे ॥भजो॥
५.तू तिरया मेरी धरम की माता, सच्चो ज्ञान दियो रे
तुलसी दास भजो भगवाना, आगे से तिरया तेरी सेज ना चढूँ रे ॥भजो॥

-:०:-

प्रभु समीप गत सुजन जन होत सुखद सुविचार ।
लवन जलधि जीवन जलद बरषत सुधा सुबारि ॥

भजन ३४० (राग: मांड)

काहू की न भई यह वसुधा, काहू की न भई ॥ टेर ॥
१.सत्तयुग में हिरणाकुश राजा, सुवरण भौम दई
प्रभू नाम को मेटी दुहाई, ताहु के संग न गई ॥ काहू ॥
२.त्रेता में रावण भयो राजा, सुवरण लंक दई
इक लख पुत्र सवा लख नाती, लकडी कोऊ न दई ॥ काहू ॥
३.द्वापर में श्री कृष्ण पधारे, कंस को राज सही
कंसन मार कृष्ण भयो राजा, भीलन लूट भई ॥ काहू ॥
४.द्वापर अंत दुर्योधन राजा, नौलख भीड़ रही
सोलह योजन छत्र फिरे थो, मटिया गीध खई ॥ काहू ॥
५.सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, चारो युगन सही,
सूरदास वे नर जो झूठे, जिन इन अपनी कही ॥ काहू ॥

भजन ३४१ (राग: मांड)

टारी नाही टरे, करम गति टारी नाहीं टरे ॥ टेर ॥
१.कहाँ वे राहू कहाँ वे रवि शशि, आन संजोग पड़े
हरिशचंद्र सतवादी राजा, डोम घर नीर भरे ॥ करम ॥
२.गुरू वशिष्ठ महामुनि ग्यानी, लिख-२ लग्न धरे
सीता हरण मरण दशरथ को, वन वन राम फिरे ॥ करम ॥
३.तप कीनो बलि लेन इन्द्रासन, ले पताल सिधरे
पाँचो पांडव नवल द्रोपदी, हाड़ हिमाल गले ॥ करम ॥
४.दुर्वासा मुनि श्राप दिये से, यदुकुल नाश करे
भारत में भवरी का अंडा, गज घण्टा गेरे ॥ करम ॥
५.तीनों लोक भावी के वश में, सबही काल चरे
सूरदास होनी सो होई है, काहे सोच करे ॥ करम ॥

-:०:-

निज गुन घटत न नाग नग परखि परिहरत कोल ।
तुलसी प्रभु भूषन किए गुंजा बढे न मोल ॥

भजन ३४२ (राग: दरबारी)

ऊधो करमन की गति न्यारी ॥ टेर ॥
१.उज्जवल पंख दिया बगुला को कोयल कर दी कारी
वैश्या ओढे शाल दुशाला पतिव्रता फिरे उघारी ॥ ऊधो ॥
२.मूरख राजा राज करत है पंडित फिरे भिखारी
चातुर नार बांझ कर दीनी फूहड़ जन-जन हारी ॥ ऊधो ॥
३.नदी नाल जल मीठो कीनो समदर कर दियो खारी
नागर बेल बीना फल रचदियो तूमड़ कर दियो खारी ॥ ऊधो ॥
४.बड़े-बड़े नयन दिये मृगा को वन-वन फिरत उजारी
छोटे नयन दिये हस्तीन को रहत है फौज अगाड़ी ॥ ऊधो ॥
५.चंदन अंग सर्प लिपटायो छूअत मन भय डारी
सूरदास होनी सो होई है भावी टरत न टारी ॥ ऊधो ॥

भजन ३४३ (राग: दरबारी)

जब टेढे दिन आवे - ऊधो, जब टेढे दिन आवे ॥ टेर ॥
१.कंचन छुअत होत कर माटी, मांगी भीख न पावे ॥ जब टेढे ॥
२.ज्ञानी होकर मूरख बाजे, मूरख ज्ञान बतावे ॥ जब टेढे ॥
३.यार दोस्त मुख से नहीं बोले, ढिंग बैठत सकुचावे ॥ जब टेढे ॥
४.टेढी दासी बनी कूबरी, जा उर कंठ लगावे ॥ जब टेढे ॥
५.चंद्र कला सी बनी राधिका, ताको जोग पठावे ॥ जब टेढे ॥
६.अपनो -२ भाग्य सखी री, काहे को दोष लगावे ॥ जब टेढे ॥
७.सूरदास होनी सो होई है, भावी टरत न पावे ॥ जब टेढे ॥

भजन ३४४

जिनके हिरदै श्रीराम बसे तिन और को नाम लियो न लियो ॥टेर॥
१.जिनके द्वारे पर गंग बहे, तिन कूप को नीर पियो न पियो ।
२.जिन मात पिता की सेवा की, तिन तीरथ स्नान कियो न कियो।
३.जिन कन्या धन को दान दियो, तिन और को दान दियो न दियो ।
४.जिन परमारथ को काम कियो, तिन कर ते दान दियो न दियो
५.तुलसीदास विचारी कहे, कपटी को मीत कियो न कियो।

भजन ३४५ (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो)

तैने हीरा सो जनम गँवायो, भजन बिना बावरे ।। टेर ।।
१.ना तू बैठ्यो संता शरणाँ , ना तू हरिगुण गायो,
पच-पच मार्‌यो बैल की नाँई, सोय रयो उठ खायो ।।भजन बिना।।
२.यो संसार हाट बनिया की, हर कोई सौदे आया,
चातुर माल चोगणो कीनो, मूरख मूल गँवायो ।।भजन बिना।।
३.यो संसार फूल सेमर को, सुव्वो देख लुभायो,
मारी चोंच निकल गई रुहीया, सिर धुन-२ पछतायो ।।भजन बिना।।
४.यो संसार माया को लोभी, ममता महल चिणायो,
कहे कबीर सुणो भई साधो, हाथ कछु नहीं आयो ।।भजन बिना।।

भजन ३४६ (प्रभाती)

चार वरण में वही बड़ा, जिन राधे कृष्णा रटा रटा रे ।। टेर ।।
१.ये तन हीरा लाल अमोलक, निश दिन जावे घटा-घटा रे
कोल वचन कर बाहर आया, फेर रहे क्यूँ नटा-नटा रे ।।चार।।
२.काहे को जोड़े माल खजाना, काहे चिणावे उची अटा रे
यम को तलब जब आयेगी तेरी, छोड़ जाय सब अटापटा रे ।।चार।।
३.भाई बंधु कुटुम्ब कबीला, देखत नैना पटा पटा रे
जब ये हंसा निकल जायेगा, सबको लागे डरा डरा रे ।।चार।।
४.दुनिया है मतलब की गरजी, स्वारथ बोले मीठा-मीठा रे
चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि, प्रभु चरणन पर चित अटका रे ।।चार।।

भजन ३४७

थारी मोह माया न छोड़ क्रोधन तज रे, थारी उमर बीती जाय, राम न भज रे ।। टेर ।।
१.थांरी डगमग डोले नाड़, धोला न लज रे, थारे सिर पर डोले काल, राम ने भजरे,
२.थारा गोडा हाल नहीं पांव कमर गई लूल रे, तने आँख्या सूझे नाय कान गया जूझ रे
३.थारी परणी छोड्यो प्रेम, नाय थारी हर रे, थारा बेटा बोल बोल, मरे लो कद रे
४.ओ केव कबीरादास, तंडा गया लदरे, थारी लेको लेसी राम मर लो जद रे ।।

भजन ३४८ (तर्ज: द्वारका का रा नाथ राजा रणछोड)

लेलो जी लेलो जी लेलो हरि का नाम ।
मैं व्यापारी राम नाम का प्रेम नगर मेरा गांव ॥ टेर ॥

१.प्रेम नगर का मैं हूँ वासी, राम नाम का हूँ अभ्यासी
कर लो सौदा सतसंगत से, तोटे का नहीं काम ॥ लेलो जी ॥

२.सोना चाँदी कुछ नहीं लेते, माल अमोलक यूं ही देते
चार खूटँ में चले दलाली, आडत चारों धाम ॥ लेलो जी ॥

३.बाट तराजू कुछ नहीं भाई, तोल जोक याको कछु नाहीं
नाम हरी अनमोल रतन है, कौड़ी लगे न दाम ॥ लेलो जी ॥

४.पांचों से तुम प्रीत न कीजै, निर्भय नाम राम का लीजै
अष्ठ पहर और चार घड़ी तू, भज ले राधेश्याम ॥ लेलो जी ॥

५.राम नाम के भरे खजाने, लूट रहे जो चतुर सुजाने
सुगरा सेन तुरत पहीचाने, नुगरा रहे निकाम ॥ लेलो जी ॥

६.सस्ता माल नफा है भारी, सहस्त्र गुणा है साहूकारी।
करलो खाता खत्म पाप का, भज कर राधेश्याम ॥ लेलो जी ॥

७.नाम हरी अनमोल रतन है, सभी धनों में उत्तम धन है
कह गिरधारीदास और सब मिथ्या जान तमाम ॥ लेलो जी ॥

भजन ३४९ (प्रभाती)

पीले प्याला ओ मतवाला, प्याला प्रेम हरी रस का ॥ टेर ॥

१.पाप पुण्य भुगतन कू आया, कौन तेरा और तू किसका
जब लग जीवे हरि गुण गाले, धन जोबन सपना निशिका ॥ पीले ॥

२.बालपना हँस खेल गमाया, तरुण भया तिरया बसका
वृद्ध भयो कफ रोग सतावे, पड़ खाट नहीं जावे मुसका ॥ पीले ॥

३.नाभी कमल बीच कस्तुरी, कैसे भरम मिटे पशु का
बिन सतगुरु के कौन उबारे, जैसे मिरग फिरे बनका ॥ पीले ॥

४.भव सागर तरणन कू चावे, छोड कामीनी का चसका
चरणदास शुक्रदेव बतावे, नख शिख सीस भरा विषका ॥ पीले ॥

भजन ३५० (तर्ज: नर तेरा चोला रतन)

नर तू भजले सीताराम नाम से भव तर जावेगा ॥ टेर ॥

१.यह जग है सपने की माया मन में करो विचार ।
झूठ कल्पना आशा झूठी झूठा सब संसार ॥
सार इसमें नहीं पावेगा ॥ नर तू ॥

२.झूठा नाता झूठी ममता झूठा सब परिवार ।
झूठ पसारा जग का सारा झूठा कारोबार ॥
यार कुछ संग न आवेगा ॥ नर तू ॥

३.जग में आकर पाप कमाया किया न हरि से प्यार ।
जन्म जन्म चौरासी भटके पड़े नर्क मझधार ।
मार उपर से खावेगा ॥ नर तू ॥

४.प्रेमनाथ कहे चेत रे बन्दे क्यों बैठा मन मार ।
प्रेम से राम नाम तू रट ले कटे जाल का तार ॥
पार क्षण में हो जावेगा ॥ नर तू ॥

भजन ३५१

तेरी हीरा जैसी श्वाँसा बातों में बीती जाय रे मन राम कृष्ण बोल ।

१.गंगा यमुना खूब न्हाया गया न दिल का मैल ।
घर धंधों में लगा हुआ है ज्यों कोल्हू का बैल ।
तेरे जीवन की आशा बातों में बीती जाय रे मन राम कृष्ण बोल ॥

२.किया पौरुष आकर जग में दिया न कुछ भी दान ।
मेरी तेरी करता करता निकल गया यह प्रान ।
जैसे पानी बीच बताशा,बातों में बीती जाय रे मन राम कृष्ण बोल॥

३.पाप गठरिया सिर पर लादे रहा भटकता रोज ।
प्रेम सहित राधा माधव की किया न कुछ भी खोज ।
झूठा करता रहा तमाशा बातों में बीती जाय रे मन राम कृष्णबोल ॥

४.नस नस में प्रति रोम रोम में राम रमा है जान ।
प्रकृति बिन्दु के कण कण में तूं उसको पहिचान ।
उससे मिलने की अभिलाषा बातों में बीती जाय रे मन राम कृष्ण बोल॥

भजन ३५२ (कवाली)

रे नर ये दो दिन का मेला रहेगा,कायम न जग का झमेला रहेगा ।। टेर ॥

१.ये बता तू किसके लिये, इतनी दौलत कमायेगा
किसके रहने के लिये, इतने ऊँचे महल बनायेगा
रथ हाथियों का झुण्ड, तेरे काम न आयेगा
फक्त जहाँ से आया है, बन्दे वहीं पे जायगा
तेरे सफर में खर्चे के खातिर, कमर मे न तेरी धेला रहेगा ॥ रे नर ॥

२.तू कहता था कि दौलत, आयेगी तेरे काम
बता दे तू इतना कि दौलत, हुई किसकी गुलाम
बतला गये दुनिया को, हरिशचन्द्र कृष्ण राम
सबकुछ चला जाता है सिर्फ, रहता है एक नाम
तेरे सफर में सवारी के खातिर, कन्धों पे लकड़ी का ठेला रहेगा॥ रे नर॥

३.गंगा का जल बिन्दु, साथ पान तक
अर्धांगिनी आयेगी तो, केवल मकान तक
परिवार के सब लोग, चलेंगे मसान तक
बेटा भी हक निभाएगा, तो अग्नी दान तक
इसके तो आगे भजन ही है साथी, प्रभू के भजन बिन अकेला रहेगा ॥ रे नर ॥

भजन ३५३ (तर्ज: दगा किसी क सगा नहीं)

जीव तू मत करना फिकरी रे मना, तू मत करना फिकरी
भाग्य लिखी सो टरे कदै ना, भली बुरी सगरी ॥टेर॥

१.सहस्त्र पुत्र राजा सगर के, तप किनो अकरी
प्रभु की गति को वो ही जाने, आग मिली ना लकड़ी ॥ जीव तू॥

२.तप कर के हिरणाकुश राजा, बर पायो जबरी
लोह लकड़ से मरयो नहीं वो, मरयो मौत नखरी ॥ जीव तू॥

३.तीन लोक की माता सीता, रावण जाय हरी
जब रघुवर ने करी चढाई, लंका गई बिखरी ॥ जीव तू॥

४.आठ पहर साहिब को रटना, मत करना जिकरी ।
कहे कबीर सुनो भई साधो, रहना बेफीकरी ॥ जीव तू॥

भजन ३५४ (तर्ज: दगा किसी का सगा नहीं)

काशीजी से आया पंडा, चार वेद पढ़ आयाजी
आय कबीर के बासा किना, पी पानी पछताया जी ॥ टेर ॥

१.खेद का भेद बतावो जी पंडा, मन में क्यूँ भरमाया जी
मन का भरम मिटावो जी पंडा,क्यूं छान पिया पाणी जी ॥ पी पानी ॥

२.जल की मछली जल में रहती, जल में ही मर जाती जी
वो जल को सब दुनिया पीती, वो सूतक कहाँ जाता जी ॥ पी पानी ॥

३.न्हाय धोय कर करे रसोई है, वापे माँखी बैठी जी
वो भोजन सब दुनिया पाती, वो छूत कहाँ जाती जी ॥ पी पानी ॥

४.हाड झरंता मास झरंता, उसका मक्खन बनता जी
वो मक्खन सब दुनिया पाती, वो साँवड कहाँ जाती जी ॥ पी पानी ॥

५.तुम्हारे गले में ब्रह्म जनेउ, वो भी सूत हमारा जी
कहे कमाल कबीर की लडकी, सहजाँ ज्ञान बताया जी ॥ पी पानी ॥

भजन ३५५

काहे सोच करे नर मन में, वो सबका रखवारा है ॥ टेर ॥

१.गर्भवास में जब तू आया, दूध कुचन में पडा है रे,
बालक पन में पालन कीना, माता मोह दुबारा रे ॥ काहे ॥

२.अन्न रचा मानव के खातीर, पशुअन के हित चारा रे ,
वन में पंछी पान फल खा, सुख से करत गुजारा रे ॥ काहे ॥

३.जल में जलचर रहे निरंतर, कर के मांस का भक्षण रे,
नाग बसत भूतल के अंदर, जीवे बरस हजारा रे ॥ काहे ॥

४.स्वर्ग लोक मे देवन के हित, बहत सुधा की धारा रे,
ब्रह्मानंद भजन कर प्रभु का, सिमरो सिरजन हारा रे ॥ काहे ॥

-:०:-

परसुख सम्पत्ति देख सुनि जरहिं जे जड़ बिनु आगि ।
तुलसी तिन के भागते चलै भलाई भागि ॥

भजन ३४६ (तर्ज: पुजन दो गणगोर)

लाग्यो राम भजन से हेत लाग्यो हरी भजन से हेत रे
कर्मा को संगाती राणा कोई नहीं रे ॥ टेर ॥

१.एक मायड रे दोय डीकरा ज्याँ रा न्यारा-२ भाग रे
एक गादी पर बैठो राज करे रे, दूजो भाजी बेचन जाय रे ॥ कर्मा ॥

२.एक गऊ रे दोय बाछडा ज्याँ रा न्यारा-२ भागरे
एक सदा शिव रे नांदियो रे, दूजो बिणजारा रो बैल रे ॥ कर्मा ॥

३.एक माटी रा दोय मटकीया रे ज्याँ रा न्यारा-२ भाग रे
एक सदाशिव रे जल चढ़ रे, दूजो मूसाणा में जाये रे ॥ कर्मा ॥

४.मेडता मे मीरा बाई जनमीया ज्याँ रा वैकुण्ठाँ में वास रे
मीरा बाई न मिलियो गिरधर सांवरो रे, जाँ री पूरी मन री आस रे ॥ कर्मा ॥

भजन ३४७

आओ आओ हे मेरे प्यारे कर लें कुछ सतसंग ॥ टेर ॥

१.बडे भाग्य से पाया तुमने मानुष का ये जन्म
सतसंगत में निशदिन बैठो सीखो अच्छे ढंग ॥ आओ ॥

२.विद्वानों की सतसंगत में बहती ग्यान तरंग
न्हाय धोय उसकी धारा में निर्मल करलो अंग ॥ आओ ॥

३.मूरख का मुख बम्बी कहिये निकसत वचन
ताकी औषधि मौन बताये विष नहीं व्यापे अंग ॥ आओ ॥

४.सज्जनों की सेवा में निशदिन घुटे ज्ञान का रंग
तन मन अपना उस में रंग लो और नहीं प्रसंग ॥ आओ ॥

-:o:-

सत्संगति सबसे भली, नित ही कीजै जाय ।
राम चरण ये संत जन, देवे ब्रह्म मिलाय ॥

-:o:-

माया को सब जग भजे , माधो भजे न कोय ।
जो कदापि माधो भजे, तो माया चेरी होय ।

भजन ३५८ (राग: दरबारी)

केहि विधी कर समझाऊँ मन तोहे केहि विधी कर समझाऊँ ॥ टेर ॥.

१.सोना होय सुहाग मँगाऊ बंक नाल रस लाऊँ
ज्ञान शब्द की फूँक चलाकर पानी कर पिघलाऊँ ॥ केहि ॥

२.लोहा होय तो अेरन मँगाऊ ऊपर धुवन धुँआऊँ
धुंवन के घनघोर टकोर पर जंतर तार खिचाऊँ ॥ केहि ॥

३.घोड़ा होय लगाम कसाऊँ ऊपर जीन चढाऊँ
हो असवार तो पर बैठुँ चाबुक मार चलाऊँ ॥ केहि ॥

४.हाथी होय जंजीर गढाऊँ चारों पैर बंधाऊँ
होय महावत तो पर बैठुँ अंकुश मार चलाऊँ ॥ केहि ॥

५.मुरख होय तो ज्ञान बताऊँ सत्य कि राह चलाऊँ
कहे कबीर सुनो भई साधो अमरापुर पहुँचाऊँ ॥ केहि ॥

भजन ३५९ (तर्ज: दशा मुझ दीन कि भगवन)

बिना सतसंग के उधो नहीं कोई मोक्ष पाता है ॥ टेर ॥

१.हजारों तीर्थ मे फिरता चर्तुवेद पाठको करता,
चतुरविश तत्व में ढलता कछु नहीं ज्ञान पाता है ॥ बिना ॥

२.वही सत्संग है उधो जहाँ पर होत जस मेरा,
हमारे नाम कीर्तन को सभी मिल संग गाता है ॥ बिना ॥

३.जहाँ निश्चय कन्हैया जी हमारे तात रक्षक है,
श्री राधा अरु रुक्मणी हमारी सत्य माता है ॥ बिना ॥

४.अजामील गोपीयाँ शबरी तुलाधार गज जटायुजी,
गये वैकुण्ठ संगति से यह वेदों ने बताया है ॥ बिना ॥

५.सिया राम का भजन करता नित्य सतसंग जो करता,
हिये में दृढता जो धरता वही जन मोहि भाता है ॥ बिना ॥

-:०:-

सत सहि सांसति पति लहत सुजन कलेस न कायं ।
गढि गढि पाहन पूजिए गंडकि सिला सुभायं ॥

भजन ३६० (लावणी)

हरीभज-२ हरीभज प्राणी एक दिन पंछी उडजासी
करणो होयसो करले रे भाई मिन्खा जूण नहीं पासी ।।टेर।।

१.माटी खोदत माटी बोली तू तो कुम्हार म्हारो संग साथी
आछी आछी खोद ले कुम्हारडा एक दिन म्हारे संग मिल जासी ।।हरिभज।।

२.लकड़ी काटत लकड़ी बोली तू तो सुमेरा म्हारो संग साथी
आछी आछी काट ले सुमेरडा एक दिन म्हारे संग जल जासी।हरिभज।।

३.पुष्पन चुंगत कलियाँ बोली तू तो मालीडा म्हारो संग साथी
आछी आछी बिनले रे मालीडा एक दिन म्हारे संग झड़ जासी ।।हरिभज।।

४.वन में चरती बकरी बोली ओतो घाँस म्हारो स्थिर रेसी
आछो-आछो खाले ओ बकरी फेर चरण तू कद आसी ।।हरिभज।।

५.बिणज करंता बाण्यो बोल्यो ओतो हाट म्हारो स्थिर रेसी
साँची साँची तोल रे बाण्या फेर तोलन तू कद आसी ।।हरिभज।।

६.करणो होय सो सुकरत करले फेर करण तू कद आसी
कहे कबीर सुनो भई साधो वरना सिर धुन-२ फिर पछतासी ।।हरिभज।।

भजन ३६१ (राग: दरबारी)

तजो मन हरि विमुखन को संग ।।टेर।।
१.जाके संग कुमति मन, उपजे होत भजन में भंग ।।तजो।।
२.काम क्रोध मद लोभ मोह से, निशदिन रहत उमंग ।।तजो।।
३.कहा होत पय पान कराये, विष नहीं तजत भुजंग ।।तजो।।
४.कागा कहा कपूर चुगाये, श्वान नहवाये गंग ।।तजो।।
५.खर को कहा अरगजा लेपे, कर्कट भूषण अंग ।।तजो।।
६.पाहन पतित बाण नहीं बेधत, खाली जात निपंग ।।तजो।।
७.सूरदास की काली कमरिया, चढत न दूंजो रंग ।।तजो।।

-:०:-

तुलसी जे कीरति चहहिं पर की कीरति खोड़ ।
तिनके मुंह मसि लागि हैं मिटिहि न मारि है धोड़ ।।

भजन ३६२ (राग: मांड)

थारी नींदडली न निवार यो जग झूठो रे संसार ॥ टेर ॥
१.उगे है सो आंतसी रे फूले सो कुम्हलाय
चिणया देवल्या गिर पड़े रे जनमे सो मर जाय ॥ यो जग ॥
२.जो तन हँस हँस बोलता रे दिन में सौ सौ बार
वे मीनख किण देस गया रे सुरता करो विचार ॥ यो जग ॥
३.हाथाँ परवत तोलता रे धरणी झेले न भार
विसा मानुष माटी मिल्या रे भांडा घड़े कुम्हार ॥ यो जग ॥
४.सोना रा गडलंक बणाय हीराँ तन्या दरबार
रती भर सोनो ना मिलियो रे रावण मरती बार ॥ यो जग ॥
५.सेराँ सोनो पेरती रे मोत्याँ भरती भार
अेक हवा को झोको चाल्यो घर घर की पणियार ॥ यो जग ॥
६.इण जग में थांरो कोई नहीं रे स्वारथ को संसार
मोह माया में भूल गयो तू कुण आवे थारे लार ॥ यो जग ॥
७.ढाई अक्षर प्रेम का रे कृष्ण नाम तत्सार
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरी भज उतरो पार ॥ यो जग ॥

भजन ३६३

राम भज्या सो ही जीता जग में, कृष्ण भज्या सो ही जीता ॥टेर॥
१.हाथ सुमरनी, बगल कतरणी, पढ़त भागवत गीता रे ।
हिरदा शुद्ध किया नहीं अपणा, कहत सुणत दिन बीता रे ॥ राम॥
२.कब भिलणी काशी चल आयी, कब पढ़ आयी गीता रे ।
जूठे बेर शबरी के खाये, भेद भाव नहीं कीन्हा रे ॥ राम॥
३.बावरिया ने बावर डाली, फंद जाल सब कीन्हा रे ।
जम का दूत पकड़ ले जावे, रंक हो चाहे राजा रे ॥ राम॥
४.काहू के घर पाँच कोस ह, काहू के दस बीसा रे ।
भक्तों का घर प्रेम पुरी ह, पहुँचा सो जग जीता रे ॥ राम॥
५.सतन संगत कब हू नहीं कीन्ही, हरि से रहा नचीता रे ।
कहत कबीर काल खा लेगा, जैसे मृग को चीता रे ॥ राम॥

भजन ३६४ (राग: कलावती)

अफसोस मूढ मन तू , मुद्दत से सो रहा है ।
सोचा न यह कि घर में, अन्धेरा हो रहा है ॥टेर॥

१.चौरासी लाख मंजिल, तय करके मुश्किलों से ।
जिस घर को तूने ढूँढा, उस को खो रहा है ॥ अफसोस ॥

२.घट में ज्ञान गंगा उसमें न मारा गोता ।
तृष्णा के गन्दे जल में तन को धो रहा है ॥ अफसोस ॥

३.अनमोल स्वास तेरी पापों में जा रही है ।
रत्नों को छोड़ कंकड़ और कांच ढो रहा है ॥ अफसोस ॥

४.भवसागर सिंधु से तू क्या खाक पार होगा ।
विषयों के बिन्दु में जब किश्ती डुबो रहा है ॥ अफसोस ॥

भजन ३६५ (कीतर्न)

जग असार में सार रसना, हरी हरी बोल ॥टेर॥

१.ये तन तो है जर्जर नैया, केवल है हरिनाम खिवैया
होजा भव से पार, रसना हरि हरि बोल ॥ जग ॥

२.इस तन को तुम बीन बना लो, मधुर स्वरों का तार चढा लो
राम नाम भण्डार, रसना हरी हरी बोल ॥ अफसोस ॥

३.जीवन कर्ज लिया है हम ने, चुकता कुछ न किया है हम ने
ऋण का भार उतार, रसना हरी हरी बोल ॥ अफसोस ॥

४.अधिक नहीं तो कुछ तो कर लो, बूंद बूंद से घट को भर लो
भर लो राम नाम भण्डार, रसना हरी हरी बोल ॥ अफसोस ॥

-:०:-

बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिअ न दिएं कलेस ।
बावन बलि सों छल कियो दियो उचित उपदेश ॥

भजन ३६६

राम भजन रो चौघडियो, थने बार-बार नहीं मिलसी रे ।।टेर।।
१.जब माता की उदर में आयो, उलटे सीस पुकार्‌यो रे ।
भीड पडी जब साहेब सुमर्‌यो, बाहर आय बिसरायो रे ।। राम ।।
२.महल मता थारा अधर झरोका, जमड़ा दुजड़ ठड़सी रे
सिरक पथरणा धर्‌या रहेला, रोड़ा में सूँ बड़सी रे ।। राम ।।
३.बरसाळी में डेरा होसी, फेर घणो पछतासी रे ।
मिनखा देही थारी पलट जायला, पशु पखेरू बणसी रे ।। राम ।।
४.धोळे दोफारां धाड़ो पड़सी चाँवरिये लुट जाणा रे ।
पकड्याँ पछे घणो पछतासी, फेर चोरासी जाणा रे ।। राम ।।
५.स्वामी नरसी सायब शरणे बो ही तंत पिछाणी रे ।
गेली दुनिया मरम न जाणे पत्थर तिरगा पाणी रे ।। राम ।।

भजन ३६७

राम नाम रस पीजे मनवा, राम नाम रस पीजे ।।टेर।।
१.राम का नाम बड़ा सुखदायी, लगे न धेला कोड़ी पाई ।
विष अमृत कर लीजे, मनवा राम नाम रस पीजे ।। राम ।।
२.जात पात ना पूछे कोई, हरि भजे सो हरि का होई ।
तज कुसंग को दीजे, मनवा राम नाम रस पीजे ।। राम ।।
३.सत्संगत में दौड़ के जाओ, संत जनों के दर्शन पावो ।
बस में उन्हें कर लीजे, मनवा राम नाम रस पीजे ।। राम ।।
४.जीवन का आधार वही है, नैया का पतवार वही है ।
नाम हरि का लीजे मनवा राम नाम रस पीजे ।। राम ।।
५.नाच दिखाओ मीरा जैसा, प्रेम दिखाओ राधा जैसा ।
तब हरिदर्शन कीजे, मनवा राम नाम रस पीजे ।। राम ।।

-:०:-

खल उपकार विकार फल तुलसी जान जहान ।
मेढुक मर्कट बनिक बक कथा सत्य उपखान ।।

भजन ३६८ (तर्ज: थाली भर कर लाई खिचडो)

राम नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली ।
ले लो रे कोई राम का प्यारा शोर मचाऊँ गली गली ॥ टेर ॥
१.माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा ।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रहा जाएगा ।
सुन्दर काया माटी होगी, चरचा होगी गली गली ॥ ले लो रे ॥
२.क्यों करता है मेरा मेरा, यह तो तेरा मकान नहीं ।
झूठे जग में फँसा हुआ है, वह सच्चा इन्सान नहीं ।
जग का मेला दो दिन का है अन्त में होगी चलाचली ॥ ले लो रे ॥
३.जिन जिन ने ये मोती लूटे, वे तो मालामाल हुए ।
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर में बेहाल हुए ।
चाँदी सोने वाले सुन लो, बात सुनाऊँ खरी खरी ॥ ले लो रे ॥
४.दुनिया को तू कब तक पगले अपनी कहता जाएगा ।
गोविन्द को तू भूल गया है, अन्त समय पछताएगा ।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाए कली कली ॥ ले लो रे ॥

भजन ३६९ (राग: दरबारी)

बीत जाय उमर हरी नाम बिना, तूं सिमरन कर ले मोरे मना ॥ टेर ॥
१.पंछी पंख बिना, हस्ती दंत बिना, नारी देखो पुरुष बिना
वैश्या को पुत्र पिता बिन हीना, जैसे प्राणी हरी नाम बिना ॥बीत जाय॥
२.कूप नीर बिना, धेनु क्षीर बिना, मंदिर सूना दीप बिना
बिना वेद के पंडित विहीना, जैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥बीत जाय॥
३.देह नैन बिना, रैन चंद्र बिना, धरती सूनी मेह बिना
बिन फल के ये तरूवर सूना, जैसे प्राणी हरि नाम बिना॥बीत जाय॥
४.काम क्रोध मद लोभ निवारो, ईर्ष्या त्यागो संत जना
गंग कहे तूं सुन शाह अकबर, इस जग में नहीं कोई अपना ॥बीत जाय॥

भजन ३७०

म्हारा हरिया बनरा सूवटड़ा,थने राम मिले,तो कहिजे रे ॥ टेर ॥
राम मिले तो कहिजे रे, घनश्याम मिले तो कहिजे रे

१.पाँच तत्व को बण्यो पींजरो, जा में बेठो रहिजे रे ।
ओ पिंजरो अब भयो पुराणो, नयी नयी खबराँ दीजे रे ॥ म्हारा ॥

२.इण पिंजरा में दस दरवाजा, आतो जाते रहिजे रे ।
राम नाम की भरले झोळी, हरि भजना चित दीजे रे ॥ म्हारा ॥

३.काम क्रोध मद लोभ छोडकर, ज्ञान गुरु सूं लीजे रे ।
मीरा सुमरे गिरधर नागर, हरि चरणा चित दीजे रे ॥ म्हारा ॥

भजन ३७१

राम नाम सुखदाई भजन करो भाई ये जीवन दो दिन का ॥ टेर ॥

१.यह तन है कागज की पुड़िया, हवा चले उड़ जाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

२.यह तन है माटी का ढेला, ओस पड़े गल जाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

३.यह तन है जंगल की लकड़ी आग लगे जल जाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

४.यह तन है फूलों की माला, धूप लगे मुरझाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

५.यह तन है पानी का बुलबुला, लहर चले मिट जाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

६.यह तन है भूतों की नगरी, मार लगे भग जाई
भजन करो भाई, यह जीवन दो दिन का ॥ राम नाम ॥

-:०:-

पांच पहर धन्धा किया, तीन पहर गया सोय ॥
एक पहर हरि नाम बिन, मुक्ति कैसे होय ॥

भजन ३७२

मन फूला फूला फिरे, जगत में कैसा नाता रे ॥ टेर ॥

१.मात कहे यह पुत्र हमारा, बहन कहे बीर मेरा
भाई कहे यह भुजा हमारी, नारी कहे नर मेरा ॥ जगत ॥

२.पेट पकड़ कर माता रोवे, बाँह पकड़ कर भाई ।
लिपट लिपट कर तिरया रोवे, हंस अकेला जाई ॥ जगत ॥

३.जब लग जीवे माता रोवे, बहन रोवो दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवे, फेर करे घर वासा ॥ जगत ॥

४.चार जणा मिल गजी बनाई, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारां कानी आग लगाई, फूँक दिया जैसे होली ॥ जगत ॥

५.हाड़ जले जैसे लकड़ी रे, केस जले जस घासा ।
सोने जैसी काया जल गयी, कोई न आयो पासा ॥ जगत ॥

६.कहत कबीरा सुणो भई साधो, छोड़ो जग की आसा ।
घर की तिरया देखण लागी ढूंढत फिर चहुँ देशा ॥ जगत ॥

भजन ३७३ (राग: कलावती)

उल्फत नशे का जिस दम सच्चा शरूर होगा ।
परमात्मा उसी दम हाजिर जरूर होगा ॥ टेर ॥

१.अधमों की अधमता पर खुश हो अधम उधारण ।
फिर क्यों अधमता पर हमको गरूर होगा ॥ परमात्मा ॥

२.हर शै में इसकी सूरत उस दिन झलक पडेगी ।
जिस दिन दुइका परदा इस दिल से दूर होगा ॥ परमात्मा ॥

३.लग जायेगी जो उसके दमों की एक ठोकर ।
पहों का सख्त पुतला पल भर में चूर होगा ॥ परमात्मा ॥

४.गर अश्रु बिन्दु यूं ही बरसेंगे तो विला शक ।
बन्दे के सामने खुद हाजिर हजूर होगा ॥ परमात्मा ॥

भजन ३७४ (तर्ज: दगा किसी का सगा नहीं)

जनम लियो वाने मरणो पड़सी, मौत नगारो सिर कूटे रे ।
लाख उपाय करो कोई कितनो, बिना भजन नहीं छूटे रे ॥टेर॥

१.जमराजा रो आयो ढूलणो, प्राण पलक में छूटे रे ।
हिचकी हाल हिचोड़ो लागे, नाड़्याँ तड़तड़ टूटे रे ॥ जनम ॥

२.भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो, प्रभु रूठ्याँ सब रूठे रे ।
एक पलक में प्रलय होवसी, घाल रथी तन कूटे रे ॥ जनम ॥

३.जीवड़ा ने जमड़ा ले चाले, कर कर रीस कूटे रे ।
गुरजांरी घमसाण मचावे, तुरत ताळवो फूटे रे ॥ जनम ॥

४.जमड़ा जिवड़ा ने नरक में डाळे, कीट कागला चूँटे रे ।
करमा रा फल भोगणा पड़सी, भोग्या बिन ना छूटे रे ॥ जनम ॥

५.चतुरायाँ जो अधिक करे छे, ब्याँका करमड़ा फूटे रे ।
भव बंधन रा दुखड़ा सारा, बिना भजन नहीं छूटे रे ॥ जनम ॥

भजन ३७५ (तर्ज: तेरे पुजन को भगवान बना मन मंदिर)

नाम की पी लेना बूटी रे, भजन की पी लेना बूटी ।
तेरी काया रहे अल मस्त, नाम की पी लेना बूटी ॥ टे र ॥

१.तन का घोटा मन की कुंडी, तुरत रगड़ बूटी ।
छाण घोट कर पी ले रे प्राणी, ज्ञान की या बूटी ॥ नाम ॥

२.धन दौलत तेरा माल खजाना, सभी वस्तु झूठी ।
राम भजन तो भज्यो नहीं, थारी जिंदगानी खूटी ॥ नाम ॥

३.जावेलो तू हाथ पसारे आयो बाँध मुट्ठी ।
देवेलो तो मिलसी प्राणी, नहीं तो होगी छुट्टी ॥ नाम ॥

४.एक तो बेड़ा पड़ा सिंधु में, दूजी नाव ह टूटी ।
कहत कबीर सुणो भाई साधू, कर से डोर छूटी ॥ नाम ॥

भजन ३७६ (रसिया)

मनड़ा क्यूँ पछतावे रे, अरे मन क्यूँ घबरावे रे ।
थारा सिर पर श्रीगोपाल बेड़ा पार लगावे रे ॥ टेर ॥
१.निज करणी ने याद करूँ जब जी घबरावे रे ।
प्रभु की महिमा सुण सुण दिल में धीरज आवे रे ॥ मनड़ा ॥
२.शरणागत की लाज तो सब ही ने आवे रे ।
तिरलोकी रो नाथ लाज हरि नहीं गमावे रे ॥ मनड़ा ॥
३.जो कोई मन में प्रेम से हरि को ध्यान लगावे रे ।
वाँ के घर को योग क्षेम हरि आप निभावे रे ॥ मनड़ा ॥
४.जो मेरो अपराध गिणे तो अन्त न आवे रे ।
ऐसो दीन दयाल में चित एक न लावे रे ॥ मनड़ा ॥
५.पतित उधारण बिरद प्रभु को वेद बतावे रे ।
मोर गरीब के काज बिरद हरिनाथ लजावे रे ॥ मनड़ा ॥
६.महिमा अपरम्पार सुर नर मुनि सब गावे रे ।
ऐसो नन्दकिशोर भक्त की ओर निभावे रे ॥ मनड़ा ॥
७.वो है रामनिवास भक्त की त्रास मिटावे रे ।
तू मत होय उदास कृष्ण को दास कहावे रे ॥ मनड़ा ॥

भजन ३७७ (तर्ज: तेरे पुजन को भगवान बना मन मंदीर आलिशान)

हरि नाम सुमर सुख धाम, जगत में जीवन दो दिन का ॥ टेर ॥
१.सुन्दर काया देख लुभाया, गरब करे तन का ।
गिर गयी देह बिखर गयी काया, ज्यूँ माला मनका ॥ हरि॥
२.सुन्दर नारी लगे पियारी, मौज करे मनका ।
काल बली का लगे तमाचा, भूल जाय ठनका ॥ हरि॥
३.झूट कपट कर माया जोड़ी गरब करे धन का ।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर बास हुआ बन का ॥ हरि॥
४.यह संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का ।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का ॥ हरि॥

भजन ३७८ (तर्ज: भजो मन तुलसी सीता राम)

कलजुग में ऐसे पापी नर होंगे ।।टेर ।।
१.पगडी बाँधे पंच सँवारे ऐंठ ऐंठ पग देंगे ।
गली गली में चक्कर काटे, नारी पराई पापी तकत फिरेंगे
२.भूखे प्यासे साधु आवे चिमटी चून न देंगे ।
जब पाजा को दण्ड पड़ेगो तोडे के तारे चुप चाप गिनेंगे ।।
३.बहन भानजी कछु न समझे दृष्टि कुदृष्टि धरेंगे ।
यमके दूत मुगदरों मारें अंत में पापी रो रो नरक पडेंगे ।।
४.लाल खंब लोहे के यमपुर उनसे देह बंधेंगे ।
कहै कबीर सुनो भई साधो पाप पुण्य दो संग में चलेंगे ।।

भजन ३७९ (लावणी)

हरि भज हरि भज हीरा परखले समझ पकड़ मन मजबूती,
अडसठ तीरथ यहाँ देख ले बाहर भटके क्या होसी ।। टेर ।।
१.लागी प्रीत सत गुरु साहब से गाँठी खुल गई रेशम की,
नारायण की सुमिरण करले और बात सबहै की ,
पांचो चोर बसैं काया में उनकी पकड़ो सिर चोटी,
पांचो मार पचीसों बसकर, तब जानौं तेरी रजपूती ।। हरि भज ।।
२.रिमझिम रिमझिम बाजा बाजै, झिलमिल झिलमिल क्या होती,
ॐकार के झनकार में हरिजन लाला हद लूटी,
सत्य सुकृत का सेल बना ले ढाल बना ले धीरज की,
तीजे तीन गुनन से न्यारा तब जानूँ तेरी साबूती ।। हरि भज ।।
३.काली बकरी बन में डोलै पकड़ कसाई ले जासी,
हरियाबन में बोलै पखेरू रंग बाड़ी तेरी कौन खासी,
ज्ञान अखाड़े हरदम जागे, शब्द सुरति सोहं होती,
जोगी मछंदर गोरख बोले अलक लखासो खरा जती ।। हरि भज ।।

भजन ३८०

जीवन रो भरोसो नहीं कब हंसो उड़ जावेलो ।
तन और मन तेरो थारे साथ न जावेलो ॥ टेर ॥
१.काया रो गुमान न कर ओ तो माटी रो खिलोणो ह ।
मरजी थारी कुछ ना चले, जो होणो ह सो होणो है ।
थारो म्हारो छोड़ रे भाया, जीवन दिवलो बुझ जावेलो ॥ जीवन ॥
२.धन रो गुमान न कर, ओतो हाथ रो मेल ह भाया ।
राजा ह तो रंक कोई, सब किस्मत रो खेल ह भाया ।
झूठो ह जगत नाटक, सब पल में उजड़ जावेलो ॥ जीवन ॥
३.दो दिन रो मेळो ह, सब माया को खेलो ह ।
चाले न साथ कोई, थने जाणो अकेलो ह ।
पलक झपकता ही, सब खेल बिगड़ जावेलो ॥ जीवन ॥
४.सगाँ पर भरोसा न कर, दुनिया की आस न कर ।
तरणो ह जो भव सागर, रामजी को सुमिरन कर ।
भगवान की भक्ति सूँ , बेड़ो पार लग जावे लो ॥ जीवन ॥
५.रूप रो गुमान न कर, ओ तो ऊपरी नजारो ह ।
चार दिन जवानी का, फेर बुढ़ापा को भारो ह ।
हरि से प्रीत लगा, तेरो रूप निखर जावेलो ॥ जीवन ॥
६.इण माया नगरी में, सब धोखो ही धोखो ह ।
सतसंग मे बैठ जरा, ओ चिन्तन का मोखो ह ।
प्रभु जी को चिन्तन कर, तेरो जनम सुधर जावेलो ॥ जीवन ॥

भजन ३८१ (राग: दरबारी)

दीवाने क्यों बनता मगरूर ॥ टेर ॥
१.तेरे जैसे अनेक हो गये उड़ गई उनकी धूर ॥दीवाने॥
२.चली जो चकरी काल बली की कर डालेगी चूर ॥दीवाने॥
३.नाम निसान तेरा मिट जावे जैसे डली कपूर ॥दीवाने॥
४.राजा रंक भूप अनाथ सब मे है उसका नूर ॥दीवाने॥
५.प्रेमनाथ कहे हरि को भज ले कर ममता को दूर ॥दीवाने॥

भजन ३८२

लाख क्रोडरो कोई न मोल ओ नर भव हीरो अनमोल
खोया तने याद घणो आसी म्हारी आत्मा ए आसी
ओ पाछो कद आवेला, ओ फेर नही पावेला ॥ टेर ॥

१.खेल खेल बचपन का खेल खोयो बचपन चाढ्यो मेल
मोटो हुयाँ याद घणो आसी म्हारी आत्मा ॥ ओ पाछो ॥

२.कियो कर कर भोग विलास यौवन को सब सत्यानाश
आकाशाँ में तारा लगीया रहना म्हारी आत्मा ॥ ओ पाछो ॥

३.बुढापा की आई बाढ, पडग्या दांत और सब दाढ
खाट पड़्यो जब नभस्युं तारा उतरया म्हारी आत्मा ॥ ओ पाछो ॥

४.लग्या उठने डेरा तम्बू काँई करे अब भोला शंभू
मन की आशा मन में रह गई सुनले म्हारी आत्मा ॥ ओ पाछो ॥

५.पोपां बाई को है नहीं राज प्रभव मैं न
नथमल धर्म किया सब सुधरे ॥ ओ पाछो ॥

भजन ३८३

थारी काया रो गुलाबी रंग उड़ जासी
उड़ जासी रे फीको पड़ ज्यासी ॥ टेर ॥

१.हरिया हरिया रूखड़ा उग क्या रे बाग में
पान फूल एक दिन झड़ ज्यासी ॥ थारी ॥

२.सूरज उगीयो दोपाहरी तपरीयो
सांझा पड़ीया सूरज ढल ज्यासी ॥ थारी ॥

३.रैन बसेरा पंछी कीनो
भोर भई रे पंछी उड़ ज्यासी ॥ थारी ॥

४.जात सिनेमा देख ले रे भाई
खेल खतम हुयां घर आसी ॥ थारी ॥

५.ओ तन है पाणी रो पतासो
पाणी रो पतासो गल ज्यासी ॥ थारी ॥

६.धर्म कमाई थारे सागे जासी ॥ थारी ॥

भजन ३८४

चेतन चिदानन्द चरणां में, सब कुछ अरपण थारो
सफल वंणातूं सत संगत में, मूघ मोलो मिनख जमारो ॥ टेर ॥
१.खाली हाथां आयो हो तू, जासी खाली हाथां रे
लारे रेसी इण दुनिया में, जस अपजस की बातां रे
थोडे जिणे रे खातिर क्यूं, बांधे शिर पापाँ रो भारो ॥ चेतन ॥
२.कोडयां साटे अहल घरमत ओ हीरो लाखीणो रे
विष मत घोल वासना रो, जो सांत सुधास्य पीणो रे
अति लीपु परमार्थ रो पथ, तू हे नश्वर तनस्युं न्यारो ॥ चेतन ॥
३.बस्यो अनन्त अखूट खजानो, गाफिल थारे घर में रे
क्यूं न निहारे, बारै बारै क्यूं भटके दर दर में
आग छिपी अरणी में ढूंढे काठ काट म रख कठिधरो ॥ चेतन ॥
४.एक नयो पैसो भी थारे, नहीं चालसी, सागे रे
करया आपरा कर्मा स्युं ही सुख दुख मिल सी आगे रे
संजय रे मारग पर चाल्यां, तुलसी निश्चित हो निस्तारो ॥ चेतन ॥

भजन ३८५ (राग: जोनपुरी)

घूंघट के पट खोल री तोहे पीया मिलेंगे ॥ टेर ॥
१.घट घट रमता राम रमैया, कटुक वचन मत बोल ॥ तोहे ॥
२.रंग महल में दीप बरत है, आसन से मत डोलू ॥ तोहे ॥
३.भक्ति करन को गर्भवास से करि आया तू कोल रे ॥ तोहे ॥
४.बाहर आय भूल गई सजनी पियो विषय रस घोल रे ॥ तोहे ॥
५.सद्गुरु कृपा मिले चिन्तामणी घत भीतर अनमोल रे ॥ तोहे ॥
६.धन जोबन को गर्व न कीजे झूठो पचरंग चोल रे ॥ तोहे ॥
७.कहत कबीर आनन्द भयो मन बाजत अनहद ढोल रे ॥ तोहे ॥

-:०:-

वचन वेष क्यों जाइए मन मलीन नर नारि ।
सूपनखा मृग पूतना दसमुख प्रमुख विचार ॥

भजन ३८६ (राग: देस)

चदरिया झीणी रे झीणी सदा राम रंग भीजी ॥ टेर ॥
१.अष्ट कमल दल- चरखा चाले पांच तत्व से बीनी ।
नौ दस मास बुणता लाग्या मूर्ख मैली कीनी ॥ चदरिया॥
२.सद्गुरु धोबी ऐसा मिलिया, सायर तप में कीनी ।
सुरत शिला पर पटक पछाड़ी इस विध उजली कीनी ॥ चदरिया ॥
३.रंका ओढ़ी बंका ओढ़ी, ओढ़ी सजन कसाई ।
सुवा पढ़ावत गणिका ओढ़ी, ओढ़ी है मीरा बाई ॥ चदरिया ॥
४.आधी ओढ़ निसंक मत सोना, दस दिन तुमको कीनी ।
ध्रुव प्रहलाद विभीक्षण ओढ़ी सुकदेव निर्मल कीनी ॥ चदरिया ॥
५.साधु की संगत गुरु की सेवा इस विध अमल कीनी ।
दास कबीर जुगत से ओढी, ज्यों की त्यों धर दीनी ॥ चदरिया ॥

भजन ३८७

मिल्यो मिनख अवतार, चेत तू बावला ।
चोरासी स्यूँ निकल बारणै, डग भर जरा उतावँला ॥ टेर ॥
१.मोह माया में मुगध बण्यो तू काल अनंतो बीतग्यो,
भरयो खजानो आज देखले, तर तर सारो रीतग्यो,
रीते रा कुण करसी जग में चावला ॥ चेत तू ॥
२.डगर अजाणी, लोग अजाण्या मिल्यो अजाण्यो साथ है,
चार दिनाँ री चटक चानणी, फेर अंधेरी रात है,
एक तराजू तुलसी गोरा सांवला ॥ चेत तू ॥
३.अकल निबा ही ऊंट उभाणा, तूं विवेक स्युँ कामले,
मिनख बण्यां के हुवै ज्ञान की, जोत हिये में थाम ले,
खोल अभिनार आँख मित दे झाँवला ॥ चेत तू ॥
४.टेढ़ो न्याय न चलसी जग में, सीधे स्युँ सुख पावैला,
चलगत सुघर्‌या पार हुरेला, बिगड्‌या गोता खावैला,
बुद्ध एक ओली में रंक रावला ॥ चेत तू ॥

भजन ३८८ (तर्ज: म्हारा कानुडा गिरधारी)

जीवन लाखीणो
ईं ने कोड्या में मत खोवो, ईं मे बीज धर्म रो बोवो,
मोह माया की नींद न सोवो ॥ जीवन ॥
१.मन रे मते कदे मत चालो, ईं न संयम मारग धालो,
गुण रो इमरत ई में डालो ॥ जीवन ॥
२.ईं में आवे घणा उछाला, ईं रा छिप्या रहे नहीं चाला
करदे क्षण में उजला काला ॥ जीवन ॥
३.जीणे री जो आवे आंटी, बणज्या सोनो सारी माटी
कटज्यो दुखरी ओखी घाटी ॥ जीवन ॥
४.जीवन चंचल बहतो पाणी, बातां करे घणी अणजाणी
ईं री बिरला चाल पिछाणी ॥ जीवन ॥
५.काया है माटी री काची, लाखाँ बिरला परखी नाथी
चल गत रही न ईं री सांची ॥ जीवन ॥
६.सांस रो किया भरोसो आवै बहनो पल भर में रुक जावे
कोई कारी लाग न पावै ॥ जीवन ॥
७.जनम्या है सो जम धर जासी, बुद्ध न कोई थिर रह पासी
लागी सारां रै गल- फांसी ॥ जीवन ॥

भजन ३८९ (तर्ज: घणा दिन सो लियो रे)

क्या तन माँजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना ॥ टेर ॥
१.माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटी का सिरहाना,
माटी का कलबूत बन्या है, जिस में भंवर लुभाना ॥ क्या तन ॥
२.माता-पिता का कहना मानो, हरि से ध्यान लगाना,
सत्य वचन और रही दीनता,सबको सुख पहुँचाना ॥ क्या तन ॥
३.एक दिन दुल्हा बन्या बराती, बाजे ढोल निशाना,
एक दिन जाय जंगल में डेरा कर सीधा पग जाना ॥ क्या तन ॥
४.हरि की भक्ति कबहुँ नहीं भूलो, जो चाहो कल्याणा,
सबके स्वामी पालन करता, उनका हुकुम बजाना ॥ क्या तन ॥

भजन ३९० (तर्ज:तेरे पुजन को भगवान बना मन मंदीर आलिशान)

सीताराम सीताराम सीताराम कहिए
जाहि विधि राखे राम, तांहि विधि रहिए ॥ टेर ॥

१.मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में
तूं अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिए ॥ जाहि ॥

२.किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा
होगा वही प्यारे जो श्रीरामजी को भायेगा
फल आशा त्याग शुभ कर्म करते रहिये ॥ जाहि ॥

३.जिंदगी की डोर सौंप, हाथ दीना नाथ के
महलों में राखे चाहे, झोपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद राम नाम कहिए ॥ जाहि ॥

४.आशा एक रामजी की, दूजी आशा छोड़ दे
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे
साधु संग राम रंग, अंग अंग रंगिये
काम रस त्याग प्यारे राम राम जपिये ॥ जाहि ॥

भजन ३९१ (तर्ज: दगा किसी का सगा नहीं, राग : तिलंग)

तने अजब बणायो भगवान, खिलौना माटी का ॥ टेर ॥
इसे कोई न सका पहचान, खिलौना माटी का

१.नयन दिया तने हरि दर्शन को, कान दिया सुण ज्ञान ॥ खिलौना ॥

२.दांत दिया थारे मुख री शोभा, तने जीभ दी रे रट राम ॥खिलौना ॥

३.पैर दिया तने तीरथ करने, तने हाथ दिया कर दान ॥ खिलौना ॥

४.कहत कबीर सुनो भाई साधो , तू रट बंदा प्रभु नाम ॥ खिलौना ॥

-:०:-

कबीरा वो दिन याद कर, पग ऊपरि तल शीश ।
मृत्यु मण्डल में आयके बिसरि गया जगदीश ॥

भजन ३९२

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या
रहे आजाद या जग में, हमन दुनिया से यारी क्या
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते
हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या
खलक सब नाम अपने को, बहुत करसर पटकता है
हमन हरि नाम सांचा है, हमन दुनियां से यारी क्या
न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड़े पियारे से
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या
कबीरा इश्क का माना, दूई का दुरकार दिल से
जो चलना राह नाजुक है, हमन सर बोझ भारी क्या ॥

भजन ३९३ (तर्ज: घणा दिन सो लियो रे)

हरि गुण गाय ले रे, जब लग सुखी शरीर
पीछे याद न आवसी रे, पींजर व्याप पीर ॥ टेर ॥

१.भाग्य बड़ा म्हाने संत मिल्यारे, पड्यो समंद में सीर
हंसा होय चुग लीजिये रे, नाम अमोलक हीर ॥ हरि गुण ॥

२.अवसर दिन दिन बीत रयो रे, ज्यूँ अँजली को नीर
फेर न हंसो आवसी, इण सरवरिये री तीर ॥ हरि गुण ॥

३.जीवन थकाँ भज लीजीये रे, देर न कीजे वीर
चाल बुढ़ापो आवसी रे, रहे ना मन में धीर ॥ हरि गुण ॥

४.सब देवन को देव रामजी, सब पीरन को पीर..
सहज राम भज लीजीये रे, हरि है सुख की सीर ॥ हरि गुण ॥

-:०:-

बडे पाप बाढे किए छोटे किए लजात ।
तुलसी ता पर सुख चहत बिधि सों बहुत रिसात ॥

भजन ३९४ (रसिया)

हंसा निकल गया काया से, खाली पड़ी रही तस्वीर ॥ टेर ॥
१.कोई मनावे देवी देवता, कोई मनावे पीर
उस घर का परवाना आया, जाना पड़ा आखिर ॥ हंसा ॥
२.कोई नहलावे कोई धुलावे, कोई उढ़ावे चीर
चार जणा मिल मते उठायो, ले गया गंगा तीर ॥ हंसा ॥
३.कोई जिमावे लाडू पेड़ा, कोई जिमावे खीर
कुटुम्ब कबीला फिर फिर जीमे, कोई न बंधावे धीर ॥ हंसा ॥
४.जनम जनम तक माता रोये, बहना वार तीवार
भीड़ पड्या पर भाई रोव, त्रिया तीज त्यौहार ॥ हंसा ॥
५.राजा जावे परजा जावे, जावे लोग वजीर
पाप पुण्य संग दोनों जावे, कह गये दास कबीर ॥ हंसा ॥

भजन ३९५ (लावणी)

करण हार करतार से डरिये, करतन लागे घड़ी और पल
उसकी गती को वही जानता, वो देता निरबल को बल ॥ टेर ॥
१.एक पल देखा थल ही थल था, पल में कर दिया जल ही जल
एक पल देखा उदयाचल था, पल में कर दिया अस्ता चल ॥करण॥
२.एक दिन पर्वत गगन चढंता, पल घसा दिया रस्सा तल
एक पल देखा महल मांडीया, पल में कर दिया थल ही थल ॥करण॥
३.एक दिन देखा भीख माँगता, उसे बिठा दिया गद्दी पर
एक दिन राजा राज करंता, पल में चलवा दिया उससे हल ॥करण॥
४.एक दिन पंछी गगन उडंता, क्षण में कटा दिया उसका पर
कहे कबीर सुनो भई साधो, को जाणे उस हर की गल ॥करण॥

-:०:-

कबीरा जो दिन आज है सो दिन नाहीं काल ।
चेत सके तो चेतियो, मीच परी है ख्याल ॥

भजन ३९६ (तर्ज: दगा किसी का सगा नहीं)

करते हैं सभी सुमिरण लेकिन, सुमरण का करना खेल नहीं ।
मरते हैं यहाँ रो रो के सभी, हँस हँस के मरना खेल नहीं ॥ टेर ॥
१.दुःख में रो रो जल बिन्दू गिरे, आनन्द में मोती झरते हैं ।
झरते हैं सदा जल नैन सभी, मोती का झरना खेल नहीं ॥करते हैं॥
२.जो कर्म करे सो भोग भरे, मर मर के जनम ले देह धरे ।
भरत है सभी पापों का घडा, सत ज्ञान का झरना खेल नहीं ॥करते हैं॥
३.पर रूप लेख सब लोग यहाँ, निज रूप न लखता है कोई ।
धरते हैं पराया ध्यान सभी, निज ध्यान का धरना खेल नहीं ॥करते हैं॥
४.कहे प्रेमनाथ सुनो चेत करो, गुरु ज्ञान भरो भव सिन्धु तरो ।
तरते हैं सभी बन ज्ञान धनी, पर ज्ञान में तरना खेल नहीं ॥करते हैं॥

भजन ३९७ (राग: दरबारी)

बड़े अचरज की बात संतों ॥ टेर ॥
१.गागर बीच बैठी पनिहारी, जल भरने को जात ।
बैठी दूर नौ कोस कुवा से, भरी भरी नीर नहात ॥ बड़े ॥
२.दुलहिन के सिर डोली बैठी, ब्याहन जाय बरात ।
मंडप में दुल्हे को खा गई, अचल किया अहिवात ॥ बड़े ॥
३.बिना बाप का बेटा जन्मा, सो सपूत कहलात ।
गोद में लेके माँ को खिलावे, खेल करे बहु भांत ॥ बड़े ॥
४.चिउंटी चली शिकार करने को, सब जंगल थररात ।
डर कर सिंह गुफा में बैठा, हाथी को धरी खात ॥ बड़े ॥
५.एक बूंद जल बिच समाये, अगम समुन्दर सात ।
तिल की आड़ पहाड़ छिपा है, अंधे को दिखलात ॥ बड़े ॥
६.गूंगा चारों वेद पढ़त है, वाणी चार सुनात ।
बहिरा सुन सुन मस्त होत है, मन ही मन मुसकात ॥ बड़े ॥
७.प्रेमनाथ कहे सुनो संत जन, ये सब अट पट बात ।
जो कोई इसका भेद लखावे, ताँही पूजूँ दिन रात ॥ बड़े ॥

भजन ३९८ (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो रे शरीर)

भाई म्हारा रंगस्युं तो रंग मिल ज्याव
गुणां री जोड़ी नाय मिले ॥ टेर ॥

१.हल्दी केशर एक ही रंगरा एक ही हाट बिकाय
हल्दी तो सागाँ में छीजे, केशर तीलक लगाय ॥ भाई ॥

२.कागा कोयल एक ही रंग रा बैठे एक ही डाल
कड़के तो बोले है कागो, कोयल रस बरसाय ॥ भाई ॥

३.संध्या भोर एक ही रंग रा, एक सूरज की छाँव
संध्या तो नींदडली ल्याव, भोर तो जगत जगाय ॥ भाई ॥

४.योगी भोग एक कोख का, एक ही घर के माँय
योगी तो कर्मा ने काटे, भोगी कर्म लगाय ॥ भाई ॥

५.डोली अर्थी एक बांस की एक ही खांघ जाय
डोली तो दुल्हन घर ल्याय, अर्थी तो मरघट जाय ॥ भाई ॥

६.मेंहदी भांग एक ही रंग का , एक ही द्वार पिसाय
मेंहदी तो हाथाँ ने रचावे, भांग तो जगत नचाये ॥ भाई ॥

भजन ३९९

पानी में मीन पियासी, मोही सुण सुण आवे हाँसी ॥ टेर ॥
पानी में मीन पीयासी ॥

१.आतमज्ञान बिना नर भटके, कोई मथुरा कोई काशी
कस्तूरी मृग नाभि माँही, बन बन फिरत उदासी ॥ पानी ॥

२.जल बिच कमल, कमल बिच कलीयाँ ताँ पर भँवर निवासी
विषयन वश त्रैलोक भयो सब जती सती सन्यासी ॥ पानी ॥

३.जाँ को ध्यान धरत विधि हरि हर मुनिजन सहज उदासी
से तेरे घट मांही विराजे, परम पुरुष अविनाशी ॥ पानी ॥

४.कहत कबीर सुनो रे भाई साधो गुरु बिन भरम न जासी ॥ पानी ॥

भजन ४००

१.कितने दिन का स्थिरवास यहाँ, आखिर तो जाना पड़ता है
इस बसे बसाये डेरे को, इक रोज उठाना पड़ता है ॥ टेर ॥
२.माता मेरी व पिता मेरा, पत्नी मेरी सुत मेरा है
तज कर सारे सम्बन्धों को, असहाय सिधाना पड़ता है ॥कितने ॥
३.जिसको हाथों पाला पोषा है, जिस पर श्रृंगार सजाया है
उसी प्यारी काया से आखिर, रिश्ता तुड़वाना पड़ता है ॥कितने ॥
४.जो प्यारे दोस्त हमारे हैं, जिनके सह खेले कूदे हैं
उन दोस्तों को शमशान बीच, निज हाथ जलाना पड़ता है ॥कितने ॥
५.चाहे धन अरबो खरबों का, चाहे रत्नों के ढेर लगे
खाली हाथों ही पंछी को, आखिर उड़ जाना पड़ता है ॥कितने ॥
६.नश्वर चीजों पर मोहित हो, शाश्वत को गौण किया तूने
चन्दन शाश्वत को ही शुभमन, आखिर अपनाना पड़ता है ॥कितने ॥

भजन ४०१ (तर्ज: म्हारा हरिया बनरा सुवटिया)

जिसको तू खोज रहा बंदे, वह मालिक तेरे अंदर है
बाहिर के मंदिर कृत्रिम है, सच्चा मंदिर तो अंदर है ॥ टेर ॥
१.ले पत्र पुष्प जल धूप दीप, तू किसकी पूजा करता है,
सचमुच, जिसकी पूजा होती, वह दिव्य देव तो अंदर है ॥ जिसको तू ॥
२.धोने को अपना पाप मैल, क्यों तीर्थों बीच भटकता है,
जिसमें सब पाप मैल धूलता, वह निर्मल तीर्थ तो अन्दर है ॥ जिसको तू ॥
३.पंतों पंथों का गौरव तू , चिल्ला चिल्ला कर गाता है,
जिससे, षट ग्रंथी भेद होता, वह अलख ग्रंथ तो अंदर है ॥ जिसको तू ॥
४.बिना लक्ष्य की दौड़ धूप, कुछ भी परिणाम न लावेगी ।
वह बाहिर कैसे मिल सकती, जो चीज आपके अन्दर है ॥ जिसको तू ॥
५.बाहर के झंझट छोड़, जोड़ चंदन अपने से अपने को,
जिसको है वंदन बार बार, वह चिदानन्द तो अंदर है ॥ जिसको तू ॥

भजन ४०२

१.जीवन में शांति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है
जीवन में क्रांति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है
२.मंजिल की आशा से राही, पथ पर जब दौड़ा जाता है
जो मार्ग न मंजील को पाता, वह मार्ग नहीं बस धोखा है
३.लाखों की पूंजी लगा कर के, है कारोबार किया भारी
जो मूल रकम को खा जाता, व्यापार नहीं वह धोखा है।
४.औषध खाने का लाभ तभी जो हष्ट पुष्ट तन बन जाये
जो दिन दिन तन छीजा जाता, वह दवा नहीं बस धोखा है
५.बैठे हो खाना खाने को भोजन भी नाना विध आये
जो क्षुधा शांत नहीं कर पाता, वह भोजन नहीं बस धोखा है
६.चन्दन है संत वही सच्चा, जो जन जन का कल्याण करे
जो माया में फँसता जाता, वह संत नहीं बस धोका है
जीवन में शांति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोका है ।।

भजन ४०३

सोयोड़ो संसार इण में जाग जको कुण है
जाग जको कुण है त्याग जको कुण है ।। टेर ।।
१.नींद में तो मीठी मीठा सपना ही आवे
अँखीयाँ ने खोल रस्ते लाग जको कुण है ।। जाग ।।
२.तृष्णा री बेड़ी उण सुं जकड़ या संसारी
बेड़ी न तोड़ दूर भाग जको कुण है ।। जाग ।।
३.क्रोध को खुंखार डाकू सगलाँ ने लूटे
क्षमा री बंदूक उण पर दाग जको कुण है ।। जाग ।।
४.काम वासना रे आगे बड़ा बड़ा हार्‌या
काम ने पछाड़ आगे आव जको कुण है ।। जाग ।।
५.बढ़े वीर चन्दन वो ही सत्य जो पिछाणे
अनादि अनन्त म्हारे सागे जको कुण है ।। जाग ।।

भजन ४०४ (हरियाणा)

रंग महल की चहल पहल में क्या दुनिया दीवानी है ।
कल परसो वर्षों की सोचे, पल भर की जिन्दगानी है ॥ टेर ॥

१.यह तन जल का बना बुलबुला दरिया बूंद समानी है।
निकला पवन तो फूटा छन में फिर पानी का पानी है ॥ कल ॥

२.राज पाट धन माल खजाना सुख सम्पत्ति की खानी है।
आखिर काम न आवे माया, अपनी नही विरानी है ॥ कल ॥

३.सियाराम लक्ष्मन बन भेजे, कुमति कैकेई रानी है ।
हाय हाय करि दसरथ मर गये सूनी पड़ी रजधानी है ॥ कल ॥

४.अति योद्धा लंका पति रावण शूर वीर अभिमानी है ।
सो लंका माटी में मिल गई मिट गई नाम निशानी है ॥ कल ॥

५.छत्रपति दुर्योधन राजा भारत में लासानी है ।
चौसट छत्र शीश पर जांके तांकी धूल उड़ानी है ॥ कल ॥

६.बीता दिन अब रैन अंधेरी, घोर घटा गहरानी है ।
चमके सिर पर काल की बिजली कुटिया तेरी पुरानी है ॥ कल ॥

७.प्रेमनाथ कहे चेत रे हंसा माया मति बौरानी है ।
प्रेम से रटले नाम गुरु का मिटती सब शैतानी है ॥ कल ॥

भजन ४०५

हीरे जैसी जिन्दगानी खो रहा है क्यों?
बुरे पाप के बीज ओ बो रहा है क्यों?
तूने चीनी कितनी खाई कितनी खा गया मिठाई
फिर भी जीभ से तू भाई, जहर बिलो रहा है क्यों?
तूने दूध मनो पी डाला, तू ने दही मनो खा डाला
फिर भी मन तेरा मटियाला, काला हो रहा है क्यों ?
तू ने घी भी काफी खाया, लेकिन दिल चिकना न बनाया
कर कर हिंसा पाप कमाया, अब फिर रो रहा क्यों ?
तज दे बातों की सफाई, तज दे हाथों की सफाई
कर ले अन्दर की सफाई, धन मुनि सो रहा है क्यों ?

भजन ४०६

प्यारे मनवा तू लगा लगा, लय तू अलख जगा
गन गन गुणी गुण गान सुना, अनुभव रस बरसा जा ॥ टेर ॥
१.शक्ति अनन्त भरी तेरे में, कायरना मत ला,
सफल विभूति का तू मालिक, कहाँ कभी बतला ॥ प्यारे ॥
२.अणु-अणु में शुभ भावों की, सुन्दर सौरभ फैला,
विमल कल्पना शाक्ति द्वारा, मनवांछित फल पा ॥ प्यारे ॥
३.ईर्ष्या द्वेष त्याग कर प्रतिपल, प्रेम सालिल में नही
योग त्रितय को एकत्रित कर, भेद भिति कोढ़ा ॥ प्यारे ॥
४.बालक की दृष्टि में जैसे, नारी मात्र है माँ
प्राणी मात्र है लांधव मेरे, अन्तः स्तल से गा ॥ प्यारे ॥
५.दृष्टि समान सृष्टि है चन्दन यह कुदरत की कला
देख स्वमुख दुनियाँ के कांच में सात्विकता अपना ॥ प्यारे ॥

भजन ४०७

चलना आखिर कार है, झूठा सब संसार है
क्यों माया में मुग्ध बने? यह चमत्कार दिन चार है ॥ टेर ॥
१.हो, तुम चाहे भूलो मरने को, तुम को मौत न भूलेगी,
कितना सर पर भार है, क्यों ना तुम्हे विचार है ॥ चलना ॥
२.हो, आने वाला जाने की भी, टिकट कटाकर लाता है ,
बस गाड़ी तैयार है, कोई न साथी दार है ॥ चलना ॥
३.हो, कहाँ से आये कहाँ जाना है, किसको भी यह पता नहीं,
बिच बिच संसार है, स्त्री पुत्रों का प्यार है ॥ चलना ॥
४.हो, मधुर स्वपन के महल बनाये, आंख खुली जब नहीं कुछ भी ,
जीते जी के यार है, सारे वे दरकार है ॥ चलना ॥
५.हो, तेरा मालिक तू ही है बस, तेरा जो कुछ तेरा है ,
इस में सब कुछ सार है, चन्दन जय जयकार है ॥ चलना ॥

भजन ४०८ (तर्ज: माया हो रंग बादली)

आऊँ खेरी घड़ीयां थारी घटती ही जावे हो
कर ले कमाई धर्म ध्यान री ।। टेर ।।
समय जो बीत जावे पाछो नहीं आवे हो
ज्योति जगा ले अन्तर ज्ञान री

१.सांस सै धागा स्युँ बण्यो जिन्दगी रो हार हो
टूटण में लागै नहीं देर हो
मन मोहक तसवीर थारे तन री हो
बणसी आखिर माटी रो ढेर हो ।। कर ले ।।

२.आंतरो ध्यान रो मिटाले अंधकार हो
चांद उगालो समता भाव रो
करयोड़ा करमां रो फल भोगणो ही पड़सी हो
कर ले उजालो मंगल भाव रो ।। कर ले ।।

३.एकलो ही आयो है तू एकलो ही जासी हो
साथे न जासी इक तार हो
मोह री मदिरा ने पी बण्यो क्यूँ बावलो
पापां रो बांधे सिर क्यूँ भार हो ।। कर ले ।।

४.आत्मा री चादर न तू ऊजली बनाले हो
संयम री साबन लेकर हाथ में
धुँवो राग द्वेश रो उड़े है चारों मेर हो
सावधान रहिजे दिन रात में ।। कर ले ।।

५.धरम र मारग में ही तू बढतो ही रहिजे रे
मन में तू रखजे निर्मल भावना
मुनि राकेश बेड्याँ टूट्याँ करमा री हो
होसी सफल थारी कामना ।। कर ले ।।

भजन ४०९ (हरियाणा)

माटी री आ काया, आखिर माटी में मिल जावे है
क्याँ रो गर्व करे रे मनवा, क्याँ पर तू इतराव है ॥ टेर ॥
१.जिण तन ने मीठा माल खुवाया, तू निशिदिन पाला पोसा है
अपने एक पेट री आग बुझावण कीतबां रा मन मोसा है
लेकिन गटका खायोड़ा न, एक दिन भटका आवे है ॥ क्याँ रो ॥
२.आ साँसाँ रो विश्वास नहीं, कद आती आती रूक जावे रे
जीवन में झुकणु नहीं जाण्यो के जम रे आग झुक जावे रे
एक कदम में तो उठ गयो दुजो कुण जाण उठ पावे है ॥ क्याँ रो ॥
३.ओतो च्यार दिनाँ री चान्णीयो, सुण फेर अंधेरी राताँ है
थारी टपूरी सारी चुव है ओ, सावणरी बरसात है
थोड़े जीणे रे खातीर क्यों भारी पाप कमाव है ॥ क्याँ रो ॥
४.जो बीत गई सो बात गई, अब पाछल खेती कर ले तूं
मुनि रूप कहे सद्गुण मोत्याँ सुं खाली झोली भर ले तूं
जा जाग है सो पाव हो जो सोच सो पछताव है ॥ क्याँ रो ॥

भजन ४१० (हरियाणा)

मटका प्यास बुझाए कैसे, प्यास बुझेगी पानी से
भीतर की दुनियाँ सुधरेगी, बाहर की कुरबानी से ॥ टेर ॥
१.सत का रस्ता हरि का रस्ता, हरि का रस्ता सत की देन
चलो चलें अब हो जाएगी, हर मुश्किल आसानी से ॥ भीतर॥
२.हीरे मोती लेकर के क्यों, मन का चैन गँवाते हो
चैन मिलेगा तुझको बंदे, सत्य गुरु की वाणी से ॥ भीतर॥
३.वक्त की धारों में बहने दो, टूटी फूटी किश्ती को
तूफानों से बच निकला है, कौन अपनी मन मानी से ॥ भीतर॥
४.देख बड़ी मुश्किल से तूने, अब रब हरि को पाया है
यह रस्ता अब खो ना जाए, देख अपनी मन मानी से ॥ भीतर॥

भजन ४११ (तर्ज: बोल हरी बोल हरी बोल हरी बोल, केशव)

सीताराम सीताराम सीताराम बोल,
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥ टेर ॥

१.यह दुनिया है गोरख-धन्धा, भेद समझता कोई-कोई बन्दा ।
ब्रह्म स्वरूप तराजू तोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

२.क्यों विषयों में मन को लगाया, पालनहार को दिल से भुलाया ।
जीवन मिट्टी में न रोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥

३.भज ले रे मन कृष्ण मुरारी, नटवर-नागर कुंज-बिहारी ।
ना लगता कुछ तेरा मोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ।।

४.राम भजन बिन मुक्ति न होवे, हीरा-जन्म तू व्यर्थ ही खोये ।
राम रसामृत पी ले घोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

५.लख चौरासी में भरमाया, मुश्किल से यह नर-तन पाया ।
मूरख अंधे नैना खोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

६.जो चाहे भव-सागर तरना, मिट जाये यह जीना मरना ।
पाप की गठरी सिर से खोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

७.राधे-कृष्ण श्याम बिहारी, गोपी वल्लभ गिरवर धारी ।
मोहन नटवर नागर बोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥

८.नाम प्रभु का है सुखकारी पाप कटेंगे क्षण में भारी ।
पाप की गठरी दे तू खोल सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

९.प्राणी है तू भोला-भाला, माया का है खेल निराला ।
खुल जायेगी तेरी पोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

१०.हरि बिन बीतत ऊमर सारी, फिर आयेगी काल की बारी ।
प्रभु-पद तू भज ले अनमोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

-:०:-

तनकर मनकर वचनकर देतन काउ दुःख ।
तुलसी पातक झरत है देखत उनको मुख ॥

भजन ४१२ (रसिया)

बंगला अजब बन्या महाराज जा में नारायण बोले ॥ टेर ॥

१.पंच तत्व को ईट बनाई तीन गुनों का गारा ।
छत्तीसुँ की छांत बनाई, चेतन है चेचारा ॥ बंगला ॥

२.इस बंगले के दस दरवाजा, बीच पवन का खम्भा,
आवत जावत कंछु नहीं दीखै, ये भी एक अचम्भा ॥ बंगला ॥

३.इस बंगले में चोपड़, मांड़ी खेले पांच-पचीसा,
कोई तो बाजी हार चल्यो है, कोई चल्या जुग जीता ॥ बंगला ॥

४.इस बंगले में पातर नाचे, मनबा ताल बजावे,
निरत सुरत का बाँध घूंघरू, राग छतीसूँ गावे ॥ बंगला ॥

५.कहे मछन्दर सुन जती गोरख जिन ये बंगला गाया
इस बंगले का गावनहारा, बहुरी जनम नहीं पाया ॥ बंगला ॥

भजन ४१३ (रसिया)

मनवा नाहि बिचारि रे, थारी म्हारी करतां ऊमर बीती सारी रे ॥ टेर ॥

१.नव दस मास गर्भ में राख्यो, माता थारी रे ।
नाथ बाहिर काढ भगती करस्यूं थारी रे ॥ मनवा ॥

२.बालपने में लाड लडायो, माता थारी रे ।
भर जोबन में लगे कामिनी, नार प्यारी रे ॥ मनवा ॥

३.माया माया करतो फिर्यो जड़ से भारी रे ।
कौड़ी कौड़ी कारण मूरख ले तो राड़ उधारी रे ॥ मनवा ॥

४.वृद्ध भयो जब यूँ उठ बोली, घर की नारी रे ।
अब बुढ़लो मर जाय तो छूटे गैल हमारी रे ॥ मनवा ॥

५.रुक गया सांस दसों दरवाजा, मच रही ध्यायी रे ।
कालूराम गुरां के शरणें, कह दी सारी रे ॥ मनवा ॥

-:०:-

आगे धंधो पाछे धंधो धंधा मांही धंधो ।
धंधा मांही भजन करे वो(ही) साहब को बंदो ॥

भजन ४१४ (तर्ज: दगा किसी का सगा नहीं)

झूठ सांच से भरे खजाने फिर भी तृष्णा नहीं मरी,
आया नौता महाकाल का शानो शोकत रही धरी ॥ टेर ॥

१.इंद्र भवन सा महल बनाया फूला फूला सेठ फिरे,
पड़ा अचनाक दिल का दौरा लाला भू पर लेट रहे ।
छोड़ चला सब ठाठ निराले डूब गई मंझधार तरी,
आया नौता महाकाल का शानो शौकत रही धरी ॥ झूठ ॥

२.सैर सपाटे को बाबूजी घर से हो निकले तैयार,
चले कदम थे चार गिरे फिर, उठ न सके, खाई पछार ।
सब सपने हो गए चूर चूर, हा विधना दया ये कुबद करी,
आया नौता महाकाल का शानो-शौकत रही धरी ॥ झूठ ॥

३.कथा भागवत पढ पंडितजी, खा पीकर विश्राम किया,
सोये, उठे नहीं निद्रा ने उनको पूर्ण विराम दिया ।
पौथी-पन्ने लगे बिलखने चीख-चीख कर हरी हरी,
आया नौता महाकाल का शानो-शौकत रही धरी ॥ झूठ ॥

४.डाक्टर चला देखने रोगी गाड़ी में होकर असवार,
बाहर निकला द्वार खोल जब, गिरा पलक दिए पाँव पसार ।
जीवनदाता स्वयं गया लिख गया मौत न टारे कभी टरी,
आया नौता महाकाल का शानो-शौकत रही धरी ॥ झूठ ॥

५.मौत सबी को खा जाती हैं नहीं अमर कोई दुनिया में,
राम भजो संसार सुधारो क्यों भरमो इस माया में ।
सुनो भाइयों बात पते की कहता है घनश्याम खरी,
आया नौता महाकाल का शानो-शौकत रही धरी ॥ झूठ ॥

-:०:-

सभी दियोडा जीन का सोही बार सुबार ।
भदरा जदही जानिए जद रूठे करतार ॥

भजन ४१५

लख चोरासी खत्म हुई ना, बीत कल्पयुग चार गये,
नाक में दम आ गया है भगवन, मरते मरते हार गये ॥ टेर ॥

१. कई बार पृथ्वी पर आया, रहा मुझे कुछ याद नहीं,
कितने भाई बहन हुए, पर एक उदर धर याद नहीं,
कितने पिताओं के शरीर से, देह मिली कुछ याद नहीं
कितनी की सन्तानें पैदा, इसकी कोई तादात नहीं ॥ नाक॥
लख चोरासीके चक्कर में, आर गये कभी पार गये

२.कभी कभी लिपटे रहे जेर में अपने करम करीनो से
कभी अण्डे से जनम लिया, कभी पैदा हुए पसीने से,
कभी कभी जल में डूब मरे, कभी उमर कटी जल पीने में
फिर भी करम खतम नहीं होता, मोत भली इस जीने से
शुभ अशुभ कर्म करने से, स्वर्ग नर्क कई बार गये ॥ नाक॥

३. कभी राजा कभी वजीर बने, कभी योगी बन कर योग किया,
कभी बादशाह कभी रंक बने, कभी भोगी बन कर भोग किया,
हम आये थे भोग भोगने, भोग ने हमको भोग लिया,
आशा तृष्णा छूट गई अब इस दुनिया से जोग लिया
अब तुम्हारी ना हम तेरे मिट्टी में मिल सब प्यार गये ॥ नाक॥

४. आशा तृष्णा और ईर्ष्या यह करनी चाही बस में
यह ना हुई हमारे बस में, हम हो गये इसके बस में
हमने चाहा काम क्रोध को, मार के डाले गर्दिश में
यह न मरे हम ही मरते हैं, बार बार यश अपयश में
लक्ष्मीचंद जाटी का वासी, मरे नही धड़ मार गये ॥ नाक॥

-:०:-

माया मरी न मन मरा, मर मर गया शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी कह गये दास कबीर ॥

भजन ४१६ (हरियाणा)

दगा किसी का सगा नहीं, आजमा के देखलो ॥ टेर ॥

१.बिना बुलाये आदर नहीं, चाहे जाकर देखलो ।
बिना बुलाये सती गई, अपमान हुआ भारी ।
क्रोध अग्नि से भस्म किये, जब कोपे त्रिपुरारी ।
महादेव ने वीरभद्रगण, भेजा बलधारी ।
हुआ यज्ञ विध्वंस दक्ष की, जान गई मारी ।
मुरख को ना ज्ञान लगे, समझा के देख लो ।
मिले रेत में अकड़, चाहे गरबा के देखलो ॥ दगा ॥

२.कौरवों ने दगा किया, पांडवों के संग में ।
भीमसेन को जहर खिलाकर, डाला गंग में ।
झूट कपट से राज ले लिया, भरे उमंग में ।
हुआ नतीजा बुरा मरे, कौरव रण रंग में ।
बेईमानी का वृक्ष बुरा है, कोई लगा के देखलो ।
उसके फल कडवे होते है, कोई खाके देखलो ॥ दगा ॥

३.हरि भक्ति सत्संग बिना, जग में आना फीका ।
मात पिता की सेवा, बिन, तीरथ नहाना फीका ।
जहाँ न आदर होवे नर का, उस घर जाना फीका ।
जाने बिना स्वर ताल सभा में, मुंह बाना फीका ।
कंठ बिना गाना फीका, कोई गाके देखलो ।
गुरु बिन मिले न ज्ञान, वेद उठाके देखलो ॥ दगा ॥

४.गुरु बक्तावर यूं बोले, कुछ सफल कमाई कर ।
जब तक तेरे से होवे, मत कभी बुराई कर ।
मानचंद तू राम नाम की, नित्य पढ़ाई कर ।
रामनाम अमृत रस है, बरसा के देखलो ।
बुद्धि निर्मल हो जावे, इस में नहा कर देखलो ॥ दगा ॥

भजन ४१७

सफल कमाई महाराज भरथरी थारी,
इश्वर क कारण जोग फकीरी धारी ॥ टेर ॥

१.जोगी खड़ो बणी क माय, मार रहो हेला,
मेरो आवो रे भरत कुमार, गुरु का चेला,
राजा जाओ महल के मांय, लगा आवो फेरी ॥ इश्वर ॥

२.तेरी पिंगला न कह दे मात करो मत देरी,
राजा गयो महल क मांय, अलख न टेरी,
तुम भिक्षा घालो, मात पिंगला मेरी ॥ इश्वर ॥

३.राणी रोवै महल क मांय, कलप रही काया,
तेरो मरियो गोरखनाथ, राज छुड़वाया,
राजा खड़ो महल क मांय, पिंगला रोरी ॥ इश्वर ॥

४.राणी खड़ी महल क मांय, अटरियाँ झाँके,
राजा एक दिन पकड़्यो हाथ, प्रीत मत तोड़े
तुम भिक्षा देवो घाल, करो मत देरी ॥ इश्वर ॥

५.मेरा जोग सफल हो जाय, करम गति हेरी,
राजा आयो गुरु क पास, लगा आयो फेरी,
तनै गावै झरणी नाथ, राग को लहरी ॥ इश्वर ॥

भजन ४१८ (तर्ज: म्हारो अवगुण भरयो रे शरीर)

माया हो रंग बादली, जा में चँदा हो दर्शे नाहीं ॥ टेर ॥

१.आशा, तृष्णा नदिया बहत है, लख चौरासी धार
कितने ही मुनिजन बह गये, इस नदिया की मझधार ॥ माया ॥

२.काम क्रोध की बनी बदरिया, गरज रहा अहंकार
लोभ मोह की बून्दें पड़त है, भीज रहा संसार ॥ माया ॥

३.ज्ञान पवन प्रगट्यो हृदय में, बादल दियो उडाय
कहे कबीर अब खिली कुमुदनी, चँदा दियो है दिखाय ॥ माया ॥

भजन ४१९

इक राई घटे ना, नही तिल बढने का,
लिख दिया विधाता लेख नहीं टलने का ॥ टेर ॥

१.कोई रथ पालकी घोड़े पर चढता है, कोई सिर पर बोझा लिये लिये फिरता है
कोई पाट पिताम्बर जरी पहन फिरता है, कोई गरीब गुरबा ठंडी सिया मरता है
पुरब के जनम का जोग नहीं टलने का ॥ लिख दिया ॥

२. एक पुरी अयोध्या शहर बड़ा गुलजारी, दशरथ के घर में रामचन्द्र अवतारी,
एक पिता हुकुम से बन की करी तैयारी, रघुवर के संग में सीता सोहे नारी,
रावण की छीन ली देखो सुवरण लंका ॥ लिख दिया ॥

३.एक चाँद सुरज की अटल ज्योत है, पड जाये भिखा तो ग्रहण पर्व लगता है
लखपति सेठ लाखों का बिणज करता है,पड़ जाये जो घाटा इधर उर फिरता है
एक बेमाता के हाथ अंक न टलने का ॥ लिख दिया ॥

४.एक हँसराज समुदर के बीच रहता है, पुरब के पुण्य से मोती चुग खाता है,.
चींटी को कण हाठी को मण मिलता है, एक तुकम गिरी कहे असल नाम चलता है
इस जिया जुण में सच्चा नाम साहिब का ॥ लिख दिया ॥

भजन ४२०

नर तेरा चोला रतन अमौला विरथा खोवे मत ना ॥ टेर ॥

१. बन्दे देह मिली है नर की, भक्ति करी नहीं ईश्वर की,
सुध बुध भूल गया उस घर की नींद मं सोवै मत ना ॥ नर॥

२. तेरी पूर्व जनम की करणी तुमको होगी यहाँ पर भरणी,
या है वेदों में भी बरणी विपत मं रोवै मत ना ॥ नर ॥

३. देखे रिषी मुनी फिकर में, पड़ गये माया के चक्कर में,
किस्ती अड़ी पड़ी चक्कर में, उसको डुबोवे मत ना ॥ नर ॥

४. बदरी बांद कमर हो तगड़ा, सीधा पड़ा मोक्ष का डगरा,
छोड़ो मोह माया का झगड़ा लगालो राम नाम का रगड़ा ॥
कायर होवै मत ना ॥ नर ॥

भजन ४२१ (रसिया)

मुखड़ा क्या जोवे दर्पण में, तेरे दया दरम नहीं मन में ॥ टेर ॥

१.कागद की एक नाव बणाई, छोड़ी गंगा जल में,
धरमी धरमी पार उतर गये, पापी डूबे जल में ॥ मुखड़ा ॥

२.दर्पण लेकर मुखड़ा देखे, फूल गया फूलण में,
काची काया काम न आवे, जाय जला दे रे बन में ॥ मुखड़ा ॥

३.पेच मारके पगड़ी बांधै, तेल चुवे जुलफन में,
यम का दूत पकड़ ले जायेगा, क्या जूझे दुश्मन से ॥ मुखड़ा ॥

४.हाथ कड़ूला काना मुरकी, तार लेव पलछिन में,
इसी बदन पर दूब उगेगी, गऊ चरेगी बन में ॥ मुखड़ा ॥

५.कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, जोड़ धरी बर्तन में,
कहत कबीर सुनो भई साधो, रह गई मन की मन में ॥ मुखड़ा ॥

भजन ४२२

है सुमिरन में सार बावरे दुनियाँ झूटी रे ॥ टेर ॥

१.जिस तन पर तू फिरता अकड़ा, माल उड़ावे भरभर छकड़ा ।
काल बली जब गरदन पकड़ा, जलकर बन गये छार बावरे ।
काया छुटी रे ॥ है सुमिरन॥

२.झूट कपट से माल कमावे, महल तिजोरी हौज भरावे ।
छोड़ के सब मरघट को जावे, जलकर बन गये छार बावरे ॥
किस्मत फूटी रे ॥ है सुमिरन॥

३.नाम कमाई करने आया, आशा में फंस मूल गमाया ।
अंत समय कुछ हाथ न आया, तू बैठा झकमार बावरे ॥
आशा टूटीरे ॥ है सुमिरन॥

४.प्रेमनाथ कहे झूठी आशा, तीन लोक को डारे फांसा ।
अंत करावे नरक में बासा, ले डूबी मझधार बावरे ॥
सरवस लूटी रे ॥ है सुमिरन॥

भजन ४२३ (कलावती)

इतरा न जिन्दगी पर, इसका है क्या भरोसा,
पानी का बुलबुला है, कब फूटे क्या भरोसा ।। टेर ।।

१.हर सांस में तू रटले, मालिक का नाम दिल से,
जो साँस जाये बाहर, आने का क्या भरोसा ।। इतरा ।।

२.करना है जो भलाई, उसको न डालो कल पर,
कर डालो उसको फौरन, कल का है क्या भरोसा ।। इतरा ।।

३.पड जाये जो मुसीबत, तकना न दूसरों को,
हिम्मत से काम लेना, गैरों का क्या भरोसा ।। इतरा ।।

४.माया है आनी जानी, टिकती नहीं कहीं पर,
राजा बने भिखारी, दौलत का क्या भरोसा ।। इतरा ।।

५.पत्ता गिरा जमीं पर, बोला दरख्त से यूँ,
फिर से लगूंगा तुझ पर, इसका है क्या भरोसा ।। इतरा ।।

६.अनमोल जन्म तेरा, कर नेक काम सागर,
इन्सां का रूप फिर से, मिलने का क्या भरोसा ।। इतरा ।।

-:०:-

मान रे मन मान ले, अभिमान इतना मत करे
शीश जिसके दस थे, रावण से जोधा भी मरे ।
नूर देखा अम्र का, इससे भी जग मे नूर भले
जुझ गये दारा सिंकदर, हाथ छाती पर धरे
मना मन मान मेरा कहना, जगत ये आफत का गहना
उलफतें पडे सभी सहना-उलफतें पडे सभी सहना
जोर मत करे जवानी का, बुदबुदा है ये पानी का
भैरवी मकर की अविकारी, स्वान पर जिसकी असवारी
हाथ में खपर शीश पर जटा, नाम भैरव का जिसने रटा
मेरे गुरु अलख की अविनाशी, बसादी त्रिशूल पर काशी ।।
तो भजमन शिव अविनाशी को, चलाजा सीधा काशी को ।।
राम रस सदा रसीला है, हरी का शकुन रंगीला है ।।

भजन ४२४

तू समझ भेद इस घट का, मिट जाये काल का खटका ॥ टेर ॥

१.क्यों घर छोड़ जाये जंगल में फिरता भटका भटका ।
तन तो रहे गुफा में तेरा मन माया में अटका ॥ तू समझ ॥

२.है साहेब इस घट में बैठा परदा है घूंघट का ।
हटा के परदा देख रुप तूं कटे जाल संकट का ॥ तू समझ ॥

३.कर सत संग छोड़ दे मार्ग झूट कपट लंपट का ।
मोह तो मारे काल तमाचा बने ढेर मरघट का ॥ तू समझ ॥

४.प्रेमनाथ कहे गुरु ज्ञान का पकड़ हाथ में सटका ।
मार मार मुंह तोड़ काल का फोड़ मोह का मटका ॥ तू समझ ॥

भजन ४२५ (तर्ज: भजो मन तुलसी सीता राम)

जनम सुधारो बन्दे हरि गुण गायके, हरि गुण गायके जी ममता मिटाय के ॥ टेर ॥

१.यह नर जनम जगत में तेरा चार घड़ी का रैन बसेरा ।
आखिर कूच करेगा डेरा तू सूता रह जाय नींद में हरे हरे ।
फिर पछतै हो प्यारे, समय गमाय के ॥ जनम ॥

२.तू बनकर माटी का मटका घर को छोड़ अधर में लटका ।
काल हवा का लागे झटका टूक टूक उड़ जाय पलक में हरे हरे ।
तू ही अकेला जावे पाप कमाय के ॥ जनम ॥

३.पिंजरा तेरा पड़ा रह जावे नर तन से अब प्रेत कहावे ।
जो छुवे सो जाय नहावे लेकर डारे नदी किनारे हरे हरे
धूल उड़ावे दुनियां पिंजरा जलाय के ॥ जनम ॥

४.किया जन्म भर पाप का धन्धा बना बैल तेली का अंधा ।
डाल दिया कोल्हू में कंधा बंधा फिरे चौरासी चक्र में हरे हरे ।
तड़प तड़प रोवे बड़ो दुःख पायके ॥ जनम ॥

५.प्रेमनाथ कहे चेत रे भाई गुरु चरण भजो मन लाई
जनम मरण तेरा मिट जाई रहो मस्त नित राम भजन में हरे हरे ।
मगन रहो रे बन्दे रटन लगाय के ॥ जनम ॥

भजन ४२६ (राग: दरबारी)

बड़ी ठगिनी यह माया संतो ॥ टेर ॥

१.अगम देश से चली है माया, अपना जाल बिछाया ।
रूप मोहिनी बना के आई, देखत ब्रह्म लुभाया ॥ बड़ी ॥

२.ब्रह्मा विष्णु महेश भुलाये, मोह जाल लपटाया ।
शेष गणेश पार नहीं पाये, वेद भेद नहीं पाया ॥ बड़ी ॥

३.जपी तपी जप करि हारे, ध्यानी ध्यान लगाया ।
पूजा करि करि पन्डित हारे, घंटा खूब हिलाया ॥ बड़ी ॥

४.पीर औलिया मुल्ला काजी, सब ने सर टकराया ।
चली चाल नहीं वहाँ किसी की, आखिर गला फँसाया ॥ बड़ी ॥

५.मरना जीना बंध मोक्ष का, झूठा पाठ पढ़ाया ।
इसी जाल में डाल के सब को, मर्कट नाच नचाया ॥ बड़ी ॥

६.आने जाने का दुनिया में, झगड़ा झूठ बढ़ाया ।
प्रेमनाथ कहे सदा अटल है, कहीं गया नहीं आया ॥ बड़ी ॥

भजन ४२७

है अजब तमासा भाई , विरले न भेद यह पाई ॥ टेर ॥

१.कारीगर ने किला बनाया किया बड़ी चतुराई ।
सात धातु की सात दिवालें खंदक साथ खुदाई ॥ विरले ॥

२.सात समुन्दर सात भाँत के पानी दिया भराई ।
सात चक्कर की सात भँवर है जो जावे फंसी जाई ॥ विरले ॥

३.उस किले के अन्दर कोई सुन्दर महल बनाई ।
अमृत कुंड भरा कर उस में ज्योति अखंड जलाई ॥ विरले ॥

४.नव दरवाजे दसवी खिड़की अन्दर सेज बिछाई ।
तहाँ सोवे गुरु जा दर्शन कर भव बन्धन कटी जाई ॥ विरले ॥

५.प्रेमनाथ कहे सो यह जाने जेही गुरु भेद लखाई ।
नुगरा तड़पे राह न पावे तड़प तड़प मर जाई ॥ विरले ॥

भजन ४२८

गुण की गति अति भारी साधो ॥ टेर ॥

१.गुण गति अति कठिन निराली माया मूल पसारी ।
इसी मूल से त्रिगुन वृक्ष भयो साखा बहु विस्तारी ॥ गुण ॥

२.इसी वृक्ष से निकले ब्रह्मा विष्णु शिव अवतारी ।
यही रुप है तीनों गुण के उत्पति स्थिति लयकारी ॥ गुण ॥

३.इसी गति का नाम है धारा त्रीगुण धार संसारी ।
इड़ा पिंगला और सुषमना तीनों गुण की नाडी ॥ गुण ॥

४.गुन से करम करम से फल है ऐसे वेद उचारी ।
यही करम फल भोग रहे हैं जग के सब नर नारी ॥ गुण ॥

५.इसी माया ने जग को बांधा गुन का जाल संवारी ।
आखिर बांधा पकड़ ब्रह्म को त्रिगुण बंधन डारी ॥ गुण ॥

६.प्रेमनाथ कहे सुनो संत जन गुन की गांठ करारी ।
यह गुन गांठ कटे क्षण भीतर ले लो नाम कटारी ॥ गुण ॥

भजन ४२९

युग युग की गति न्यारी साधो ॥ टेर ॥

१.सतयुग में पूरा सतगुण था जती सती नर नारी ।
योग ज्ञान की कठिन राह से आवागमन निवारी ॥ युग युग॥

२.त्रेता में थोडा सा रज था सत की थी अधिकारी ।
महायज्ञ कर कर के तरे संसारी ॥ युग युग॥

३.द्वापर में रज गुण था आधा सत तम अल्प निहारी ।
परम धाम को गये लोग सब बनकर देव पुजारी ॥ युग युग॥

४.कलियुग कुछ रज अधिक तमो गुण लोग भये व्यभिचारी ।
आयु हीन रोगी अति निर्बल भोग रहे दुःख भारी ॥ युग युग ॥

५.जोग यज्ञ पूजा नहीं बनता मन चंचल मति मारी ।
काम क्रोध मद लोभ बड़े ठग करते छल ठग हारी ॥ युग युग ॥

६.प्रेमनाथ कहे कलि तरन की सहज उपाय बिचारो ।
नाम नांव पर चढ़जा बंदे छन में पार उतारी ॥ युग युग ॥

भजन ४३० (राग: दरबारी)

प्यारे भजन करो जी पाके रतन शरीर।
पाके रतन शरीर ॥ टेर ॥

१.लख चौरासी बहु दुःख भोगा जन्म मरण की पीर ।
गोता खावे बीच अधर में अजहूँ न पहुंचा तीर ॥ प्यारे ॥

२.एक दिन आये काल शिकारी, लिये हाथ जंजीर ।
वा दिन चाल चले नही तेरी, लाख करो तदबीर ॥ प्यारे ॥

३.टूट गई, श्वास की डोरी फूट गई तकदीर ।
छूट गई सब दौलत दुनियाँ लुट गई जागीर ॥ प्यारे ॥

४.सगे कुटम्बी सब मिल जाये, भई मरघट पर भीर ।
चिता जले फागुन की होली, उड़ गई धूल अखीर ॥ प्यारे ॥

५.जोगी भोगी त्यागी मिट गये, ज्ञानी ध्यानी वीर ।
साबित बचा जगत में कोई बिरला संत फकीर ॥ प्यारे ॥

६.प्रेमनाथ कहे चेत रे हंसा, भज सत गुरु धर धीर ।
होय अमर नर जुग-जुग जीवे, पीले अमृत खीर ॥ प्यारे ॥

भजन ४३१

तू करले याद उस दिन की,एक दिन होगी दुर्गति तन की ॥ टेर ॥

१.झूट कपट से माया जोड़े, लगी आश बहु धन की ॥
फूटी कौड़ी साथ न जावे, झूठी आशा मन की ॥ तू कर ले ॥

२.यह तन मिट्टी बन जायेगा, लगे देर नही छन की ।
जल जाये मरघट में एक दिन, जैसे लकड़ी बन की ॥ तू कर ले ॥

३.छोड़ फिकर झूठे नाते की, कुटुम्ब कबीला जन की ।
यह सब है मतलब के साथी, तू कर फिकर भजन की ॥ तू कर ले ॥

४.प्रेमनाथ कहे चेत रे हंसा, कर संगत संतन की ।
प्रेम से रटले नाम गुरु का, बने देह कंचन की ॥ तू कर ले ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शयन

भजन ४३२ (राग: दरबारी)

गणपति विघ्न विनाशन हारे
मंगलकरण अमंगल नाशन सुख के सदन उमा के बारे

१.एक दंत गज मुख लम्बोदर
सिन्दूर तिलक नैयन नतनारे
महिमा अमित पुजे सुर नर मुनि
लोकहु वेद विदित उजियारे ॥ गणपति ॥

२.शैल सुता सुत शैल नाम को
शैल समान हरो दुःख भारे
करि आनन आनन करि साधौ
करि साधो कानन अरज सुनो चित धारे ॥ गणपति ॥

३.मम उर वांछित सो तुम जानो
ताते बन्दौं चरण तिहारे
होउ दयाल दनुजदाहन सुत
ज्ञानसिन्धु सुख परम उदारे ॥ गणपति ॥

४.सियाराम पद पंकज उरबस
मम चित भृंग टरे नहीं टारे
सो यह वरदान देउ तुलसी को
राम लखन उर बसहीं हमारे ॥ गणपति ॥

-:०:-

विषय भोग संसार के है सब दुख के मूल ।
इन में फंस कर ईश को मत मूरख तूं भूल ॥

-:०:-

मैं मेरी करता रहे मेरी देत डुबाय ।
अंत समय मेरी नहीं दीनानाथ सहाय ॥

भजन ४३३ (राग: भैरव)

अँखियाँ में नीन्द घुल आई
बिहारीजी की अँखियाँ में नीन्द घुल आई ।। टेर।।

१.कुण बिहारीजी की सेज बिछावे
तो कुण करे तैयारीजी ।। बिहारी जी ।।

२.सखियाँ बिहारीजी की सेज बिछावे
श्री राधाजी करे तैयारी ।। बिहारी जी ।।

३.कुण बिहारीजी को दूध पिलावे
कौन खिलावे मलाईजी ।। बिहारी जी ।।

४.सखियाँ बिहारीजी को दूध पिलावे
राधेजी खिलावे मलाईजी ।। बिहारी जी ।।

५.कुण बिहारीजी को चँवर ढुलावे
कौन चरण दबावेजी ।। बिहारी जी ।।

६.सखियाँ बिहारीजी को चँवर ढुलावे
श्री राधाजी चरण दबावेजी ।। बिहारी जी ।।

७.जद ही बिहारीजी पोढ़ण लाग्या
भक्ताँ ने शीश नवायोजी ।। बिहारी जी ।।

भजन ४३४

थे पोढो अन्तरयामी नैना में नीन्द घुलाणी ।। टेर ।।
१.थारे मुख उबासी आई, थांने पूछे कौशल्या माई ।।थे पोढो।।
२.थारी सीता सतवंती नारी, थारे फुलड़ा सेज सँवारी ।।थे पोढो।।
३.प्रभु थाँका धनुष बाण कर मेलो, मुखड़ा पर ओढो सेलो।।थे पोढो।।
४.प्रभु थाँकी पाग पलंग पर मेलो, केसरिया जामो खोलो ।।थे पोढो।।
५.प्रभु लक्ष्मण ने आज्ञा दीजो, बांने महल पधारण कीजो ।।थे पोढो।।
६.प्रभु थे तो भक्तन के रखवाले, दशरथ सुत राज दुलारे ।।थे पोढो।।
७.प्रभु थाँकी चन्द्रसखी जस गावे, थारे चरणां शीश नवावे।।थे पोढो।।

भजन ४३५

करीये शयन श्री भगवान ॥ टेर ॥

१.रैन आधी आ गयी है जगत है सुनसान,
वीथिका नव शीश आई क्रौंच सर कुहकान ॥ करीये॥

२.दिवस भर निज जन उबारे, श्रम भयो जु महान,
श्रम निवारो सो महाप्रभु, भक्त वत्सलवान ॥ करीये॥

३.सुमन शैया है संवारी, अति सुगंधित वान,
मधुर वीणा की झनक सुन, नयन है अलसान ॥ करीये॥

४.विनय सुन प्रभु शयन कीनो, कमल मुख मुस्कान,
करत व्यंजन से पवन श्री, अतुल छबि प्रकटान ॥ करीये॥

५.श्री सुदर्शन देत चौकी, और गण बलवान,
लक्ष्मण द्वारे है पड्यो फिर, भोल को कर ध्यान ॥ करीये॥

भजन ४३६ (राग: भैरव)

पोढो प्रभु सुख सेज सीताराम ॥ टेर ॥

१.कनक मन्दिर रतन जड़ियो, कोटि उदय भयो भान ।
शेष सुमिरन करत निश दिन, धरत नारद ध्यान ॥ पोढो ॥

२.गर्व भंजन रामजी, संत पूरण काम ।
निकट सरयू बहत निर्मल, अधमोचन निज धाम ॥ पोढो ॥

३.आनन्दकन्द अयोध्या नायक, जानकी पूजे पाँव ।
दास तुलसी लिये ही ठाड़े , मेवा दाख बदाम ॥ पोढो ॥

भजन ४३७ (राग: भैरव)

पोढो प्रभु द्वारका रणछोड - २ ॥ टेर ॥

१.मन्दिर मन्दिर झालर बाजे, शंखन की घनघोर ॥ पोढो ॥

२.रुक्मणी रा रंगमहल में, दीपक लाख करोड़ ॥ पोढो ॥

३.रुक्मणी हरि ना चरण दबावे, कुबजा लेवे रे तमोर ॥ पोढो ॥

४.रत्नागर किलकार करत है, गोमति करत किलोर ॥ पोढो ॥

५.दास पीपो शरण आयो, सन्मुख आयो हनुमान ॥ पोढो ॥

भजन ४३८

श्रीनारायण शयन करो प्रभु रैन गयी अति भई देरी ॥ टेर ॥
१.आश्रितजन रक्षण हितकारण रैन गिनत अरु गिनत न देरी
आरत हो गजराज पुकारे तत्क्षण आप पधारे नहीं कीन्ही देरी ॥ श्रीनारायण ॥
२.रत्नजडित कंचन की शैया तापर शेष मृदुल सुकुमारी
अतर दिव्य गुलाल केवडा प्रेमयुक्त आश्रित कर धारी ॥श्रीनारायण॥
३.श्रीमुनि वाहन मधुर कवि श्रीवर रंग गान करतारी
श्री लक्ष्मीजी श्री नारायण श्री शैया पर आप पधारी ॥श्रीनारायण॥
४.श्री सुदर्शन देत चौकी हनुमत गरूड बडे बलधारी
श्री वैष्णव को दास गात जस चरणकमल पर जाऊँ बलिहारी ॥ श्रीनारायण ॥

भजन ४३९ (राग: भैरव)

जाँ के कमल नयन रतनारे, राम पोढण को चले ॥ टेर ॥
१.रतनजडित को बनो ढोलियो, फुलडा सेज संवारी ।
रामचन्द्रजी पोढन आए, जनकसुता चापे पाँव ॥ राम पोढण ॥
२.बागारा कसणा खोलो लालजी, धनुष सिराणे मेलो ।
रघुनाथजी पोढण आए, लक्ष्मण डोले छे भाल ॥ राम पोढण ॥
३.लाडू पेड़ा सरस जलेबी, बहुत करी मिजवानी ।
मात कौशल्या थाल परोसे, जीमोजी अवध बिहारी ॥ राम पोढण ॥
४.सब संतन की चौकी आई, हनुमान अगवानी ।
रामचन्द्रजी हनुमान भरोसे, सुख पोढे रघुराई ॥ राम पोढण ॥

भजन ४४० (राग: भैरव)

पोढो नी प्रभु तिरुपति वेंकटेश ॥ टेर ॥
१.आप पोढे सगला दास पोढे, पोढे अर्चक लोग ॥पोढो॥
२.मन्दिर मन्दिर घंटा बाजे, काली की घनघोर ॥पोढो॥
३.पद्मावतीजी का रंग महल में, दीपक नवलकिशोर ॥पोढो॥
४.चम्पा चमेली गुलाब जूही, शैया लेवे चितचोर ॥पोढो॥
५.श्रीरामानुजजी दूध कटोरा लिये, पिस्ता केशर घोल ॥पोढो॥
६.लक्ष्मीजी हरि का चरण चापे, गोदाजी लेवे है तमोल ॥पोढो॥
७.विष्णुचित्तजी गजरा लाये, गान सुनावे श्री षटकोप ॥पोढो॥
८.वीणा मधुर कवि की सुन सुन, निद्रा आई जोर ॥पोढो॥
९.लक्ष्मीदासी शरण आई, भक्ति दीजो रंगेश ॥पोढो॥

भजन ४४१

अवगुण चित न धरो प्रभू जी मेरे अवगुण चित न धरो
समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ टेर ॥

१.इक नदिया इक नाल कहावे मैलो ही नीर भरयों
दोनो जाय परस्पर मिली हैं सुर सरि नाम परो ॥ अवगुण ॥

२.इक लोहा पूजा में राखे एक घर बधिक परो
पारस गुण अवगुण नही चित वैं कंचन करत खरो ॥ अवगुण ॥

३.ये तन माया ब्रह्म कहावे सूर से मिली बिगरो
अबकी बेर मोही पार उतारो नही प्रण जात टरो ॥ अवगुण ॥

भजन ४४२

चिरंजीव कल्याण रहो हरि कथा सरस पीवो
हरि कीर्तन के साथी सज्जन बहुत बरस जीओ ॥ टेर ॥

१.सस्ता दाना पानी निर्मल गंगाजल गहरा
बाग बगीचा महल मालिया रुपया हुण्ड मोहरा ॥ चिरंजीव ॥

२.ऊँचे मन्दिर महल सुनहरी माल मुलक बस्ती
पुत्र पौत्र और सकल कामना कबहु न मुख हसती ॥ चिरंजीव ॥

३.अमृत राय के अमृत वचन ये सदा सुखी रहीयो
सबल पुष्ठ आरोग्य अनुग्रह आनंद से रहियो ॥ चिरंजीव ॥

-:०:-

क्षणभंगुर - जीवन की कलिका, कल प्रात को जाने खिले न खिले
मलयांचल की शुचि शीतल, मन्द-सुगन्ध समीर मिले न मिले।
कलि काल कुठार लिये फिरी है, वाकी देह ये मार झिले न झिले
रट ले हरि नाम अरी रसनी, फिर अन्त समय में हिले न हिले ।

शान्ति - नमस्ते पाठ

भजन ४४३

शान्ति शान्ति शान्ति प्रभो शान्ति सदा आपो ॥ टेर ॥
परमकृपा करी कृपाल क्लेश कष्ट काटो ॥ १ ॥
शरण आयी विश्वनाथ, वन्दन करी जोडि हाथ ।
सर्व जपे भक्त साथ शान्तिसुख आपो ॥ २ ॥
करुणामय दृष्टि करो, हृदय तिमिर सर्व हरो ।
मन वांछित अर्थ पुरो, सुणितमे विलापो ॥ ३ ॥
जपि तुम्हारो पुण्य नाम, करिए तमने प्रमाण ।
सत्य शुद्ध-धर्म सकल देश विशेस्तापो ॥ ४ ॥

-:०:-

नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते प्रभुजी,
नमस्ते,नमस्ते अखण्डाविभुजी ।
नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते सदा कष्टहारी,
नमस्ते नमस्ते प्रभु निर्विकारी ॥ १ ॥
नमस्ते नमस्ते प्रभु दीन बन्धु,
नमस्ते नमस्ते महाज्ञान सिन्धु ।
नमस्ते, नमस्ते प्रभु दीनदाता,
नमस्ते नमस्ते चिदानन्द दाता ॥ २ ॥
नमस्ते नमस्ते प्रभु विश्वकर्ता,
नमस्ते नमस्ते सदा सृष्टि भर्ता ।
नमस्ते नमस्ते प्रभु विश्वपाला,
नमस्ते नमस्ते दयाला कृपाला ॥ ३ ॥
नमस्ते नमस्ते कृपानाथ त्राता,
नमस्ते नमस्ते विभुहे आजाता ।
नमस्ते नमस्ते विभु विश्व भूपा,
नमस्ते नमस्ते सदा शान्तिरूपा ॥ ४ ॥

॥ श्री ॥

॥ जय श्रीमन्नारायण ॥